



॥ श्रीमदर्हम् ॥

# अमृत रस संग्रह.

सामायिक तथा प्रतिक्रमण सूत्र सहित

श्रीश्रीश्री १००८ श्रीश्री पूज्यजी श्रीश्री जयम-  
ल्लुजी महाराज के सप्रदाय के प्रवर पण्डित  
न्यायाम्भोनिधि स्याद्वादप्रदर्शक जैना-  
चार्य श्रीश्रीश्री १०८ श्रीश्री  
रामचन्द्रजी महाराज कृत.

जिसका

प्रथकर्ता केशिप्यस्वामीजी श्रीश्रीश्री १०५ श्रीश्री

प्रसन्नचन्द्रजी महामुनि

तथा

दाधीच आसोपा पण्डित बलदेवात्मज

पण्डित रामकर्णने

संशोधन किया.

मुम्बई गुजराती "प्रिंटिंग" यन्त्रालय में छपा

म १९५३ ई० १८१८

प्रथम बार प्रति १०००

कि० र० ३

## निवेदन.

सर्व साधर्मी भाइयों से प्रार्थना है कि इस पुस्तक को उघाड़ मुंह तथा दीपक के प्रकाश में तथा अविनय आशातना से नहीं पढ़ें कारण वे कर्म बंध के हेतु हो जाते हैं; इसलिये लिखना है कि मुख जतना करके इस को पढ़े पढ़ावें ॥

यह पुस्तक जोधपुरवासी सिंघ सुलतानमल के नामसे रजिस्टर किया है

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

पण्डित रामकर्ण. मोतीचौक

जोधपुर-मारवाड़.

हंसराज किसनलाल.

चंपागली—मुंबई.

॥ श्रीः ॥

## प्रस्तावना ।

आहारनिद्राभयमैथुनानि  
तुल्यानि सार्धं पशुभिर्नराणाम् ।  
ज्ञानं विशेषः खलु मानुषाणां  
ज्ञानेन हीनाः पशवो मनुष्याः ॥ १ ॥

इस अपार संसार समुद्रमें जैन धर्मकी प्राप्ति बड़ी दुर्लभ है; कारण प्रथम तौ निमित्त उपादानका मिलना १ आर्य क्षेत्रउत्तम कुल २ शरीर नीरोग ४ सत्सगति ५ शुद्धाचारी, शुद्ध तत्व प्ररूपक, शुद्ध परंपराके ज्ञाता गुरुका संयोग ६ ऐसी सामग्रीका संयोग मिलना परम दुर्लभ है । और ऐसी सामग्री पानेपरभी जो देव गुरु धर्मका निर्णय नहीं करते, और सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र को पहिचाननेके लिये यत्न नहीं करते उनका जन्म पशुवत् निरर्थक जाता है ॥ आहार, निद्रा, भय और मैथुन ये तौ मनुष्योंमें और पशुओंमें समान ही है । मनुष्यमें और पशुमें विशेष केवल ज्ञान का ही है । मनुष्य ज्ञानके बलसे धर्मको समझकर धर्मके मार्ग में प्रवृत्त हो सकता है, पशु उस मार्ग चल नहीं सकता; सो यदि मनुष्य जन्म पाकर धर्माचरण न करे तौ वह बिना सींग पूछका पशु ही है ॥ धर्म वह है कि जिससे मुक्तिकी प्राप्ति होवे, और आवागमन मिट जावे । वह धर्म दो प्रकारका है । श्रुतधर्म और चारित्र धर्म ॥ श्रुतधर्मसे ही चारित्र धर्म होता है । श्रुत धर्मके बिना चारित्र धर्म नहीं होता । श्रुतधर्म वह है कि जो सर्वज्ञ सर्वदर्शी, अनंत-



ज्ञानी, वीतराग केवली प्रणीत है। क्योंकि उसके श्रवण से श्रुत ज्ञानकी प्राप्ति होती है। अन्यसे नहीं इस कथनका प्रयोजन यह है कि बुद्धिमानोंको उस ज्ञानकी प्राप्ति के लिये यत्न करना चाहिये। श्रुत ज्ञानका मुख्य साधन पुस्तक और गुरुपदेश है। परंतु आजके दिन जैनी लोगोंमें पठन पाठनका प्रचार बहुत कम हो गया है और ज्ञानके निमित्त द्रव्यका व्ययभी बहुत कम करते हैं, यहांतक है कि व्याह शादी आदि में तौ चाहे लक्षों रुपये उड़ा दें और मकानात बनाने आदि कुकर्मोंमें हजारों रुपये बरबाद कर दें कि जिससे परलोक सुधरना तौ दूर रहा, वरन परलोक विगड़नेके सिवाय इह लोकमें कई प्रकारके कष्ट उठाने पड़ते हैं। और जिन मकानोंकी सात पीढ़ीके वास्ते नीब देते है वह सात पीढ़ी तौ दर किनार रही, बाजे खुदभी भोग नहीं सकते; ऐसे व्यर्थ कामोंमें धनका उड़ा देना बुद्धिमानोंका काम नहीं है। बुद्धिमानोंको चाहिये कि उस धनको ऐसे कामोंमें लगावे कि जिससे ज्ञानकी वृद्धि और धर्मकी उन्नति होवे। जिससे इह लोकमें प्रशंसा और परलोकमें सुखकी प्राप्ति हो। ज्ञान और धर्मकी प्राप्ति श्रुत ज्ञानसे है। और श्रुतज्ञानका मुख्य साधन पुस्तकें है। उन पुस्तकोंका मिलना पहिले तौ अत्यंत ही कठिन था; परंतु इस समयमें छापा हो जानेसे इतना सुवीता हो गया है कि जो पुस्तक पन्द्रह रुपयों में नहीं मिल सकता था वह अब एक रुपये में सुगमतासे मिल सकता है। और तिस परभी खूबी यह है कि जो पुस्तक एकाध ठिकाने मुश्किलसे मिल सकता था वह अब घर घरमें मिल सकता है। सो जैनी भाइयोंसे यही कहना है कि निष्फल कार्यों में धनका व्यय नहीं करै। ज्ञान के वास्ते द्रव्य का व्यय अवश्य ही करै; क्योंकि यही सर्वोत्कृष्ट है ॥

श्रुत धर्मका मुख्य साधन पुस्तक है। पहिले सूत्र, दीका ग्रंथ और प्रकरण आदि बहुतसे विद्यमान हैं; परंतु वे अति गहन होनेसे अल्पवृद्धि मनुष्योंके समझमें नहीं आ सकते और साधारण भाषा रोचक नहीं होती राग रागिनी में हरेक मनुष्यकी प्रवृत्ति और प्रीति स्वभावसे होती है और मन भी उसमें शीघ्र लग जाता है, इससे सर्व साधारणकी रुचिके लिये सुगमता से जैन तत्त्वका बोध करानेके निमित्त लोक भाषामें “अमृत रस संग्रह” नामक पुस्तक कि जिसमें मारवाड़ आदि देशोंके समय समय के राग रागिनियों के समयोपयोगी अत्यंत चमत्कृत विचित्र प्रकारके स्तवन, स्वाध्याय, लावनी, ढाल आदिका संग्रह चारह १२ प्रकरण में किया गया है वह पूज्यजी श्री श्री श्री १००८ श्रीश्री “जयमल्लजी” महाराज के संप्रदायानुयायि पाटानुपाट प्रवर पण्डित अनेक गुणालंकृत साधुवर्ग गिरोमणि चारित्र चूडामणि व्याकरण काव्य कोष छंद न्यायाभोनिधि सूत्र सिद्धांत पारगामि शुद्धोपदेशक वृत्तिवाचक शुद्ध श्रद्धा प्ररूपक मिथ्यात्व खंडन दया धर्म खंडन श्रीश्रीश्री १००८ श्रीश्री “रामचन्द्रजी” महामुनि कि जिनकी जन्मभूमि मारवाड़में बीकानेर राज्यांतर्गत “जसरसर” ग्राम है। जन्म सरावगी कुलीय सुखरामजी वाकलीवाल के घरमें सवत् १८८३ का है। और दीक्षा संवत् १९०० के वैशाख शुदी दशमीके दिन पूज्यजी श्री सवलदासजी महाराजके भूमीप हुई है, उन्होंने लोकोपकारार्थ श्रीमसन्नचंद्रजी कि जिनकी जन्मभूमि जसरसर ग्राम से ६ कोस और नागोरसे उत्तर दिशामें १३ कोस “मैनसर” ग्राम, सरावगी

जाति, गंगवाल राममुखजी गृहे केसर चाई कुक्षौ जन्म, महाराज साहिब के मासियाई भाई, जन्म संवत् १९२० में, दीक्षा संवत् १९३१ ज्येष्ठ शुदी द्वितीयाको नागोर में, उन की प्रार्थना से बनाया है; क्योंकि वे महाराज साहिब के मुख्य शिष्य और अच्छे विद्वान् हैं।

इस “अमृत रस संग्रह” के आदि में सामायिक और प्रतिक्रमण ( ६ आवश्यक ) दश पञ्चखाण पर्यंत छपवाये गये हैं। जिन में षठन पाठनकी शैलीके अनुसार १२ व्रत अतिचार, पंच पदों की बंदना और भी उपयुक्त पाटी प्रथम पाटी थी जैसी ही रखी है; कारण पढ़नेका प्रचार वैसा ही है। परंतु सामायिक की पाटियां तथा इच्छामि खमासमणो इत्यादि जो सूत्रपाठ है वह पद, संपदा, गुरु, लघु, सर्व अक्षर पृथक् पृथक् गिनकर परम शुद्ध किया गया है। सूत्रपाठ की शुद्धि आवश्यक दृष्टि, भाष्य और पूर्वाचार्यों की टीकामें देख कर की गई है ॥

महाराज की जोड़की रचना अत्यंत चमत्कृत है, इसलिये सब साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका मिलने की बड़ी उत्कंठा रखते हैं, तौभी समय जोड़ कब मिल सकती है; जिससे श्री संघके आग्रह से उस उत्कंठाको पूर्ण करनेके लिये तथा ज्ञान वृद्धिके वास्ते हमने महाराज से बहुत विनय पूर्वक प्रार्थना करके मुश्किलसे इस ग्रंथ को प्राप्त किया है। इस ग्रंथको जो एकवार देख लें वा सुन लें तौ में जानता हूं कि फिर वह मंगाये बिना कभी नहीं रहेगा; क्योंकि इस में ऐसा अद्भुत रस भरा हुआ है कि एक बेर चखने से फिर छूटनहीं सकता। मैं इस ग्रंथकी उड़ाई नहीं करता वास्तवमें यह ऐसा ही

है, सो देखनेसे स्वयं विदित हो जायगा । इन ग्रंथकर्त्ता महाराजकी केवल इतनी ही कविता नहीं है, और भी यशोधर धर्मदत्त हरिचल-नर्वदा-गजसिंह-रत्नदत्त आदिके रास अनुमान पन्द्रह हजार ग्रंथ चौपाई है ॥ और इससे अतिरिक्त चौढालिया, पद्म ढालिया, अठ नव ढालिया आदि व्याख्यान संबंधी है । जिसकी रचना अत्यंतही मनोहर अद्भुत रसभरी अनुमान पन्द्रह हजार ग्रंथ होगा । उसको छपानेकाभी हमारा इरादा है, सो फिर देखा जायगा.

जिनको यह पुस्तक लेनेकी इच्छा हो वे मेरे समीपसे नीचे लिखे पतेसे मंगा लें ॥

---

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

पण्डित रामकर्ण

मोतीचौक जोधपुर मारवाड़

॥ श्रीः ॥

## ग्रंथकर्ता का गुणवर्णन ॥

लावणी ॥

श्रीराम मुनीका पाय बंदो नर नारी ॥ वं० ॥ गुण  
रतनारी खान बडे उपगारी; सब शास्त्रनके जान पाखंड  
जावे हारी ॥ पा० ॥ ब्रह्मचारी मिष्ट वाक्य सुरत छै  
प्यारी, सब संतनके बीच मुद्रा सुखकारी ॥ सु० श्री॥१॥  
जिन शासनके थंभ दंभ नहि इनके ॥ दं० ॥ कम स्वाली  
महाराज क्रोध नही जिनके; आतम तत्व पाय कषाय  
मीटाई ॥ क० ॥ सबसं मैत्रीभाव नहीं कपटाई; हितका  
बोले बोल सदा हितकारी ॥ स० श्री० ॥ २ ॥ अब सुनिये  
महाराज अरज एक मोरी॥अ०॥ सदा रखो चरनके पास  
कहुं कर जोरी; प्रसनचंद एअरज जोरि कर गाता॥जो०॥  
मोय करो विद्यामें पूर सुनो गुरु दाता; कदे झूलचूक  
महाराज माफ करो सारी ॥ मा० श्री० ॥ ३ ॥ इति ॥

२ लावणी ॥

वृद्धिचंद स्वामीके चेला, रामचंद शिव अधिकारी;  
किरपा कीजै दर्शन दीजै, तुम दर्शनकी बलिहारी ॥ वृ०  
॥ १ ॥ पूज्य सबलेशना पोता चेला, धन्य धन्य हो  
मुनि बुध धारी; शास्त्रांमांहे छो तुम ज्ञाता, सरस्वती  
कंठां धारी ॥ वृ० ॥ २ ॥ न्याय शास्त्र और व्याकरण

पढ़ि या, तुमसा विरला अणगारी; दीकावाचक तुर्तज-  
 बाबी, पाखंड मत जावे हारी ॥ वृ० ॥ ३ ॥ पंच महा-  
 व्रत दुःकर पाळो, प्रभुनी शिर आज्ञाधारी; मुरधर देशे  
 विचरो मुनिवर, वखांणतणी छिब है भारी ॥ वृ० ॥ ४ ॥  
 मोहनी मूरत सोहनी सूरत, देखतही लागे प्यारी; जष  
 देखां जब पुस्तक हाथे, ज्ञानतणो उद्यम भारी ॥ वृ०  
 ॥ ५ ॥ एकवेर तुम दर्शन कीना, फेर न झूले नर नारी;  
 कुमति नर कोई अवगुण बोले, जिणकी मत जाणो  
 कारी ॥ वृ० ॥ ६ ॥ जिण वस्तीमे आप पधारो, सो  
 वस्ती है धन्यकारी; म्हारे शैरमें क्युं नहीं आवो, छो  
 निरलोभी उपगारी ॥ वृ० ॥ ७ ॥ समत उगणीसे तेरे  
 घरसे सैर सोभत है सुखकारी; मुनालाल ब्राह्मण तुम  
 वंदे, दो दर्शन अल्पाहारी ॥ वृ० ॥ ८ ॥ इति ॥

### ३ लावणी ॥

राम कृपि उत्तम आचारी रे, राम कृपि उत्तम आचा-  
 री, जंगम कल्पवृक्ष इण जगमें, सदगति दातारी ॥ टेर ॥  
 अष्टादश पापनके त्यागी, जती धर्मधारी, कामिनि और  
 कनक नहीं वंछै, बाल ब्रम्हचारी ॥ रा० ॥ १ ॥ दूषण  
 टाळे संजम पाळे, सतरे परकारी; करै तपस्या द्वादश-  
 भेदे, मुनि महाव्रतधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ जल भरिये दरि-  
 याव जिसा मुनि, लहैर छयी भारी; नय परिमाण न्याय  
 करि शोभते, ज्ञान रूप धारी ॥ रा० ॥ ३ ॥ पुनमादिक परि-  
 वार मनोहर, प्रसनचद लारी; चाणी अमृत धारावरसो,  
 प्रभु छो उपगारी ॥ रा० ॥ ४ ॥ मलयार्चदन घसतां सो-  
 रम, देवे अनपारी; म्हारी करणी मूल म पेखो, आप दया

धारी ॥ रा० ॥ ५ ॥ थोढ़ पुरके आढ़ सकलकी, अरजी  
 अवधारी; कृपा करके गुरुजी पधारो, देखूं दीदारी ॥ रा०  
 ॥ ६ ॥ अमर धाम देखणको कामी, आसा मन धारी;  
 सविता ज्ञान उदय कर घटमें मिथ्या तम दारी ॥ रा०  
 ॥ ७ ॥ इति ॥

### ३ असी रुपया लो कलदार ॥

रांम मुनीसैं लागो प्यार, दर्शन दीजो वारंवार; बाल-  
 पणामें संजम आदरयो, दोष बघालीस टालणहार ॥ रा०  
 ॥ १ ॥ कोटे नगरी आप चिराजो, शिष्य प्रसन्नचंद थारी  
 लार ॥ रा० ॥ २ ॥ छ कायारा पीहर तुम छो, थे तपसी  
 मोटा अणगार ॥ रा० ॥ ३ ॥ पंडित ज्ञानी परम सुजां-  
 नी, घणा सूत्रका जाणणहार ॥ रा० ॥ ४ ॥ कुमतिकूं  
 तजकै सुमतिकूं भजकै, तीन गुपतकूं हिवड़े धार ॥ रा०  
 ॥ ५ ॥ मुरधर देशमें किरपा कीजै, वाट जोबे थारी नर  
 अरु नार ॥ रा० ॥ ६ ॥ तुम दर्शनकी बडी चायना, द-  
 र्शन योनी वेग पधार ॥ रा० ॥ ७ ॥ सादूलदासरी एही  
 अरज छै, वेग पधारो म्हांरा सैर मंभार ॥ रा० ॥ ८ ॥  
 समत वगणीसे वरस अड़तीसे, आपाढ मासरी सातम  
 सार ॥ रा० ॥ ९ ॥ इति ॥

---

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

पण्डित रामकर्ण

मोतीचौक जोधपुर मारवाड़

# अथ सूचीपत्रम्.

विषय

पृष्ठांक

## १ चौईसो ३

|                       |   |
|-----------------------|---|
| १ ऋषभ अजितसम्भव       | १ |
| २ श्रीजिनराजमहाराज    | २ |
| ३ म्हेतो चौबीसे जिनवर | २ |

## २ बाणी ६

|                        |   |
|------------------------|---|
| १ चतुर नर सुनिये       | ३ |
| २ सशय छेदनतारनी        | ४ |
| ३ सूत्र हृदय धरो       | ५ |
| ४ सूत्र सुणोनी नित     | ५ |
| ५ अरिहत बाणी बडो पुनीत | ६ |
| ६ गौतम गणार कीयो       | ७ |

## ३ तत्त्व विचार २४ गीत ६

|                              |    |
|------------------------------|----|
| १ षट् द्रव्ये पुद्गल जीव     | ८  |
| २ धर्मास्तिकाये च्यार गुण छै | ९  |
| ३ ज्ञान तो वायो ना उगे रे    | १० |
| ४ सत गुरु मुमनें तारिये      | ११ |
| ५ समय सार सिद्धात            | ११ |
| ६ अपना रूप में रमन           | १२ |



|                        |        |    |
|------------------------|--------|----|
| १२ पंचपदाकी वंदना      | ...    | १७ |
| १३ आयरिय उवज्जाय       | .      | २२ |
| १४ खमत स्वामणा         | !      | २२ |
| १५ चौरासो लाख जीवाजोनि | ....   | २३ |
| १६ समुच्चय पञ्चवखाण    | . .... | २३ |
| १७ पडिकमणा विधि        | .. ... | २४ |

### दशपञ्चवखाण.

|                        |           |    |
|------------------------|-----------|----|
| १ पञ्चवखाण आगार गाथा.. | . . .     | २९ |
| २ नोकारसी              | .         | ३० |
| ३ पोरसी                |           | ३० |
| ४ साहुपोरसी            | .         | ३० |
| ५ पुरीमडू              | ...       | ३० |
| ६ एकाशन                | .         | ३० |
| ७ एकलठाण               | .         | ३१ |
| ८ आयविल                | ..        | ३१ |
| ९ चउविहार उपवास        | .         | ३१ |
| १० तिविहार उपवास       | .         | ३१ |
| ११ चरम पञ्चवखाण ..     | . . .     | ३२ |
| १२ अभिग्रह             | .. .      | ३२ |
| १३ निव्विगई            | .. . .... | ३२ |

| विषय                           | पृष्ठांक |
|--------------------------------|----------|
| ५ स्फटिक सिंहासन उपरै          | २५       |
| ६ महाविदेह अति सुखकार          | २६       |
| ७ प्रभुजी थारी हो              | २६       |
| ८ महाविदेहे विराजता प्रभु      | २७       |
| ९ जबूद्धीपे विदेहमें           | २७       |
| १० तूं प्रभु त्रिभुवन नाथको    | २९       |
| ११ थे छो त्रिभुवन नाथ          | २९       |
| १२ प्रभुजी चौरासीमें हूं       | ३०       |
| १३ शरणे आयो हो                 | "        |
| १४ दर्शन पायो हो               | ३१       |
| १५ महाविदेहमें विराजिया हो     | ३२       |
| १६ प्रभुजीरो काइयन मागा        | "        |
| १७ प्रभू तो म्हारो सर्वज्ञ छै  | ३३       |
| १८ म्हारो सीमधर निनराजसैं      | ३३       |
| १९ अब तो चेतन समग्रिये         | ३४       |
| २० काल अनादि बहिये             | "        |
| २१ मुजनें प्रभुजी तारिये       | ३५       |
| २२ हारे प्रभु कैसे तिराज       | ३६       |
| २३ हरिहि कौशावी तो नगरी        | "        |
| २४ श्रीनाभेय जगनाथ रे          | ३७       |
| २५ जग तारणो हे                 | ३७       |
| २६ वीर प्रभू वीर प्रभू ध्यावसा | ३८       |
| २७ दीजै चार उत्तार प्रभुजी     | ३९       |

### ढाल ५—

|                      |    |
|----------------------|----|
| १ च्यार गत भमियो घणो | ३९ |
|----------------------|----|

## लावणी ४

|                         |    |
|-------------------------|----|
| १ चवदे गुण श्रोताका ..  | १३ |
| २ वक्ताके गुण चवदे ..   | १३ |
| ३ चवदे विद्याके नाम ..  | १४ |
| ४ पंच प्रकार मिथ्यात .. | १४ |

## गाल ८

|                             |    |
|-----------------------------|----|
| १ कहो गुरु जीव अजीव ..      | १५ |
| २ सुपरीक्षा करी ..          | १६ |
| ३ अगीकरो रे स्याद्वादकूं .. | १७ |
| ४ गुण ठाणे धुरसें चाल ..    | १७ |
| ५ गुणठाणो धुर सादि ..       | १८ |
| ६ तुम जाप जपो रे ..         | १९ |
| ७ ध्यान लगासा मन ठैरासा ..  | १९ |
| ८ जीवा अवल वस्यौ ..         | २० |

## दोहा ३

## ढाल ३-

|                           |    |
|---------------------------|----|
| १ प्रथमा ऋद्धि अणिमा ..   | २१ |
| २ भगवत भाखै जग सिधू ..    | २१ |
| ३ श्रीजिन वचनारे रमिये .. | २२ |

## ४ स्तवन ४२

## गीत २७

|                            |    |
|----------------------------|----|
| १ अमे जिन चरणा चित ..      | २२ |
| २ सुखकारी हो जिनजी ..      | २३ |
| ३ प्यारी लागेजी जिनजीकी .. | २४ |
| ४ महाविदेहमें तू वसै ..... | २४ |

| विषय                           | पृष्ठांक |
|--------------------------------|----------|
| ५ स्फटिक सिंहासन उपरें         | २९       |
| ६ महाविदेह अति सुखकार          | २६       |
| ७ प्रभुजी थारी हो              | २६       |
| ८ महाविदेहे विराजता प्रभु      | २७       |
| ९ जत्रूछीपे विदेहमें           | २७       |
| १० तूं प्रभु त्रिभुवन नायको    | २९       |
| ११ ये छो त्रिभुवन नाथ          | २९       |
| १२ प्रभुजी चौरासीमें हू        | ३०       |
| १३ शरणे आयो हो                 | "        |
| १४ दर्शन पायो हो               | ३१       |
| १५ महाविदेहमें विराजिया हो     | ३२       |
| १६ प्रभुजीरो काइयन मागा        | "        |
| १७ प्रभु तो म्हारो सर्वज्ञ छै  | ३३       |
| १८ म्हारो सीमधर जिनराजसैं      | ३३       |
| / १९ अब तो चेतन समग्रिये       | ३४       |
| / २० काल अनादि कहिगये          | "        |
| २१ मुजनें प्रभुजी तारिये       | ३५       |
| २२ हारे प्रभु कैसे तिराज       | ३६       |
| २३ हरिहि कौशाबी तो नगरी        | "        |
| २४ श्रीनाभेय जगनाथ रे          | ३७       |
| २५ जग तारणो हे                 | ३७       |
| २६ वीर प्रभू वीर प्रभू ध्यावसा | ३८       |
| २७ दोनै पार उतार प्रभुजी       | ३९       |

प्रिय

पृष्ठा

२ सीमंधरनी क्या जाणू

४०

३ बालसनेही तू प्रभु

४१

४ म्हारे तौ समरण नौपदजीरो

४१

✓ ५ नाथ कैसे कर्मको फद

४२

## लावणी ३—

✓ १ चंदा तू जइये जिन चरणा

४३

२ मैंने तज दीये घरबार

४४

३ सदा तुम जैन धर्म पाळो

४५

## राग ३—

१ प्रभु म्हारे रही जो

४७

२ ज्यू गावे ज्यूं चोखा

४७

३ मैं दर्शन नही पायो

४७

## गाल १—

१ लगी वुन लगी धुन

४८

## ख्याल १—

१ श्री शांति प्रभूजी

४९

## होरी १—

१ पायो शरन तिहारो रे

४९

## आरतो १—

१ जय जय उकारा

५०

## ५ स्वाध्याय ४१

## गीत २१—

✓ १ गावो गावो रे पूज्य

५१

२ अरिहत देवने ओळख्या

५१

३ नास खमणरे पारणे

५२



| विषय                    | पृष्ठांक |
|-------------------------|----------|
| २० बहुला बोले खारा बोले | १४०      |
| २१ थोडा बोले बोवे बहुला | १४०      |
| २२ परम मत्र नवकार       | १४०      |
| २३ जहा देखो जहा मुतलब   | १४१      |

### ढाल १३

|                              |     |
|------------------------------|-----|
| १ वार वार सतगुरु समझावै      | १४१ |
| दोहा ५                       | १४१ |
| २ प्रमाद माहे वैस जावे       | १४२ |
| ३ क्या परकू परमोद लगावै      | १४३ |
| ४ कोइयक श्रावक नाम धरावै     | १४४ |
| ५ विना विचारी तू क्यूं बोले  | १४५ |
| ६ बोल रे जगवासी जिवडा        | १४६ |
| ७ दश दूषण तो मनके            | १४६ |
| ८ जीवा एक चित्तकर            | १४७ |
| ९ नीठ नीठ नरनो भव            | १४७ |
| १० प्यारे मेरे एक कथन        | १४८ |
| ११ जीवन धन पाउणा             | १४८ |
| ११ दिन जाते हैं नहीं आते हैं | १४९ |
| १३ आखर तेरे काम नहीं आई      | १४९ |

### राग ३

|                          |     |
|--------------------------|-----|
| १ लेले क्यू नी खरचो रे   | १५० |
| २ जीवा तोर्ने मोह रुळावे | १५० |
| ३ परकी हिस्सा लागे तोय   | १५१ |

### होरी ३

|                   |     |
|-------------------|-----|
| १ झूठा बोलो वचनको | १५२ |
|-------------------|-----|

| विषय                           | पृष्ठांक |
|--------------------------------|----------|
| २ किम भूलो रे चिदानंद          | १५३      |
| ३ ज्ञान दीपक जोती जगी          | १५३      |
| रेखतो ?                        |          |
| १ किधर गये पापमें मन्ना ... .. | १५३      |
| गजल ?                          |          |
| १ शास्त्र प्रमाणे चौडे बोलू .. | १५४      |
| दुष्ट स्वभाव ख्याल ?           |          |
| १ पापी जीव आवै ....            | १५६      |

### ७ आचार १४

|                           |     |
|---------------------------|-----|
| दोहा ३                    | १५७ |
| ढाल ?                     |     |
| १ तटनी तटे वृक्ष खडो है   | १५७ |
| उद ७                      | १६० |
| गीत २                     |     |
| १ साधजी बोलोनी बोल विचार  | १६१ |
| २ साधजी सीखोनी भाखा विचार | १६१ |
| लावणी ?                   |     |
| १ अष्टादश तौ दोष ही टाळो  | १६२ |

### ८ चरचा ४०

विपरीत प्ररूपक तथा तेना आचरणनी.

#### लावणी ?

|                            |     |
|----------------------------|-----|
| १ सदा मुज मूत्र लगै प्यारा | १६३ |
|----------------------------|-----|



## २ छाछनी चरचा

|         |      |    |     |
|---------|------|----|-----|
| सवैया ३ | .... | .. | १६५ |
|---------|------|----|-----|

## ३ थानकरी चरचा

|         |    |     |     |
|---------|----|-----|-----|
| दोहा १५ | .. | ... | १६५ |
|---------|----|-----|-----|

## ढाल १

|                       |    |    |     |
|-----------------------|----|----|-----|
| १ दशवैकालिक सूत्रमाही | .. | .. | १६७ |
|-----------------------|----|----|-----|

## ४ तेरेपंधियांकी चरचा

|         |   |   |     |
|---------|---|---|-----|
| सवैया ९ | . | . | १६९ |
|---------|---|---|-----|

## लावणी २

|                           |   |   |     |
|---------------------------|---|---|-----|
| १ क्या हमसे तू करेगा चरचा | . | . | १७१ |
|---------------------------|---|---|-----|

|                         |   |     |     |
|-------------------------|---|-----|-----|
| २ चउबिह सधनें साता दीजे | . | ... | १७४ |
|-------------------------|---|-----|-----|

## ढाल १

|                         |   |    |     |
|-------------------------|---|----|-----|
| १ क्यू दया दान उथापो रे | . | .. | १७५ |
|-------------------------|---|----|-----|

## गीत १

|                        |    |     |
|------------------------|----|-----|
| १ साधूटाळी दान सर्वमें | .. | १७६ |
|------------------------|----|-----|

## गाल १

|                         |  |     |
|-------------------------|--|-----|
| १ वात सुणोरे एक ज्ञानकी |  | १७७ |
|-------------------------|--|-----|

## ५ कालादिकरी चरचा

|        |    |         |
|--------|----|---------|
| गाहा १ | .. | ... १७७ |
|--------|----|---------|

## ढाल १

|                           |  |     |
|---------------------------|--|-----|
| १ कालवादी तो कालकों मानें |  | १७८ |
|---------------------------|--|-----|

## ६ पद्मतनी चरचा

## गीत

|                          |      |    |         |
|--------------------------|------|----|---------|
| १ चलना कदर नहीं मानी.... | .... | .. | ... १७९ |
|--------------------------|------|----|---------|

## ७ मंदिरपंथीकी चरचा

सवैया १ . . . १७९

## लावणी १

१ जीव हणीनें धर्म प्रलपै .. १८०

## ८ निश्चय व्यवहारकी चरचा

## गाळ २

१ एही मत सारा सिरदार . . . १८०

१ सब शास्त्रनको एही सार . . . १८१

## ९ नेमनाथ चरित्र ४८

## सिलोको १

१ सद्गुरु कृपा करजोजी ... १८४

## होरी १

१ सूरज बारमें सूरज पूजू . . . १८४

## गीत २४

१ जिनजी थारे दर्शनरी .. १८५

२ देखो मेरी सहियारे हे १८५

३ आ नहीं जाणे हो . १८६

४ जादवका नेमी लाला १८६

५ जादवका आठ भवारी पीतडी .. १८७

६ हारे लाल सखी कहै . . . १८८

७ सखियां आठ भवारी पीतडी १८९

८ सरसत सारद वीनवू .. १९०

९ तुम सुनो महाराज . . . १९०

१० तुम जावोजी सहेली ... १९१

११ लावो लावो नेमजी मनाय .. १९२

## विषय

पृष्ठांक

|                              |     |
|------------------------------|-----|
| १२ हे द्वारापुरीसू जानटली    | १९३ |
| १३ सहिया कहै राजुल सुणो      | १९३ |
| १४ श्रीनेम प्रभुजी वोको एक   | १९४ |
| १५ प्रभु थे सुणजोजी राज      | १९५ |
| १६ प्रभुजी थाने कपटो कहू     | १९६ |
| १७ फिर गये जादव फिर गये      | १९६ |
| १८ नेम गहारी अरजी सुन        | १९७ |
| १९ हाजी नेमजी बाबीसमा        | १९८ |
| २० हू तोने पूछूं सुणरी मेरी  | १९९ |
| २१ हू तोने कूछूं सुणरी मेरी  | १९९ |
| २२ हाथी हेदे छानै            | २०० |
| २३ हूं तोने पूछूं वात सजनी   | २०० |
| २४ सखिया हू तोने पूछूं वारता | २०१ |

## लावणी ६

|                           |     |
|---------------------------|-----|
| १ प्राणनाथ ना मिल्यो      | २०२ |
| २ मै जाती हू गिरनार       | २०३ |
| ३ तुम चलो सखी कुठ जेज     | २०३ |
| ४ अध परनी मुजकू छोडी      | २०४ |
| ५ सखि रहा नही कछू छाना    | २०५ |
| ६ प्रभु नेमनाथ तज गये साथ | २०६ |

## वारामास्यो ४

|                           |     |
|---------------------------|-----|
| १ मास श्रावन लग्यो डरावन  | २०७ |
| २ सावण मासमें लूवा वरसे   | २१० |
| ३ दयाम क्यू मुजकू छोडीजी  | २११ |
| ४ कहेरी सखी नेम कब घर आसी | २१४ |

## चौमासो ?

|                       |        |     |
|-----------------------|--------|-----|
| १ जादवजी चौमासो निबधर | .. . . | २१५ |
|-----------------------|--------|-----|

## गाळ ५

|                                   |   |     |
|-----------------------------------|---|-----|
| १ को सखी किसारे मोरतिये           | . | २१५ |
| २ हे म्हारो नेम कुमर दिल्लें .... |   | २१६ |
| ३ साखिया क्यू आया क्यू फिर        | . | २१७ |
| ४ काळो तो बाँद किसी कामरो         | . | २१७ |
| ५ धारी सावरीसी सूरत देख           | . | २१८ |

## ढाळ १

|                             |   |     |
|-----------------------------|---|-----|
| १ वर पायो हे सहीयर वड भागसू | . | २१९ |
|-----------------------------|---|-----|

## ख्याल २

|                        |  |     |
|------------------------|--|-----|
| १ वारिया वारिया वारिया |  | २१९ |
| २ चालो बाईजी आपा देखवा |  | २२० |

## राग ३

|                        |    |     |
|------------------------|----|-----|
| १ मोमाई व्याय मनावे रे | .. | २२० |
| २ भाई तू लोग हंसावे रे |    | २२१ |
| ३ नेमजी केम गये छिटकाय |    | २२१ |

## १० रामचरित २२

|                                 |       |     |
|---------------------------------|-------|-----|
| १ सहस्र विद्या त्रिखंडको भोक्ता |       | २२२ |
| २ नगरी रामकी यातो देवता कीधी    | .     | २२३ |
| दोहा १ .                        |       | २२३ |
| ३ कोई नर मरियो, शिरधर परियो     | .     | २२३ |
| ४ वीरा हू आई तुज पास हो         |       | २२४ |
| ५ सुणजो महाराजा वचन             | .. .. | २२५ |

| विषय                              | पृष्ठांक |
|-----------------------------------|----------|
| दोहा ९                            | २२७      |
| ६ सत्र मुनिये लिठमन               | २२७      |
| दोहा १                            | २२८      |
| ७ अमृतकावती नगरी भली              | २२८      |
| दोहा २                            | २२८      |
| ८ वेणातट एक ग्राम छै रे           | २२९      |
| दोहा १                            | २३०      |
| ९ मत करो हठ शठ जेमरे              | २३०      |
| १० हूं तोने नही पित्राणूं रे वीरा | २३०      |
| दोहा ४                            | २३१      |
| ११ मदोदरी कहै सुणो जमाई           | २३१      |
| १२ कहै मदोदरी बात नाथ             | २३२      |
| १३ हो पिठ मतवाला                  | २३२      |
| १४ थे मानो जी सीख सुहामणी         | २३३      |
| १५ थे किम भूला राजवी              | २३४      |
| १६ अब हूं नही रहू रे अटक्यो       | २३४      |
| १७ नहीं मान्यो विभीषण बोल         | २३५      |
| दोहा २                            | २३६      |
| १८ किम धारयो विन पौछ              | २३६      |
| १९ विभीषणकी बात सुणो              | २३६      |
| २० विभीषणकी अरज सुनीजे            | २३८      |
| २१ गढ लका मांयने आई               | २३८      |
| दोहा १                            | २३९      |
| २२ अक्षपुर नामा एक पुरीहो         | २३९      |

## ११ ढाल सागर ७

|                            |     |
|----------------------------|-----|
| दोहा ३                     | २४१ |
| १ देवरजी भल आविया          | २४१ |
| २ प्यारो नदन लागै जगत नीको | २४२ |
| ३ काळी नागनै नाथने हो      | २४३ |
| ४ आयो आयोरे मामनै नारद     | २४४ |
| ५ भूवाजी कृष्ण मिलावे रे   | २४५ |
| ६ भूवाजी अब किम करसू हो    | २४६ |
| ७ भूडा घराकी जई भूडी       | २४६ |

## पांडव चरित्र ३

|                          |     |
|--------------------------|-----|
| १ च्यारके उत्तर सुन लैना | २४७ |
| २ पत्तर आयो मानो मानोजी  | २४८ |
| ३ मियवद आय मिल्यो वनमें  | २४९ |

## १२ व्याख्यान ३८

## १ विजयाकुमारनो चौढालियो ५

|                          |     |
|--------------------------|-----|
| दोहा ७                   | २४९ |
| १ जवू हपिना भरतमें       | २५० |
| दोहा ३                   | २५१ |
| २ सीले शृगार सजी भला     | २५१ |
| दोहा २                   | २५२ |
| ३ तिण अवसर तिण काले      | २५२ |
| दोहा ३                   | २५३ |
| ४ जिनदास मुनिवर वादने हो | २५८ |
| ५ शीलवत प्रमुनी गादी     | २५९ |

विषय.

पृष्ठांक.

## २ अखाड श्रुत २

|                               |     |     |     |
|-------------------------------|-----|-----|-----|
| दोहा २, ..                    | ... | ... | २५५ |
| १ सुण महासती या लखणासूं       | .   | ..  | २५६ |
| २ सुणो मुनिवरजी मत देखो परदोष | ..  | ... | २५७ |

## ३ दिवाळी १

|                      |   |     |     |     |
|----------------------|---|-----|-----|-----|
| १ दिवाळीकी उत्तम रात | . | ... | ... | २५८ |
|----------------------|---|-----|-----|-----|

## ४ डोसी १

|                          |   |    |     |     |
|--------------------------|---|----|-----|-----|
| दोहा ३                   | . | .. | ... | २५८ |
| १ करिये धर्म शुद्ध चालसू | . | .. | ... | २५९ |

## ५ डोसो १

|                  |   |      |     |     |
|------------------|---|------|-----|-----|
| १ देखो गत ससारनी | . | .... | ... | २६० |
|------------------|---|------|-----|-----|

## ६ द्रौपदी १

|                      |     |  |     |
|----------------------|-----|--|-----|
| १ अहो नरवरजी हुकमकरो | ... |  | २६१ |
|----------------------|-----|--|-----|

## ७ सुभद्रा ३

|                           |   |  |     |
|---------------------------|---|--|-----|
| १ जैन धर्म सबधी सिरे      |   |  | २६२ |
| २ ठोडो छोडो हो भोजाई      |   |  | २६२ |
| ३ मर्ध पायो हे नणदल भावसू | . |  | २६३ |

## ८ शालिभद्र ६

|                               |      |   |     |
|-------------------------------|------|---|-----|
| १ वालम मोरा आज्ञा किण परे     |      |   | २६३ |
| २ नदन मोरा आज्ञा किण विध      |      |   | २६४ |
| ३ सेठाणी नही खुले मालकी गाठ   |      |   | २६५ |
| ४ लेस्या लेस्याजी वौपारी थारे |      |   | २६५ |
| ५ बोल्यो हे बोल्यो ओ राजा     | .    |   | २६६ |
| ६ सगम मुनिजीने दान दीयो के    | .... | . | २६६ |

विषय

पृष्ठांक

## ९ सत्यघोष ?

१ धरी चीजकूँ लोभी नटही ... .. २६७

## १० चन्दनवाला ?

दोहा ३ .. २६७

१ घीरा अलगा २, रहीजै .. २६८

## ११ सुलसा रेवती संवाद ?

१ म्हे म्हारी समकित आदरी ... .. २६९

## १२ जयंती ?

१ एतो चवदै सुपन देखवियाजी . . . २६९

## १३ अम निवर्तन २

१ गत वस्तुका सोच कबी नहीं करना २७१

२ हाहे ओतो भरम मिटै दिन . . . २७२

## १४ चेलणा २

१ जैन निंदा तुम काई करो २७२

२ राणी भाखै मुनिराजसँ . . . २७३

## १५ अरणक ?

१ धन भी छोड़ू घर भी छोड़ू . . . २७३

## १६ विद्याविलास ?

सवैया १ २७४

१ मोनै सखि मिलियो तुज भरतार . . . २७४

## १७ चद चरित्र, २

१ सखि मेरा पिठजीनिं राखो । २७५

२ कुर्कट प्रान पियारा .. २७६

## १८ पंचक सेठ ?

१ सुपातर दान ज रे दीनो .. २७७



## १९ आर्द्रकुमार २

|                         |     |
|-------------------------|-----|
| १ क्रोध लोभका ताता रे . | २७८ |
| २ राग द्वेषका ताता रे . | २७८ |

## २० मुज भोज १

|                              |     |
|------------------------------|-----|
| दोहा ३ .                     | २७९ |
| १ मेरा दीया मुंजकू राज भोज . | २७९ |

## २१ ऐवती सुकुमाल १

|                            |     |
|----------------------------|-----|
| १ ऐवती सुकुमाल मुनीश्वर .. | २८० |
|----------------------------|-----|

## २२ पार्श्वनाथ कमठ संवाद १

|                            |     |
|----------------------------|-----|
| १ काशी देशमे नगर वणारसी .. | २८१ |
|----------------------------|-----|

इति

---

श्रीः॥

## अथ नमस्कार ॥

णमो अरिहंताणं ( १ ) णमो सिद्धाणं ( २ ) णमो  
आयुरियाणं ( ३ ) णमो उवज्झार्याणं ( ४ ) णमो लोये  
व्वसाहूणं ( ५ ) एसो पंच णमुक्कारो ( ६ ) सव्वपावप्प  
णसणो ( ७ ) मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं ( ८ ) ॥  
इति नमस्कार समाप्त ॥

( पद ९ सपदा ८ गुरु अक्षर ७ लघु अक्षर ६१ सर्व  
अक्षर ६८ )

## अथ तिरुखुत्तोकी पाटी ॥

तिरुखुत्तो आयाहिण पयाहिण, वदामि, णमसामि,  
उक्कारेमि, समाणेमि, कल्लाण मंगलं देवय चेइय पज्जु-  
यासामि मत्थएण वंदामि ॥

इति तिरुखुत्तोकी पाटी समाप्ता ॥

## अथ इरियावहियाएकी पाटी ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहिय पडिक्क-  
मामि इच्छ

इच्छामि, पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, चिराहणाए ( १ )  
गमणागमणे ( २ ) पाणक्कमणे ( ३ ) धीयक्कमणे, हरिय-  
क्कमणे ( ४ ) ओसाउत्तिगपणागदगमटीमक्कटासंताणास  
क्कमणे ( ५ ) जे मे जीवा चिराहिया ( ६ ) एगिंदियां,  
वेइंदियां, ते इंदियां, चउरिंदियां, पंचिंदियां ( ७ ) अभि-

हय्यां, वत्तियां, लेसियां, संघाड्यां, संघट्टियां, परिया-  
वियां, किलामियां, उद्धवियां, ठाणाड ठाणं संकामियां,  
जीवियाड ववरोवियां, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ( ७ ) ॥

इति इरियावहियाएकीपाटी समाप्ता ॥

अथ तस्स उत्तरीकी पाटी ॥

तस्स उत्तरीकरणेण पायच्छित्तकरणेण, विसोहीकर-  
णेण, विसल्लीकरणेण, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए,  
ठामि काउस्सगं ( ८ )

( दोनों सूत्रों के-पद ३२ संपदा ८ गुरु अक्षर ३४  
लघु अक्षर १७५ सर्व अक्षर १९९ )

अन्नत्थ जसंसिएण, नीसंसिएण, खांसिएणं, छीएणं,  
जंभाईएणं, उड्डुएणं, वायनिसंगेणं भंमलिए, पित्तमुं-  
च्छाए ( १ ) सुहुमेहि अगसंचालेहि सुहुमेहि खेलसंचा-  
लेहि, सुहुमेहि दि'डिसंचालेहि ( २ ) एवमाइएहि आंगा-  
रेहि, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सगो ( ३ )  
जाव, अरिहंताण भगवंताणं, णसुक्कारेणं, न पारेमि  
( ४ ) ताव, कायं, ठाणेणं, मोणेणं, भाणेणं, अप्पाणं,  
वोसिरामि ॥ ५ ॥

इति तस्स उत्तरीकी पाटी समाप्ता ॥

( पद २८ संपदा ५ गुरु १३ लघु १२७ सर्व अक्षर १४० )

३ अथ लोगस्सकी पाटी ॥

अनुष्टुप् वृत्त ॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मत्तित्थयरे जिणे । अरिहते कि-  
त्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ [ आर्यावृत्त उसभ-  
मजियं २ च वंदे, सभव ३ मभिण ४ च सुमह ५ च  
पउमप्पहं ६ सुपास ७, जिणं च चंदप्पहं ८ वदे ॥ २ ।

सुविहिं च पुष्पदंतं ९, सीअल १० सिज्जंस ११ वांसु  
 पुज्जं १२ च । विमल १३ मेणत १४ च जिण, धम्मं १५ स'ति  
 १६ च वदामि ॥ ३ ॥ कुयु १७ अरं १८ च महि १९,  
 वंदे सुणिसुव्वयं २० नमिजिणं २१ च । वंदामि रिद्धिनेमि  
 २२, पासं २३ तह वेद्धमाणं २४ च ॥ ४ ॥ एवं मए अंभि-  
 थुआ, विहुयरयर्मला पहीणजरमरणा । चडवीसपि  
 जिणेवरा, तित्थयरां मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिर्यं वंदिय  
 महिया, जे एं लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुंग बोहि-  
 लाभं, समाहिवर सुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चदेसु निम्मलयरा,  
 आइचेसु अहिय पयासयरा । सागरवरगंभीरां, सिद्धा  
 सिद्धिं मम दिसतु ॥ ७ ॥

इति चतुर्विंशति स्तवनामक लोगस्सकी पाटी समाप्ता ॥

( पद २८ संपदा २८ शुरु २७ लघु २२९ सर्व अक्षर २५६ )

### ४ अथ सामायिक लेनेकी पाटी ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोग पच्चक्खामि, जाव  
 नियम पज्जुयासामि, दुविह तिविहेण, न करेमि, नरार-  
 बेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि,  
 निदामि, गरिहामि, अप्पाण वोसिरामि ॥

इति सामायिक लेनेकी पाटी समाप्ता ॥

### ५ अथ शक्रस्तवनामक नमुत्थुणंकी पाटी ॥

नमोत्थुणं, अरिहंताण भगवताण ( १ ) आइंगराण,  
 तित्थंगराणं, सय संबुद्धाण ( २ ) पुरिसुत्तमाण, पुरिसं-  
 सीहाण, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवरगधं हत्थीण ( ३ )  
 लोगुत्तमाणं, लोगनोहाणं, लोगहियाणं, लोगपंडवाण, लो-  
 गपज्जोयगराणं, ( ४ ) अभयदेयाण, चक्खुदर्याण, मग्ग-

दयाणं, सरणदयाणं, ( जीवदयाणं ) बोहिदयाणं ( ५ )  
 धम्मदयाण, धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं, धम्मसार-  
 हीणं, धम्मवरचाउरंतचक्खवटीणं ( ६ ) ( दीवोताणं सर-  
 णगइपइद्वा ) अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्ठउ-  
 माणं ( ७ ) जिणोणं जावयाणं, तिअ्राणं तारयाणं, बुद्धोणं  
 चोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं ( ८ ) सव्वन्नूणं सव्वदरि-  
 सीणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मव्वायाह मपुण-  
 रावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जि-  
 णोणं जिअभयाणं ( ९ ) ॥

इति शक्रस्तवनी पाटी समाप्ता ॥

( पद ३३ संपत् ९ गुरु २९ लघु २३३ सर्व अक्षर २६२॥ )  
 “ जीवदयाणं, दीवोताणं सरणगइपइद्वा ” इसको शा-  
 मिल ले तौ गुरु ३० लघु २४९ सर्व अक्षर २७९ होते हैं ॥

५ अथ सामायिक पारनेकी पाटी ॥

नवमो सामायिक व्रतरे विपै जे कोई अतिचार लागो  
 होय तो आलोड ॥ मन, वचन, कायारा जो पाडुवे ध्यान  
 प्रवर्ताया होय ३ सामायिकमें संभालना नहीं कीधी होय  
 ४ अणपूगी पाडी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ दस  
 मनरा, दस वचनरा, बारें कायारा, बत्तीसं दोषांमायलो  
 कोई दोष लागो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ सा-  
 मायिकमें स्त्री कथा, भक्त कथा, देशकथा, राजकथा,  
 ए चार कथा मांयली कोई विकथा कीधी होय तो  
 तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सामायिक पाडने की पाटी समाप्ता ॥

सामायिक पाड्या पछे एवुं पाठ कहवुं—

सामायिक समकाएणं, फासियं, पालियं, सोहियं,

तीरियं, किञ्चित्थं, आराहियं, आणाए अणुपालियं, न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सामायिककी छ पाटियां समाप्त ॥

अथ सामायिक लेने की विधि ॥

असणोट छोट, दो हात जोड, श्रीगुरुदेवकी आज्ञा मांग, “इरियावही” की पाटी “जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं” पर्यंत भणवी ॥ पछे “तस्सुत्तरी” की पाटी भणने काउस्सग्ग करवो काउस्सग्गमे “इरियावही” की पाटी “जीविया ओ ववरोविया” पर्यंत मनमेंही गुणणी “नमो अरिहंताण” मनमें कहीने काउस्सग्ग पाडवो पछे “लोगस्स” की पाटी कहवी ॥ पछे “करेमि भंते” की पाटी “जाव नियम” सुधी कहीने आगल मुहूर्त्त घालणा हुवे तिके घालणा ॥ पछे “पञ्जुवासामि” थी ले “अप्पाण वोसिरामि” सुधी पाठ कहवुं ॥ पछे डावो गोडो ऊभो राखी दोनुं हाथ जोडी “नमुत्थुण” नी पाटी दोय बार कहवी ॥ दूजा नमुत्थुण रे अत्ते “ठाणं सपाविडं कामस्स णं णमो जिणाणं जिअभयाणं” एम कहवु ॥ पछे आसण माये वेसीनें, सामायिक कालमें “नमोकार, तथा बोलचाल” गुणणा, पढणा ॥

इति सामायिक लेनेकी विधि समाप्ता ॥

अथ सामायिक पारवाकी विधि ॥

सामायिक पाडती वगत “इरियावही” की पाटी और “तस्स उत्तरी” की पाटी कही काउस्सग्ग करवो । काउस्सग्गमे “लोगस्स” की पाटी मनमें कहवी “नमो अरि-

हंताणं” कही काउस्सग्ग पारवो ॥ फेर “लोगस्स” प्र-  
गट कहणो ॥ दोय नमुत्थुणं पूर्ववत् कहणा ॥ पछे नवमो  
सामायिक पारवाकी पाटी “न भवइ तस्स मिच्छामि  
दुक्कडं” सुधी कहवी ॥ अंतमें तीन नवकार कही ऊठवुं ॥

इति सामायिक पारवाकी विधि समाप्ता ॥

## अथ प्रतिक्रमण ॥

अथ इच्छामिणं भंतेकी पाटी ॥

इच्छामिणं भंते तुब्भेहि अभणुणायसमाणे देवसियं  
पडिक्कमणं ठाएमि, देवसियं णाण दंसण चरित्ताचरित्त  
तप अतिचार चित्तवणार्थ करेमि काउस्सग्गं ॥

इति इच्छामिणं भंतेकी पाटी समाप्ता ॥

अथ इच्छामि ठामिकी पाटी ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसियो अइयारो  
कओ, काइओ, वाइओ, माणासिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो  
अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचित्तिओ अणायारो  
अणिच्छियव्वो, असावग पाउग्गो नाणे तह दंसणे चरि-  
त्ताचरित्ते सुण सामाए तिन्हं गुत्तीणं चउन्हं कसायाण  
पंचन्हमणु व्वयाण तिन्हं गुणव्वयाणं चउन्हं सिक्खा-  
वयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खड्डिय जं विरा-  
हियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति इच्छामि ठामिकी पाटी समाप्ता ॥

अथ आगमे तिविहे की पाटी ॥

आगमे तिविहे पणत्ते, त जहा, सुत्तागमे, अत्थागमे  
तदुभयागमे; एह्वा श्रीज्ञानके विषे जे कोई अतिचार

लागो होय ते आलोड; जं चाढ्द १ वचामेलियं २ हीण  
 कखरं ३ अचकखर ४ पयहीणं ५ विणयहीणं ६ जोगही-  
 णं, ७ घोसहीणं ८ सुदुदुदिशं ९ दुदुदुपडिच्छियं १० अका-  
 ले कओ सज्जाओ ११ काले न कओ सज्जाओ १२  
 असज्जाए सज्जाइयं १३ सज्जाये न सज्जायं १४  
 भणतां गुणतां चितवतां ने विचारतां ज्ञान अने ज्ञान-  
 यतकी आशातना कीनी होय तो तस्स मिच्छामि  
 दुक्कडं ॥

इति आगमं तिथिहे की पाटी समाप्ता

**अथ दंसण श्रीसमकित की पाटी ॥**

**आर्यावृत्तम् ॥**

अरिहतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।  
 जिणपण्णत्तं तत्तं, ए सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥ परमत्थ  
 संथवो वा, सुदिहपरमत्थसेवणा वावि । वावन्नकुदंसण-  
 वज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २ ॥ एवा श्री समकितके  
 विपै जे कोई अतिच्यार लागो हुवे तौ आलोडं । जिन  
 वचनमे शका ग्राणी होय १ परदर्शनरी बांछा कीधी  
 होय २ फल प्रति संदेह आण्यो होय ३ पर पाखंडीरी  
 प्रशंसा कीधी होय ४ पर पाखंडीरो सस्तव परिचय  
 कीधो होय ५ तौ म्हारा समकित रूप रत्नरे विपै मिथ्या-  
 त्व रूप रज, मैल, खेह लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति दमण श्रीसमकितकी पाटी समाप्ता ॥

**अथ वारे व्रत और उनके अतिचार ॥**

१ पहिलो अणुव्रत—थूलाओ पाणाइवायाओ, चिरम-  
 णं, ग्रस जीव, घेइदिय, ते इदिय, चउरिंदिय, पचेंदिय,



विन अपराधे जाणी प्रीछी आकुटी संकल्पी हणवारी बुद्धि करीनें हण हणावणका पचक्खाण जायज्जीवाण दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा॥ [एवा पहिला थूल प्राणातिपात विरमण व्रतके विपै जे कोई अतिचार लागो होवे तौ आलोउं । रीस वशै गाढा बंधण बांध्या होय. गाढा भाव घाल्या होय, चामना छेद कीधा होय, अति भार घाल्या होय, भात पांणीना विच्छेद कीधा होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

२ दूजो अणुव्रत-थूलाओ मोसावायाओ विरमणं कन्नालियं, गोवालियं, भोमालियं, थापणमोसो, सूंक ले कूडी साख, इत्यादिक मोटका झूठ बोलणका पचक्खाण जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमिमनसा वयसा कायसा॥ [एवा दूजा थूल मृपावाद विरमण व्रतके विपै जे कोई अतिचार लागो होय तौ आलोउं । सहसात्कारे किणी प्रति कूडो आल दीधो होय ? रह छांनी बात प्रगट कीधी होय २ पोतानी स्त्रीका मर्म प्रकाश्या होय ३ मृपा उपदेश दीधा होय ४ कूड़ा लेख लिख्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ २ ॥

३ तीजो अणुव्रत-थूलाओ अदिन्नादाणाओ विरमणं, खातर खिणी, गांठ छोडी, ताळो पर कुंची, वाट पाडी, पडी वस्त मोटकी भणियां सेती जांणीने लेवणका पचक्खाण ॥ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा ॥ [एवा तीजा थूल अदत्तादान विरमणा व्रतके विपै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं । चोराई वस्तु लीधी होय ? चोरनें साभ दीधो होय २ राज्य विरुद्ध कारज कीधो होय ३

कूड़ा तोला कूड़ा मापा कीधा होय ४ वस्तमें भेल समेल  
सखरी दिखाय नखरी आपी होय ५ तस्स मिच्छामि  
दुक्कड ॥ ३ ॥

४ चौथो अणुव्रत-थूलाओ मेहुणाओ विरमणं, पोता-  
री स्त्री उपरांत मैथुन सेवणका पचक्खाण । जावज्जीवाए  
देवता संबंधी दुविहं तिविहेणं न करोमि न कारवेमि म-  
नसा वयसा कायसा, मिनख तिर्जच संबंधी इकविहं इ-  
कविहेणं न करोमि कायसा ॥ [एवा चौथा थूल स्वदारा  
संतोप विरमण व्रतके विपै जे कोई अतिचार लागो होय  
तो आलोडं । इत्तर थोडा काल राखीसूं गमन कीधा होय  
१ अपगृहीसूं गमन कीधा होय २ अनंग क्रीडा कीधी  
होय ३ पराया व्याव नातरा जोडिया होय ४ काम भो-  
ग तीव्र अभिलाषा सेविया होय ५ तस्स मिच्छामि  
दुक्कड ॥ ४ ॥

५ पांचवां अणुव्रत-थूलाओ परिग्गहाओ विरमणं,  
खेत घरको, रूपा सोनाको, धन धान्यको, दुपद चौपद-  
को, घर विखराको यथा परिमाण कीधो छै ते उपरांत  
आपको करी परिग्रह राखणका पचक्खाण जावज्जीवाए  
एकविहं तिविहेणं न करोमि मणसा वयसा कायसा ॥  
[एवा पांचवां थूल परिग्रह विरमण व्रतके विपै जे को-  
ई अतिचार लागो होय तो आलोडं । खेत घरको १ रू-  
पा सोनाको २ धन धान्यको ३ दुपद चौपदको ४ घर  
विखराको ५ यथा परिमाण कीधो छै ते अतिक्रम्यो होय  
तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ५ ॥

६ छठो दिशिविरमण व्रत-ऊची नीची तिरछी दि-  
शाको यथा परिमाण कीधो छै ते उपरांत स्वइच्छाये जाई-

ने पांच आश्रव द्वार सेवणका पचक्खाण, जावज्जीवाए  
एकविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥  
[एवा छट्ठा दिशिविरमण व्रतके विपै जे कोई अतिचार  
लागो होय तो आलोड ॥ ऊंची नीची तिरछी दिशको  
यथा परिमाण कीधो छै ते अतिक्रम्यो होय ३ एक दिश  
घटाई होय एक दिश बधाई होय ४ संदेह पड़ियां पंथ  
आगे चाल्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ६ ॥

७ सातमो उपभोग परिभोग विरमण व्रत-उल्लण-  
याविहं १ दत्तणविहं २ फलविहं ३ अबभंगणविहं ४ उव-  
ट्टणविहं ५ मज्जणविहं ६ वत्थविहं ७ विलेवणविहं ८  
पुप्फविहं ९ आभरणाविहं १० धूपविहं ११ पेजपिहं १२  
भक्खणविहं १३ ओदनविहं १४ सूपविहं १५ विगय-  
विहं १६ सागविहं १७ माहुरविहं १८ जीमणविहं  
१९ पाणीविहं २० सुखवासविहं २१ वाहनविहं  
२२ सयणविहं २३ पन्निविहं २४ सचित्तविहं २५  
द्रव्यविहं २६ इत्यादिक छार्डस बोलांकी मरजाद कीधी  
छै ते उपरांत उपभोग परिभोग भोगणका पचक्खाण  
जावज्जीवाए एगविहं तिविहेणं न करेमिमणसा वयसा  
कायसा ॥ [ एवा सातवां उपभोग परिभोग विरमण  
व्रतके विपै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोड ।  
पचक्खाण उपरांत सचित्तको आहार कीधो होय १  
सचित्त प्रतिवद्धको आहार कीधो होय २ अपक्को  
आहार कीधो होय ३ दुपक्को आहार कीधो होय ४  
तुच्छ ओपधि भक्खण कीधा होय; थोडो खाय घणो  
नारियो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ए भोजनधकी  
कह्या हिचे कर्म धकी पनरे कर्मादान आवकने जाणवा

जोग छै पिण आदरवा जोग नथी तं जहा, ते कहै छै.  
 इगालकम्मे १ वणकम्मे २ साडीकम्मे ३ भाडीकम्मे ४  
 फोडीकम्मे ५ दंतवाणिज्जे ६ लक्खवाणिज्जे ७ रसवाणिज्जे  
 ८ केसवाणिज्जे ९ विसवाणिज्जे १० जंतपिल्लणकम्मे ११  
 निहंछणकम्मे १२ दवग्गिदावणया १३ सर दह तलाय  
 परिसोसणया १४ असईजणपोस णया १५ तस्स मि-  
 च्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

८ आठमो अनर्थ दंड विरमण व्रत-चउव्विहे पणत्ते  
 त जहा, अवज्झाणाचरियं पमायाचरिय, हिंसपयाणं,  
 पावकम्मोवएसं, एवा अनर्थ दंड सेवणरा पच्चक्खाण,  
 जावजीवाण दुविह तिविहेणं न करेमि न कारवेमि म-  
 णसा वयसा कायसा ॥ [एवा आठवां अनर्थदंड विरमण  
 व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोड । फद  
 र्पकी कथा कीधी होय १ भड कुचेष्टा कीधी होय २  
 सुखर वचन बोल्या होय ३ अधिकरण जोडी मूक्या होय  
 ४ उपभोग परिभोग अधिका वधारथा होय ५ तस्स  
 मिच्छामि दुक्कडं ॥ ८ ॥

९ नवमो सामायिक व्रत-सायज्जं जोग पच्चक्खामि,  
 जाय नियम पज्जुवासामि, दुविह तिविहेणं न करेमि  
 न कारवेमि, मनसा वयसा कायसा एवी म्हारी श्रद्धा  
 प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥ [एवा नवमा  
 सामायिक व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो  
 आलोड । मन वचन कायरा जोग पाडवे ध्यान प्रवर्तिया  
 होय ३ सामायिकमे संभालना नहीं कीधी होय ४ अण-  
 पूर्णी पाडी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ९ ॥

१० दसमो देसावगासिक व्रत-दिन प्रति प्रभात धकी

प्रारंभीनै पूर्वादिक छः दिशकी जेटली भूमिका मोकली  
 राखी छै ते उपरांत स्वइच्छायें कायायें जईनै पांच आ-  
 श्रवद्वार सेवणका पंचक्खाण । जाव अहोरत्तं दुविहं  
 तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा,  
 ते मांहि द्रव्यादिक नेमकी मरजादा कीधी छै ते उप-  
 रांत भोगणरा पंचक्खाण । जाव दिवसं पज्जुवासामि,  
 एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा,  
 एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तौ छै फरसणा करूं तेवारे  
 सिद्ध ॥ [एवा दसमा देसावगासि व्रतके विपे जे कोई  
 अतिचार लागो होय तो आलोडं । नेमी भूमिकाथी  
 वस्तु बारथी अणाई होय ? मोकलाई होय २ शब्द करी  
 रूप करी, पुद्गल नांखी आपो जणायो होय ५ तस्स  
 मिच्छामि दुक्कडं ॥ १० ॥

११ इग्यारमो पोषध व्रत-असणं पाणं खाइमं साड्ढमं-  
 का पंचक्खाण, अवंभ सेवणका पंचक्खाण, अमुक्क मणि  
 सोवनका पंचक्खाण, माला वग विले पणका पंचक्खा-  
 ण, सत्थ मुसलादिक सावज्ज जोगका पंचक्खाण, जाव  
 अहोरत्तं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि न  
 कारवेमि मणसा वयसा कायसा, एवी म्हारी श्रद्धा  
 प्ररूपणा तौ छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥

एवा इग्यारमा पोषध व्रतके विपे जे कोई अतिचार  
 लागो होय तो आलोडं, पोसामे सज्जा संथारो न जो-  
 यो होय, माठी तरे जोयो होय १ न पूंज्यो होय, माठी  
 तरे पूंज्यो होय २ उच्चार, पासवण, भूमिका न जोई होय  
 माठीतरे जोई होय ३ न पूजी होय माठीतरे पूंजी होय  
 ४ पोसामें निद्रा, विकथा, प्रमाद कीधो होय ५ तस्स

मिच्छामि दुक्कडं ॥ जावतां अवसही आवसही नहीं कीधुं होय, आवतां निसिही निसिही नहीं कीधुं होय, इद्र महाराजरी आज्ञा नहीं लीधी होय, थोडी दूर पूं-ज्यो होय, घणी दूर परठी होय, परठने तीन बार वो-सरे वोसरे नहीं कीधुं होय, आयनें चोईस थव नहीं कीधुं होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ११ ॥

१२ बारमो अतिथि संविभाग व्रत-साधु निग्रंथनें पासु एपणीक शुद्ध, असण १ पाण २ खाइमं ३ साइमं ४ वत्थ ५ पडिग्गह ६ कंचल ७ पायपुच्छणेण ८ ( पाडि-हारिय ) पीढ ९ फलग १० सिज्जा ११ संथारो १२ ओ-पध १३ भेपज १४ प्रतिलाभतो थको विचरुं एवी म्हारी अद्धा प्ररूपणा तौ छै फरसणा करुं तेवारे सिद्ध ॥

एवा बारमा अतिथि संविभाग व्रतके विपै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोड, सृजती वस्तु सचित्त ऊपर मूकी होय १ सचित्त करी ढांकी होय २ पोतेरी वस्तु पारकी कही होय ३ अहंकारभावे दान दीधुं होय, थो-डो दे घणो पोमायो होय ४ भोजन बेला टाळीनें निमंत्र-णा कीधी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ १२ ॥

इति वारे व्रत तथा उनके अतिचार समाप्त ॥

अथ संलेखणाकी पाटी ॥

अहंभंते अपच्छिम मरणांतिय संलेखणा झूसणा आ-राहणा पोपध साला पूजीनें, उच्चार पासवण भूमिका प-डिलेहीनें, गमणागमणे पडिक्कमीने, दभार्दिकु संधारो सं-थारीने, दभार्दिकु संधारे दुरुहीने, पूर्व तथा उत्तर दिशि पटथंकादिक आसणे वैसेने, करयलसपरिग्गाहिय सिर

सावत्तं मत्थए अंजली त्ति कट्ठु, एवं वयासी, नमोत्थुणं  
 अरिहंताणं भगवंताणं जावसंपत्ताणं, एम अनंता सिद्ध-  
 जीनें वंदना नमस्कार करीनें नमोत्थुणं अरिहंताणं भग-  
 वंताणं जाव ठाणं संपविडं कामे, इम दूजो नमोत्थुणं  
 शुणीनें जयवंता वर्तमान तीर्थकर महाराजनें वंदना नम-  
 स्कार करीनें, पोतेका धर्माचार्यजीनें नमस्कार करीनें,  
 साधु प्रमुखचारे तीर्थ खमावीने, सर्वजीव राशि खमा-  
 वीने, पूर्वे जे व्रत आदरयां छै, तेना जे अतिचार दोष  
 लागा छै, ते सर्व आलोइ, पडिक्कमी, निंदी, निः शक्य  
 थई, सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि । सव्वं मोसावायं  
 पच्चक्खामि । सव्व अदिन्नादानं पच्चक्खामि । सव्वं मेहुणं  
 पच्चक्खामि । सव्वं परिग्गह पच्चक्खामि । सव्वं कोइ  
 माणं जावमिच्छा दंसणसल्लं, सव्वं अकरणिज्जं पच्च-  
 क्खामि । जावज्जीवाए तिविह तिविहेणं न करेमि न  
 कारवेमि, करंतं पि नाणुजाणामि, मणसा वयसा का-  
 यसा, एम अठारे पाप स्थानक पच्चक्खीनें, सव्वं असणं  
 पाणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि

आहारं पच्चक्खामि, जावज्जीवाए । एम चारे आहार  
 पच्चक्खीने, जं पीयं, इमं सरीरं इट्ठं कतं, पियं मणुलं  
 मणामं धिज्ज विसासियं समयं अणुमयं बहुमयं भंड-  
 करंडगसमाणं रयण करंडगभूयं माणसियं माणं उन्ह,  
 माणं खूहा, माणं पीवासा, माण वाला, माणं चोरा, माणं  
 दंसा, माणं मसग्ग, माणं वाहियं, पित्तियं, कप्पियं,  
 संभीमं सन्निवाहियं, विविहा रोगायंका, परिसहोवसग्ग  
 फासा फुसंति, एवं पियणं, चरमेहि उस्सासं निस्सासे  
 हि, वोसिरामि त्ति कट्ठु । एम शरीर वोसिरावीने, कालं

अणवकंखमाणे विहरामि। एवी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै  
फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥

एवी संलेखणाके विषै जे कोई अतिचार लागे होय  
तो आलोडं, इहलोगासंसप्पड गे? परलोगासंसप्पड गे?  
जीविया संसप्पओगे ३ मरणाससप्पओगे ४ कामभो-  
गाससप्पओगे ५ मा मज्झ हुज्ज मरणं ते। श्रद्धा प्ररूप-  
णामें फरक आयो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति संलेखणासातिचार समाप्त ॥

अथ तस्स धम्मस्स की पाटी ॥

तस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अभ्युद्विज मि आराह  
णाए, विरड मि विराहणाए, तिविहेण पडिकं तो वंदामि  
जिणे चउव्वीस ॥

इति तस्स धम्मस्सकी पाटी समाप्त ॥

अथ तस्स सव्वस्सकी पाटी ॥

तस्स सव्वस्स देवसियस्स अइयारस्स दुब्भासियं  
दुच्चितियं आलोपते पडिक्कमामि ॥

इति तस्स सव्वस्सकी पाटी समाप्त ॥

अथ चत्तारि मंगलं की पाटी ॥

चत्तारि मंगल, अरिहंता मंगल, सिद्धा मंगल, साहू  
मंगलं, केवलपन्नत्तो धम्मो मंगल; चत्तारि लोसुत्तमा,  
अरिहता लोसुत्तमा, सिद्धा लोसुत्तमा, साहू लोसुत्तमा,  
केवलपण्णत्तो धम्मो लोसुत्तमो, चत्तारि सरण पवज्जामि,  
अरिह ते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरण पवज्जामि  
साहु सरण पवज्जामि, केवलपण्णत्त धम्म सरणं पवज्जामि ॥



अरिहंतांरो सरणो, सिद्धांरो सरणो, साधारांरो सरणो,  
केवलि प्ररूपित दया धर्मरो सरणो ॥ च्यार सरणा दुर्ग  
ति हरणा, और सरणो नही कोय; जे भव्य प्राणी आ  
दरै तो अक्षय अमर पद होय ॥

इति चत्तारि षगलं की पाटी समाप्त ॥

अथ अठारे पाप स्थानककी पाटी ॥

अठारे पाप स्थानक आलोडं । पैलो प्राणातिपात १  
दूजो मृपावाद २ तीजो अदत्तादान ३ चौथो मैथुन ४  
पांचमो परिग्रह ५ छठो क्रोध ६ सातमो मान ७ आठ  
मो माया ८ नवमो लोभ ९ दसमो राग १० इग्यारमो  
द्वेष ११ बारमो कलह १२ तेरमो अव्याख्यान १३ चव  
दमो पैशुन्य १४ पनरमो पर परिवाद १५ सोळमो अर  
ति रति १६ सतरमो माया मोसो १७ अठारमो मिथ्या  
दर्शन शल्य १८ ए अठारे पाप स्थानक सेव्या होय  
सेवाया होय, सेवता प्रति भलो जाण्यो होय तस्स  
मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति अठारे पाप स्थानककी पाटी समाप्त ॥

अथ खमासणाकी पाटी ॥

इच्छामि, खमा समणो<sup>२</sup>, यदिडं जावणिजाए, णि  
सीहिआए (प्रथम स्थान) अणुजाणह, मे<sup>३</sup>, मिउरगत  
(द्वितीय स्थान) णिंसीही, अहो<sup>४</sup> कायं काय संफासं  
खंमणिज्जो, मे<sup>५</sup>, किलांमो अप्पे किलताणं, बहुसुंभेण  
मे<sup>६</sup>, दिव्वंमो, वड्ढं कतो स्थानं तत्तां, मे<sup>७</sup>  
(चतुर्थ स्थान) जव्वा<sup>८</sup> ) खो  
मि, खंमा<sup>९</sup> देवा<sup>१०</sup> ) आव

ए, पडिक्कामामि, खमोसमणाणं, देवसियोँए आसोँ-  
 ए, तेत्तीसण्णयराए, जंकिचि, मिच्छोँए, मण्डुक्क-  
 , वयदुक्कडाँए, कायदुक्कडाँए, कोहोँए, माणोँए, मा-  
 , लोहोँए, सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए,  
 धम्ममाइक्कमणाए; आसायणोँए जो, मे, अइयोँरो,  
 , तस्से, खमासेमणो, पडिक्कामामि, निदोँमि, गरि-  
 मे, अण्णपाण, योसिरामि, ( सप्तम स्थान )

स्थान ७ पद ५८ गुरु २५ लघु २०१ सर्व अक्षर २२६ ॥ )

इति खमासमणाकी पाटी समाप्ता ॥

अथ पंच पदांकी वंदना ॥

नमो अरिहताण, नमो सिद्धाण, नमो आयरियाण,  
 नमो उवज्झायाण, नमो लोए सव्व साहूण, अर्हत्तिस्सिद्धा-  
 योँपाध्याय सर्वसाधुभ्यः । पहिले पद नमो अरिहंताण  
 हतां सर्वश्री अरिहत भगवंतजी महाराज भणी  
 हारो वनणा नमस्कार हुई जो । अरिहंतजी महाराज  
 वा छै । उप्पन्न नाण दंसणधरा अरहा जिन केवली,  
 धन्य वीस तीर्यकर, उत्कृष्टा एक सौ सित्तर देवाधि-  
 व ते मांहे वर्तमान काले वीस विहरमाण श्रीसीमधर  
 स्वामी १ युगमधर स्वामी २ बाहु स्वामी ३ सुबाहु  
 स्वामी ४ सुजात स्वामी ५ स्वयंप्रभ स्वामी ६ ऋषभा-  
 न स्वामी ७ अनंतवीर्य स्वामी ८ सूरप्रभ स्वामी ९  
 विशाल स्वामी १० वज्रधर स्वामी ११ चन्द्रानन स्वामी  
 १२ चन्द्रबाहु स्वामी १३ भुजंग स्वामी १४ ईश्वर स्वामी  
 १५ नेमिप्रभ स्वामी १६ वीरसेन स्वामी १७ महाभद्र  
 स्वामी १८ देवजस स्वामी १९ अजितवीर्य स्वामी २० ।

चौतीस अतिशय पैतीस वाणी करी विराजमान, १००८  
 लक्षणका धरणहार, त्रिलोक महिया, त्रिलोक वंदनीक,  
 चौसठ इंद्रांरा पूजनीक, अठारे दोपां रहित, द्वादश  
 गुणां करके विराजमान अनंतो ज्ञान १ अनंतो दरसन २  
 अनंतो चारित्र ३ अनंतो वीर्य ४ अशोक वृक्ष ५ सुर  
 पुष्प वृष्टि ६ दिव्य ध्वनि ७ चामर ८ सिंहासन ९ भामं  
 डल १० देव दुंदुभि ११ छत्रधारै १२ । जघन्य द्योय कोड  
 केवली, उत्कृष्टानवकोड केवली, वैरै, विचरै, जां महापुरुषां  
 म्हारो वनणा नमस्कार हुई जो । कोई अविनय आशा  
 तना हुई होय तो वारंवार हात जोड़ मान मोड़ खमांड  
 छूं, आप खमवा जोग्य छो । १००८ बार मन वचन  
 कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुई जो ॥

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि णमंसामि  
 सक्कारेमि संमाणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेह्यं पज्जु-  
 वासामि मत्थएण वंदामि ॥ ऐसे तिक्खुत्ताको पाठ तीन  
 बार कहिये ॥ १ ॥

२ दूजे पद नमो सिद्धाण कहतां सर्व सिद्धजी महा-  
 राज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुई जो । सिद्धजी  
 महाराज कैवा छै सकल, कार्य सिद्ध करीने आठ  
 कर्म खपाय, पनरे भेदे सिद्ध सिद्धा ॥ तीर्थसिद्धा  
 १ अतीर्थसिद्धा २ तीर्थकरसिद्धा ३ अतीर्थकरसिद्धा  
 ४ स्वयं बुद्ध सिद्धा ५ प्रत्येक बुद्धसिद्धा ६ बुद्ध  
 बोहिय सिद्धा ७ इत्थी लिंग सिद्धा ८ पुरुष लिंग सिद्धा  
 ९ नपुंसक लिंग सिद्धा १० स्वलिंगी सिद्धा ११ अन्य  
 लिंगी सिद्धा १२ गृहस्थ लिंग सिद्धा १३ एक सिद्धा १४  
 अनेक सिद्धा १५ ॥ आठ गुणां करीने विराजमान-

अनंतो ज्ञान १ अनंतो दर्शन २ अनंतो सुख ३ क्षायिक  
समकित ४ अटल अवगाहना ५ अमूर्तिपणो ६ अगुरु-  
लघु ७ अनंत अकरण वीर्य ॥ ८ ॥

## अडिल छंद ॥

अविनाशी अविकार परम रसधाम है, समाधान  
मरवंग सहज अभिराम है । शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि  
अनंत है, जगत शिरोमणि सिद्ध सदा जयवत है ॥ १ ॥  
जटै जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, रोग नहीं, सोग  
नहीं, भूख, नहीं, तृषा नहीं, चाकर नहीं, ठाकर नहीं,  
मोह नहीं, माया नहीं, कर्म नहीं, काया नहीं, दुःख नहीं,  
दारिद्र्य नहीं, एकमे अनेक, जोतमे जोत विराजमान,  
एवा अनंता सिद्ध भगवंत छै, जाने म्हारो वनणा नम-  
स्कार हुईजो । कोई अविनय आशातना हुई होय तो  
घारंघार हात जोड़ मान मोड खमाऊ छ, आप खमवा  
जोग्य छो । १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो  
भुजो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ पछे तिकखुत्ताका पाठ  
३ कहिजे ॥ २ ॥

३ तीजे पद नमो आयरियाण कहतां सर्व आचारज-  
जी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥  
आचारजजी महाराज कैवा छै ॥ ज्ञानाचार १ दस-  
णाचार २ चारित्राचार ३ वीर्याचार ४ तप आचर ५  
ए पांच आचार पालै; पांच महाव्रत पालै ५ पांच षड्वि-  
य वश करै ५ चार कपाय टालै ४ नव बाड सहित शुद्ध  
ब्रह्मचर्य पालै ९ पंच समित ५ तीन गुप्त ३ शुद्ध आराधै  
॥ छत्तीस गुणां करके विराजमान आचारजजी महा-

राज अर्थका दातार, आठ संपदा सहित, जां महापुरुषां  
 नें म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ कोई अविनय आशा  
 तना हुई होय तो बारबार हात जोड़ मान मोड़ खमाऊ  
 छूं, आप खमवा जोग्य छो। १००८ बार मन वचन कायाए  
 करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ तिकखुतो  
 तीन बार कहणो ॥ ३ ॥

४ चौथे पद नमो उवब्भायाणं कहतां सर्व उपाध्यायजी  
 महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ उपाध्याय-  
 जी महाराज कैवाछै। उपाध्यायजी, गणधरजी, स्थविरजी  
 बहुश्रुतजी, इग्यारे अंग-आचारांग १ सुयगडांग २ ठा-  
 णांग ३ समवायांग ४ भगवती ५ ज्ञाता ६ उपासकदसा  
 ७ अंतगडदसा ८ अनुत्तरोववाईदसा ९ प्रश्नव्याकरण  
 १० विपाक ११ ॥ वारे उपांग-उव्ववाई १ रायप्पसेणी २  
 जीवाभिगम ३ पन्नवणा ४ जंबूद्वीपपण्णत्ती ५ चंदप-  
 ण्णत्ती ६ सूरपण्णत्ती ७ निरयावलिया ८ कप्पविडंमिया  
 ९ पुप्फिया १० पुप्फचुलिया ११ वन्हिदिसा १२ ॥ मूल  
 सूत्र चार-उत्तराध्ययन १ दसवैकालिक २ नंदी सूत्र ३  
 अनुयोगद्वार ४ छेद च्यार-दशा श्रुतस्कंध १ बृहत्कल्प २  
 व्यवहार ३ निशीथ ४ ॥ वत्तीसमो आवश्यक ॥ आदि  
 देई अनेक ग्रंथका जाणणहार, इग्यारे अंग वारे उपांग  
 चरणसित्तरी करण सित्तरी भणे भणावे ए पच्चीस गुणे  
 करी विराजमान, तथा चउदे पूर्व इग्यारे अंग भणे भणा  
 वे, सात नय, निश्चय व्यवहार प्रत्यक्ष ने परोक्ष दोय  
 प्रमाणके जाणणहार, मनुष्य अथवा देवता कोईपण जेने  
 विवादमें छलवाने समर्थ नहीं, सूत्र पाठका दातार उपा-  
 ध्यायजी महाराज, जानै म्हारो वनणा नमस्कार हुई

जो । कोई अविनय आशातना हुई होय तो बारबार हात जोड़ मान मोड़ खमाऊं छूं, आप खमवा जोग्य छो। १००८ बार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुई जो ॥ पछै तिम्रखुत्तरो पाठ तीनवार कहणो ॥ ४ ॥

५ पांचवें पद नमो लोए सब्वसाहूण कहतां लोकरे विपै सर्व साधुजी महाराजभणी म्हारो वनणा नमस्कार हुई जो ॥ साधुजी महाराज कैवा छै । स्व पर कार्यका साधनहार, पोतारा धर्माचार्यजी महाराज श्री श्री श्री १००८ श्री श्री स्वामीजी श्रीरामचंद्रजी श्रीप्रसन्नचंद्रजी महाराज ( तथा इण ठिकाणे आपजी आपके गुरुका नाम कैणा ॥ ) जघन्य दोय हजार क्रोड साधुजी, उत्कृष्टा नव हजार क्रोड साधुजी, पांचे समिते समिता, तीने गुप्ते गुप्ता, घयांलीस दोष टाळीने आहार पांणीका लेणहार, छ कायके पीर, छ कायके रक्षक, बावीस परिसहारा जीतणहार, बावन अनाचारके टालनहार, तेड्या जाय नहीं, नूत्पा जीमे नहीं, निर्लोभी, निर्लालची, सुरा वीरा धीरा मोक्ष मार्ग साधै, भगवान्की आज्ञामें विहरै बिचरै, शुद्ध समय पाळै, सत्ताईस गुणां करी विराजमान पंच महाव्रत पाळै ५ पांच इंद्रिय वश करै १० च्यार कपाय टाळै १४ भाव सच्चे १५ करण सच्चे १६ जोग सच्चे १७ क्षमावत १८ वैराग्यवंत १९ मन समाधारणीया २० वय समाधारणीया २१ कायसमाधारणीया २२ नाण संपन्ने २३ दसण सपन्ने २४ चारित्त संपन्ने २५ वेदनी समा अहियासणिया २६ मरणांतिसमा अहियासणिया २७ ॥ इसा साधुजी महाराजने म्हारो वनणा नम-

स्कार हुईजो । कोई अविनय आशातना हुई होय तो  
वारंवार हात जोड़ मान मोड़ खमाऊ हूं, आप खमंवा  
जोग्य छो । १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो  
भुजो वनणा नमस्कार हुईजो । पछै तिकखुत्तारो पाठ  
तीन वार कहणो ॥ ५ ॥

ए पंच पद लोकमे महा मंगलिक छै, महा उत्तम  
छै, शरण लेवा योग्य छै, वारंवार इण भवमें तथा भव  
भवमें म्हनें सरणो हुईजो ।

इति पंच पदांकी वंदना समाप्ता ॥

अथ आयरिय उवज्झाए की पाटी ॥

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ।  
जे मे केइ कसाया, सब्बे तिविहेण खामंमि ॥ १ ॥ सब्ब-  
स्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलि करिय सीसे । सब्बं  
खमावइत्ता, खमामि सब्बस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सब्बस्स  
जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहियनियचित्तो । सब्बं  
खमावइत्ता खमामि सब्बस्स अहयं पि ॥ ३ ॥

पद १२ गुरु १९ लघु ९१ सर्व अक्षर ११० ॥

इति आयरिय उवज्झाएकी पाटी समाप्ता ॥

अथ खमत खामणा ॥

अढाई द्वीप, पनरे खेत्र मांहे तथा चारे आवक आ-  
विका दान देवे, शील पाळै तपस्या करै; भावना भावै,  
संवर करै, सामायिक करै, पोसह करै, पड़िक्कमणा करै,  
तीन मनारथ चउदे नियम चितवे, एक व्रत धारी, तथा  
चारे व्रत धारी, मूल गुण उत्तर गुण सहित ते मांहे

मोटांनं हात जोड मान मोड पगे लागी खमाऊं छूं,  
छोटानं समुच्चय खमाऊं छूं ॥

इति खमत सामणा समाप्ता ॥

अन चौरासी लाख जीवाजोनि ॥

सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अप् काय, सात  
लाख तेउ काय, सात लाख बाउ काय, दस लाख प्रत्येक वन  
स्पति काय, चउदे लाख साधारण वनस्पति काय, दोय लाख  
थे इंद्री, दोय लाख ते इंद्री, दोय लाख चउरिंद्री, च्यार लाख  
देवता, च्यार लाख नारकी च्यार लाख तिर्जच पंचेंद्री, चउ-  
दे लाख मिनखरी जात, च्यार गत चौरासी लाख, जीवाजून  
सूक्ष्म बादर पर्याप्तक अपर्याप्तक जाणतां अजाणतां कोई  
जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतानें भलो जाण्यो  
होय मन कर वचन कर काया कर अठारे लाख, चौईस  
हजार एक सौ बीस १८२४१२० मिच्छामि दुक्कड़ं ॥

इति चौरासी लाख जीवाजोनि समाप्ता ॥

अथ खामेमि सब्बे जीवाकी पाटी ॥

अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

खामेमि सब्बजीवा, सब्बेजीवा खमंतु मे । मेत्ती मे  
सब्बभूएसु, वेर मज्झ ण केणइ ॥ १ ॥ [आर्या वृत्तम् । [एव  
मह आलोहय, णिंदिय गरहिय दुगछियं सम्मं । तिवि  
रेण पडिक्कंतो, वदामि जिणे चउव्वीसं ॥ २ ॥

इति खामे मि सब्बजीवाकी पाटी समाप्ता ॥

दैवसिक प्रायश्चित्तविशोधनार्थं करोमि काउस्सग्ग ॥

अथ समुच्चय पच्चक्खाण ॥

गठि सहिय मुहिसहियं नवकारसी पोरसी सादा पो-



रसी आप आपनी धारणा प्रमाणें तिविहंपि चञ्जविहंपि  
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेण सह-  
सागारेणं महत्तरागारेणं सन्वसमाहिवत्तिआगारेण  
वोसिरे ॥

इति समुच्चय पच्चक्खाण समाप्त ॥

## अथ पडिकमणाकी विधि ॥

पैली “चौईस स्तव” कीजै । पछै ऊभो होय आसण  
छोड “तिक्खुत्तो” कहीजै । पछे देव गुरु तथा साधुजी  
कनें आज्ञा लेई, बडा साधर्मी भाइयांकी आज्ञा मांगी  
“देवसिक पडिकमणा करण की आज्ञा है” इसो कही  
“इच्छामि णं भंते” की पाटी कहणी । पछै “नवकार”  
कहणो । फेर “तिक्खुत्ता” को पाठ कही, पैला आवश्य-  
ककी आज्ञा मांगी “करेमि भंते” की पाटी कहणी ।  
पछे “इच्छामि ठामि काउस्सग्ग” की पाटी कहणी । पछै  
“तस्स उत्तरी” की पाटी कहनें काउस्सग्ग ऊभोधको  
करणो । शक्ति नहीं होय तौ बैठ सिध्दासन लगाय  
जिनसुद्धाए काउस्सग्ग करणो । काउस्सग्गमें १४ ज्ञानका  
अतिचार “ज वाडध्दं” आदि अर्थरूप चितवणा । पछै  
समाकितका ५ अतिचार “जिन वचनमे शका आंणी  
होय” इत्यादि चितवणा । पछे वारे व्रतारां दूजा भाग-  
रा एवासं लगाय एक एक व्रतरा पांच पांच अतिच्यार  
कुल ६० कर्मादानरा १५ संलेहणारा ५ एवं ९९ अति-  
चार । १८ पापस्थानक तथा “इच्छामि ठामि” की पाटी  
चितवणी ॥ काउस्सग्गमे “तस्स मिच्छामि दुक्कडं” कठेई  
नहीं कहणो ॥ ने “इच्छामि ठामि” की पाटीमें “ठामि  
काउस्सग्ग” की जगह “इच्छामि पडिकमिउं” कहणो ॥

पछे नवकार मनमें गुणीनें “नमो अरिहंताणं” काउस्सग पाड़ती वगत प्रकट कहणो ॥

इति प्रथम सामायिक आवश्यक संपूर्ण ॥ १ ॥

पछे “तिक्खुत्ताको पाठ कही दूजा आवश्यककी आज्ञा है ऐसो कही प्रकट “लोगस्स” की पाटी पढणी ॥

इति दूजो चउविसत्यो आवश्यक संपूर्ण ॥ २ ॥

“तिक्खुत्तो” कही तीजा आवश्यककी आज्ञा है ऐसो कही दोस चार “इच्छामि खमासमणा” की पाटी कहणी । साधु आवक दोनु कने रजोहरण, मुखपत्ती और चलोढो ऐ तीन सिवाय कांई नहीं राखै ॥ पाटीमें प्रथम “निसीही” शब्द गावे जद मित्तवग्रहमें प्रवेश कर ऊभा गोडा राख हाथ जोड गुरु कने बैठणो । पछे गुरुका चरणांके हाथ लगाय आपके माथे लगावणा ने छ आवर्तकरणा “अहोकायकाय” इण अक्षरांसू तीन आवर्त हुवे है । यथा—दोनु हात लया कर हातरी दस आंगलियां जमी माथे धर मुखसू “अ” अक्षर नीचा स्वरसू कहणो । पछे यूही दस आंगलियां आंखियां ऊपर धरतां “हो” अक्षर ऊंचा स्वरसू कहणो । ओ पैलो आवर्त हुयो । यूहीज “का” ने “य” उच्चारतां दूजो आवर्त हुवे । तथा “का” ने “य” उच्चारतां तीनो आवर्त हुवे ॥ पछे “जत्ता भे जवणिज्जं च भे” इणां अक्षरांसू तीन आवर्त हुवे ॥ यथा—प्रथम “ज” मंद स्वरसू, “ता” मध्यम स्वरसू “भे” ऊंचा स्वरसू, ऊपरली रीते दोनु हाथ जमी माथे, विचमे (आरती रूप) ने आंख्यां माथे, एक एक अक्षर क्रमसू बोलता लगावणा ॥ ओ पैलो आवर्त हुयो । “ज. व. णि” ऐ तीन अक्षर त्रिविध स्वरसू

ऊपर मुजब उच्चारतां दूजो आवर्त हुवे । “जं च भे”  
 ऐ तीन अक्षरांसूं पूर्वोक्त रीतिसूं तीजो आवर्त हुवे ।  
 ऐसे आवर्त एकवार गुणतां हुवे । दोय वार पाटी गुणतां  
 वारे आवर्त हुवे । पेले खमासमणामें “ वड्ढमं ” ताई  
 कहीने “ आवसियाए ” इण पद ऊपर ऊभो हुवणो,  
 और गुरु चरणांसूं पाछले पगां सरकणो, मितावग्रह  
 वारे अर्थात् तीन हात अलगो गुरुके सन्मुख ऊभो  
 रही शेष पाठ पढ़णो । दूजा खमासमणामें पूर्वरीते  
 थोड़ो शरीर नमाची “ इच्छामि खमासमणो वंदिवं  
 जावणिज्जाए णिसीहियाए अणुजाणह मे मिज्जगहं  
 निसीही ” ए पाठ कही गुरुके समीप जाय वैसीने पूर्वो-  
 क्त रीतिसूं छ आवर्त देणा सांरो पाठ बैठो २ पढ़णो,  
 गुरुके सांमे दृष्टि राखणी दूजा खमासमणामें आवसि-  
 याए पडिक्कमामि” ए दस अक्षर नही कहणा ॥

इति तीजो वदनावश्यक सपूर्ण ॥

“विक्रखुत्तो” को पाठ कही चौथा आवश्यककी आ-  
 ज्ञा है ऐसे कही ऊभो होय “ आगमे तिविहे ” की पाटी  
 सूं लेयने “ इच्छामि ठामि ” की पाटी पर्यंत ९९ अति-  
 चार काउस्सग्गमे कछा सो प्रगटपणे कहाणां “तस्स  
 मिच्छामि दुक्कडं” देणो ॥ पछे “ तस्स सब्बस्स ” की  
 पाटी कहणी ॥ पछे नीचो बैठ जीवणो गोठो ऊभो राख  
 “नवक्ककार” कहणो । पछे “करेमि भंते” की पाटी कहणी । पछे  
 “चत्तारि मंगलं” की पाटी कहणी ॥ पछे “इच्छामि ठा-  
 मि” की पाटी, पछे “इरिया वहियाए” की पाटी कहणी  
 पछे “विक्रखुत्तो” गुणी, हात जोडी, व्रत अतिचार भेला  
 कवणकी आज्ञा लेणी । पछे “आगमे तिविहे” की पाटी क-

हणी। पछे “दंसण श्रीसमकित” की पाटी कहणी ॥ पछे  
 बारे व्रत अतिचार सहित कहणा ॥ पछे संलेखणाको पाठ  
 अतिचारां समेत कहणो ॥ पछे अठारे पाप स्थानरुकी पाटी  
 कहणी ॥ पछे “इच्छामि ठामि” की पाटी कहणी ॥ अठा  
 ताई जीवणो गोडो ऊचो राखियां बैठो रैणो । पछे ऊ-  
 भो होय हात जोड़ “तस्स धम्मस्स” की पाटी कहणी ॥  
 पछे “इच्छामि खमासमणा ” की पाटी पूर्वोक्तरीतिसूं  
 दोय बार कहणी ॥ पछे आज्ञा लेई, ऊंदा गोडां बैसी,  
 दोनु हाथ जोड़ी, मस्तक जमीके लगावी, पांच पदांकी  
 वंदना करणी ॥ पछे ऊभो होय “आयरिय उवज्झाए”  
 की पाटी कहणी ॥ पछे “अट्ठाई द्वीप” को पाठ कहणो ॥  
 पछे “चौरासी लाख जीवा जोनि सात लाख पृथ्वीका-  
 य” इत्यादि पाठ कहणो ॥ पछे “खामेमि सब्वजीवा”को  
 पाठ कहणो ॥ पछे अठारे पापस्थानक कहणा ॥

इति चौथो प्रतिक्रमण आवश्यक संपूर्ण ॥

“तिक्खुत्तो” को पाठ पढ़ी, पांचवां आवश्यककी  
 आज्ञा है ऐसे करी, “दैवसिकप्रायश्चित्तविशोधनार्थ  
 करेमि काउस्सग्ग” ॥ ओ पाठ कहणो ॥ पछे “नककार”  
 कहणो । पछे “करेमि भते” की पाटी कहणी । पछे “इ-  
 च्छामि ठामि काउस्सग्ग” की पाटी कहणी ॥ पछे “त-  
 स्स उत्तरी” की पाटी कहणी ॥ पछे काउस्स करणो ।  
 काउस्सग्गमें “देवसि, राड” पडिक्कमणामे लोगस्स ४  
 कहणा । पक्खी पडिक्कमणामे लोगस्स ८ कहणा । चौमा-  
 सीपडिक्कमणामे लोगस्स १२ कहणा ॥ सवत्सरी पडिक्क-  
 मणामे लोगस्स १६ कहणा ॥ यातो पूज्य जयमल्लजी  
 रुघनाथजी की संप्रदायकी परंपरा है । सूत्रमे ४

१२, चौमासीका २०, संवत्सरी का ४० लोग्गस्स कहा है। जयमल्लजी महाराजके संप्रदायकी साध्वी इसी प्रमाणे करै है ॥ किताक आप आपकी आश्राय प्रमाणे कमती जादा करै है। मनमें “नवकार” गुणी, काउस्सग्ग पाडणो पछे नमो अरिहंताणं” इसो प्रकट कहणो। पछे “लोग्गस्स” प्रकट कहणो ॥ पांच पदां की वंदनो पछै सारी क्रिया ऊभो २ करणी ॥ शक्ति नहीं द्रुवे तौ बैठो २ करणी ॥ पछै पूर्वकी परे “इच्छामि खमासमणा” की पाटी दोय बार कहणी ॥

इति पांचमो काउस्सग्ग आवश्यक संपूर्ण ॥

हवे छठा आवश्यकका कामी धन्य है श्रीवर्धमान स्वामी इसो कही, गुरु मुनिराज पासे तथा वडेरा पासे पच्चक्खाण करै। इणारो योग नही होय तौ आज्ञा लेयने “गंठिसहिय मुट्ठिसहियं” इत्यादि पाठ पढी धारणा प्रमाणे पच्चक्खाण आपरे मत्ते करे ॥

इति छठो पच्चक्खाण आवश्यक संपूर्ण ॥

सामायिक, चउविस्त्यो, वंदनक, पडिक्कमण, काउस्सग्ग और पच्चक्खाण ए ६ आवश्यक मांहे जाणतां अजाणतां जे कांई अतिचार दोष लागो होय तथा पाठ उच्चारतां काना मात अनुस्वार पद अक्षर अधिको ओछो आगो पाछो कछो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ मिथ्या त्वनो पडिक्कमणो, अव्रतनो पडिक्कमणो, प्रमादनो पडिक्कमणो, कपायनो पडिक्कमणो, अशुभ जोगनो पडिक्कमणो ए पांच पडिक्कमणा मोहेलो कोई पडिक्कमणो नहीं कीधो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ गया कालको पडिक्कमणो, वर्तमान कालको संवर तथा सामायिक, आवतां

कालका पचक्खाण, तेमां जे दोष लागो होय, अतिक्रम  
व्यतिक्रम, अतिचार अनाचार तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥  
धव धुइ मंगलं ॥

इति क्षमापन संपूर्ण ॥

पछै नीचो बैठ, डाचो गोडो ऊंचो राख, दोय “नमोत्थुणं  
पूर्ववत् पढणा ॥ पछै ऊभो होयने श्रीसीमंधरस्वामीजी  
प्रते पंचांग नमाय, “तिकखुत्तो” का पाठसूं १००८ वार  
वंदना करूं छूं डम कही पोताना धर्माचार्यजीनें इण रीते  
वंदना करवी । पछै उपाश्रयमें जे मुनिराज होय तिणाने  
वंदना करीने अपराध खमावणो । पछै तपस्वी साधर्मी  
भाइयांसूं खमत खामणा कर सुख साता पूछणी । पछै  
सारा साधर्मी भाइयां सू खमत खामणा करणा अने  
सुख साता पूछणी ॥ देवसि पडिक्कमणामे “मिच्छामि  
दुक्कड” आवे तठै दिवस संबधी मिच्छामि दुक्कडं देणो ॥  
राइ पडिक्कमणामे रात्रि संबधी कहणो । पक्खी पडिक्क-  
मणामें देवसि पक्खी सबधि कहणो । चौमासीमें देवसि  
चौमासी संबधी कहणो । संवच्छरी पडिक्कमणा में देवसि  
संवत्सरी संबधी मिच्छामि दुक्कडं कहणो ॥

इति श्रावक प्रतिक्रमण विधिः समाप्त ॥

॥ अथ दश पचक्खाण ॥

गाथा ॥

दोचेव नमुक्कारो, आगारा छच्च ह्रुति पोरिसिए ।  
सत्तेव य पुरिमइहे, एगासणांमि अट्टेव ॥ १ ॥ सत्ते गड्डा-  
णस्सड, अट्टेव य अंविहांमि आगारा । पंचेव य भत्तट्टे,  
छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउदो अभिगगहे,

निर्व्वीए अठ्ठ नव य आगारा । अप्पाउरणे पंचउ हवंति  
सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥

### १ अथ नोकारसीको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खामि । चउव्विहं पि  
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं ?  
सहसागारेणं २ वोसिरे ॥ इति ॥ १ ॥

### २ पोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पोरसि पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं ? सहसा-  
गारेणं २ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं ५  
सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ६ वोसिरे ॥ इति ॥ २ ॥

### ३ साड्डपोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे साड्डपोरसि पच्चक्खामि चउव्विहं पि आ-  
हारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं ? सह-  
सागारेणं २ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवय-  
णेणं ५ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ६ वोसिरे ॥ इति ॥ ३ ॥

### ४ पुरिमड्डको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पुरिमड्ड पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं ? सहसागारेणं  
२ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं ५ महत्तरा-  
गारेणं ६ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ७ वोसिरे ॥ इति ॥ ४ ॥

### ५ अथ एकाशनको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगासणं वियासणं चउव्विहं पि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं ? सहसागा-

रेणं २ सागारिआगारेणं ३ आउंटण पसारेणं ४ गुरु-  
अब्भुट्ठाणेणं ५ पारिट्ठावणियागारेणं ६ महत्तरागारेणं  
७ सब्वसमाहिवत्तियागारेणं ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ५ ॥

### ६ अथ एकलठाण को पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरें एगट्ठाण पच्चक्खामि डुविहं तिविहं चउ-  
व्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा-  
भोगेणं १ सहसागारेणं २ सागारियागारेणं ३ गुरुअब्भु-  
ट्ठाणेणं ४ पारिट्ठावणियागारेणं ५ महत्तरागारेणं ६  
सब्वसमाहिवत्तियागारेणं ७ वोसिरे ॥ इति ॥

### ७ अथ आयंविलको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरें आयंविलं पच्चक्खामि तिविहं पि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसा-  
गारेणं २ लेवालेवेणं ३ गिहत्थससट्ठेणं ४ उक्खित्तविवे-  
गेणं ५ पारिट्ठावणियागारेणं ६ महत्तरागारेणं ७ सब्वस-  
माहिवत्तियागारेणं ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ७ ॥

### ८ अथ चउविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरें अभत्तट्ठं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागा-  
रेणं २ पारिट्ठावियागारेणं ३ महत्तरागारेणं ४ सब्वसमा-  
हिवत्तियागारेणं ५ वोसिरे ॥ इति ॥ ८ ॥

### ९ अथ तिविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरें अभत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविहं पि आहारं  
असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २  
पारिट्ठावियागारेणं ३ महत्तरागारेणं ४ सब्वसमाहिव-



श्रीजिनराज महाराज चौबीसां जिनवरजी, तुम रखो  
 हमारी लाज सुनो गणधरजी॥देर॥श्रीऋषभ अजित संभव  
 अभिनंदन स्वामी, सुमति पद्म सुपार्श्व नमो गिर नामी।  
 श्रीचंद्रप्रभ सुविधिनाथ जीतल गुण गाऊं, श्रीश्रेयांस बा-  
 सुपूज्य महाराजकूं सीस नमाऊं ॥ श्री० ॥ १ ॥ श्रीवि-  
 मल अनंत धर्मनाथ शांति जिनदेवा, श्रीकुंथुनाथ अर-  
 नाथकी करतहू सेवा। श्रीमल्लिनाथ मुनि सुव्रत व्रत मोय  
 दीजो, नमिनाथ नेम महाराज पार मोय कीजो ॥ श्री०  
 ॥ २ ॥ श्रीपार्श्वनाथ महावीर शरन रहूं तेरी, मैं छूं चरन-  
 को दास अरज सुनो मेरी। तुम चरनकी शरन विन  
 काल अनंत गमाये, अब जन्म भये मुज सफल चरन  
 तुम पाये ॥ श्री० ॥ ३ ॥ हुवो चउवीसो महाराजको  
 शरनो हमारे, तुम विन नाथ अनाथ कहो कुन तारे।  
 प्रभु दीन दयाल कृपाल सुनों तन मनकी, तुम खैंचो  
 हमारी डोर सुरत दर्शनकी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ तुम दर्शन  
 विन महाराज काज मुज विघट्यो, तुम दर्शन विन म-  
 हाराज काल बहु भटक्यो। मुनि राम कहे महाराज पू-  
 रन करो आशा, मुज रखो चरनके पास न करियां  
 निराशा ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति

३ गोरल ईसरजी कवे तो हँसकर बोलना हे ॥ एदेशी ॥

म्हे तो चौबीसे जिनवर वांदसांजी, जिन साथे प्री-  
 ति साँधसांजी ॥ देर ॥ पेला ऋषभ अजित तीजा  
 संभवाजी, चौथा अभिनंदन सुखकारी, पंचम सुमति  
 सदा हितकारी, छठा पद्मप्रभ बलिहारी ॥ म्हे० ॥ १ ॥  
 सप्तम सुंपास चंद्रप्रभ आठमाजी, नोमां सुंविधि

विधिके दाता, दशमा शीतल तपत मिटाता, ग्यारमा  
 श्रेयांसं शिव दिखलाता ॥ म्हे० ॥ २ ॥ बारमा वासुपूज्य  
 भावे पूजियेजी, तेरमा विमल विमल करनारा, करे अनंत  
 अंत करमांरा, पनरमा धर्म धर्म दातारा ॥ म्हे० ॥ ३ ॥ नमो  
 गाति करन जग सोलमांजी, सतरमां कुंथुं नमू शिर  
 नामी, ठारमा अर नमू शिवगांमी, वढूं मंलिनाथ गुण  
 धांमी ॥ म्हे० ॥ ४ ॥ बीसमा मुनि सुव्रत व्रत देत है जी,  
 ढकीसमा नैमीनाथ हित करना, वढूं नेमनाथके चरना,  
 वढूं पार्श्वनाथ दुखहरना, चौबीसमा वीरें प्रभु सिमरना,  
 आये राम तिहारे सरना ॥ म्हे ॥ ५ ॥ अनंत चौबीसी ने  
 वढसांजी, वढूं वर्तमान जिनवीसो, वढूं गणधर सरल  
 जगीसो, नाऊ अर्हत् साधने सीसो ॥ म्हे० ॥ ६ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतसरसंग्रहे  
 चौईसी नामक प्रथमं प्रकरणम् ॥ १ ॥

## वाणी ॥

१ लाज मेरी रख ले भवानी ॥ ए देशी ॥

चतुर नर सुनिधे जिन बानी, सदा महा सुकतकी खानी ।  
 सुणे सब इद्र इद्राणी, सु नकरै सफली जिदगानी ॥ च० ॥  
 आंकड़ी ॥ प्रभुजी परगट फुरमावे, सुरनर सुणवेकू  
 आवे, सुणतां संशय मिट जावे, तुरत ही अमरा पद पावे ।  
 अमरा पदकू पावही, सुन जिनवरना बैण, दैण मिटे  
 भव तापनी, खुलेज अतरनैण । उसीकू कहिये निर्वाणी  
 ॥ च० ॥ १ ॥ वाणी मुक्तीकी दाता, करे सब आनद सुख

साता, चिंता सब भेटत है मनकी, पीड़ा सब दारत है  
 तनकी । पीड़ा दले शरीरकी, वरते मंगलाचार, वाणीके  
 परभावसुं, हुबेज खैवो पार, उसीकूं कहिये छै ज्ञानी  
 ॥ च० ॥ २ ॥ महिमा वाणीकी भारी, सुणे छै पुन्यवंत  
 नरनारी, हुवा सब शिव पद अधिकारी, अथवा सुरवर  
 अवतारी । पावे सुर अवतारकूं, जिसका दिल हे साफ,  
 जम जिसीको कहा करे, दुर्गति हुय गई माफे, दुष्टके मन  
 ही नहीं मानी ॥ च० ॥ ३ ॥ केशव चर्क्री जिनराया, जे  
 कोई अविचल पद पाया, राम सब हूवा छै इनसैं, नमो  
 नमो करिये छै जिनसैं । नमो नमो श्रुतदेवकूं, सुधरे दोनु  
 लोक, इह लोके सुख संपदा, परभव पामे मोख, करे  
 भव थिति ही की हांनी ॥ च० ॥ ४ ॥ है सब वाणीकी मा-  
 या, इसीका गणधर गुण गाया, किसीने पार नहीं पा-  
 या, राम मुनि सरणे ही आया । श्रद्धे वचन जिनराजके,  
 जिसके सुधरे काज, भव भवमें जिन वचनको, शरण  
 हूयो महाराज, मुक्तिकी ऐही ऐनांणी ॥ च० ॥ ५ ॥ इति ॥

२ रमो रमो ए चेलकियाँ फूंदाली डोरी ॥ ए देशी ॥

संशय छेदन तारनी भगवतकी बानी, जुड़े न जगमें  
 जोड़ ॥ वारी हे भगवतकी बानी ॥ सरध्यां पार उतारनी  
 ॥ भ० ॥ सुणजो थे मन धर कोड ॥ वा० भ० ॥ १ ॥ सुण  
 सुणने म्हे श्रद्धस्यां ॥ भ० ॥ म्हे जोसां हो भर भर नैण  
 ॥ वा० ॥ पाखंड मत म्हे छोड़स्यां ॥ भ० ॥ सुणसां म्हे  
 सतगुर वैण ॥ वा० भ० ॥ २ ॥ जीव अजीव म्हे ओलख्या  
 ॥ भ० ॥ जाण्या म्हे पुन्य ने पाप ॥ वा० ॥ आश्रव सं-  
 वर जाणीया ॥ भ० ॥ निर्जरा बंध मोख स्याफ ॥ वा०

भ० ॥ ३ ॥ स्याद्वाद मत वीरनो ॥ भ० ॥ नय निक्षेप प्र-  
माण ॥ वा० ॥ सुण्यां विना किम जांणीये ॥ भ० ॥ करे  
मूढ खेंचातांण ॥ वा० भ० ॥ ४ ॥ परदेशी संयति पापीया  
॥ भ० ॥ छिनमें हो उत्तस्था पार ॥ वा० ॥ रामचंद्र सूत्र  
तारसी ॥ भ० ॥ दूजो नहीं तारणहार ॥ वा० भ० ॥ ५ ॥ इति

### ३ राग पेमासरी ॥

सूत्र हृदय धरो, गुरु मुखसेती निरनय करो ॥ सू० ॥  
भव सागरधी वेग तरो ॥ टेर ॥ सूत्र गणधर देवकल्यो, अ-  
रिहंत देवसूं अर्थ लखो, शुद्ध उच्चरो ॥ गु० सू० भ० ॥ १ ॥  
सूत्र धर्म खरो, इन धिन कवि तुम नाहीं तरो, इन धिन  
कवि तुम नाही तरो, इनके जोरसूं खूब अरो, मती ड-  
रो ॥ गु० ॥ २ ॥ गुरु चरन ग्रहो, स्याद्वादको भेद लहो,  
स्याद्वादको भेद लखो, इन धिन नाहक काई बको, मि-  
थ्यात हरो ॥ गु० ॥ ३ ॥ द्वे प्रमान करी, सप्त नयसूं ठीक  
परी, सप्त नयसूं ठीक परी, मुनि रामचंद्र तो हम उचरी,  
गुरु पद पकरो ॥ गु० ॥ ४ ॥ इति ॥

### ४ गाढा मारु वसोनी आजकी रैनमें ॥ ए देशी ॥

सूत्र सुणोनी नित भावसुरे, जीवा सूत्रकी मोटी छै  
वात, म्हारा ज्ञानी जिवडा, सूत्र सुणोनी नित भावसूं,  
सुणू सुणू तू स्यूं करे रे, जीवा सुणोनी दिवसने रात ॥  
म्हारा० सू० ॥ १ ॥ सूत्र सो धर्म न दूसरोरे, जीवा सू-  
त्रने वाचे शुध साध ॥ म्हारा० ॥ सूत्र तो गणधर गूंथि-  
यारे, जीवा सूत्रको ज्ञान अगाध ॥ म्हारा० सू० ॥ २ ॥  
सूत्र लुपक केई जागियारे, जीवा उत्सूत्र प्ररूपे मूढ ॥  
म्हारा० ॥ मनसू कल्पना केलवे रे, जीवा तांणे आपणी

रूढ ॥ म्हा० सू० ॥ ३ ॥ सूत्र अरथ नहीं ओछखे रे,  
जीवा ज्ञानकी करे छे उत्थाप ॥ म्हा० ॥ ते डूवे डबोवे  
ओरने रे, जीवा करे क्रियाकी थाप ॥ म्हा० सू० ॥ ४ ॥ सूत्र  
वचन सिर पर धरो रे, जीवा मेढो मिथ्यात धोर ॥ म्हा० ॥  
मुनि राम कहे सह सांभळो रे, जीवा सूत्र समो नहीं  
और ॥ म्हा० सू० ॥ ५ ॥ इति ॥

५ कोटारे तूं बडो अमीर, जाय वस्यो चामलकी तीर ॥  
॥ ए देशी गजल ॥

अरिहंत वाणी बडी पुनीत, जिणमांहे तौ आछी रीत,  
भांत भांतका जिणमे भाव, सुरनर सुणवा रक्खे चाव ॥  
वावा वाणी वावाजी, भगवतकी वाणी वावाजी ॥ १ ॥  
आप आपनी भाखा सारे, समझे नर सुर पशू विचारे,  
संशय जावे उपजे हर्ष, सुणतां टारे तिर्यच नर्क ॥ वा० ॥ २ ॥  
प्रथमानुयोग धुर साक्षात, पुरुषोत्तमकी जिणमे यात,  
पद्मपुराण रु आदिपुराण, जाता सूतर भगवतवान ॥  
वा० ॥ ३ ॥ द्वितीयो छै चरणानुयोग, पदारथ नवको जहां  
उद्योत, पन्नवणा भगवत्यादि जान, गोमट्टसारादि तंत्र  
प्रधान ॥ वा० ॥ ४ ॥ करणानुयोग तृतीयो होय, साध  
श्रावककी करणी जोय, आचरांगे मुनि आचार, उपास-  
काये श्राद्ध विचार, मुन्याचार अरु श्रावकाचार, भिन्न  
भिन्न जिनमे विस्तार ॥ वा० ॥ ५ ॥ द्रव्यानुयोग चौथा  
देख, अव्यातमको रूप विशेष, ध्यानारूढतणो मंडान-  
जिनसे उपजै, केवल ज्ञान, जोग शास्त्र नाटक समय  
सार, इन शास्त्रांकूं दृढ उरधार ॥ वा० ॥ ६ ॥ उलून सुझे  
सूर्य प्रकाश, मखीन सुंघे शुद्ध सुवास, जिनवानी मुनि

धरे, मन रोष, कहोनि कहिये किसका दोष ॥ वा० ॥ ७ ॥  
समझें न इसमें पूरे ढोर, अथवा उसके कर्म कठोर, मुनि  
राम कहे सुनिये पख छोर, मूरखसैं नहिं करिये झोर ॥  
वा० ॥ ८ ॥ इति ॥

६ सूयर सूतोरे चंपलारा वागमें रे ॥ ए देशी ॥

गौतम गणधर कीयो चानणो रे, राज कांई ज्ञान दिवा-  
कर होई रे, भवि जन रूपी कमल विकसिया रे, राज कांई  
दीयो मिथ्या तम धोई रे ॥ गो० ॥ १ ॥ ज्ञान तो च्यार चवदे  
पूरवी रे, राजकांई पूछ्या है जाण अजाण रे, वीर जिने-  
श्वर सहू फुरमाविया रे, राज कांई सुणतांई परम कल्या-  
ण रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पचम अंग उमंगे पूछिया रे, राज कांई  
परसन छतीस हजार रे, ओरही अंग उपांगे मूल छेदमें रे,  
राज कांई प्रश्नतणो नही पार रे ॥ गो० ॥ ३ ॥ प्रश्नकारक  
गौतम सारीखा रे, राज कांई उत्तर दायक जिनराय रे,  
टीकाकार निर्वाह कीयो भलो रे, राज कांई उत्तम बांचे  
मुनिराय रे ॥ गो० ॥ ४ ॥ पुन्यवंत बांचे पुन्यवत सांभळे रे,  
राज कांई सरथे सोई पुन्यवंत रे, आज आधारछै श्रीजिन  
वचनको रे, राजकांई प्रत्यक्ष ऐही भगवंत रे ॥ गो० ॥  
॥ ५ ॥ सूत्र सरीखो जग धर्म छै नहीं रे, उत्सूत्र सरीखो  
नही दोष रे, मुनिराम कहे छै सगळा सरथ जो रे, राज  
कांई सूत्र यकी होय मोख रे ॥ गौतम गणधर कीयो जग  
चानणो रे ॥ ६ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे  
वाणीनामकं द्वितीयं प्रकरणम् ॥ २ ॥

## तत्त्वविचार-गीत ॥

१ चांदा थारी चांदनीसी रातरे, कोई नणदल रे भो-  
जायां पांणी नीसरी, चुकल्यो मेल्यो जल जमुनाकी  
तीर रे, कोई आपजरे, पधान्या चंपा वागमें ॥ एदेशी ॥

षट् + द्रव्ये पुद्गल १ जीव २ प्रणामी दोय रे, कोई च्यार  
ज रे, अप्रणामी शेष जानिये; पद २ द्रव्यमें जीव १ एक-  
ही होय रे, कोई पांचजरे अजीव निश्चय मांनिये ॥ १ ॥ पंच  
अमूर्ति पुद्गल मूर्तिक देख रे, कोई काल ज रे अप्रदेशी,  
‡ सप्रदेशी पांच छै, धर्माधर्म आकाश तीनू एक रे, कोई  
बाकी रे अनेक कहियो सांच छै ॥ २ ॥ एक क्षेत्राऽऽकाश  
‡ क्षेत्री पंचही जाण रे, कोई साक्रिय रे पुग्गल जीव पिछां  
निये; च्यार ॥ अक्रिय भगवत वचन प्रमाण रे, \* नित्य  
च्यार ज रे अनित्य पुग्गल जंतु जांनिये ॥ ३ ॥ षट् द्रव्य-

दुणिये १ एग २ एग ३, पच ४ तिये ५ एग ६ दुण्णि ७ चउरोय ८ पचय ९  
एग १० एग ११ एगदस १२ एय उत्तर गेय ॥ १ ॥

† षट् द्रव्य निश्चय नय परिणामी छै व्यवहार नये जीव १ पुद्गल २ परिणामी छै  
धर्म १ अधर्म २ आकाश ३ काल ४ एच्यार अपरिणामी छै

‡ धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ असख्यातप्रदेशी छै आकाश अनत प्रदेशी छै  
जीव असख्यातप्रदेशी छै पुद्गल अनतप्रदेशी छै

§ क्षेत्रमस्यास्तीति क्षेत्री क्षेत्री पांच छै यथा-धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २  
जीव ३ पुद्गल ४ काल ॥ ५ ॥

॥ निश्चय नय करी छ द्रव्य साक्रिय छै व्यवहार नय करी जीव १ पुद्गल २ ऐ-  
वीय साक्रिय छै

॥ अक्रिय यथा—धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ काल ॥ ४ ॥

\* निश्चय नये षट् द्रव्य नित्य छै व्यवहार नये च्यार नित्य छै यथा धर्म १ अधर्म २  
आकाश ३ काल ॥ ४ ॥

में कारण जीव एक रे, कोई पांचजरे अकारणमांहे लेखि-  
ये; \*कर्ता एक छै जीव द्रव्य विशेष रे, कोई पांचजरे अक-  
र्तामांहे पेलिये ॥ ४ ॥ द्रव्य पदमे सर्व गत आकाश रे.  
कोई पांच जरे लोक प्रमाणे छै सही; मुनि राम कहे छै  
हारिये शुद्ध अभ्यास रे, कोई द्रव्य ज रे कोईमे कोई  
मिलतु नहीं ॥ ५ ॥ इति ॥

गाहा ॥

परिणाम १ जीव २ मुक्ता ३, सपएसा ४ एक ५ खि-  
त्त ६ किरियाय ७ णिचं ८ कारण ९ कत्ता १० सव्व-  
गई ११ डयर १२ अयवंसा ॥ १ ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥ द्रव्य १ गुण २ पर्याय ३ रास ॥

धर्मास्तिकाये च्यार †गुण छै नित्यरे, कोई अरूपी रे १  
अचेतन २ अक्रिय ३ गति सहाय छै ४; पर्याय च्यार  
खंध पिण छै नित्यरे, कोई देश प्रदेश ज रे अगुरु लघु  
अनित्य कहाय छै ॥ १ ॥ एव ‡अधर्माऽऽकाश ॥ नित्यानित्य  
जोय रे, कोई ॥ काल ज रे तेहना भेद कहतह; गुण ४ प-

\* निश्चय नये पद द्रव्य कर्ता छै व्यवहार नये एक जीव ही कर्ता छै

† धर्म द्रव्यना गुण च्यार छै यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ गतिसहाय ४  
पर्याय पण ५ छै यथा—एक १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु ४ ॥

‡ अधर्मास्तिकायना गुण ४ छै यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ गति सहाय  
४ ॥ पर्याय पण ५ छै यथा—खंड १ देश २ प्रदेश ३ अगुरु लघु ४ ॥

§ आकाशास्तिकायना गुण ४ छै यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ अग्राह-  
दान गुण ४ ॥ पर्याय पण ४ छै यथा—स्व १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु ४ ॥

॥ गुण च्यार मे स्वध ए पांच नित्य ॥ देश १ प्रदेश २ अगुरुलघु ३ ए तीन अनित्य ॥

॥ काल द्रव्यना गुण ४ छै यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ वर्तमान ४ ॥  
पर्याय पण ५ छै यथा—अतीत काल १ अनागत काल २ वर्तमान काल ३ अगुरु लघु ४ ॥  
नित्यगुण ४ अनित्य पर्याय ४ ॥



पर्याय ४ नित्या ४ नित्य ४ होय रे, कोई त्रय \* काल जे  
अगुरु लघु च्यारे गहतहं ॥ २ ॥ पुद्गल द्रव्यना गुण नि  
त्य कहिये च्यार रे, कोई रूपी रे १ अचेतन २ सक्रिय  
गलमिल ४ देख हो; पर्याय च्यारे अनित्य विचार रे  
कोई वर्ण ज रे गंध फर्श अगुरु लघु पेख हो ॥ ३ ॥ जीव  
द्रव्यना गुण पर्याय सात रे, कोई नित्य ज रे एक अ  
नित्य बोल हो; अनंत चतुष्टय च्यार गुण साक्षात  
कोई तीन ज रे पर्याय एहमे खोल हो ॥ ४ ॥ अव्याबा  
१ अवगाहन २ अमूर्ति ३ ए तीन रे, कोई सात ज रे नि  
त्य एहनें जाण हो; कहो कहो अगुरु लघु अनित्य प  
वीनरे, मुनि राम जरे कहे गुरु मुख बोल पिछाण हो ५ इति

तुरेकी देशी ॥ कोटे पाटणमें प्रसिद्ध छै ॥

ज्ञान तो वायो ना ऊगेरे, ज्ञानी तुररो रे; कोई ज्ञान  
लागे डार, बैरागी तुररो रे, ज्ञान उधारो नां मळे ॥ ज्ञा०  
काई भटकत फेरे रे गँवार ॥ वै० ॥ १ ॥ दाम दीयांसं  
मळे रे ॥ ज्ञा० ॥ कोई मळे न दिशावर दूर ॥ वै० ॥ ग्रथ  
जोयो न मळे ॥ ज्ञान० ॥ कोई मेनत करोरे भरपूर  
॥ वै० ॥ २ ॥ भेष अनेक कवि चातुरी रे ॥ ज्ञा० ॥ को  
मळे न कीये शिर फोड़ ॥ वै० ॥ ज्ञान हीयामें ऊपजे

\* अतीत १ अनागत २ वर्तमान ३ ॥

† पुद्गल द्रव्यना गुण च्यार छै यथा रूपी १ अचेतन २ सक्रिय ३ पूर्ण गलन गुण  
पर्याय पण ४ छै वर्ण १ गंध २ रस ३ फर्श ४ अगुरु लघु सहित

‡ जीव द्रव्यना गुण ४ छै यथा—अनंत ज्ञान १ अनंत दर्शन २ अनंत चाग्रि  
अनंत धीर्य ४ ॥ पर्याय पण ४ छै यथा अव्याबाध १ अनवगाह २ अमूर्तिक ३ अ  
लघु ४ ॥ जीव द्रव्यना नित्य पदार्थ सात छै यथा गुण ४ ने पर्याय ३ जुमळे ५  
अनित्य एक छै अगुरु लघु ॥

॥ ज्ञा० ॥ कोई मळे न दूजी ठोर ॥ वै० ॥ ३ ॥ ज्ञान  
अभ्यास तो कीजिये रे ॥ ज्ञा० ॥ कोई ज्ञान समो नहीं  
कोयरे ॥ वै० ॥ मुनि राम कहे सहू सांभळो रे ॥ ज्ञा० ॥  
कोई ज्ञान विना पशु होय ॥ वै० ॥ ४ ॥ इति ॥

### ४ देशी पूर्ववत् ॥

सत गुरु मुझने तारिये, गुरु ज्ञानीजी, मोनें करिये  
भवोदधि पार, सत गुरु ज्ञानीजी; जीवाजीव बताविये  
॥ गु० ॥ मोने देवोनी ज्ञान विचार ॥ स० ॥ १ ॥ जैन धर्म  
पायो दोहिलो ॥ गु० ॥ मुझ देवोनी भेद बताय ॥ स० ॥  
देव कौनसा धारिये ॥ गु० ॥ गुरु करिये किसा मुनिराय  
॥ स० ॥ २ ॥ धर्म धर्म सबको कहे ॥ गु० ॥ पिण सत्य धर्म  
छै कौन ॥ स० ॥ कौन ठिकांने बोलिये ॥ गु० ॥ रखी  
कहो कहाँ मौन ॥ स० ॥ ३ ॥ ज्ञान सेती भवोदधि तरो ॥  
॥ गु० ॥ चेतन लक्षण जीव ॥ स० ॥ जैन धर्म जग दोहि-  
लो ॥ गु० ॥ जिणसूं लगे मुगतकी नाँव ॥ स० ॥ ४ ॥ देवाधि-  
देव अरिहंत छै ॥ गु० ॥ गुरु छै शुद्ध निग्रथ ॥ स० ॥ जिन  
आज्ञा धर्म मानिये ॥ गु० ॥ ओही मुक्तको पंथ ॥ स० ॥  
॥ ५ ॥ मौन रखो तुमे पापमे ॥ गु० ॥ धर्ममे रहोनी वा-  
चाल ॥ स० ॥ मुनि राम कहे सहू सांभळो ॥ गु० ॥ सत  
गुरु चरणाने झाल ॥ स० ॥ ६ ॥ इति

### ५ खेलण दो गिणगोर पन्नामारू ॥ खे० ॥ ए देशी ॥

समय सार सिद्धांत बग्वाने, जीव छै पंच प्रकार,  
जीवाजी ॥ जी० ॥ समय० ॥ जिनको ऐ अधिकार ॥  
जि० स० जि० ॥ टेर ॥ डूधा १ चूधा २ सुधा ३ ऊंघा ४  
घूधा ५ पंचम धार, न्यारा न्यारा भेद बताऊं, सुनजो

हीये विचार २ ॥ स० १ ॥ डूँघा कर्म कलंक विना प्रभू,  
 वचन अगोचरकार; सिद्ध पदकूँ तो सेवे सदाई, सो  
 वंदूँ वारंवार २ ॥ स० २ ॥ चूँघा चतुर शिव अधिकारी,  
 व्यसनादिक परिहार; गुरुके वचन प्रेम धरीनें, चूँघे जैसे  
 वार २ ॥ स० ३ ॥ हीये दुष्टता रक्खे नांही, सुनवासेती  
 प्यार; परमारथ कहूँ समझे नांही, सो सुँघा मूढ गिवाँर  
 २ ॥ स० ४ ॥ विकथा जिसको प्यारी लागे, आगम ऊपर  
 खार; विपयी पापी दुष्ट हीयेमें, सो जूँघा कोप अपार २  
 ॥ स० ५ ॥ मन वचन नहीं श्रवण जिसीके, जड़वत सूरत  
 हार; एकेद्री हुय जगमें डोले, सो घूँघा घोर संसार ॥ २ ॥  
 स० ६ ॥ डूँघा केवली सुँघां ऊँघां, दोनूँ मूढ उचार; मुनि  
 राम कहे चूँघा छै उत्तम, शिवपुर साधनहार २, चेतनजी  
 ॥ शि० स० ॥ ७ ॥ इति ॥

### ६ देशी पूर्ववत् ॥

अपना रूपमें रमन करो थे, पुद्गल मोह निवार, चेत-  
 नजी ॥ पु० ॥ अपना रूपमें रमन करो थे, ज्ञान पायाको  
 सार २ ॥ अ० ॥ १ ॥ तूँ छै चेतन एछै अचेतन, ज्ञायक तूँ  
 संसार; अज्ञायक ऐ नित्यको जड़ छै, देखो ज्ञान विचार;  
 २ ॥ अ० ॥ २ ॥ तूँ अमूर्तिक मूर्तिक ऐ तो, दीसे नानाकार,  
 तूँ अविनाशीक नाशक ऐ छै, तूँ तेरो आपो संभार २ ॥  
 अ० ॥ ३ ॥ ज्यूँ कलधौत सोनारकी संगत, भूखन नाम  
 अपार; कंचनता किह भांत न जावे, जो करिये लाख प्र-  
 कार २ ॥ अ० ॥ ४ ॥ ज्यूँ नट एक धरै बहु वेष, देखे लोक तिवार;  
 नट तो अपनो रूप पिछाँनें, ज्यूँ चेतन गुन धार २ ॥ अ०  
 ॥ ५ ॥ निज स्वभावको भूले नांहीं, पर स्वभाव विसार;  
 मुनि राम कहै ऐ भाव रहे तो, जद लेखे जमवार ॥ २ ॥  
 अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

## ७ लावणी ॥

१ वर जोरी नहीं मिली सखीरी मैं जवान वालम  
छोटा ॥ ए देशी ॥

चवदे गुण ओताका कहिया, सुनके सब हिरदे  
धारो, इण भवमांहे सोभा पावो, पर भव तो सुधरे  
न्यारो ॥ ढेर ॥ भक्ति वंत ऐ गुण छै पेलो, मीठा बोलो  
है बीजै; तीजे गर्व विन रुचि है चौथे, पचम एकाग्र  
चित्त लीजै ॥ च० ॥ १ ॥ छठे सुणे सो परगट बोलो,  
सातमे प्रश्नजाण खरो; आठमे बहु शास्त्रको सुणियो,  
नवमे आलस दूर करो ॥ च० ॥ २ ॥ दशमो गुण निद्रा नहीं  
लेवे, ग्यारमे बुधवंत छै भारी; बारमो गुण दातारपणेको,  
तेरमे गुरु गुण विस्तारी ॥ च० ॥ ३ ॥ चवदमो गुण तो मो-  
टो सचसे, निंदा बिलकुल नहीं जेहने; वाद विवाद करै  
नहीं बोलो, मुनिराम कहै धन्य छै तेहने ॥ च० ॥ ४ ॥ इति  
ओता गुण १४ ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥ वक्ता गुण ॥ १४ ॥

वक्ताके गुण चवदे कहिये, पुनांसे वक्ता पद पावे;  
धर्म दृढावे शोभा पावे, सद्गतिमें पिण वो जावे ॥ ढेर ॥  
प्रथम पौढश बोलको जाता, शास्त्रारथ बीजे ठाणो;  
तीजे गुण तो मीठी वाणी, चौथे अवसरकूं जाणो ॥ च० ॥  
पचम सत्य वदै गुण छट्ठो, संशय छेदन करै परनो; सातमे  
गीतारथ उपयोगी, अष्टम सकोच विस्तरनो ॥ च० ॥ २ ॥  
कठिण अपशब्द विन नवमो, दशमो सभा रंजन करही;  
ग्यारमो प्रश्न अर्थको ग्राहक, बारमो गुण मद परहरही  
॥ च० ॥ ३ ॥ वरमां गुण तो तेरमे निरमल, चौदमे लोभ

जरा नांही; मुनि राम कहै छै गुण ऐ चवदे, है विरला  
वक्ता मांही ॥ च० ॥ ४ ॥ इति ॥

३ देशी पूर्ववत् ॥ चवदे विद्या नाम ॥

चवदे विद्याके नाम सुनो तुम, शास्त्रमें ऐसैं खुलही;  
अंत विद्या तौ परमोत्तम है, बाकी सब पुन्यसैं मिलही  
॥ ढेर ॥ गगन गामनी पहली विद्या, बीजी पर तनमें  
पैसैं; रूप परावर्त तीजी बोली, चौथी स्तंभनी है ऐसैं ॥  
॥ च० ॥ १ ॥ पंचमी मोहनी स्वर्ण सिद्धि पद, रजत सि-  
द्धि सतमी कहिये; रस सिद्धी तौ अष्टमी गाई, थोभनी  
बंध नौमी लहिये ॥ च० ॥ २ ॥ अरि परायनी दसमी  
जांनो, ग्यारमी वश्यकरनी वरनी; भूतादि दमनी बार-  
मी बोली, तेरमी सब संपत करनी ॥ च० ॥ ३ ॥ ऐ अ-  
योदश विद्या मिले भागसैं, शिवपद प्रापनी है छेली;  
मुनि राम कहै छै साधक एहनो, तेहनो भगवत छै बेली  
॥ च० ॥ ४ ॥ इति ॥

तुम चलो सखी कुछ जेजन करिये ॥ ए देशी ॥

पंच प्रकार मिथ्यात तजो तुम, अभिग्रहीत सुनियो  
लोगं; अनभिग्रहीत आभिनिवेशिक, संशयिक और अ-  
नाभोगं ॥ पं० ॥ ढेर ॥ गुन अवगुन तो नांहीं विचारे,  
मत ग्रह्युं ते जानै खरा; अभिग्रहीत तो पेला मिथ्यात;  
बीजा मत सब माने बुरा ॥ पं० ॥ १ ॥ अनभिग्रहीतके  
सब मत अच्छा, विशेषपणुं तौ नबि जानै; धोळो धोळो  
सब दूध पिछांनै, सब देवा सब गुरु माने ॥ पं० ॥ २ आ-  
भिनिवेशिक तीजा मिथ्यात, अपना बोलकी थाप करै;  
हठग्राही वो सूत्र उल्थापे, पर भवसेती नाही डरे ॥ पं०

॥३॥ जिनोक्त पदार्थें संशय रक्खे, पूछै नही लज्जा कर-  
के; संशय मिथ्या नाम है चौथा, ओवी रुठे चहुं गति  
मरके ॥ पं०॥४॥ अनाभोग मिथ्यात पंचमा, अज्ञात  
पणे सबकूलागे; एकेंद्रियमांहे होवे विशेष, मतवाला  
जिम नहीं जागे ॥ पं०॥५॥ पच मिथ्यातकों छोडो प्यारे,  
जिनसें तुम जलदी तरसो; मुनि राम कहै जे शुद्ध उपदे-  
शीं, शुद्ध आचारी गुरु करशो ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

## गाल

### १ देशी पंखेरी ॥

कहो गुरु जीव अजीव दोय राशी रे, करूं सद्गुरु से-  
वारे; सुणो शिष्य प्रथम तोय यह भासी रे, जाणे  
अरिहंत देवारे ॥ १ ॥ कहो गुरु जीवके भेद विचारां रे  
॥ क० सु० ॥ सिद्धने और संसारारे ॥ क०॥ जां०॥२॥ क०॥  
कर्म संसार भठकावे रे ॥ क० सु०॥ भव्याभव्य दोय स्व-  
भावेरे ॥ जां० ॥३॥ क० ॥ भव्य तो मुक्ति सिधासी रे  
॥ क० सु० ॥ भव्यको छेडो नहीं आसीरे ॥ जां० ॥ ४ ॥  
क० ॥ काल समयसे जीव छै कितनारे ॥ क० सु० अनंता  
नंत कहू जितनारे ॥ जा० ॥ ५ ॥ क० ॥ कुण कुण घरमें  
वसाया रे ॥ क० ॥ सु० ॥ लक्ष चौरासी उपजाया रे ॥  
॥ जां० ॥ ६ ॥ क० ॥ अन्वल घर कुण मेरा रे ॥ क० सु० ॥  
वणसइ घर धुर तेरा रे ॥ जां० ॥ ७ ॥ क० ॥ एक घरमे  
जीव ते वसीया रे ॥ क० ॥ सु०॥ अनंत जीव तिहां घसी-  
या रे ॥ जां० ॥ ८ ॥ क० ॥ काल कितनो तिहां रमियो रे  
॥ क० ॥ सु० ॥ काल अनंत तिहां भमियो रे ॥ जां०॥९॥  
॥ क० ॥ जन्म मरण आहारने सासा रे ॥ क० ॥ सु० ॥

सबके एक समै प्रकाशारे ॥ जां० ॥ १० ॥ क० ॥ एक  
 शरीरे जीव केता रे ॥ क० सु० ॥ नहीं मुक्तिमें जावे  
 कभी जेता रे ॥ जां० ॥ ११ ॥ क० ॥ मानव भव किम पायो रे ॥  
 ॥ क० सु० ॥ नव स्थल लंघीनें आयो रे ॥ जां० ॥ १२ ॥  
 ॥ क० ॥ अल्पसें अल्प भव कहेना रे ॥ क० सु० ॥ स्तोक  
 तो नर भव देहना रे ॥ जां० ॥ १३ ॥ क० ॥ जीव कर्म  
 किम करिया रे ॥ क० सु० ॥ दोनूं अनादी उच्चरिया  
 रे ॥ जां० ॥ १४ ॥ क० ॥ युक्तिसू कर्म खपावे रे ॥ क०  
 सु० ॥ जयही मुक्ति हो जावे रे ॥ जां० ॥ १५ ॥ क० ॥  
 सकल सामग्री भव्य कोई पावे रे ॥ क० सु० ॥ मुनि  
 राम सदा एही चावे रे ॥ जां० ॥ १६ ॥ इति

## २ देशी पेमासरी ॥

सुपरीक्षा करी, जीव द्रव्यकी खबर परी, जीव द्रव्य  
 नहीं नाश ज है, तीन कालमें नित्य रहै; जावे कबून  
 फिरी, जीव द्रव्यकी खबर परी; सुपरीक्षा करी, जिना-  
 गमकी नहीं बराबरी ॥ १ ॥ सु० ॥ जीव गुणकी खबर  
 परी, गुण तो द्रव्यके लार रह्यौ, अनत चतुष्टय संग  
 बह्यौ; पर्याय ठरी ॥ जि० सु० ॥ जीव गुणकी खबर परी  
 ॥ २ ॥ सु० ॥ अजीव द्रव्यकी खबर परी, अजीव द्रव्यको  
 निर्णय करो, गुरु मुखसेती हिरदै धरो; गुरु पाय परी  
 ॥ जि० ॥ सु० ॥ अजीव द्रव्यकी खबर परी ॥ ३ ॥ सु० ॥  
 द्रव्य गुण पर्यव तीन खरी ॥ सु० ॥ अजीव तीनकी ख-  
 बर परी; अजीवतणा दोय भेद भया, रूपी अरूपी होय  
 रह्या; हिरदै धरी ॥ जि० सु० ॥ द्रव्य ॥ ४ ॥ च्यार न दीसे  
 रूप करी ॥ सु० ॥ पुद्गल दीसे रूप भरी, पुद्गलको सब  
 जग व्यवहार, दीसे जगमें नानाकार; नहीं एक सरी ॥

जि० सु० च्या० ॥५॥ सु० ॥ जीव अजीवकी खबर परी;  
जीव अजीव दोय पुंज खरा, मुनि राम कहै फेर नही ति-  
सरा; स्याद्वाद करी ॥ जि० सु० ॥ जीव अजीव ॥६॥ इति ॥

३ ख्याली आयो रे मुलतानसें ॥ ए देशी ॥

अंगीकरो रे स्याद्वादकूं, तुम छोडोनी बाद विवादको  
अं० ॥ १ ॥ स्यात् शब्द अंकित सब ठौरे, ए छै रे मत  
अनादको ॥ अं० ॥ २ ॥ अर्हत् दर्शन स्याद्वाद ग्रंथ, सीखोनी  
जीतो परवादको ॥ अं० ॥ ३ ॥ जल कच्चा अग्नी  
पक दूजो, तीजो कुशील कुवादको ॥ अं० ॥ ४ ॥ ऐ त्रय  
वर्जित स्याद्वाद सब, समजोनी शास्त्र अगाधको ॥ अं०  
॥ ५ ॥ मुनि राम कहै स्याद्वादकूं ग्रहिये, करिये रे दूर  
परमादको ॥ अं० ॥ ६ ॥ इति ॥

४ नाथूरामजीवाळी यार कीयो परदेशी छेलो रे,  
दान जोवनको लेलो, आयो यार उत्तर नहीं देलो ॥

॥ ए देशी ॥

गुणठांणे धुरसें चाल लीयो चौथानो गैलो रे, जीव यो  
शिव पद ले लो; छूट गयो गुणठांणो पेलो ॥ टैर ॥ चौथा  
सेती पचम जावे, अथवा सत्तम छट्टे आवे; टैर सके तो  
ठैरे यांही, हे सत्तम पिण भेलो रे ॥ जी० छू० ॥ १ ॥ स-  
त्तमसेती अठ्ठम आवे, उपशम क्षपक ओणि रचावे; क्षपक  
जाय तो केवल होवे, उपशम फेर पड़ेलो रे ॥ जी० छू०  
॥ २ ॥ धुर गुणठांणे चउ गति जावे, दूजे सुं नहीं नरक  
सिधावे; तीनू गतिनो आयू घग्ने, नहीं तीजे बंध करेलो  
रे ॥ जी० छू० ॥ ३ ॥ चौथे सुरनर आयू सांधे, सुरमें  
एक विमाणिक बाधे; पचम आचक करनी सेती, ऊर्ध्व



चढेलो रे ॥ जी० छू० ॥ ४ ॥ छट्टम सत्तम मुनिसर कहिये,  
आगे आयू बंध नहीं है; सर्वार्थ सिद्ध लों ऊंचो जावे,  
अथवा मुक्तिको गैलो रे ॥ जी० छू० ॥ ५ ॥ आदि गुणठांणा  
तीनूं बोलो, पंचम ग्यारम न्यारा खोलो; तीर्थकर नहीं  
फरशे पांचूं, अन्य जीव फरशेलो रे ॥ जी० छू० ॥ ६ ॥  
तीजो कहिये अमर गुण ठांणो, चारमो तेरमो पिण  
इम जांणो; मरण करे तो शेष इग्यारे, राम इम शाल  
भणेलो रे ॥ जी० छू० ॥ ७ ॥ इति गुणठांणा विधि ॥

### ५ देशी पूर्ववत् ॥

गुणठांणो धुर सादि अनादि, भेद दोय कहै सत्य-  
वादी; ग्रंथि भेद फिर मिथ्या सादि, अध पुगल मुक्त  
लहेलो रे; सेवट चो शिव पद लेलो, छट गयो गुणठांणो  
पेलो ॥ ढेर ॥ १ ॥ जिण जीव ग्रंथि भेदी नहीं क्यांरे,  
अंत अनत दो भेद है ज्यांरे; आदि अंत नही ते अभव्य,  
कबू नहीं मुक्ति रळेलो रे ॥ से० छू० ॥ २ ॥ चौथे पंचम  
छट्टेसूं पाती, सस्वाद न व्है समकितघाती; एक समै पद  
आवलि विचमें, फेर मिथ्यात गहेलो रे ॥ से० छू० ॥  
॥ ३ ॥ अनंतानुबंधि उदयथी न्यारा, सत्यासत्य सम मिश्र  
धारा; अंतर्मुहूर्त समै एक ठैरी, दोयसे एक भिळेलो रे ॥  
से० छू० ॥ ४ ॥ छासट सागरलो रहै जाक्षेरो, अंतरमुहूर्त  
जघन्य विचारो; तेतीस सागर भव एक गणिये, चौथे एम  
सुणेलो रे ॥ से० छू० ॥ ५ ॥ कोटि पूरब देश ऊंणो जा-  
णो, अंतर्मुहूर्त जघन्य पिछांणो; देश वृत्तिकी थिति ए  
बोली, सुगुरु मुखसे झेलो रे ॥ से० छू० ॥ ६ ॥ छट्टा सेती  
बारमे जावो, पृथक अंतर मुहूर्त गावो; एक समैकी जघ-

न्य बतावो, फेर केवल वास वसेलो रे ॥ से० छू० ॥ ७ ॥  
जघन्य तेरमे मुहूर्त अंतर, कोड पूर्व अठ वर्षकेभ्यंतर; होय  
अयोगी मुक्ति पधारे, पंच अक्षर लघुरै छेलो रे ॥ से०  
छू० ॥ ८ ॥ दान शील तप भाव आराधो, पढिया मुनि  
की सेवा साधो; मुनि राम कहै ये जन्म सुधारो, सुन  
सद्गुरुनो हेलो रे ॥ से० छू० ॥ ९ ॥ इति ॥ चतुर्दश गुण  
स्थान स्थिति विवरण ॥

६ खयाली आयोरे मुलतानसें ॥ ए देशी ॥

तुम जाप जपोरे नमोकारको, सह पाप धुपेरे जमवार-  
को ॥ तु० ॥ देर ॥ श्रीमती लही फूलकी माला, कुष्ट गयो  
रे श्रीपारको ॥ तु० ॥ १ ॥ भील भीलनी नृप पद लहियो  
पोरसो शिवही कुमारको ॥ तु० ॥ २ ॥ जिनदास सेठ वि  
जोरो लायो, बलिवर्द सुर अवतारको ॥ तु० ॥ ३ ॥ चो-  
र छौंके चढ गगनमे उडियो, लह्यो सूली चढ्यो भव पा-  
रको ॥ तु० ॥ ४ ॥ पांडव त्रिया द्रौपदी केरो, चित्र दाळि-  
यो भुजगम न्हारको ॥ तु० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहै छै भव-  
भव एहनो, शरण चाहुरे सुखकारको ॥ तु० ॥ ६ ॥ इति ॥

७ सखी सुन वात सयांनी ॥ ए देशी ॥

ध्यान लगासां मन ठैरासां, नासा निजर जमासां रेक;  
मंत्रको न्यास घुमासां, हांक जिनवरना गुण गासां, जिन  
गुण गासां वांछित पासां, पासा शिव पुर वासारैक ॥  
जि० ॥ हांक जि० ॥ १ ॥ ध्याता ध्यान ध्येय पद तीने, निज  
गुण मांह रमासां रेक; छोटां सब आसा पासा ॥ हां०  
॥ २ ॥ और ध्यानको छोडो प्यारे, देखो फेर तमासा रेक;  
होवे तेरे मांहि प्रकाशा ॥ हां० ॥ ३ ॥ अर्ह पदका ध्यान

चढासां, दशमें द्वारे जासारेक; झूठ नही जिणमे मासा ॥  
हां० ॥ ४ ॥ मुनि रामचंद्र तो और न चाहे, रखो चरनके  
पासारेक; मेढो प्रभु गर्भावासा ॥ हां० ॥ ५ ॥ इति ॥

८ सासू सेज बिछाई किसान घरमें ॥ ए देशी ॥

जीवा अवल वस्यौ तूं किसान घरमें, सखि धुर धर  
मेरो निगोद दरमें, के हांक समकितल्यो, मानव भवमें,  
उत्तम कुलमें, जन्म सुधारो, छोडो संको, परखी ल्यो जी  
समकित ल्यो ॥ १ ॥ जीवा अव्यवहार राशि वनस्पति  
में, सखि व्यवहार राशि चतुः गतिमें ॥ के हांक स०  
॥ २ ॥ जीवा ग्रंथि भेदक शिव वरिये, सखि और सकल  
चौ गति फिरिये ॥ के हांक स० ॥ ३ ॥ जीवा सूत्र प्रतीत हिये  
धरिये, सखि संका कंखा तौ नवि करिये ॥ के हांक स० ॥ ४ ॥  
जीवा स्थाणु कीटिका चढ़ी ढरिये, सखि कीटि पखाळी  
जायै परिये ॥ के हांक स० ॥ ५ ॥ जीवा जीव अजीव-  
सैं जग भरियो ॥ सखि श्रद्धा बिना नां को तरियो ॥  
के हांक ॥ स० ॥ ६ ॥ जीवा सूत्र प्रमाण श्रद्धा चहता,  
सखि राम मुनि तौ हम कहता ॥ के हांक स० ७ ॥ इति ॥

दोहा ॥

प्रभु नामे सुख संपजे, आपद जावे दूर । अष्ट सिद्धि  
नव निधि मिले, कर्म हुवे चकचूर ॥ १ ॥ अणिमा १ धुर  
महिमा द्वितीय २, लघिमा ३ गरिमा ४ होय । प्राप्ति ५  
प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशीत्व ८ वसुमी जोय ॥ २ ॥  
गज १ सिंह २ दावानल ३ अहि ४, रिन ५ समुद्र ६ गुरु  
७ वध ८ । प्रभु नामे वसु भय टळे, मिटे जमारा फद ॥ ३ ॥

## ढाळ ॥

### १ देशी चौपईनी ॥

प्रथमा ऋद्धी अणिमानाम, नान्हो रूप करे सुख काम;  
कमल नालमें पैसी जाय, चक्री केरो सुख भुगताय ॥ १ ॥  
दूजी महिमा ऋद्धि अभिराम, मेरुथकी मोटो तनु ताम;  
विष्णुकुमारतणी पर होय, सुरनर देख डरे सहुकोय ॥ २ ॥  
लघिमा वायूपरे तनु धाय, गरिमा वज्रसो शरीर बनाय;  
इंद्रादिक नहीं सके उठाय, चौथी गरिमा नाम कहाय ॥ ३ ॥  
प्राप्ति पंचमी ऋद्धिकी बात, फेरे भूं बैठा मेरुपर हात;  
प्राकाम्य छद्दी ऋद्धि गुण एह, जलपर भूं पर ज्यू फिर  
जेह ॥ ४ ॥ ईशित्व सप्तमी ऋद्धिका नाम, तीर्थकर ऋद्धि  
करै सुख धाम । अष्टमी वशित्व जग वश धाय, सुरनर  
पूजे तेहना पाय ॥ ५ ॥ अष्ट सिद्धि प्रभु नामे मळे, प्रभु  
नामे लक्ष्मी अविचले । प्रभु नामे हुवै मंगल माल, मुनि  
राम कहै सब ढळै जंजाल ॥ ६ ॥ इति ॥

### २ चाल जोगी रासानी ॥

भगवत भाखै जगसिधू जलछै १, जन्म जरा मरन पानी,  
कर्दम स्थाने काम भोग कादो २, अहंकार फेन तूं जानी ३;  
च्यार कलसा ज्यू गत कही च्यारे ४, तृष्णा वेल वखां-  
नी ५; कच्छप मच्छ ज्यू कुटुब कबीलो ६, मगर ज्यू ग-  
लागल तांनी ७; समुद्रमें डूंगर कर्मने जाणो ८, संघोट्या  
कर्म कुगुरु पिछांनी ९; रत्नाकर ज्यू श्रीसग कहिये  
१०, कांठे ज्यू मोक कहानी ११; वडवानल सिधू क्रोधने  
समझो १२, कपट तौ भमर स्थानी १३; समुद्रमें कळण

ज्यूं मोहकी कळण, जिणमें कळथा सहू प्राणी १४; मुनि  
राम कहै संसार सिधुनें, तखा भगवत वाणी ॥१॥ इति॥

३ श्रीगुरु चरणां रे नमिये ॥ ए देशी ॥

श्री जिन वचनां रे रमिये, भव भवना दुख गमिये  
॥ श्री० ॥ श्री जिन वाणी रे परखो, तुमे पद दर्शनक  
निरखो; आप्तवाक्य निबंधन मर्थ ज रे ज्ञान, सो आगम  
अर्थ प्रमान ॥ श्री० ॥ १ ॥ आगम पद लक्ष ज रे जानो,  
अवशिष्ट लक्षण भेद पिछानो ॥ श्री० ॥ जो अर्थ ज्ञान  
ज रे कहिये, तो प्रत्यक्षे अतिव्याप्ति लहिये ॥ श्री० ॥ २ ॥  
वाक्य निबंधनमर्थ ज्ञान रे बोलै, विरोधी उक्ति नै  
जिण तोलै ॥ श्री० ॥ जठै आप्त वाक्य निबंधन ज्ञान  
ज रे कोगे, तौ आप्त वाक्य कर्म पिण होगे ॥ श्री० ॥ ३ ॥  
तातें अर्थ पदकारे कैणा, तात्पर्य अर्थ समझी लेणा  
॥ श्री० ॥ सम्यक् दर्शन ज्ञानचारित्र रे तीने, मोक्ष मार्ग  
कहै बुद्ध अहीने ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सम्यक् शब्दे तीनूं रे ले-  
ना, विपरीत संशय अनध्यवसाय तज देना ॥ श्री० ॥  
एक दोयसैं मुक्ति रे नहीं छै, आगम राम प्रमान एही  
छै ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे तत्व-  
विचारनामकं तृतीयं प्रकरणम् ॥ ३ ॥

## ४ स्तवन—गीत ॥

१ जात्रीडा यात्रा निनाणूं करिये रे ॥ ए देशी ॥

अमे जिन चरणां चित्त धसां रे, अमे पाप पुराकृत  
हरसां रे; अमे पाखंड मत परहरसां, प्रभुजीरी नौकरी

अमे करसां रे, भलां करसां ने भव तरसां ॥ प्र० ॥ १ ॥  
 अमे धींग धणी शिर धरसां रे, अमे पांखडसूं नहीं ढरसां  
 , अमे शिव सनमुख पग भरसां ॥ प्र० ॥ २ ॥ तूं साहिव छै  
 तेरो रे, हूं सेवक छू तेरो रे; मोनें दीजो मुक्तिमें डेरो ॥ प्र०  
 ॥ ३ ॥ जो नहीं प्रभु मुझ तारो रे, तो अमने कौन आ-  
 गारो रे; हूं तो भव भव दास तुमारो ॥ प्र० ॥ ४ ॥  
 भतो रत्न चितामणि लाधूं रे, अमचोमनहूं बाधूं रे; हूं तो  
 भव भव तुमहुं अराधू ॥ प्र० ॥ ५ ॥ जो होवे निज दासा  
 , मालक पूरे आशा रे; जो होवे दास निराशा रे, तौ  
 करसी लोक तमाशा ॥ प्र० ॥ ६ ॥ तूं छै अंतरजामी रे,  
 प्रभु तू छै त्रिभुवन स्वामी रे; रामचन्द्र कहै शिरनामी  
 ॥ प्र० ॥ ७ ॥ उगणीसे अष्टादश घरसे रे, तिवरी मांहे  
 भाव सरसे रे; सह्र सेवा करणनें तरसे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ इति ॥

## २ देशी नीबूड़ानी ॥

हो सुखकारी हो जिनजी, भव भव दीजो चरणांरी  
 सुझने चाकरी हो राज; हूं बलिहारी हो जिनजी, हूं तो  
 चाहू कृपा निश दिन आपरी हो राज ॥ १ ॥ काशीदेश  
 वणारसी मांय हो ॥ सु० ॥ जन्म लीधो कीधो जुगमें  
 चानणो हो राज; नाग नागणी तूं मंत्र सुणाय हो, सुर  
 पद दीधो कमठनो मांन भानणो हो राज ॥ २ ॥ स्यू कहूं  
 बहुली बात हो, जनम मरणना दुख चिहुं गतमें मैं सखा हो  
 राज; वन्य धन्य पार्श्वनाथ हो, सेवकने तो दीजो शिव  
 पुर कर मया हो राज ॥ ३ ॥ अधम उधारण तोय हो, सुणनें  
 आयो नुमायो चरणे राजनें हो राज; अब राखो शरणे  
 मोय हो राज, जिम तिम करने राखो, अमची लाजने  
 हो राज ॥ ४ ॥ कुणसके दुश्मण भाळो हो, धींग धणीरी

लागी जिण शिर छाप हे हो राज; थे प्रभु दीन दयाल  
हो, रामचंदनें राखो शरणे आपरे हो राज ॥५॥ इति।

### ३ देशी हींडाकी ॥

प्यारी लागे जी जिनकी सेवा, पार उतारे राज प्यार  
लागे जी ॥ टेरे ॥ पिरथी अप तेज्जने वायू, जां दर्शन  
नही पायो रे; वनस्पतीमें काल अनंतो, यूंही गमायो  
॥ प्या० ॥ १ ॥ बी ती चउरेंद्री मां हे, पंचेंद्री जब हूवो रे  
असंझी तिरजंच मनुज, हुयनें मूवोरे ॥ प्या० ॥ २ ॥ नर  
कमांहे दुख है भारी, सुर सुखमें चित दीनो रे; मनुज  
अनारज मांहे, हूवो पाप मतीनो रे ॥ प्या० ॥ ३ ॥ काल  
अनादी भटकत भटकत, आवकनो भव पायो रे; भल  
हुवो श्रीगुरु देवको, सागे धर्म बतायो रे ॥ प्या० ॥ ४ ॥  
हरि हर ब्रह्मा देव बतावे, राग द्वेषसं कलिया रे; बीत  
राग जे तारक साचा, ते नहीं मिलियारे ॥ प्या० ॥ ५ ॥  
शस्त्र धारे नारी राखे, फिर फिर ले अवतारे रे; व्यभि  
चारी बहु कामी दंभी, ते किम तारे रे ॥ प्या० ॥ ६ ॥  
नाभिराय मरुदेवी नंदन, प्रथम तीर्थकर देवा रे; रामचंद  
कहे साहिब दीजो, भव भव मांगूं सेवा रे ॥ प्या० ॥ ७ ॥ इति

### ४ देशी दरजियांकी ॥

महाविदेहमे तू वसे, हरे हारे तूं वसे, जिनेश्वर, ह  
तो रे वसूं भरत मझार, सीमंधरजीसूं मन लागो; पांख  
नही आवी मिल, हरे हारे आवी मिल, जिनेश्वर, पूग  
रे नहीं चरण विहार ॥ पू० ॥ सीमंधरजीसूं मन लागो,  
मन लागो रे, जिनेश्वर, तूं तो मेरो नाथ, बाबा ह छ  
तेरो दास, जिन चरणां म्हारो चित लागो ॥ १ ॥ अर्जी

लिखनें भेजवूँ, हरे हारे हारे भेजवूँ, जिनेश्वर, सांशु  
 रे नहीं आवणहार ॥ सी० ॥ आवत जावत जो हुवे,  
 हरे हारे जो हुवे, जिनेश्वर, लावे रे कोई मुख समा-  
 चार ॥ सी० म० ॥ २ ॥ गगन गती चिद्या ना रही, अरे  
 हारे हारे नां रही, जिनेश्वर, सुरवर रे नहीं मोरे सहाय  
 ॥ सी० ॥ दर्शनरी मनमें रहे, अरे हारे मनमें रहे, जिने-  
 श्वर, इण भवरे इं नहीं सकूं आय ॥ सी० म० ॥ ३ ॥  
 एक पुन्याई माहरी, अरे हारे हारे माहरी, जिनेश्वर,  
 जाण्या रे मैं श्रीजिनराय ॥ सी० ॥ रामचंदनी वीनती,  
 अरे हारे वीनती, जिनेश्वर, दीजो रे मुझ पार लंघाय  
 ॥ सी० म० ॥ ४ ॥ इति ॥

### ५ देशी पूर्ववत् ॥

स्फटिक सिंघासन ऊपरे, बैसीनें ध्वन उचरे, जिनेश्वर,  
 सुनवारे आवे चौसठ इंद, सेवे रे थाने सुर नर वृंद, सी-  
 मंथरजीसुं मन लागो, मन लागो रे, जिनेश्वर, तूं तो मेरो  
 नाथ, वावा हू तो तेरो दास, प्रभु चरणां म्हारो चित लागो  
 ॥१॥ सर्व संशय छेदनी, मोह कर्मने भेदनी, जिनेश्वर वरसेरे  
 जिम अमृत बैण, निरखे रे थाने भर भर नैण ॥ सी० ॥ २ ॥  
 अनत रूप रळिघामणो, विस्मयनो उपजावणो ॥ जि० ॥  
 सोभे रे जिम पुनमचद, दीठां रे हुवे परमानंद ॥ सी० ॥  
 ॥३॥ दर्शन करे छै आपनो, नाश करे छै पापनो ॥ जि० ॥  
 मोटा रे छै जिणरा भाग, राखे रे जे थोसूं राग ॥ सी० ॥  
 ॥ ४ ॥ रामचद अरजीभणी, थे छो मुज शिरना धणी  
 ॥ जि० ॥ कीजो रे मुज भवोदधि पार, लीजो रे मुज  
 पार उतार; दीजो रे मुज अविचल ठाम, हू हू रे तुज  
 दास गुलाम ॥ सी० ॥ ५ ॥ इति ॥



## ६ देशी कलाळीकी ॥

महाविदेह अति सुखकार हो, प्रभुजी; कांई जिह  
 तो विराजै श्रीजगनायकू हो, राज; त्रिभुवन स्वाम  
 ॥ जि० ॥ धन्य थानें देखे नर नार हो ॥ प्र० ॥ वाण  
 सुहांणी सुणे सुखदायकू हो, राज ॥ त्रि० वा० ॥ १  
 अशोक वृच्छ स्वच्छ आनंद हो ॥ प्र० ॥ कांई स्फटि  
 सिंहासन आसन शोभता हो राज ॥ त्रि० ॥ संवे थान  
 चौसठ इंद हो ॥ प्र० ॥ कांई हाजर तो जभासनमुख  
 जोवता हो राज ॥ त्रि० हा० ॥ २ ॥ हूं तो वसूं भरत  
 मझार हो ॥ प्र० ॥ कांई दुखमी तो आरो हलाहल आ  
 जनो हो राज ॥ त्रि० दु० ॥ पायो मैं तो जिन धर्म सार  
 हो ॥ प्र० ॥ कांई भलो तो होईजो गुरु महाराजनो हो  
 राज ॥ त्रि० भ० ॥ ३ ॥ सीमंधर प्रभुनें निरखण लाग  
 हो ॥ प्र० ॥ कांई निरखूं सो विरियां लेखे लागसी हो  
 राज ॥ त्रि० नि० ॥ मुनि राम कहे छै धन्य म्हारा भाग  
 हो ॥ प्र० ॥ कांई दर्शन करनेसैं भ्रमना भागसी हो राज  
 ॥ त्रि० द० ॥ ४ ॥ इति ॥

## ७ देशी रंभा वायलीकी ॥

प्रभुजी थारी हो नामतणी बलिहार, सुपनामे दीठी  
 हो सूरत आपरी; प्रभुजी पायो हो आनंद अपार, निश  
 दिन रटसूं हो माला जापरी ॥ १ ॥ प्रभुजी जाण्या हो  
 पुन्य प्रमाण, भव भव चाऊ हो सेवा देवरी; सतगुरु दीवी  
 हो मोनेजी पिछांण, उत्कठा लगी हो सदा थारे सेवरी  
 ॥ २ ॥ प्रभुजी थारा हो गुणजी अनत, इद्रादिक गाये  
 हो पार न पावीयो; प्रभुजी थाने निरखे हो जिके पुन्य-

॥ १२ ॥ रामचंद करै वीनती ॥ जि० ॥ भुज जन्म मरण  
मेढ जाय ॥ जि० ॥ उगणीसे नवे विसलपुरे ॥ जि० ॥  
वामी वृद्धिचंदजी पसाय ॥ जि० ॥ १३ ॥ इति ॥

### १० देशी नीबूझानी ॥

तूं प्रभु त्रिभुवन नायको, तू छै हो प्रभु देवाधिदेव;  
मोय पतित प्रभु तारिये, करिये हो भवोदधि पार ॥ मो० ॥  
तूं ईश्वर परमेश्वरू, सुर नर हो सारे प्रभुजीकी सेव  
॥ मो० ॥ १ ॥ अधम उधारण तूं प्रभू, समर्थ हो प्रभू  
गरीबनिवाज ॥ मो० ॥ काज सुधारो कृपा करी, सुणि-  
येहो प्रभू गरीब अवाज ॥ मो० ॥ २ ॥ केहू ताच्या केहू ता-  
स्यो, स्थू फूलू हो प्रभू पर रिध देख ॥ मो० ॥ जिण दिन  
प्रभु मुझ तारसो, हूसी हो प्रभू हर्ष विशेख ॥ मो० ॥ ३ ॥  
सुधो सजम नां पळै, समकित हो पिण नहीं निरधार  
॥ मो० ॥ मुनि राम कहै प्रभु आसरो, करिये हो प्रभू  
येहो पार ॥ मो० ॥ ४ ॥ इति ॥

### ११ देशी मिजनूंकी ॥

ये छो त्रिभुवन नाथ, थारे सरीखा जुगमें नां जुडे रे  
लो; थां पर वारी म्हांरा जिनजी, महर करीने दर्शन दी-  
जिये रे लो; प्रभूजी पारस लागो हाथ, लोहन रवै जो अडे  
रे लो ॥ १ ॥ तूं छै देवाधिदेव, हूं तो अनाथ शरणै थाहरे रे लो;  
चाहूं थारे चरणारी सेव, रात दिवस हूंस माहरे रे लो  
॥ २ ॥ कृपानिधी तुमचे जी पास, हूं तो नाच्यो विविध  
सागसू रे लो; जो रीझ्या तौ करू अरदाश, बगसो जो  
वस्तु एक मांगसू रे लो ॥ ३ ॥ जो नही रीझ्या दयाल, जय  
तो नाकारो करो नहीं नाचसू रे लो; रामचंदकी अरज  
कृपाल, हा ना फुरमावो निज वाचसू रे लो ॥ ४ ॥ इति ॥

तार ॥ जि० ॥ रुखमणी नामे भारज्या ॥ जि० ॥ रु  
 रति अनुहार ॥ जि० ॥ २ ॥ संसारना सुख भोगवी ॥  
 ॥ जि० ॥ रक्षा तयांसी लाख पूर्व गेह ॥ जि० ॥ प  
 संयम आदन्यो ॥ जि० ॥ सुर नर पाय प्रणमेह ॥ जि०  
 ॥ ३ ॥ चौतीस अतिशय शोभता ॥ जि० ॥ रही पैतीस  
 वाणी विराज ॥ जि० ॥ काया धनुष थारी पांचसे ॥  
 ॥ जि० ॥ जयवंता विचरे आज ॥ जि० ॥ ४ ॥ अनत रूप  
 सोवन तनू ॥ जि० ॥ लंछन वृषभनो जाण ॥ जि० ॥  
 द्वादश परिषदा आगले ॥ जि० ॥ वाणी योजन प्रमाण  
 ॥ जि० ॥ ५ ॥ द्वादश गुण करि शोभता ॥ जि० ॥ पर  
 उपगारी जिनंद ॥ जि० ॥ सिध च्यारु सेवा सांचवे ॥  
 ॥ जि० ॥ सेवे थानें सुर नर वृंद ॥ जि० ॥ ६ ॥ दक्षिण  
 भरते हू वसंत ॥ जि० ॥ दुखमी पंचमे काल ॥ जि०  
 ॥ पुन्य संजोगे पांमियो ॥ जि० ॥ श्रीजिन धर्म  
 रसाल ॥ जि० ॥ ७ ॥ तुम दरसनरी चायना ॥ जि० ॥  
 लग रही मनरे मांय ॥ जि० ॥ लब्धि नहीं सुर वश नहीं  
 ॥ जि० ॥ इण भव नहीं सकूं आय ॥ जि० ॥ ८ ॥ पाख-  
 ड धर्म फैल्यो घणो ॥ जि० ॥ नहीं जाणे धर्मनो सर्म  
 ॥ जि० ॥ नहीं जाणे जीव छकायना ॥ जि० ॥ हिसामें  
 थोले धर्म ॥ जि० ॥ ९ ॥ ते मन वच काय वांछें नहीं  
 ॥ जि० ॥ तू छै गरीबनिवाज ॥ जि० ॥ तुम चरणां वि-  
 च आवियो ॥ जि० ॥ अब राखो हमारी लाज ॥ जि० ॥  
 ॥ १० ॥ शुद्ध संजम तो ना पळे ॥ जि० ॥ पिण तुमचो  
 विरद सभार ॥ जि० ॥ अब आघो मति काढजे ॥ जि० ॥  
 भव-सागर पार उतार ॥ जि० ॥ ११ ॥ हाथ जोड़ अ-  
 रजी करूं ॥ जि० ॥ सो वाते एक वात ॥ जि० ॥ भव  
 सागरची तारजो ॥ जि० ॥ तुहीज माथे नाथ ॥ जि० ॥

मेढणहार, प्रभुजी वनणा लीजो हो ॥२॥ दरसण दीजो हो, होजी म्हांरा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभुजी, दरसण दीजो हो, पारही कीजो हो, होजी म्हांरा मुगतीना दातार, प्रभुजी, पारही कीजो हो ॥ ३ ॥ मुजने तारो हो, होजी म्हांरा करम मुकावणहार, प्रभुजी, मुजने तारो हो; बिरद विचारो हो, होजी म्हांरा सुखना देव-णहार, प्रभुजी, बिरद विचारो हो ॥ ४ ॥ पारस पायो हो, होजी म्हे तो रमता बालक खेल; प्रभुजी, पारस पायो हो, चरणे आयो हो, होजी थाने राम बदे कर जोड, प्रभुजी, चरणे आयो हो ॥ ५ ॥ इति ॥

### १४ देशी पूर्ववत् ॥

दर्शन पायो हो म्हारा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभुजी शरणे आयो हो, म्हे तो शीश नमायो हो, म्हांरा सीमधरजी महाराज, प्रभुजी गुण मुख गायो हो ॥ १ ॥ श्रद्धा दृढ धरसा हो, म्हारा सीमधरजी महाराज, प्रभुजी मुनि सग करसां हो, सुपात्र दान देसा हो, म्हांरा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभुजी शुद्ध शील पाळेसा हो ॥ २ ॥ तपसूं तन गाळेसा हो, म्हारा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभुजी भावना भावेसा हो, कुगुरुने नही नमसां हो म्हारा सीमधर जिनराज, प्रभुजी सुगुरु सगेरमसा हो ॥ ३ ॥ म्हे तो पाखटसू नहीं डरसां हो, म्हारा सीमधर जिनराज, प्रभुजी न्यायसू झगडसां हो, म्हेतो सूत्रमण सां हो, म्हारा सीमधर महाराज प्रभुजी पाप शास्त्र न सुणसा हों ॥ ४ ॥ मुनि रामचद गावे हो, म्हारा सीमधरजी महाराज, प्रभुजी थाने शीश नमावे हो ॥ ५ ॥ इति ॥

१२वाई ए चौटा मांहिली देवळी, कोई न चाड़े धूप  
॥ ए देशी ॥

प्रभूजी चौरासीमें हूं भग्यो, कदेयन दीठा आप ॥ प्र० ॥  
काल अनादी निगम्यो, कीधा बहु विधपाप ॥ १ ॥ प्रभूजी  
पुन्यसं नर भव मै लछौ, दुर्लभ जिन धर्म लाध ॥ प्र० ॥  
समकित सन्मुख हुई रह्यौ, बलि आछा लागे साध ॥ २ ॥  
प्रभूजी पापी सगत मत हुवो, हुवो साधुको संग, पापी  
संग होतां थकां, पड़े भजनमें भग ॥ ३ ॥ प्र० ॥ क्रोध  
मान माया तजूं, लोभ पापको मूल ॥ प्र० ॥ रात दिवस  
तुमकूं भजूं, करूं राग द्वेष निर्मूल ॥ ४ ॥ प्र० ॥ मात  
पिताने त्यागसूं, त्यागू घर परिवार ॥ प्र० ॥ करूं क्रिया  
धर्म रागसूं, धरूं सतगुरुसूं प्यार ॥ ५ ॥ प्र० ॥ जे लारे  
लागा सही, ते सहू पार लंघाय ॥ प्र० ॥ धन दौलत  
मांगूं नही, म्हारा जनम मरण मिट जाय ॥ ६ ॥ प्र० ॥  
हूं छूं सेपक आपरो, आप हमारा नाथ ॥ प्र० ॥ मोने आधार  
छै आपरो, पकडो म्हारो हाथ ॥ ७ ॥ प्र० ॥ आप हमानें  
तारसो, दूजो न तारनहार ॥ प्र० ॥ थेड़ पार उतारसो,  
मुनि राम न छोड़े लार ॥ ८ ॥ इति ॥

१३ सांवण आयो हो म्हारा सोझतिया सिरदार  
भैवरजी सांवण आयो हो ॥ ए देशी ॥

सरणे आयो हो जी म्हारा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभू-  
जी, सरणे आयो हो; कुगुरुभरमायो हो, हो जी म्हारा  
त्रिभुवनका सिरदार, प्रभुजी, कुगुरु भरमायो हो ॥ १ ॥  
सुमती दीजो हो, होजी म्हारा सुमतीका दातार, प्रभुजी,  
सुमती दीजो हो, वनणा लीजो हो, होजी म्हारा कुमती

ढोलो तो म्हारो इतनोसो, वारु म्हारा राजान,  
खेलों म्हारा राजन इतनोसो ॥ ए देशी ॥

प्रभू तो म्हारो सर्वज्ञ छै, सशय सारे भाजन, प्रभू  
म्हारो तारन, कुमति विदारन, सुमतीको कारन, प्रभू  
म्हारो सर्वज्ञ छै ॥ ढेर ॥ हूँ तो सेवक आपको रे २, आप  
गरीबनिवाज ॥ प्र० ॥ शरणे आयो आपके रे २, रखिये  
म्हारी लाज ॥ प्र० ॥ १ ॥ चिता न चूरे चितामणी रे २,  
सुरतरू पूरे न आस ॥ प्र० ॥ जो पारसे सोवन ना करेरे  
२, तो लोक करेगा हास ॥ प्र० ॥ २ ॥ जो तिरतानें तार  
सोरे २, सी अधिकार्ड थाय ॥ प्र० ॥ जो डूवतनें तारही  
रे २, ते महिमा जगमांय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ जो मुज प्रभु नहीं  
तारसो रे २, तो कुण तारसी और ॥ प्र० ॥ निश्चै नाभेय  
जिन तारसी रे २, राम वदे कर जोर ॥ प्र० ४ ॥ इति ॥

१८ म्है लारे नीचै किणीरे कँवरांरा धोड़ा  
हींसिया ॥ ए देशी ॥

म्हारो सीमंधर जिनराजसे दिलडो लागि यो; हूँ तो  
बसू भरतके मांय, छूँ आपको रागियो; मैं तो कुगुरु  
कुदेवको नखो बदवो त्यागियो ॥ ढेर ॥ विदेह क्षेत्र  
सुहामणो सरे, आरो पलटे नाह; सदा जिन चक्री  
केवली सरे, जा खुल्यो सदा शिव राह ॥ म्हा० ॥ १ ॥  
पांचसे धनु काया जिहां सरे, आयू पूरव कोड, राज  
न्यायी वरपा घणी स रे, रहे पुत्र बहू सदा कर जोड़ ॥  
म्हा० ॥ २ ॥ श्रीकुंथु वारे जिन जनमिया स रे, दीक्षा  
वीसमे होय; भावी चौवीसी जिन सातमे स रे, शिव  
जासी कर्म खोय ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ गुण चितारु आपका स

## १५ अनोखा भमरजी हो ॥ ए देशी ॥

महाविदेहमें विराजिया हो, प्रभूजी, सीमधर जिन  
 राज; सर्वज्ञ शिव पद दीये हो ॥ प्र० ॥ भवोदधि तारण  
 जाज; सुणिये वीनती हो, प्रभूजी, दीनानाथ दयाल ॥  
 ॥ १ ॥ सुरनर इद्र आयने हो, प्रभूजी, वंदे बे कर जोड़;  
 रात दिवस हाजर रहै हो ॥ प्र० ॥ मुज मन देखण को;  
 ड ॥ सु० ॥ २ ॥ अवर देव बांछं नहीं हो ॥ प्र० ॥ मन  
 वचने महाराज; करुणा सागर सांभळो हो ॥ प्र० ॥  
 सारो आतम काज ॥ सु० ॥ ३ ॥ रतन चिंतामणि छो-  
 डनें हो ॥ प्र० ॥ काच खंड कुण लेह; समरथ प्रभूसू तो  
 डनें हो ॥ प्र० ॥ पाखंड चित कुण देह ॥ सु० ॥ ४ ॥ तू  
 साहिब तूं शिर धणी हो ॥ प्र० ॥ तुहींज मुज आधार;  
 रामचंदनी वीनती हो० ॥ प्र० ॥ दीजो पार उतार  
 ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति ॥

## १६ देशी विलालेकी ॥

प्रभुजीरो कांईयन मांगांराज ॥ प्र० ॥ ग्हांरी राखी  
 जो प्रभु लाज ॥ प्र० ॥ टेर ॥ हाथी घोडा तो मूळ न  
 मांगां, नहीं मांगां कछु राज; पुत्र कलत्र धन दौलत न  
 मांगां, एक मांगां धर्मकी जाज ॥ प्र० ॥ १ ॥ यथाख्या-  
 त तो चारित्र मांगां, ध्यानमे शुक्ल ध्यान; समकित  
 मांहे तो क्षायिक मांगां, ज्ञानमे केवल ज्ञान ॥ प्र० ॥  
 ॥ २ ॥ जिनवर गणधरको पद मांगां, मांगां सुखाकी रास;  
 मुनि राम कहै अक्षय पद मांगां, मुगत पुरीको वास  
 ॥ प्र० ॥ ३ ॥ इति ॥

१७ मारग मारग हूं चली रे, ऊजड़ पड़ गयो पांव;

हो ॥ त्रि० ॥ २ ॥ हरि हे इंद्र गये तम थये सती कंपित  
 भई, आई गुरणीरे पास हो ॥ त्रि० ॥ हरि हे सूता तो  
 गुरणी इणपर थोलिया, तोनें घणा हे शाबास हो ॥ त्रि०  
 ॥ ३ ॥ हरि हे केवल उपज्यो क्षमा करतां थकां, गुरणीजी  
 सुणी हो बात हो ॥ त्रि० ॥ हरि हे नाग काळो जैर भरयो  
 आयो पाट ऊपरे, ऊचो तो राखिये हो हाथ हो ॥ त्रि० ॥ ४ ॥  
 हारे हे गुरणीजी कहे किम तुम नाग देखीयो, देखूं  
 जानरे जोर हो ॥ त्रि० ॥ हरि हे राम मुनि कहै सुण क्षमा  
 सब कीजियो, तो पासो उत्तम ठोर हो ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ इति ॥

## २४ देशी कुंजेकी ॥

श्रीनाभेय जगनाथरे, हो मरु देव्या नंदा ॥ श्री० ॥  
 दर्शन चाहूं नित्यता हरो रे, मुज दीजो ॥ सु० ॥ दरसण  
 घर दया ॥ सु० ॥ हू प्रभु गरीब अनाथ रे हो ॥ म० ॥  
 करो निस्तारो हिवे मांहरो रे, मांन लीजो ॥ मां० ॥ बंदना  
 घर दया रे ॥ मां० ॥ १ ॥ पतित उधारन हार रे हो ॥  
 ॥ म० ५ ॥ सुणने चरणे आवियो रे, काढो मती ॥ का० ॥  
 आघो मुझभणी रे ॥ का० ॥ दूजो नही सत्तार हो ॥ म०  
 दू० ॥ कुशुरु मुज भरमावियो रे, दुख पायो अति ॥ दु० ॥  
 तुम विन शिर धणी रे ॥ दु० ॥ २ ॥ जपूं तुमारो जाप रे  
 हो ॥ म० ॥ लपट रहूं चरणार मे रे, दिल ऐसी ॥ दि० ॥  
 आवे न छोड़ूं अध घरी रे ॥ दि० ॥ मुनि राम शिर तुम  
 छाप रे हो ॥ म० ॥ रुहू नहीं संसारमें रे, कहूं कैसी ॥  
 क० ॥ छाप न धारू दूसरी रे ॥ क० ॥ ३ ॥ इति ॥

## २५ मिणयारडो हे ॥ एदेशी ॥

जग तारणो हे, पार उतारणो हे, पारस प्रभुजी



तारो साहिवा, प्रभु अवधारो अरदाश हो राज, मुनि  
रामचंद हम वीनवे प्रभु राखो मुज चरणां पास हो  
राय ॥ जी० ॥ ४ ॥ इति ॥

२२ मोय झिलतीरो नीबूड़ो ॥ ए देशी ॥

हारे प्रभू कैसे तिराऊं म्हारो जीवड़लो, कैसे पाऊं  
हो मुगतका सुख, मो मन लागो प्रभु चरणांसूं, लागो  
लागो हो मन दीन दयाल, हारे जीवा धर्मसेती रे धारो  
जीवड़लो, करणी सेती हो टरे सब दुःख ॥ मो० ॥ १ ॥  
हारे प्रभू शुद्ध संजम तो नां पळै, कैसे पाऊं हो कठिन  
आचार; हारे जीवा मन दृढ संजम पाल लै, सुरा चाले  
हो खांडेकी धार ॥ मो० ॥ २ ॥ हारे प्रभू कठिन काल है  
आजनो, नहीं सकूं हो मनकूं थंभाय ॥ मो० ॥ हारे जीवा  
जद तद मनकूं रोकते, ज्ञान डोरी हो शुद्ध ध्यान लगाय  
॥ मो० ॥ ३ ॥ सीमंधर जिन साहिबो, मन बसियो हो  
दिवसनें रात ॥ मो० ॥ मुनि राम कहै प्रभु तारिहे, तुम  
सुनिये हो जग त्रय नाथ ॥ मो० ॥ ४ ॥ इति ॥

२३ हरिहे ऊंचा नीचा परवत अंवाजीरो बैसणो ॥ एदेशी ॥

हरि हे कौशांबी तो नगरी सोहे जगदी पती, वीरजी  
रक्षाहै विराज हो त्रिलोकीनाथ, विराज हो प्रभुजी राज  
म्हारो मन लागो हो प्रभूजीरा नामसूं, पलक न वीसरूं  
रे, वावा पलक न वीसरूं रे ओ ध्यान हो ॥ त्रि० ॥  
हरि हे चंद्र रवि आये मूल विमानसूं, बाजा तो रहिया  
हे वाज हो ॥ त्रि० ॥ १ ॥ हरि हे मृगावती आई चंदनवा-  
लाजी संगे, प्रभुजीने रही हे निहार हो ॥ त्रि० ॥ हरि हे  
गुरणी तो गई सांझ विचारने, मृगावती रही हो लार

२७ नव घाटीनें उलंघने आयो ॥ ए देशी ॥

दीजे पार उतार प्रभूजी, दीजे पार उतार; हूं अपा-  
वन पतित अधम छू, तू छै दीन दयाल ॥ तूं० ॥ कृपा-  
निधि तू छै दीन दयाल, मो अधमकूं पार उतारो,  
तू छै परम कृपाल ॥ ढेर ॥ तू ईश्वर परमेश्वर तूं  
छै, तूंही शकर सुरार; ब्रह्मा विष्णू हिरण्यगर्भ तूं,  
महादेव फिरतार॥प्र० ॥ १ ॥ स्वयभू अर्हत गणेश, वीत-  
राग तीर्थकार; कर्ता विश्वंभर जगके भर्ता, तूं हरि  
श्याम उदार ॥ २ ॥ प्र० ॥ २ ॥ तू निरमोही निकर्मी  
निसंगी, नीरागी निराकार; पुरुषोत्तम निष्कलंक तूं ही  
छै, राम रहीम निर्धार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ३ ॥ तूं प्रभु तारक  
कर्म विदारक, वारक तूं ससार; सुखके कर्ता हर्ता दुखके,  
भर्ता त्रिलोकी सार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ४ ॥ तूं भगवंत सर्वज्ञ  
शिरोमनि, गुनको पारंपार; मुनि राम कहै जिण पारस  
भेद्यो, किम रहै लोह विकार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ अब मोय तारो श्रीनाथजी ॥ ए देशी ॥

ज्यार गत भमियो घणौ, दीठा दुःख अपार; पार न  
पायो जी पाछ लो, नही कीनी अमची जी मार; नही  
मिल्या तारनहार, ताते रुळियो संसार, अब तौ पार  
उतार; अब मोय तारो श्रीमहावीरजी; अब मोय तारो  
श्रीदयालजी ॥ १ ॥ ढेर ॥ पुन्य जोगे नर भव लहौ,  
पांम्यो आरज देश; उत्तम कुलमे जी ऊपनो, लागो गुरु-

जग तारणो ॥ ढेर ॥ एक दिन तापम आवियो हे,  
 अमा खलक मुलक लागे पाय हे, देखां पाखंड एह  
 नो हे, अमा चालोनी नीहालो एहनै जाय ॥ ज० ॥ १ ॥  
 आयनै उतरयो गंगा ऊपरे हे, अमा देखवा आयो  
 जिनरायो, अवधि जाने जिन देखियो हे, अमा नाग  
 नागणी काष्ठ मांयो ॥ ज० ॥ २ ॥ रे रे पाखंडी स्यू तप  
 करे रे, जोगी जीवाने क्यू होमे अग्नि मांयो; जीव हिंसा  
 किणनै तारियो रे, जोगी कुंण गयो सिद्ध गति मयो  
 ॥ ज० ॥ ३ ॥ नाग तिहां सुर पद लछौ रे, अमा पर  
 मेष्टी दीयो सुणायो; रामचंद कहै एहनो हे, अमा जन  
 म मरण मिट जायो ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

२६ दानजी दानजी करती रे, हूंयो वागां मांयला  
 फूलड़ा वीणती रे, ॥ हूंतो० ॥ एदेशी ॥

वीर प्रभू वीर प्रभू ध्यावसां रे, म्हे तो त्रिभुवन ना  
 यक गावसां रे ॥ म्हे० ॥ म्हांरो मुक्त पुरीरो साहिब वी  
 रजी रे, म्हांरो केवल ज्ञानवालो वीरजी रे ॥ ढेर ॥ व्या  
 न ध्यावो तो भल ध्यावजो रे, सैणां गावो तो वी  
 प्रभू गावजो रे २॥ वीर प्रभू वी० ॥ १ ॥ दान देवो तो भ  
 ल देवजो रे, सैणां वचन कैवो सच कैवजो रे २॥ वीर  
 ॥ २ ॥ जे टाळो चोरी टाळजो रे, सैणां पाळो तो शीलव्रत  
 पाळजो रे २॥ वी० ॥ ३ ॥ जो त्यागो तो परिग्रह त्यागजो  
 रे, सैणां भागो तो शिव सांमां भागजो रे ॥ २ ॥ वी० ॥ ४ ॥  
 जो चाखो तो समता चाखजो रे, सैणां नांखो तो ममत  
 नांखजो रे २॥ वी० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहै सीख धारजो रे  
 सैणां नर भव अफल म हारजो रे २ ॥ वी० ॥ ६ ॥ इति ॥

२७ नव घाटीनैं उलंघने आयो ॥ ए देशी ॥

दीजे पार उतार प्रभूजी, दीजे पार उतार; हूं अपा-  
वन पतित अधम छू, तूं छै दीन दयाल ॥ तूं० ॥ कृपा-  
निधि तूं छै दीन दयाल, मो अधमकूं पार उतारो,  
तूं छै परम कृपाल ॥ टेर ॥ तू ईश्वर परमेश्वर तूं  
छै, तूंही शकर सुरार; ब्रह्मा विष्णू हिरण्यगर्भ तूं,  
महादेव किरतार॥प्र० ॥ १ ॥ स्वयभू अर्हत गणेश, वीत-  
राग तीर्थकार; कर्ता विश्वभर जगके भर्ता, तूं हरि  
श्याम उदार ॥ २ ॥ प्र० ॥ २ ॥ तूं निरमोही निकर्मी  
निसंगी, नीरागी निराकार; पुरुषोत्तम निष्कलंक तूं ही  
छै, राम रहीम निर्धार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ३ ॥ तू प्रभु तारक  
कर्म विदारक, वारक तूं संसार; सुखके कर्ता हर्ता दुखके,  
भर्ता त्रिलोकी सार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ४ ॥ तूं भगवंत सर्वज्ञ  
शिरोमनि, गुनको पारंपार; मुनि राम कहै जिण पारस  
भेट्यो, किम रहै लोह विकार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ अव मोय तारो श्रीनाथजी ॥ ए देशी ॥

क्यार गत भमियो घणो, दीठा दुःख अपार, पार न  
पायो जी पाछ लो, नहीं कीनी अमची जी मार; नहीं  
मिल्या तारनहार, तातैं रुळियो संसार, अव तौ पार  
उतार; अव मोय तारो श्रीमहावीरजी; अव मोय तारो  
श्रीदयालजी ॥ १ ॥ टेर ॥ पुन्य जोगे नर भव लहौ,  
पांम्यो आरज देश; उत्तम कुलमे जी ऊपनो, लागो गुरु-

नो उपदेश, भागो मिथ्यात रेस, छटो सकल कलेश,  
 लाघो साधूनो वेस ॥ अब मो० ॥ २ ॥ काम मोहनें ल-  
 लसा, छटे नही हे दयाल; गुण नहीं औगुण पुंज हूँ, नहीं  
 सकूं सुरत सभाळ, पडियो मोहनी जाळ, तूं ही धारे  
 निकाळ, तू छै दीन दयाल, तूं तो परम कृपाल ॥ अब० ॥  
 तू ईश्वर परमेश्वरू, तूं छै आत्मराम; तूं दाता धाता खरो,  
 शंकर धारो छै नाम, तूं छै त्रिभुवन स्वाम, तूं छै भूला  
 विश्राम; हूं छूं दास गुलाम, दीजो अविचल ठाम ॥ अब० ॥  
 ॥४॥ जैन धर्म जाणूं खरो, पाखंड जाणूंजी और; वीतराग  
 धर्म तारसी, राम वंदै कर जोर, अमची इतनी जी दोर,  
 नही छै अगोजी टोर, काटो कर्म कठोर ॥ अब० ॥ ५ ॥ इति ॥

## २ देशी चौकनी ॥

सीमंधरजी क्या जाणूं मुज कर्म कटक दल केवा, अ-  
 हो जिनवरजी मेढो संकट पाया धणी तुम जेवा ॥ ढेर ॥  
 कर्म धकावे मुज भारी, कहता नही आवैं पारी; हूं तो  
 भटक्यौ गत आगत च्यारी ॥ सी० ॥ १ ॥ तुमसैं लागी  
 मुज तारी, कही हकीकत मै सारी; हूं अनाथ निरधारी  
 ॥ सी० ॥ २ ॥ तुमसो नाथ नहीं करियो, तद लाख चौ-  
 रासीमें फिरियो; अब नाथ तुमने उर धरियो ॥ सी० ॥ ३ ॥  
 जो नहीं काटो मुज पासी, तो तुम शरणे कूं आसी;  
 घर हांण दूजी लोकां हासी ॥ सी० ॥ ४ ॥ इम जांणी मुज  
 तारोनी, भवोदधि पार उतारोनी; ए वीनतडी अवधा-  
 रोनी ॥ सी० ॥ ५ ॥ दूर देशावर अति आगो, विकट  
 धरा आर्ज तही सागो; तुम चाकरीमें अत्र लागो, ॥ सी०  
 ॥ ६ ॥ तू स्वामी अंतरजामी, नीठसे समकित मै पांमी;  
 रामचंद कहै निज शिर नामी ॥ सी० ॥ ७ ॥ साते चौ-

मासो कीयो तिवरी, सेवा करै सहु हर्ष धरी; सावन  
वदमांहे तवन करी ॥ सी० ॥ ८ ॥ इति ॥

३ कावलनो पांणी लागणो, कावल मत जावो ॥ ए देशी ॥

बाल सनेही तूं प्रभू, रखा एक ठिकाणे; मै न लखी  
तुम कथनसुं, हूं पिण थयोसु जाणे ॥ १ ॥ सीमंधर जिन  
साहिबा, हू हूं दास तिहारो; आश निराश न कीजिये,  
तुमचो विरद निहारो ॥ सी० ॥ २ ॥ ते जीत्या ते मो-  
जीत है, अब सो करिये स्वामी; शिरनांमी तुमनें  
कहू, तूं छै अंतरजामी ॥ सी० ॥ ३ ॥ काम मोहने ला-  
लसा, मुजनें एह धकावै; सुख भर नीद न लेण दे, निश  
दिन आय सतावै ॥ सी० ॥ ४ ॥ निरावरण तू थयो,  
मुझ रखौ कर्म दोलो; तूं अकर्म सकर्म हूं, तुज सुज  
अंतर बोलो ॥ सी० ॥ ५ ॥ जो पद पांम्यो तूं प्रभू, सो  
पद हूं पिण चाऊं; दीजै परम कृपा करी, स्यों घणो कही  
सुणाऊं ॥ सी० ॥ ६ ॥ तरण तारण तूं प्रभू, हू धर आयो  
आशा; रामचंदकी वीनती, नहीं करिये निराशा ॥  
॥ सी० ॥ ७ ॥ इति ॥

४ म्हारे तो हाथमें नौकरवाळी ॥ ए देशी ॥

म्हारे तो समरण नौपदजीरो, म्हारे नवपदजीरां  
आधार जी ॥ म्हा० ॥ देर ॥ णमो अरिहताणं पहिले  
पदमे, ज्यांरा गुण छै धार जी; अष्ट गुण तो द्रव्य कहावे,  
भाव गुण छै च्यार जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ णमो सिद्धाण  
दूजा पदमे, अष्ट गुण श्रीकारजी; अनंत पचमे सिद्ध  
कहावे, भग तो दोय प्रकारजी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ णमो आ-  
यरियाण पद छै तीजो, गणिजी अर्थ दातारजी; गुण

छत्तीस करीनें शोभै, नमो नमो नमोकारजी ॥ म्हा० ॥  
 ॥ ३ ॥ णमो नुवज्झायाणं पद छै चौथो, ए सूत्रतणा  
 दातार जी; गुण पचवीस करीनें शोभै, ज्यांसूं रखिये  
 प्यारजी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ णमो लोए सब्बसाहणं पद छै पंचम,  
 ते कहिये अणगारजी; गुण सत्तावीस करनें युत्ता, वंद  
 वारंवार जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ णमो दंसणस्स पद छै छट्ठो,  
 दंसण विण सब छारजी; ते कारणथी तेहनें नमिये,  
 जिम हुवे खैवो पार जी ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ णमो णाण  
 स्स पद छै सत्तम, ए सहनो शिरदार जी; एही छै  
 मुक्तीनो मारग, इण विन घोर अंधारजी ॥ म्हा० ॥ ७ ॥  
 णमो चरित्तस्स पद छै अष्टम, इणसूं होय सुधार-  
 जी; इणसूं कर्म रुके अरु क्षपही, मुक्ति लेजावणहार जी  
 ॥ म्हा० ॥ ८ ॥ णमो तवस्स पद छै नवमो, तप छै दोष  
 प्रकारजी; पूर्व कर्मने जालणहारो, नमिये वारंवार जी ॥  
 म्हा० ॥ ९ ॥ पद दोष धुरे देव विराजै, त्रयमे गुरु वि-  
 चारजी; च्यार पदमें धर्म विराजै, मुनि राम वंदै बहुवा-  
 रजी ॥ म्हा० ॥ १० ॥ इति ॥

५ नाथ कैसे गजको फंद छुड़ायो ॥ ए देशी ॥

नाथ कैसे कर्मको फंद छुड़ायो, ओ अचरज मोक्कूं आ-  
 यो ॥ ना० ॥ टेर ॥ चंडकौशिक फणिधर तुम डसिया,  
 दृष्टी विष कहायो; जिणकूं सुधार दीयो संथारो, आठमे  
 स्वर्ग पौचायो ॥ ना० ॥ १ ॥ इंद्रभूति तुम विभूति निरखी,  
 अवगुण वाद बोलायो; त्रिपदी मंत्रे गणभृत थप्यौ, श्री-  
 संध मुख्य वणायो ॥ ना० ॥ २ ॥ जमाली नामे नन्नव  
 तोरो, तुम वच दोष लगायो; चतुर्दश भव कर शिव पद

मेलो, श्रीभगवती अंगमे गायो ॥ ना० ॥ ३ ॥ गोसालिक  
तुम युग मुनि बाल्या, ऊँधो पंथ चलायो; अच्युत स्वर्ग  
समर्प्यो जिणने, आखर मुक्ति बतायो ॥ ना० ॥ ४ ॥  
सोमिल ब्राह्मण करी तुम चर्चा, दुधारा प्रश्न करायो;  
जिणने मुक्ति इण भव दीधी, श्रीपंचम अंग दिखायो ॥  
ना० ॥ ५ ॥ अर्जुन माली खटमसाताई, सात मिनखनित  
घायो; जिणने मुक्ति दीवी छिन भरमें, सकलही पाप  
गमायो ॥ ना० ॥ ६ ॥ श्रीवीरप्रभूभे अरज करत हूं, मुजने  
किम विसरायो; नही अबिकाई काष्ठ जल तारै, अधिकाई  
पाहण तरायो ॥ ना० ॥ ७ ॥ तुम अपकार कीया बहुतेरा,  
सहुना काज सरायो; मुनि राम कहै मुज तारन धिरि-  
यां, किम आलस दरसायो ॥ ना० ॥ ८ ॥ इति ॥

## लावणी ॥

१ खबर नहीं है जुगमें पलकी ॥ ए देशी ॥

चंदा तूं जइये जिन चरणां रे, चंदा तूं जइये जिन  
चरणां, हाथ जोडने करै वीनती, कहीजै मुज वनणां  
॥ चं० ॥ १ ॥ टेर ॥ पूर्व विदेह पुंडरीकणीमे, मीमंघर  
स्वामी; मुज अरजी मालम श्रीजीन आगै, कहीजै शिर  
नांमी ॥ चं० ॥ २ ॥ चउतीस अतिशय पैतीम बाणी,  
शोभै जिनराया; वृषभ लछन सोवन धरन, पंचमे वनुष  
काया ॥ चं० ॥ ३ ॥ द्वादश गुण करि शोभै जिनवर,  
मुख पूनम चंदा; पद पंकज चरचित इंद्रादिक, मंघे सुर  
नर वृंदा ॥ चं० ॥ ४ ॥ दक्षिण भरन नंदू कीपे, मं ली-  
यो अवतारो; दुखमी आरे पंचम काण्डे, नहीं आवण



सारो ॥ चं० ॥ ५ ॥ पिण गुरु प्रसादे पुन्य संजोगे, शु  
 समकित पांमी; दर्शन प्यासी सदा उदासी, दर्शन कि  
 स्वांमी ॥ चं० ॥ ६ ॥ पाखंड धर्म भर्म सब छोडी, शरण  
 ग्रह्यौ थारो; भवोदधि तारो पार उतारो, वनणा अव  
 धारो ॥ चं० ॥ ७ ॥ तूंहीज स्वामी अंतरजामी, पुन्य जो  
 गे पायो; जन्म जरा मरणेसुं डर कर, तुम चरणे आयें  
 ॥ चं० ॥ ८ ॥ मुज अरजी कर जोड़ी सगळी, कही  
 जिन आगै; सेवग तौ बिललाट करत हैं, अविचल प  
 मांगै ॥ चं० ॥ ९ ॥ रामचंद ए अरजी भेजी, वनणा  
 अवधारो; भव सागरथी तार प्रभूजी, चाकर चरणारो  
 ॥ चं० ॥ १० ॥ संवत उगणीसे नोके वरसे, सोझत चव  
 मासे; धुर भाद्रव सुद पंचम गुरु वारे, स्वामी वृद्धिच  
 दजी पासे ॥ चं० ॥ ११ ॥ इति ॥

२मैं सुणी कंतकी बात, नार एक घाली घरमाई जी, धण  
 छोड चल्यो परदेश पियो जा वस्यो मंमाईजी ॥ ए देशी ॥

मैने तज दीये घरवार, सुनो मेरे अंतरजामी जी; प्रभु  
 दूर वसे परदेश, श्रीसीमंधर स्वामी जी ॥ ढेर ॥ मैं तड़  
 फत हूं दिन रैन, मोयकूं कर्म संतावेजी; मै देजं दिल्लकूं  
 ज्ञान, जयी समता घर आवेजी; मेरे प्रभू वसे परदेश,  
 सदा जां केवल पावेजी; प्रभु वसे समुद्रां पार, मिलन  
 कैसे वन जावे जी; मेरे बीचमे पड़ रहे व्हाड, मोय कुन  
 पार लंघावेजी; नहीं दीवी विधाता पंख, देवत पिण नां  
 ही पुगावेजी; मेरे लग रही दिलके माय, दर्श कहो कौन  
 करावे जी; मेरा प्रान वसे प्रभु पास, रात नहीं निद्रा  
 आवेजी; मै सुनी शास्त्रकी बात, गुरु एक मिल गये

नांमी जी; प्रभु दूर वसे परदेश, श्रीसीमधर स्वांमी जी  
 ॥१॥ मेरे ऐसे आवे दिल मांय, अवी श्वासा चढवाजंजी;  
 मैं करूं अजप्पा जाप, नासा पर दृष्टि जमाजंजी;  
 मैं दूढ़ प्रभुका देश, जैसे मैं प्रभुको पाऊ जी; मैं धरूं  
 अरिहंतका ध्यान, ध्यानसे ज्ञान जगाजंजी; मैं कोई यु-  
 क्तिके साथ, आपनो स्वरूप ध्याजंजी; मैं देखूं निज दी-  
 दार, औरका ध्यान मिटाजंजी; मैं मिनखा देहको पाय,  
 कधी नहीं अफल गमाजंजी; मैंने कहे गुरु महाराज,  
 सोहंका ध्यान लगाजंजी; मैं सुनी शास्त्रकी बात, गुरु  
 एक मिल गये नांमीजी; प्रभु दूर वसे परदेश, श्रीसीमधर  
 स्वांमी जी ॥ २ ॥ नहीं गुरुका दोष, दीया मुज उत्तम  
 जानेजी; मन दबियां होगा ध्यान, सबी ऐ शास्त्र बखा-  
 नेजी; मैं मन धोरेको पकर, लात हू अवी ठिकानें जी;  
 मेरे चढी ज्ञानकी छाक, हिताहित खूब पिछाने जी; मुज  
 कौन सके भरमाय, कौन मेरे पाखंड मानेजी; मेरे बर-  
 स्या अनृत मेह, ताल भरगये सिरानें जी; मैं सूतो सुमता  
 सेज, कुमत नहीं सके जगाने जी; मेरे भये आनंद भर-  
 पूर, दूर सब गये अजाने जी; मैं सुनी शास्त्रकी बात,  
 गुरु एक मिल गये नांमी जी; प्रभु दूर वसे परदेश,  
 श्रीसीमधर स्वांमीजी ॥ ३ ॥ मैं कीया अगाऊ पाप,  
 ऊपज्यो भक्तके मांई जी; पुन सचिया नहीं पूर, रह्यो  
 नहीं देव सहार्ईजी; प्रभुको दूर भयो रहवास, हूं पिण  
 सकून आईजी; करू पट्मासीका काल, सासा शुद्ध ध्या  
 न लगाई जी; मेरे नहीं धोखाकी बात, नाथ तो दे दिख-  
 लाई जी, इन विध प्रभुका खोज, मिलेगा मुजके तांई  
 जी; ध्यान बिना नहीं ज्ञान, ज्ञान बिना मुक्त न थाई जी;

मुनि रामचंद्रकी जोड़, कला सब के मन भाई जी  
 मैं सुनी शास्त्रकी बात, गुरू एक मिल गये नांमीजी;  
 प्रभु दूर वसै परदेश, श्रीसीमंधर स्वांमीजी ॥ ४ ॥ इति ॥

३ सदाशिव पारवती प्यारा, जटाविच वहत गंग धारा

## ॥ ए देशी ॥

सदा तुन जैन धर्म पाळो, हिंसाके पंथ मती चालो ॥  
 ॥ ढेर ॥ अजी काशी देश सुहांमणो स कांई, बनारसी  
 सुखकार; अजी वामा रांणी जनमिया स कांई,  
 पार्श्व नाम कुमार; एक दिन गंगा ऊपर आये, माताजी  
 के लार; कमठकी देखी माया, तपै वो धूणी लगाया,  
 अंगका कहि ये मांनी, दीखे तूं खरा अजानी, लकड़में  
 जले छै प्रानी बे ॥ सदा० ॥ १ ॥ अजी कुनसा नाग जलै  
 लकड़में, हमकों आंखों दिखाय; अजी प्रभुजी लकड़  
 फाड़ दिखाये, देखे दुनियां आय; रे हत्यारा नाग जला-  
 या, प्रभु दीये मत्र सुनवाय, नागकूं सुर पद दीधा,  
 तापस तो रस्ता लीधा, बहोतसा मनमे जळिया, मु-  
 ल्कसे भागनिकळिया, प्रभूसैं पाखंड गळिया बे ॥ स० ॥ २ ॥  
 अजी मरके कमठ हुवे मेघमाली, प्रभु भये अनगार; अ-  
 जी मेह वरसाया प्रभू न चळिया, रचिया फुणही हजार;  
 धरणेद्र पद्मावती आये, सुण्यो जहां णमुक्कार; आयके  
 शीश नमाये, प्रभूकू अधर उठाये; कहां वो दुष्टही देवा,  
 पावेगा कीधा जेवा; प्रभूकी करे छै सेवा बे ॥ स० ॥ ३ ॥  
 अजी पार्श्व केवल पामिया स कांई, तीर्थ याप्या च्यार;  
 अजी पार्श्व प्रभू चावा घणा स कांई, जांणे सह संसार;  
 मुनि रामचंद्रकी एही अर्जी, करियो भवोदधि पार;

और नही चांछा मेरे, सरन हू आयो तेरे; जाझका का-  
ग तुमारा, जानकी मांगूं धारा; ग्रह्या मैं चरनही थारा  
बे ॥ सदा ० ॥ ४ ॥ इति ॥

### १ राग सोरठ ॥

प्रभु म्हारे रहीजो जी हि बड़ारे मांय ॥ प्र० ॥ ढेर ॥  
मात तात त्रिया सुत सारे २, म्हारे नही रती एक चाय  
॥ प्र० ॥ १ ॥ पाखंड धर्म मिथ्यामति शास्त्र २, तिष्ठो मत  
मन वच काय ॥ प्र० ॥ २ ॥ तन धन सज्जन और पदा-  
रथ २, एक न आवे म्हारी दाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रभूजीको  
ध्यान चितामनि सरी ग्वो २, जो खो सब देवे दळाय  
॥ प्र० ॥ ४ ॥ प्रभु पद पकज मुज मन भमरो २, अंत  
समै रहो लपटाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ रामचद तुल्ल कदमको  
चाकर २, दीजो प्रभु पार लंघाय ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इति ॥

### २ राग प्रभाती ॥

ज्यूं गावे ज्यूं चोखा प्रभु गुन, ज्यूं गावे ज्यूं चोखा  
छै ॥ ज्यूं० ॥ प्रभु गुन गावे सो मुख शिरोमन, नहीतर  
जानूं घोखा छै; प्रभु आगै जोडे कर शिरोमन, नही तो  
मानूं टोका छै ॥ ज्यूं० ॥ १ ॥ प्रभु मुख जावे सोचरन  
शिरोमन, नहीतर थंभ सरोखा छै; जीभ शिरोमन प्रभु  
गुन गावे, प्रभु वच सुणे श्रवन अनोखा छै ॥ ज्यूं० ॥ २ ॥  
आंख शिरोमन प्रभु रूप निहारे, टारे भव भव जोखा  
छै; मुनि राम कहै वो धनवत साचो, जिण सुपातर  
पोखा छै ॥ ज्यूं० ॥ ३ ॥ इति ॥

### ३ राग भैरूं ॥

मैं दर्शन नही पायो जिनेठवर ॥ मै० ॥ ढेर ॥ एकेंद्रीमें

काल अनादी, जनम मरन करचायो; विकलेंद्री तिर्यक्  
 पंचेद्री, ज्ञान विना दरसायो ॥ मैं० ॥ १ ॥ नर सुर नरक  
 वस्यौ विन ज्ञाने, यंही जनम गमायो; पायो नर भव  
 सत्गुरु अबके, जिनवर धर्म सुणांयो ॥ मैं० ॥ २ ॥ धर्म  
 अधर्म आज्ञा अनाज्ञा, तत्व धर्म दिखायो; सम्यक् दर्शन  
 देव हमारे, सम्यक् ज्ञान गुरुरायो; मैं दर्शन अब पायो  
 जिनेश्वर ॥ मैं० ॥ ३ ॥ सम्यक् चारित्र धर्म धायूं, श्री  
 गुरुदेव दरसायो; रामचंद्र कहै प्रभु निज घटमे, नही  
 कड दूर बत्तायो ॥ मैं० ॥ ४ ॥ इति ॥

## गाळ ॥

१ लागे लठ लागे लठ लागे लठरे ॥ ए देशी ॥

लागी धुन, लागी धुन, लागी धुन रे; प्रभुजीके नाम  
 की तो लागी धुन रे; प्रभुजीके चरना लागो मन रे।  
 ॥ टेर ॥ तिसेकूं पांणी, गूंगेकूं वांणी, भुखेकूं प्यारो जैसे  
 अनरे ॥ ला० ॥ १ ॥ कामीकूं नारी नैं नारीकूं भरता  
 चातक चाहे जैसे धन रे ॥ ला० ॥ २ ॥ राजाकूं राज स  
 तीकूं लाज, गाज प्यारो जैसे मोरन रे ॥ ला० ॥ ३ ॥  
 व्याय गाय जाय वनमें चरत है, सूरत वसै ऐसे बछरन  
 ॥ ला० ॥ ४ ॥ नदी नचै वरत पर नानां, विक्षेप करै नह  
 तिल तन रे ॥ ला० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहै प्रभु चरना  
 लागो, जांको मन सो धन धन रे ॥ ला० ॥ ६ ॥ इति ॥

## ख्याल ॥

१ हां ए सखी तूं आज्ञा रेजा लाल पिलंग लवका करै॥

॥ ए देशी ॥

श्रीगान्तिप्रभुजी, संत वरतेजी धारें नांवसुं॥श्री०॥टेर॥  
उदर आये जब मरी मिटाई, वरतायो सुख सारे; संकट  
भंजन बिरद तुमारो, शास्त्र मुनींद्र पुकारे; सुख संप-  
तकू आपे प्रभुजी, आपद सहू निवारे जी ॥ श्री० ॥ १ ॥  
ताव तप तौ कदेन आवे, सीयो दाउ नही ठैरे; शिर  
वेदन तौ उभी न रेवे, दुश्मन छोडे वैरे; भूत प्रेत तौ  
अलगही नासे, अमृत होवे जैर जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ प्रत्य-  
क्ष परचो धारो प्रभुजी, बैड़ी जावे भाज; शुद्ध मनसेती  
सिमरै तोने, सुधरे सगळाकाज; अष्टमहाभय दूर पला-  
वे, आदर देवे राजजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ शांति कर तो  
बिरद तुमारो, सबही रोग मिटावो; ग्राम गयोडो कुश-  
लै आवै, होवे हर्ष वधावो; दिन दिन लक्ष्मी वधै चौग-  
णी, पावे राज पसावो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ बांझ कामणी  
पूत लडावे, निर्धनिया धन पावे; अंधा बहिरा होवे ज  
अच्छा, पापी पाप गमावे; रामचंद्र कहे नित्य सुख वरतै,  
सत प्रभुन ध्यावे जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

## होरी ॥

१ कुंण मारी पिचकारी रे ॥ ए देशी ॥

पायो शरन तिहारो रे, धन भाग हमारो ॥ पा० ॥

॥देर॥ तूं जिनराज काजको कारक, तारक त्रिभुवन ह  
 रोरे; टारक कुमतारो ॥ पा० ॥ १ ॥ पतित ७ ॥ १९  
 सारन पर कज वारोरे; टारन जन मारो ॥ पा० ॥ २ ॥  
 तूं पूजनीक सकल इंद्रांको, शरनको राखन हारोरे;  
 विरद विचारो ॥ पा० ॥ ३ ॥ तुम विन कुंण तारक  
 बीजो, दीजो पार उतारो रे; कीजो बेग उवारो ॥ पा० ॥ ४ ॥  
 रामचंद आनंद धर गावे, जिनंद प्रानसैं प्यारो रे; मुज  
 जन्म सुधारो ॥ पा० ॥ ५ ॥ इति ॥

## १ आरती ॥

जय जय उँकारा, नमो जिन उँकारा; नार्ह पद न्यारा  
 योगीश्वर प्यारा, अनाद्यनतरूपाय, पंचाक्षर धारा, भज  
 भज भज जिन देव ॥ देर ॥ काशी देश बनारसी, नगरी  
 अति राजे; प्रभु नगरी अति राजे, अश्वसेन वामा नंदन  
 २, फणी लांछन छाजे ॥ भ० ॥ १ ॥ एकानन चतुरानन  
 समोसरण गाजे ॥ प्रभु स० ॥ धर्म चक्र गगने गत २  
 पाखंड सब भाजे ॥ भ० ॥ २ ॥ अशोक वृच्छ शिर पर,  
 छत्र चमर सोहे ॥ प्रभुछ० ॥ प्रभुजीनो रूप निरखतां,  
 जिनजीनो रूप निरखतां, त्रिभुवन मन मोहे ॥ भ० ॥ ३ ॥  
 हस्तायुध वाहन विन, अंबर नहीं अंगे, प्रभु वसन नहीं  
 अंगे; केवल धारी संगयदारी २, नारी नहीं संगे, माया  
 नहीं संगे ॥ भ० ॥ ४ ॥ तूं ईश्वर परमेश्वर, तूं शंकर  
 धाता ॥ प्रभु तूं० ॥ शुद्ध प्रकाशा आशा रहिता २, तूं  
 मही पितु माता ॥ भ० ॥ ५ ॥ तो महिमा कुंन गाने स-  
 मरथ, तूं देवन देवा, ॥ पार्श्व तूं दे० ॥ जिण जिण रूप  
 देखूं तिण रूपे, प्रभुजीनो रूप देखूं तिण रूपे, सारे-तुम

येवा ॥ भ० ॥ ६ ॥ पार्श्व प्रभूकी आरति, जे शुद्ध मन  
पावे; निर्मल चित्त गावे; भनत मुनि रामेंदु, वांछित  
फल पावे, सद्गतिमें जावे ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महायुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे  
स्तवननामक चतुर्थ प्रकरणम् ॥ ४ ॥

## ५ स्वाध्याय—गीत ॥

### १ देशी गजरेकी ॥

गावो गावोरी पूज्य जयमल्लजी गुण गावो, सुख  
पावोरी घर बैठों होय वधावो ॥ गा० ॥ १ ॥ श्रीसंघनो  
काज करावो, और भक्तकी भीड़ मिटावो ॥ गा० ॥ २ ॥  
दुश्मन अलग भगावो, बळी आदर देवे नर रावो ॥ गा०  
॥ ३ ॥ झगडे जीत रखावो, कोइयन करे जग दावो ॥  
गा० ॥ ४ ॥ पुत्र कलत्र मित्र मिलावो, भूत प्रेतने दूर न-  
सावो ॥ गा० ॥ ५ ॥ अड्यो काम न रक्खावो, बळी  
विगड्यो काम बणावो ॥ गा० ॥ ६ ॥ प्रत्यक्ष परचो दिखा-  
वो, बळी भूलो राह बतावो ॥ गा० ॥ ७ ॥ मुनि राम करे छै  
जतावो, म्हे तो देख्यो प्रगट प्रभावो ॥ गा० ॥ ८ ॥ इति ॥

२ रंगरेज रंगीला कांचूंरंग दे रे म्हांने केसय्या ॥ ए देशी ॥

अरिहत देवने ओळख्या सरे, हुवो परम कल्यांन; द्वा-  
दश गुण कर गोभता स रे, ते अरिहत जानरे ॥ गुरु ज्ञान  
नगीना, भलो रे बतायो मारग मोखनो ॥ देर ॥ १ ॥



निरलोभी निरलालची स रे, ते गुरुलीधाधार; आप ति  
 पर तारता स रे, ते साचा अणगार ॥ गु० ॥ २ ॥ भेषधारी  
 छारी दिया स रे, देखी अंदर ज्ञान; भेख देख भूलो मती  
 स रे, लीजो हीये पिछाण रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ वीतरागरा व  
 चनमें स रे, हिसा न करणी मूल; हिसा मांहे धर्म पल्ले  
 है जांके मुख धूळ रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ देव गुरु धम कारणे  
 स रे, हिंसा करसी कोय; ते रुळसी च्याहू गते स रे, लीजो  
 सूतर जोय रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ दया दान उपापक  
 बोले, वीर गया छै चूक; ते मर दुर्गति जावसी स रे, क  
 रसी कूकाकूक रे ॥ गु० ॥ ६ ॥ समकित दीधी मुझ गुरु  
 स रे, जीव अजीव ओळखाय; तस थावर जाण्यां विना  
 स रे, कहो समकित किम आय रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ धर्म धर्म  
 सबही कहै स रे, नही जांणे छः काय; तो धर्म हुवे किण  
 रीतरुं स रे, जोवो आगम मांय रे ॥ गु० ॥ ८ ॥ कषाय  
 परगत ओळखी स रे, लीजो समकित सार; राम कहै  
 पांम्यो नहीं स रे, विन समकित कोई पार रे ॥ गु० ॥ ९ ॥  
 गुरु प्रसाद समकित लही स रे, गुरु सम अवर न कोय;  
 गुरुसुं बेमुख जे हुवे स रे, तेहनी गत किम होय रे ॥ गु० ॥  
 ॥ १० ॥ उगणीसेरा आठमें स रे, नागौर शहर चौमास;  
 कातिक वद पांचम किवी स रे, स्वांमी वृद्धिचदजी पा  
 स रे ॥ गु० ॥ ११ ॥ इति ॥

३ कांदो साले रे ॥ ए देशी ॥

मास खमणरे पारणे, मुनि आया चांमण गेह; तपसी  
 मोटा रे, मोटा मोटा रे छ कायारा पीर, तपसी मोटा रे ॥  
 ॥ १ ॥ देखाव्यो सत गुरु भणी, गुरु बोल्या तिणवार ॥  
 ॥ त० ॥ कुंण धांने आहार बेरावियो, कुंण मिलियो

दातार ॥ त० ॥ १ ॥ जैर हलाहल छै बुरो, ओतो नांखे  
ला आंतरा तो ॥ त० ॥ तिणकारण नहीं खावसो, ओ-  
तो परठो निरवच ठोड़ ॥ त० ॥ ३ ॥ एक विदु परठियो,  
दीठो अनरयकेर ॥ त० ॥ नाके सळ नहीं घालियो, पी गया  
हलाहल जैर ॥ त० ॥ ४ ॥ अनशन करि सुरवर थया,  
सर्वार्थ सिद्ध विचाल ॥ त० ॥ गुरु कहे निज शिष्य तेड़नें,  
तुमे करो मुनिकी संभाल ॥ त० ॥ ५ ॥ कलेवर देखि मु-  
नि आविया, थया गुरु अधिक उदास ॥ त० ॥ शिष्य  
गमन गुरु देखियो, पांमी सुखनी रास ॥ त० ॥ ६ ॥ गु-  
णवंतना गुण गावतां, तूटे कर्माकी कोड़ ॥ त० ॥ धर्मरुची  
मुगते गया, मुनि राम वंदे कर जोड़ ॥ त० ॥ ७ ॥ इति ॥

### ४ देशी घुमरनी ॥

मोने सत गुरु बोली प्यारी लागे हे माय, सत गुरु  
बंदन म्हे जासा; म्हे तो मन बांछित सुख पासां हे माय,  
सत गुरु बंदन म्हे जासां ॥ टेर ॥ आज शहरमे सत गुरु-  
जी आया, ए तो पांडित पुरुष सबाया हे माय; पाखंड  
मतनें हराय नसाया, आं तो छोड्या क्रोध मान माया  
हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मन मान्या पाशा मुझ ढळिया,  
आज मन बांछित मुझ फळिया हे माय; राज पायो  
जिम हुई रंग रळियां, वाट जोतां सत गुरु मिलिया हे  
माय ॥ स० ॥ २ ॥ बाल ब्रह्मचारी न परचो नारी, ऐरी  
कैणी रैणी एकतारी हे माय; आत्म निदा परनिदा नि-  
वारी, आंरी सूरत मोहणगारी हे माय ॥ स० ॥ ३ ॥  
सत गुरु जीवाजीव बताया, पुन्य ने पाप दिखाया हे  
माय; नव तत्व सत गुरु उरमे धराया, म्हांने पदद्रव्य

प्रकट सुणाया हे माय ॥ स० ॥ ४ ॥ ॥ ध्यान मीठी  
जिम अमृत धारा, सदा पुंडरीक कमल धार्युं न्यारा हे  
माय; अल्पाहारा रस जीत्या जिभ्यारा, मोनें लागे प्रा-  
णसुं प्यारा हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥ जिम जिम कल्पका  
दिन नैड़ा आवै, मोनें खाणो पीणो नहीं भावे हे माय;  
काम काज तो नाहि सुहावे, बळी नैणां नींद नहीं आवै  
हे माय ॥ स० ॥ ६ ॥ पेटी बांधनें विहार करियो, मो मन सत  
गुरु हरियो हे माय; म्हारो हिवडो जावे भरियो, मातुं  
उलटे जोरावर दरियो हे माय ॥ स० ॥ ७ ॥ धन्य जिके  
नर नित्य सुणे वखांण, धन्य गुरु सुख करे पचक्खाण हे  
माय; धन्य चले गुरु वचन प्रमाण, धन्य सेवा करे चतुर  
सुजांण हे माय ॥ स० ॥ ८ ॥ गुरु विन ज्ञान न गुरु विन  
ध्यान, म्हानें गुरु विन नहीं मिले मान हे माय; सत गुरु  
नो विनो करे गुणवान, तिके पांमे अमर विमान हे माय  
॥ स० ॥ ९ ॥ समत उगणीसे सातै कही गाई, म्हाने पा-  
ली पीठ सुहाई हे माय; रामचंद्र गुरु महिमा सुनाई, आ  
तो मास फागुण वदमांही हे माय ॥ स० ॥ १० ॥ इति ॥

### ५ देशी पूर्ववत् ॥

मोनें सत गुरु बोली प्यारी लागे हे माय, मोनें सत  
गुरु चाल सुहावे हे माय; सत गुरु वदन म्हे जासां, म्हे  
तो जासां ने शीश नमासां हे माय, म्हे तो मन बांछित  
सुख पासां हे माय ॥ स० ॥ ढेर ॥ जीव दया वीस विश्वा  
पाळे, ऐ तो निरवय वदे सुख भापा हे माय ॥ स० ॥ वि-  
ना दीये तृणमात्र न लेवे, जारे घटमे प्रकट उजासा हे  
माय ॥ स० ॥ १ ॥ शीलव्रत पाळे चित्त चोखे, ऐ तो

भूल न करे सुख हासा हे माय ॥ स० ॥ आज्ञा प्रमाणे  
 उपग्रहन रक्खे, जारे नही ममत एक मासा हे माय  
 ॥ स० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत निर्मल पाळे, आं तो छोडी  
 जगतकी आशा हे माय ॥ स० ॥ इस भवमे तो महिमा  
 फैली, परभव मुक्तिमें वासा हे माय ॥ स० ॥ ३ ॥ वार  
 वार म्हारे नगर पधारो, ओ तो होसी धर्म प्रकाशा हे  
 माय ॥ स० ॥ राम मुनी कहे सत गुरु महिमा, म्हे तो जगे  
 दिन नित्य गासां हे माय ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

## ६ देशी पूर्ववत् ॥

गणधर ग्यारे नित नित नमसां, म्हे तो करसा सत गुरु  
 सेवा हे माय; शिश नमास्यां पाये पढस्यां, म्हे तो गुण  
 मुख गास्यां नितमेवा हे माय ॥ ग० ॥ टेर ॥ श्रीतीर्थकर  
 गणधर पद मोटे, म्हाने लागे जीवसे प्यारा हे माय; प्र-  
 थम संघयन संस्थान प्रथम छै, ए तो अद्भुत रूप उदारा  
 हे माय ॥ ग० ॥ १ ॥ पूर्व चतुर्दश धारक सारे, दृष्टिवादके  
 स्वामी हे माय; सदेह दारक ज्ञान च्यार धारक, गणधर  
 सब शिवगामी हे माय ॥ ग० ॥ २ ॥ केवल विन ज्ञान  
 मुहूर्तमाहे, आवे गणधर लब्धिथी सारी हे माय; गणधर  
 पूछे श्रीअरिहंत भाव्ये, ज्यांरो उपदेश लागे अति प्यारो  
 हे माय ॥ ग० ॥ ३ ॥ तेसठ श्लाघा पुरुष प्रधान, जांकी  
 कथा गणधर भाखे हे माय; मनका सदेह तो गणधर टारे,  
 करे गणधर जगत प्रकासे हे माय ॥ ग० ॥ ४ ॥ लब्धि-  
 पात्र और निर्मल गात्र, ज्यांका गुणकीयां बुद्धि बाधे हे  
 माय; घर बैठांही पौरस सोबन, वळी अन्न धन लछमी  
 लाधे हे माय ॥ ग० ॥ ५ ॥ तद्भव शिवगामी अरिहंत गणधर,

पुन्य स्कंध उत्कृष्ट हे माय; मुनि राम कहे कष्ट मोचक तुम  
हो, ज्ञानावरणादि टारो कर्म अष्ट हे माय ॥ ग० ॥ ६ ॥ इति ॥

७ नटवा कर जोगिको वेस आगरे चल रे ॥ ए देशी ॥

चेतन धर मुनिवरका वेस, मुगतनें चाल रे; हां रे मुग  
तनें चाल रे, हां रे मुगतनें चाल, चेतन दे सत गुरु उपदेश,  
मुगतनें चाल रे ॥ टेर ॥ पंच महाव्रत धारके स रे, समति  
गुपति प्रतिपाल, मानों साची कूं, त्रयोदश चारित शुद्ध  
मने स रे, करत पतन कूं गाल ॥ चे० ॥ १ ॥ सात बीस  
गुण मूल है सरे, उत्तर गुण दश होय; मानो साची कूं  
शुद्ध मन सेती पाळजो स रे, राग द्वेष दोय खोय ॥ चे० ॥ २ ॥  
गीदड़पणो तूं छोड दे स रे, सिंघपणें शुद्ध चाल, माने  
साची कूं, गीदड़पणे तूं चालसी स तो, खोटा होवे हवाल  
॥ चे० ॥ ३ ॥ गर्दभ खेत खाविया स रे, ओढ सिंघके  
खाल, मानो साची कूं, खबर पड़ी जब लोकने स रे, मा  
न्यौ बुरे हवाल ॥ चे० ॥ ४ ॥ सिंघपणे जो पाळसी स रे, त  
लोक करे गुण ग्राम, मानो साची कूं, मुक्त हुवे जग जर  
रहे स रे, इम बोले मुनि राम ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

८ थारे तो कारण बूंदी गयो थो, बूंदीसें फूंदी  
लायो नांदांनड़ी रंग लागो; केसरको पट लागो  
नांदांनड़ी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

मुक्तिके कारन सयम लीयो छै, संसारने त्याग दीयो  
धर्मको रंग लागो, समकितको पट लागो, धर्मको रंग ला  
गो ॥ टेर ॥ १ ॥ मुक्तिके कारन चारित्र पाळूं छूं, दो  
तो सगळा टाळूं ॥ ध० ॥ २ ॥ मुक्तिके कारण तप करू छूं

कर्मसुं गूढ लखूं ॥ ध० ॥ ३ ॥ मुक्तिके कारण ज्ञान पढ़ूं  
हूं, पाखंडसुं जाय लहूं ॥ ध० ॥ ४ ॥ मुक्तिके कारण इंद्रिय  
दमूं हूं, क्रोधादिकनें उपशमूं ॥ ध० ॥ ५ ॥ मुक्तिके कारण  
कर्म हटाऊं, मुनि राम कहे प्रभु गुण गाऊ ॥ ध० ॥ ६ ॥ इति ॥

९ देशी जलेकी ॥ जलो म्हारी जोड रो

उदिया पुर माले रे ॥

श्रेणिक रेवाडी चट्यौ रे, दीठो मुनि वर एक; मुनि मन  
गावतो, मुझ मनडो मोह्यौ रे, शिव अब गावतो; अविचल  
परह्यौ रे ॥ ढेर ॥ राजा मन अचरज हुवो रे २, मोह्यौ रूपनें  
ख ॥ मु० ॥ १ ॥ क्यूथे संजम आदन्यौ रे २, मुनि कहे  
हूं हूं अनाथ ॥ मु० ॥ राजा बोले मुनिवर भणी रे २, हूं हूं  
गंरो नाथ ॥ मु० ॥ २ ॥ तू पोते अनाथ छै रे २, होसी  
किणरो नाथ ॥ मु० ॥ राजा बोले मुनिवर भणी रे २, सुण  
राजा मोरी बात ॥ मु० ॥ ३ ॥ कौशांबीनो वासियो रे २,  
मुज घर बन अण पार ॥ मु० ॥ आंखतणी वेदन हुई रे २, आ-  
डोन आयो परिवार ॥ मु० ॥ ४ ॥ राजा सुणने समजियो रे २,  
हुवो समकित धार ॥ मु० ॥ राम कहे मुनिवर भणी रे २,  
बहु बारं बार ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

१० आज शहरमें हो हंजा मारूं सी पड़े ॥ ए देशी ॥

स्वामी सुधर्मा हो वीरजीना पाटवी ॥ ढेर ॥ सुधर्म  
स्वामी हो गणधर पांचमो, गुरु भेट्या वर्धमान दयालु,  
परम उदारी करुणे सुंदरु, अनुत्तर सुर किण जान ॥  
द० स्वा० ॥ १ ॥ कोलास ग्रामे हो धमिल, तुम पिता भ  
दिला तुमची मात ॥ द० ॥ वरस पचासे हो घरमे तुम रह्या,  
भेट्या पछे जगनाथ ॥ द० स्वा० ॥ २ ॥ सो वरसांनो हो

काया॥गु०॥२॥खरची देवे गांठकी रे, मुनि देवे मुक्ति पाँच-  
 य ॥ गु० ॥ ३ ॥ निरलोभी निरलालची रे, मुनि वहे जिन  
 आज्ञा मांय ॥ गु० ॥ ४ ॥ मुनि अनाथी भेटने रे, कोई  
 समज्यो श्रेणिक राय ॥ गु० ॥ ५ ॥ राय प्रदेशी पापियो  
 रे, ताज्यो कैसी महाराय ॥ गु० ॥ ६ ॥ अरजुन माली शिव  
 गयो रे, मुनि राम कहे चित लाय ॥ गु० ॥ ७ ॥ चौमामो  
 साल चौवीसमें रे, तिवरी सदा सुख दाय ॥ गु० ॥ ८ ॥ इति ॥  
 १४ मारुजीनें राखो समझाय दासी मोरा मा० ॥ ए देशी ॥

गुरुजीनें राखो समझाय सखी मोरा ॥ गु० ॥  
 भर्म गया सत गुरु मिल्या जी, और गमाया पाप;  
 साच झूठनें ओळख्याजी, भव भव भेट्या संताप  
 ॥ स० ॥ १ ॥ सत संगत बहुली करी जी, रहे कर-  
 णरां चाव; पिण अबके गुरु सागे मिल्या जी, मिलिया  
 पुन्य प्रभाव ॥ स० ॥ २ ॥ निरलोभी निरलालची जी,  
 किम राखूं विलमाय; हाथ जोड़ अरजी करूं जी, लुळ  
 लुळ लागूं पाय ॥ स० ॥ ३ ॥ निदा नहीं कोई धर्मनी जी,  
 विधीसूं करे उपदेश; रेस खुलासे सबी कहे जी, रीस  
 नहीं लव लेग ॥ स० ॥ ४ ॥ काम क्रोध अज्ञानसूं जी,  
 दूर रहै नित्यमेव; निज स्वरूपने ओळखे जी, ते मोरे  
 गुरु देव ॥ स० ॥ ५ ॥ अबके विछड्या गुरु देव जी हे, कब  
 फेर मिलसी आय; मुनि राम कहे जसरासर मध्ये, घणो  
 साधूनो चाय ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

१५ मारग मारग हूं चली, कोई ऊजड़ रेक पड गयो  
 पांव, करवोरे गुड़वेलीरो, करवो राज चंवेली रो ॥ ए देशी ॥

धर्म अधर्म न ओळख्यो, नहीं मारंगरे कुमारंग लाध २,

कुगुरु रे वह कावियो, सुगुरु संग न पावियो, जीव अजीव  
न जाणिया, नहीं जाण्यां रे मैं साध असाध २ ॥ कु० ॥ १ ॥  
मोक्ष अमोक्ष न जाणिया, कांई पढ़ियो रे हूं मिथ्या मांय २  
॥ कु० ॥ जिनवर वचन न सरधिया, कांई उलटी रे निंद  
कराय २ ॥ कु० ॥ २ ॥ कुगुरु कुशास्त्र धारिया, नहीं गि-  
णियो रे मैं न्याय अन्याय २ ॥ कु० ॥ हठग्राही कुमती  
थयो, शुद्ध धर्म रे नहीं आयो दाय २ ॥ कु० ॥ ३ ॥ हम काल  
अनादि भटकतां, अब पायो रे मैं सत गुरु सग २ ॥ सुगु-  
रु संग लागियो, कुगुरुनो सग त्यागियो ॥ टेर ॥ भलो  
हुवो गुरु देवको, अब लागो रे मुझ जिन मत रंग २  
॥ सु० ॥ ४ ॥ सम्यक् दर्शन ज्ञान ही, चारित्र्य रे वळे तीजो  
जांण २ ॥ सु० ॥ मोक्ष मारग जिन भाखियो, जिन वचन रे  
सह कहुं प्रमाण २ ॥ सु० ॥ ५ ॥ निःसंकिय निःकंखिय,  
विचिकित्सां रे निर्मल दृष्ट २ ॥ सु० ॥ वहवूँह धिरै  
करणे, वच्छैल रे प्रभावना अष्ट २ ॥ सु० ॥ ६ ॥ देश धकी  
और सर्वधी, निसकित रे निकांक्षित होय २ ॥ सु० ॥  
स्यादवाद मत मूल छै, जिन शासन रे थे लीजो जोय २  
॥ सु० ॥ ७ ॥ भव भव सरणो मुझ होजो, जिन वाणी  
रे छै तारणहार २ ॥ सु० ॥ मुनि राम कहे जिन धर्मको,  
कांई मर्म रे गुरु मुखसू धार २ ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥

१६ ऊंची नीची हो भैरूं सरवरियारी पाळ, साय-  
धण हो झलती पणिहार; हार दे म्हारा लाइला  
हो भैरूं ॥ ए देशी ॥

म्हे तो करसां हो प्रभू गणधर सेवा; सेवा करसां, पाये  
पदसां, हे देवनके देवा; गणधरजी कर जोडी हो बंद;



वंदवाको कारन म्हारे सारो दुःख निकंदूं ॥ म्हे० ॥ ८१ ॥  
 जो तनें रे जीवा तरवाको कोड, तो गणधरजीके पाय  
 बंदो कर जोड ॥ म्हे० ॥ १ ॥ इंद्रभूति अग्निभूति वायू-  
 भूति नाम, गौतम गोत्री तीनें भाई राख्यो जुगमें नाम  
 ॥ म्हे० ॥ २ ॥ व्यक्त स्वामी हो सुधर्मा शिर नाऊं, मंडित  
 पुत्र हो मौर्य पुत्र गुण गाऊं ॥ म्हे० ॥ ३ ॥ अचल आता  
 हो मैतार्य प्रभास, पृथक् कुला आठूँकेरा वंदूं हुलास ॥  
 म्हे० ॥ ४ ॥ एकादश हो गणधरजी विख्यात, वीरप्रभू-  
 जीका चेला जांकी ब्राह्मण उत्तम जात ॥ म्हे० ॥ ५ ॥  
 प्रभूजीके हो पेली नव गण धार, सुक्ति पधारे गणधर  
 दोइ रहे प्रभूके लार ॥ म्हे० ॥ ६ ॥ सारेही तो शिव गये  
 राजगृहके मांही, सुधर्मा स्वामीकी रही वाचना रही  
 दूजाकी नाही ॥ म्हे० ॥ ७ ॥ किंकरकी तो अरज  
 प्रभूजी लीजो अवधार, मुनि रामचंद तो वदे थां  
 आपतणो आधार ॥ म्हे० ॥ ८ ॥ इति ॥

### १७ राधा प्यारी है ॥ ए देशी ॥

गणधरजीनें म्हे तो वंदसां, ऐ तो राजे प्रभूजी  
 पाद; प्रभू म्हारा हो; सरि दाता छै अर्थका, उपाध्या  
 दे सूत्रपाठ ॥ प्र० गण० ॥ १ ॥ तीरे इन कर कैसो ती  
 छै, तीर्थकर तीर्थ करणार ॥ प्र० ॥ प्रथम तौ गणध  
 थप्पिये, पछै तीर्थ थपे छै च्यार ॥ प्र० ग० ॥ २ ॥ अर्थ  
 अत्तागम अरिहंत, गणधर अनंतरागम ॥ प्र० ॥ परंपर  
 गम शिष्य तेहना, छै तीन प्रकारे आगम ॥ प्र० ग  
 ॥ ३ ॥ सूत्रसे अत्तागम गणधर, अनंतरागम जंबू स्वा  
 ॥ प्र० ॥ परंपरागम छै आजलो, कसूं सूत्रमणी प्रणा

॥ प्र० ग० ॥ ४ ॥ अर्थ भासक अरिहंतजी, सूत्र गूथे गण-  
धार ॥ प्र० ॥ प्रश्न कारक प्राये गणधर, श्रीअरिहत उत्स-  
रकार ॥ प्र० ग० ॥ ५ ॥ अरिहंत गणधर दो पद, अविना-  
भावी छै दोय ॥ प्र० ॥ अरिहत गणधर विन नही, गण-  
धर अरिहंते होय ॥ प्र० ग० ॥ ६ ॥ जिन शासन नित्य  
बंद ह, आगम नमुं तज भर्म ॥ प्र० ॥ मुनि राम कहे  
मुज तारसी, श्रीदेव गुरु शुद्ध धर्म ॥ प्र० ग० ॥ ७ ॥ इति ॥

१८ मैड़ी ऊपर माळियो हे मिसरी, जिण चढ़ ना-  
खूं राख, राख राख तो उड गई हे मिसरी, नी-  
पजे दाड़म दाख; ॥ ए देशी ॥

॥ हाथ जोड़ अरजी करूं हे सजनी, लुळ लुळ लागू  
पाय; सत गुरु आवे सैरमे हे सजनी, दीजे मोय बताय  
॥ १ ॥ देखूं बधाई लोयने हे सजनी, मत जांणीजे हास;  
नही विसरूं गुण ताहरा हे ॥ स० ॥ और देखू स्याबास  
॥ २ ॥ सत गुरु आया बागमे हे सजनी, तूं केती सो  
आज; मूंडे विराजं मुंहपती हे सजनी, ओघो जतना  
काज ॥ ३ ॥ हाथमे झोळी जेहने हे ॥ स० ॥ पोथी जारें  
पूठ; चेला जारें दीपता हे सजनी, चावा च्यारूं खूंट  
॥ ४ ॥ सुरत प्यारी जेहनी हे ॥ स० ॥ नीची राखे दिष्ट;  
मैला कपडा पहरवा हे सजनी, बाणी अमृत मिष्ट ॥ ५ ॥  
लोक करे था वातडी हे ॥ स० ॥ आये उत्तम नियथ; पंच  
महाव्रत पाळता हे सजनी, साधे मुगतनो पथ ॥ ६ ॥ दीधी  
बधाई जेहने हे ॥ स० ॥ पैरी नाकमे नाथ; ओढी दिखणी  
चूनडी हे सजनी, चाली सखियां साथ ॥ ७ ॥ आई मुनि  
बर बांदवा हे ॥ स० ॥ हीये हर्ष अपार; मुनि राम कहे

पाखंड देख नवि डूळं ॥ हूं० ॥ २ ॥ मोनें सत गुरुजी  
 सूत्र सुणाया, म्हारा मनमें बहोत सुहाया; 'ज्ञानी' गुरु  
 जीनी अमृत वाणी, म्हाने लागे अमिय समाणी ॥ हूं०  
 ॥ ३ ॥ म्हेतो वीर प्रभूजी मत पायो, म्हाने ज्ञानी गुरु  
 जी बतायो; म्हेतो लीयो जगत सब जोई, पिण गुरुजी  
 रे तुले नही कोई ॥ हूं० ॥ ४ ॥ हूंतो सत गुरुजी निजरा  
 निरखूं, हूं तो रोम रोम करि हरखूं; दीठां दिल हुबे  
 राजी, म्हारा गया भर्म सब भाजी ॥ हूं० ॥ ५ ॥ सत  
 गुरुजी ज्ञानका दाता, गुरु दीठां दिल पावे साता;  
 म्हारो गुरु चरणां चित लागो म्हारो संसारसु  
 दिल भागो ॥ हूं० ६ ॥ मोने नैंणें नोद न आवे, म्हाने  
 खाणो पीणो नही भावे; मोसूं भक्ति वण नही आवे,  
 सो अफल जमारो जावे ॥ हूं० ॥ ७ ॥ चित्त बोले  
 करो गुरु सेवा, कुमति काढे गुरांमे कैवा; गुरु मोटा छै  
 उपगारी, ज्यांने वंदीजे वार हजारि ॥ हूं० ॥ ८ ॥ गुरु  
 अज्ञान मिटायो, मोने सम्यक्त्व रत्न बतायो; शुद्ध उप-  
 देश गुरु भाख्यो, नरक पडतां झेली राख्यो ॥ हूं० ॥ ९ ॥  
 काच खंड कुंण लेवे, चिंतामणि नाख कुंण देवे; लाख  
 यात जो कैवे, कल्प छोडी खेजड़ कुंण सेवे ॥ हूं० ॥ १० ॥  
 सतगुरुजी बाल ब्रह्मचारी, ज्यांरी सूरत मोहणगारी;  
 ज्यांरी मुद्रा प्यारी लागे, ज्यांरे बैठ रहीजे सुख आगे  
 ॥ हूं० ॥ ११ ॥ मोनें सतगुरुजी भवोदधि तारे, म्हाने  
 सतगुरुजी पार उतारे; म्हारी अरज ऊपर छै अरजी,  
 दर्शन देणेकी राखजो मरजी ॥ हूं० ॥ १२ ॥ वनणा वार-  
 वार लीजो, म्हानें वेगो दर्शन दीजो; कल्पता चौमासे  
 पधारो, वारे महीनांमे क्षेत्र संभारो ॥ हूं० ॥ १३ ॥ सत

गुरुजीनें सगळा पूजे, पाखंडी ऊभा सहू धूजे; सतगुरुजी  
तन मन भाया, हम राम मुनी गुण गाया॥हं०॥१४॥इति॥

## टाळ. ॥

१ नाम जपो श्रीना कोड़ो ॥ ए देशी ॥

पूज्य जयमल्लजी हुवा अवतारी, ज्यांरे नामतणी म-  
हिमा भारी; कष्ट टळे मिटे ताप तपो, पूज्य जयमल्लजी-  
रो जाप जपो ॥ १ ॥ पूज्य नामे सध कष्ट टळे, वळी भूत  
प्रेत पिण नांही छळै; मिले न चौर है गप्पचपो ॥ पू०  
॥ २ ॥ लक्ष्मी दिन दिन वध जावे, वळी दुःख नैडो तो  
नही आवे; व्यौपारमें होवे बहुत नफो ॥ पू० ॥ ३ ॥ अ-  
ड्यो काम तो हुय जावे, वळे विगड्यो काम तो वण  
जावे; भूल चूक नहीं खाय डफो ॥ पू० ॥ ४ ॥ राज का-  
जमे तेज रहे, वळी खमा खमा सहू लोक कहै; आछी  
जायगां जाय रुपो ॥ पू० ॥ ५ ॥ पूज्य तणो जां लीयो  
ओठो, जांरे कदे नही आवे तोडो; घर घर बारणे कांई  
तपो ॥ पू० ॥ ६ ॥ एक माला नित नेम रखो, किण वात-  
तणो नही होय धको; खाली विमांण और टळेजी सप्पो  
॥ पू० ॥ ७ ॥ स्वगच्छतणी प्रतिपाल करे, मुनि राम सदा  
तुम ध्यान धरे; कोई प्रत्यक्ष वात मती उथपो, पूज्य जय-  
मल्लजीरो जाप जपो ॥ ८ ॥ इति ॥

दोहा ॥

कृष्णरायनो नद है, नेमप्रभूनो शिष्य ।

अत्राय कर्म उदय भयो, बोलेइणविघ्नप्रप्य ॥ १ ॥

मन लागे, वेश्याको सकुन मांजीजे ॥ गु० ॥ ३ ॥ सुकृत  
 केरी बात न भावे, दुःकृत चाय करीजे ॥ गु० ॥ ४ ॥ ज्ञा  
 नको कथन करे नहीं घेटो, उलटे पंथ चलीजे ॥ गु० ॥ ५ ॥  
 लाख प्रमोद देवे गुरु सचो, पिण नहीं एक पतीजे ॥ गु०  
 ॥ ६ ॥ कौन प्रकारसुं मन रहे निश्चल, सो गुरु शैली मुझ  
 दीजे ॥ गु० ॥ ७ ॥ ध्यान विना मन कबूवन धंभे, गुरु  
 कहे शिष्य सुणीजे ॥ गु० ॥ ८ ॥ मुनि राम कहे मनकों बश  
 करवा, गुरु मुख सैली लीजे ॥ गु० ॥ ९ ॥ इति ॥

७ बड़े घर ताळी लागीरे, जीवड़लारी जोत जागी रे  
 ए देशी ॥

गुरुजीरी सेव करसां रे, सदा शिर पग बिच धरसां  
 रे ॥ टेर ॥ गुरु दीवो गुरु जानके दाता, साताके देवनहार;  
 सतगुरु विन जग घोर अंधारो, कुंण नरकसँ राखनहार  
 ॥ गु० ॥ १ ॥ पाखंड मत म्हांरी दाय न आवे, कुगुरु संग  
 मत होय; पापी तो म्हांनँ मिलजो हजारों, कुगुरु मिलो  
 मत कोय ॥ गु० ॥ २ ॥ कुगुरु धनकू खांचे विघ विघ, डारे  
 दुर्गति मांय; सतगुरु तारे खरची बंधावे, दीधा नेत्र  
 खुलाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ तीन भवनमें चीज न ऐसी, जो  
 सतगुरु जोड़े लागे, रामचंद कहे करो गुरु सेवा, ज्य  
 सुख पावोला आगे ॥ गु० ॥ ४ ॥ इति ॥

गाळ ॥

१ नाड़ेके छुरियां बांध मती ॥ ए देशी ॥

चाल सखी तूं मुझ संगे तोय कैती थी, वे आया सत  
 गुरु आज. सखी तोय कैती थी; सतगुरुकी सगत छोड

मती, पंच महाव्रत पाळता ॥ तो० पं० ॥ ऐ तारण तरण जहाज,  
 सखी तोय कैतीथी, सतगुरुकी सगत छोड मती, मिथ्या-  
 त्व हरो सतसंग करो, मुनि संगसूं उतरो पार ॥ सखी०  
 स० मि० स० मु० स० सत० ॥ १ ॥ नमे नहीं ऐ केहनो  
 तो ॥ तो० ॥ ऐ खमे बोल कुबोल ॥ स० ॥ रमे सदा  
 निज रूपमें ॥ तो० ॥ ऐ वमे कर्म कल्लोल ॥ स० स० मि०  
 स० मु० स० स० ॥ २ ॥ कालिस नही किण वातसूं ॥ तो० ॥  
 लालच नही है लिगार ॥ स० ॥ वाचक ऐसा छै नहीं  
 ॥ तो० ॥ पाळे शुद्ध ब्रह्मचार ॥ स० स० मि० स० मु०  
 स० स० ॥ ३ ॥ ब्रह्मवेत्ता करता नहीं ॥ तो० ॥ भूल चूक  
 परपंच ॥ स० ॥ आतमराम रमावही ॥ तो० ॥ लोभ न  
 ज्यारे रंच ॥ स० स० मि० स० मु० स० स० ॥ ४ ॥  
 पांव पसारे नहीं हाथकूं ॥ तो० ॥ वंदगी फिर मत आव  
 ॥ स० ॥ याद रखो प्रभु भूल हां ॥ तो० ॥ फकर एह  
 स्वभाव ॥ स० स० मि० स० मु० स० स० ॥ ५ ॥ तारे सत-  
 गुरु एहवा ॥ तो० ॥ जे मनकूं बैठा मार ॥ स० ॥ मुनि  
 रामचंद मन चायना ॥ तो० ॥ गुरु जीवो वरस हजार ॥  
 स० स० मि० स० मु० स० स० ॥ ६ ॥ इति ॥

२ ख्याली आयो मुलतांनसैं ॥ ए देशी ॥

पार न पायो गुरु ज्ञानको, भलो बतायो मार्ग जैनको ॥  
 ॥ पा० ॥ ढेर ॥ दान सुपातर मुनिंकूं दीजो, पायो शा-  
 लिभद्र फल दानको ॥ पा० ॥ १ ॥ शील रतन जतन  
 करि रखो, ज्यूं सुघरे धारों मानखो ॥ पा० ॥ २ ॥ तप  
 विना नहीं मोक्ष मिलत है, नष्ट करे कर्म वितानको ॥  
 पा० ॥ पा० ॥ ३ ॥ देखो भाव शिरोमण शुद्ध परणामे,  
 मरु देव्या भरत राजानको ॥ पा० ॥ ४ ॥ जीव अजीव

पुन्य पाप बतायो, कीयो आश्रव संवर पिछानको ॥ पा० ॥ ५ ॥ निर्जरा बंध क्रिय मोख दिखायो, शासन बतायो वर्धमानको ॥ पा० ॥ ६ ॥ रामचंद्र कहे सतगुरु सच्चा, नाश कन्यो रे अज्ञानको ॥ पा० ॥ ७ ॥ इति ॥

### ३ देशी पूर्ववत् ॥

मुनि तिष्ठे अपने ख्यालमें, रहे भस्त सदा निज ब्हालमें ॥ मु० ॥ टेर ॥ कौन जाने कौन विगरे सुधरे, नहीं फसे रे जगके जालमें ॥ मु० ॥ १ ॥ निदो बंदो भावे कड दे-  
वो गाळी, कबू चूके न अपनी चालमें ॥ मु० ॥ २ ॥ घ्या-  
नानंदी अरु दृढ ब्रह्मचारी, जांके दमके जी हीरो भालमें ॥ मु० ॥ ३ ॥ पत्थर कंचन सम कर जाने, फर्क न रंक  
श्रृपालमें ॥ मु० ॥ ४ ॥ जगसैं तर्क फर्क मन रक्खे, भला  
करे एक स्वालमें ॥ मु० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहे ऐसे धन्य  
जग जोगिया, मिलजो जी म्हानें कोई कालमें ॥ मु० ॥  
॥ ६ ॥ इति ॥

### ४ हां सखी सुन वात सयानी ॥ ए देशी ॥

पंच महाव्रत पाळे मुनिवर, ठाळे दुःखण सारा रेक;  
करते ज्ञान विचारा, हां गुरुदेव हमारा, गुरुदेव हमारा,  
तारनहारा, जिन शासनवारा रे क ॥ गु० ॥ १ ॥ जिन  
मतके मंडन कुमतके खंडन, करते ज्ञान पसारा रे क,  
शुद्ध उपदेश दातारा ॥ हां गु० ॥ २ ॥ निसप्रेही रहते  
परिपह सहते, वहते खड्गकी धारा रे क, करते उग्र विहा-  
रा ॥ हां गु० ॥ ३ ॥ राग डेष दो मल्लकूं मारे, तारे भ-  
विक अपारा रे क; भेठे जो चरनही जांरा ॥ हां गु० ॥ ४ ॥  
रामचंद्र कहे ऐसे मुनिवर, करते भवोदधि पारा रे क;  
नमोनी सो सो वारा ॥ हां गु० ॥ ५ ॥ इति ॥

५ नखरो जोर वण्योरे चंदगारीरो ॥ ए देशी ॥

सखरो धर्म पायोरे जिनराजरो; अजरो जीग वण्योरे  
गुरु महाराजरो ॥ ढेर ॥ सतगुरु पासे जासां म्हेतो, सी  
स नमासां गुण मुख गासां; डर नहीं लासां कुल लाज  
रो ॥ स० ॥ १ ॥ भवसिधूही तरसां म्हे तो, भव डलंघसां  
पार उतरसां; शरणो लेसां रे धर्म जाजरो ॥ स० ॥ २ ॥  
नव तत्वही सीखां म्हे तो, नयकू धरसां चरचा करसां;  
ज्ञान अभ्यासां दिन सांजरो ॥ स० ॥ ३ ॥ निज रूप  
ओळखसां, करसां निरणो, तिरणो इनसे; मुनि राम  
भणे रे धन दिन आजरो ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

६ असी रुपया ले कलदार ॥ ए देशी ॥

प्रणमूं श्री गुरु ज्ञान दातार, भव जल सिधू तारनहार  
॥ ढेर ॥ श्रीगुरुदेव करू तुम सेव, तजूं अहमेव भजूं चर-  
णार ॥ प्र० ॥ १ ॥ तुम गुरु राज सुधारो काज, रखो मेरी  
लाज महाराज कृपाल ॥ प्र० ॥ २ ॥ अधम उधारन भव  
जल तारन, सारन वारन करन सुधार ॥ प्र० ॥ ३ ॥ मैं  
गुरु चेरो ग्रहो पद तेरो, दै मुझ गैरो ज्ञान विचार ॥ प्र०  
॥ ४ ॥ गुरु पद पूजो नहीं जग दूजो, तूं जो चाहै तन्यो  
ससार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ कहे मुनि राम करो गुन ग्राम,  
निश्चल ठाम लहो सुखकार ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इति ॥

७ आनंदी लै घोटो, घूंघटमें दोय नैन रखा,  
जैसे शूरवीरका वान बहा, थारे घायळरो नहीं  
तोटो रे, आनंदी आनंदी लै घोटो ॥ ए देशी ॥

सुगुरुजी सुगुरुजी मो तारो ॥ वावा सु० ॥ ढेर ॥  
गुरु चरनां विचमे आय रह्यो, मेरे मनको मनोरथ



होय गयो; गुरु गुनको अंत न पायोरे, सुगुरुजी  
 सुगुरुजी मो तारो ॥ १ ॥ मेरा मोटा भाग्य  
 गुरु पद भेट्या, तुम भव भवना दुख सब भेट्या; मेरो  
 सफल भयो अवतारो रे ॥ सु० ॥ २ ॥ मात-तात भ्रात  
 नहीं तार सके, नरक पड़तां कोइयन राख सके; एक  
 रक्खे गुरु चरनारो रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ मेरा गुरु चरना चित  
 जाय लगा, मेरा मोह अज्ञान तो दूर भगा; कर लगा  
 चिंतामणि सारो रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ फेर कुगुरु काला नाग  
 जिंसा, नहीं जगमें दुश्मन और इसा; दै कुगुरु छांती  
 मारो रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ थारे मुक्त जावन दिलमांहे बसी,  
 तो तुम सेवो शुद्ध कसी; कर राग द्वेषको टारो रे ॥ सु०  
 ॥ ६ ॥ दिल राख सफा तेरे होय नफा, तूं रीस करी मत  
 होय कफा; तेरी अप्पा इणविध तारो रे ॥ सु० ॥ ७ ॥  
 गुरु गुण शारदा नित्य गावे, फेर इंद्रादि पार नहीं पावे;  
 गुरु किधूं मोटो उपगारो रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ मुनि रामचंद  
 गुरु वंदत है, दुष्ट गुरुभणी कोई निदंत है; जिणरो होसी  
 मुकड़ो कारो रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥

## ख्याल ॥

### १ देशी धूंसेरी ॥

एक कर लो रे सेव गुरु देवनकी ॥ ए० ॥ ढेर ॥ गुरु  
 देवन ईश्वर परमेश्वर २, क्या महिमा करूं गुरु भगवन  
 की ॥ ए० ॥ १ ॥ शुद्ध उपदेशी कैसी गुरु जेहवा २, शैली  
 दिवी शिव स्थाननकी ॥ ए० ॥ २ ॥ भव भव काज सुधारे  
 गुरु ज्ञानी २, क्या ओपमा लगे चिंतामनकी ॥ ए० ॥ ३ ॥

पशुता टाली कीयो मुज मानव २, फेरी ज्ञान शलाका  
अंजनकी ॥ ए० ॥ ४ ॥ एकलव्य गुरु भावकू रख तो २,  
शिष्यो कला देखो ध्यानकी ॥ ए० ॥ ५ ॥ गुरु कृपासे  
काज सब सुधरे २, गरज सरे सब तन मनकी ॥ ए० ॥ ६ ॥  
मुनि राम कहे शिष्य केवलधारी २, तनु सेव करे गुरु  
चरनकी ॥ ए० ॥ ७ ॥ इति ॥

## २ देशी ख्यालनी ॥

सतगुरुजी म्हांरा दर्शन तौ दीजे मोने कर मया ॥  
सतगुरुजी०॥देरे ॥ सतगुरुजी तो कठिण दाखसे, है अमृ  
तसें खारा; सतगुरुजी तो करता चरते, रविथकी अंधि-  
यारा जी ॥ स० ॥ १ ॥ सतगुरुजी तौ ऐसा मैला, मोती  
अथवा चंद; सतगुरुजी तो घणाज ओछा, जैसे महास-  
मंद जी ॥ स० ॥ २ ॥ छोटा पिण वे मेरू जैसा, खोटा  
चिंतामणि रतन; थिरवासी तौ कहिये ऐसा, मन अथवा  
पवन जी ॥ स० ॥ ३ ॥ सतगुरुजी तो नितही मोनें, ज्ञान  
करी भरमावे; रामचंद कहे सतगुरु हट कर, मुक्ति महल  
लेजावे जी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

## ३ देशी फागनी ॥

गुरु बेमुख मोख नही पावे॥गु०॥अज्ञानीको गुरु जानी  
करियो, जीव अजीवकू ओळखावे ॥ गु० ॥ १ ॥ दुर्गति  
सद्गति राह दिखायो, बळे मुक्तिपथको दिखलावे ॥ गु०॥  
॥२॥पंचआचारीनेगुरुउपगारी,गुरुगुणको पार नहीं आवे  
गु०॥ ३ ॥ ऐसा गुरुकू फेरे अज्ञानी, बहोल ससार दुर्गति  
जावे ॥गु०॥४॥ अपछंदो ने आपमती हुय, गुरु दयालकू  
छिटकावे ॥गु०॥५॥ दशवे कालिक उत्तराध्ययने, अचनी-

तकूं इम दरसावे ॥ गु० ॥ ६ ॥ गलिहार गधोने कु  
कुत्ती, जठे जावे जठे दुखी थावे ॥ गु० ॥ ७ ॥ विन  
रहित तप धर्म करीयो, ज्ञानी तो लेखे नहीं लावे ॥ गु०  
॥ ८ ॥ रत्न छोडनें काच ग्रहे छै, अमृत छोड अखज सावे  
॥ गु० ॥ ९ ॥ गुरु निदा सम पातक मोटो, दीसे न  
प्रभु फुरमावे ॥ गु० ॥ १० ॥ इम जांणी गुरु सनमु  
रहिथे, रामचंद इम दरसावे ॥ गु० ॥ ११ ॥ इति ॥

### ४ देशी ख्यालनी ॥

गुरु देव हमारा, थांका दर्शनकी रे म्हारे भावना; सु  
णो सखी सहेल्यो, तन धन तो वारूं रे, करसूं वधावण  
॥ देर ॥ तीन लोकको द्रव्यही सारो, करूं भेट तो थोड़ा  
दर्शन करनें करूं वीनती, क्यू दीये दर्शन मोड़ा ॥ गु  
॥ १ ॥ मात पिता सुत मित्र रु स्वामी, खड़े खड़े स  
झांखे; समरथ नहीं को नरक दारवा, वांह पकड़ गुरु रा  
खे जी ॥ गु० ॥ २ ॥ अंधत्व दारी नेत्र दिये वर, अपूज्य  
के पूज्य बनाये; पशुता दारी जन्म सुधारी, नर पंक्ति  
लाये जी ॥ गु० ॥ ३ ॥ भव भवमें मुझ सद्गुरु सेवा, दी  
जो वर प्रभु मांगूं; मुनि राम कहे गुरु दर्शन दीजो, लु  
लुळ चरणे लागूं जी ॥ गु० ॥ ४ ॥ इति ॥

### लावणी ॥

१ सुण सव जारे तुम जलदी जावो ॥ ए देशी ॥

सुण चेतन रे तुम गुणवैत मुनीको सेवो, एक भजो निरं  
न गुणवैतना गुण लेवो ॥ देर ॥ एक संजती राजा मृग मार  
नीसरियो एक मुनिवर देखि मनमे अधिको डरियो; जिह

सुण उपदेशे उत्तम कारज करियो, मुनि केवल पांमी भव  
सागरथी तरियो ॥ सु० ॥ १ ॥ एक राय प्रदेशी नहीं थी  
उसके करुणा, एक कैसी मुनिना पकड़्या उसने शरणा;  
जिन अल्पकालमें कीना पड़ित मरणा, मर हुवो सुरी-  
याभे निरुस्या उसका निरणा ॥ सु० ॥ २ ॥ एक अर्जुन  
माली थो राजग्रही चारे, षट् मासातांड सात मनुष्य  
नित मारे; एक सेठ सुदर्शन कर लीयो अपनी लारे,  
श्रीभगवंत भेटी कर दीयो खेवां पारे ॥ सु० ॥ ३ ॥  
मुनि बेले बेले जावजीव तप ठावे, नर नारी मिलके  
मुनिक्क बहोत सँतावे; मुनि क्षम्मा करके कर्म पुंज उड  
चावे, मुनि केवल पांमी शिवरमणीक्क जावे ॥ सु० ॥ ४ ॥  
एक मुनिवर भेटी अनंत जीव उद्धरिया, जिन शास्त्र-  
मां हे भगवंत निरणा करिया; शुद्ध करणी करनें भव  
सागरथी तरिया, मुनि राम कहे ते जन्म मरणसु डरि-  
या ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति ॥

## होरी ॥

१ घ्राणेंद्रीके वश नहीं परिये ॥ ए देशी ॥

मुनिवरकी संगत करिये, सदा गुरुवाक्य उर धरिये  
॥ सु० ॥ ढेर ॥ कोड़ अपराध भिटे एक छिनमे, कुमति  
लता उद्धरिये; भरिये शिव सनमुख पग जिनके,  
नरक कपाटही जरिये ॥ ४ ॥ सु० ॥ १ ॥ मात पिता आ-  
ता सुत नारी, स्वामीसें नरक न टरिये; सहुरु विन नहीं  
नरकको टारक, तारक चरन पकरिये ॥ ४ ॥ सु० ॥ २ ॥  
सत संगत सम नहीं जग दूजो, शास्त्रके वाक्य समरि-

ये; मुनि राघप्रदेशी अर्जुन मालीसैं, गुरु विन कैसे तरि  
 ये ॥ ४ ॥ मु० ॥ ३ ॥ शशिसैं ताप गंगासैं पाप, दारि  
 कल्पसैं हरिये; ताप पाप संताप तीनूही, सब दर्शनसैं  
 गरिये ॥ ४ ॥ मु० ॥ ४ ॥ रोहीण्ये तस्कर भूल संगत का  
 ना अभय कुमरसैं छरिये; मुनि राम कहे सत संग नि  
 करिये, भवभव जनम सुधरिये ॥ ४ ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे  
 स्वाध्याय नामकं पंचम प्रकरणम् ॥ ५ ॥

## ६ हितोपदेश—गीत ॥

१ दिल्ली शहरका पासा मंगाय, आवोजी कम  
 धजिया चोपड़ खेलसां हे लो; चोपड़ खेले राज  
 दिवाण, चोपड़ खेले मोटा घरां हे लो ॥ ए देशी ॥

चेतो चेतो चतुर सुजांन, मनुष्य जनम पावणो दोहि  
 लो हे लो; आर्य देश उत्तम अवतार, लांबो रे आजसो  
 नहीं सोहिलो हे लो ॥ १ ॥ इंद्रयां पांचे शरीर निरोग्य,  
 कठिन मुनिनी संग पावणी हे लो; पाई संगत सुनबो  
 सिद्धांत, श्रद्धा रे प्रतीति दुर्लभ आंचणी हे लो ॥ २ ॥ पाई  
 सरधा पुन्य प्रमाण, तो नहीं रे पराक्रम चेतन ते कीया  
 हे लो; रुळियो रुळियो काल अनाद, जनम मरण दुख  
 पाविया हे लो ॥ ३ ॥ पायो पायो जिन धर्म सार, बळे  
 रे अवसांण नहीं पावसी रे लो; नहीं बांधे तू खरची  
 लार, जासी रे परभवमें कांई खावसी रे लो ॥ ४ ॥ धारो  
 धारो अरिहंत देव, धारोनी निग्रंथ गुरु पिछांणिये रे लो ॥

सारो सारो नित नित सेव, दया रे धर्म निश्चै जांणिये  
लो ॥ ५ ॥ धन धन जेह नर नार, मनुष जनम सफलो  
करे रे लो; रामचंद जेहनी बलिहार, पाप रे कर-  
मसू जे नर डरे रे लो ॥ ६ ॥ रुद्र निधि इंद्र १९११ वर्ष मांय,  
ग्राम रे नाँवाज पोस मासमें रे लो; आठम बुध सेवा  
मन लाय, करे रे सगलाई मन हुलासमे रे लो ॥ ७ ॥ इति ॥

२ गैरो जी फूल गुलावरो ॥ ए देशी ॥

तेरो जी कृण ससारमे, ओ तो तेरो मेरो एक न कोय  
जानी जियडा, तू पिण नहीं छै केहनों, तू तो अदर ज्ञा-  
नसुं जोय ॥ ज्ञा० ॥ ते० ॥ टेरे ॥ धन कमायो अकृत करी,  
ओ तो खायो खरच्यो नाय ॥ ज्ञा० ॥ पुन्य संचीया पूरा  
हुवे जद संचीयो केम रहाय ॥ ज्ञा० ते० ॥ १ ॥ पुत्र क-  
लत्र धन दाबीयो, ओ तो निकमो डोसो खाय ॥ ज्ञा० ॥  
कृण करै धारी चाकरी, यागो डेरो पोळरे मांय ॥ ज्ञा० ॥  
ते० ॥ २ ॥ मांगे खावा रवी खीचडी, बळे ताजी जलेबी  
सेव ॥ ज्ञा० ॥ लपटो पूरो नवि घालही, बळे पूरी न  
घाले पळेव ॥ ज्ञा० ते० ॥ ३ ॥ टिण टिण करो विन का-  
मरा, थे तो मरो खावण रे काज ॥ ज्ञा० ॥ कयूं कांन प-  
चावो खावो देखने, यांरी सुध बुध गई सब लाज ॥ ज्ञा०  
ते० ॥ ४ ॥ बहू वेटा कछो ना करै, जरे डोसो झुरे मन-  
मांय ॥ ज्ञा० ॥ सुनि राम कहे धर्म जो कीयो, तो क्यूं दु-  
ख देखे भव पाय ॥ ज्ञा० ते० ॥ ५ ॥ इति ॥

३ हांरे वावानेह लग्यो दिल मांणले ॥ ए देशी ॥

हांरे जीवा कमला नीची संचरे, हांरे जैसे नदीनो  
बार रे; यो लच्छी स्वभाव विचार रे, हम वदे प्रगट गण-

धार रे ॥ यों० ॥ हारे जीवा ज्ञान गमावे वेगसुं, हारे ज्य  
निद्रा चैतन्य अपहार रे ॥ यों० ॥ १ ॥ हारे जीवा कमला  
मद प्रगट करै, हारे ज्यु उन्मत्त करै मद धार रे ॥ यों० ॥  
हारे जीवा कमला अंधपणो दहै, हारे जैसे धूम विकार रे  
॥ यों० ॥ २ ॥ हारे जीवा लक्ष्मी चापल्यता भजै, हारे  
जैसे विज्जु झत्कार रे ॥ यों० ॥ हारे जीवा लक्ष्मी लोभ  
वधावही, हारे ज्युं दब ज्वाल अपार रे ॥ यों० ॥ ३ ॥  
हारे जीवा कमला स्वेच्छाये रमै, हारे जैसे कुलटा नार  
रे ॥ यों० ॥ हारे जीवा मुनि राम कहै किम आपरी, हारे  
देखोनी कृष्ण मुरार रे ॥ यों० ॥ इति लक्ष्मी स्वभाव ॥

### ४ देशी पूर्ववत् ॥

हारे जीवा धिक् धन बहू आधीन रे, हारे इम जानों  
लोक प्रवीन रे ॥ धि० ॥ टेर ॥ हारे जीवा गोत्री कहै धन  
मांहेरो, हारे तस्कर लेवे छीन रे ॥ धि० ॥ हारे जीवा भ्रूपत  
छल कर खांचही, हारे तै तो गुन्हो राजको कीन रे  
॥ धि० ॥ १ ॥ हारे जीवा भस्म करै बन्हि वेगसुं, हारे  
जबी होवे पुन्याई हीन रे ॥ धि० ॥ हारे जीवा अशु  
बहावे गालवे, हारे जबी होवे तेरे तीन रे ॥ धि० ॥ २ ॥  
हारे जीवा धन भूमीमे गाडीयो, हारे कोई अपहरे देव  
बलीन रे ॥ धि० ॥ हारे जीवा कुपुत्र गमावे धन सचि-  
यो, हारे पछे होवे अधिको दीन रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ हारे  
जीवा सप्त सीर एहमें कह्या, हारे तुमे देखोनी बुद्ध  
अहीन रे ॥ धि० ॥ हारे जीवा मुनि राम कहै धन खर  
चिये, हारे सदक्षेत्रे हुय कर लीन रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ इति ॥

५ गोरल ईसरजी कवै तो हंस कर बोलणा हे ॥ ए देशी ॥

म्हे तो निरलोभी नहिं देखिया जी, म्हे तो देखिया  
सो सगळा लोभिया जी ॥ टेर ॥ केई गृहस्थ ब्रह्मव्रत पा-  
लवे जी २; केई सदा करै चउ विहार, केई हरीतणो प-  
रिहार, पिण छे धनसूं अधिको प्यार ॥ म्हे० ॥ १ ॥ केई  
घर त्यागी योगी भया जी २; केई धनके होगये त्यागी,  
जांके मठकी ममता लागी, जांकूं किम कहिये वैरागी  
॥ म्हे० ॥ २ ॥ केई वस्त्र वस्त्र करते फिरे जी २; जांकूं लोभी  
किम नहीं कैवां, अथवा पुस्तक लेवां लेवां, जानें नि-  
रलोभी किम कैवां ॥ म्हे० ॥ ३ ॥ केई ममत्व करै चेला-  
तणी जी २; ए तो अपणा नाम बधावे, याजे अपणा  
माल गमावे, ए तो उलटा धर्म लजावे, जानें निरलोभी  
कुण गावे ॥ म्हे० ॥ ४ ॥ केई तन ऊपर ममता धरे जी २;  
ए तो खाय खाय मांस बधावे, जानें तपस्या दाय न  
आवे, आखर लोभी गणिया जावे ॥ म्हे० ॥ ५ ॥ केई  
कथन करावे केई ढगसू जी २; है कोई राजाजीकूं लावे,  
है कोई दिवानकूं बुलवावे, धनवंत देख देख बतलावे  
॥ म्हे० ॥ ६ ॥ केई महिमा बांछै आपणी जी २; निज  
महिमासूं फूल जावे, जांरै तत्व हाथ नहीं आवे, मुनि  
रामचंद्र दरसावे ॥ म्हे० ॥ ७ ॥ इति लोभ गर्भित हितोपदेश ॥

६ म्हांरा गाढा मारु वसोनी आजकी रैनमें ॥ ए देशी ॥

म्हारा भोळा जिवडा लेवोनी खरची जोयने, जीवा  
मारग विषम अपार, म्हांरा भोळा जिवडा, लेवोनी ख-  
रची विचारने; ॥ टेर ॥ म्हां० ॥ लेउ लेउ तू स्यू करे,



जिवड़ा दीसे तू मूढ गिवार ॥ म्हां० ले० ॥ १ ॥ म्हां० ॥  
 तन धन दौलत कामनी, जिवड़ा, रैसी यांहकी  
 यांह ॥ म्हां० ॥ एक न साथे चालसी, जिवड़ा दरिये  
 खाली मत जाह ॥ म्हां० ले० ॥ २ ॥ म्हां० ॥ दान  
 सुपात्र दीजिये, जिवड़ा जीवांनों करोनी बंचाव  
 ॥ म्हां० ॥ जप तप शुद्ध क्रिया करो, जिवड़ा राखेनी  
 निरमल भाव ॥ म्हां० ले० ॥ ३ ॥ म्हां० ॥ सत गुरुनी  
 संग कीजिये, जिवड़ा बंधसी खरचीरी गांठ ॥ म्हां० ॥  
 मुनि राम कहै मत झूलजो, जिवड़ा आगे विपसी बाध  
 ॥ म्हां० ले० ॥ ४ ॥ इति ॥

७ कांई रे जवाव करूं रसियो ॥ ए देशी ॥

कांईरे गुमान करे अपणो, मान करेगो गुमान करेगो  
 तो नीची गतमें जाय पड़ेगो ॥ कां० ॥ ढेर ॥ जोवन बय  
 मे तु आंधो चालै, तो दोय दोय छोगा ऊपर राळै ॥ कां० ॥  
 ॥ १ ॥ जोवन देखीने जोम करे छै, तो रूप देखीने ग  
 धरे छै ॥ कां० ॥ २ ॥ धन देखीने मनमें फूले छै, तो मो  
 नदीरे मांहे झूले छै ॥ कां० ॥ ३ ॥ इंद्र नरेंद्र चक्रवरती  
 ते पिण छोड चल्या सहू धरती ॥ कां० ॥ ४ ॥ छपन को  
 डको नाथ कहातो, ते पिण मूवो कौशांवी जात  
 ॥ कां० ॥ ५ ॥ नही मिल्यो पांणी पावणवाळो, तो तु  
 गर्व धरी किम चालो ॥ कां० ॥ ६ ॥ चौथो चक्री सन  
 त्कुमारो, जिण कीयो रूपतणो अहंकारो ॥ कां० ॥ ७ ॥  
 सोले रोग थया ततकालो, तो देख शरीर चिते झूपा  
 ॥ कां० ॥ ८ ॥ काची काया ने काची माया, तो का  
 ही सहू छळ बनाया ॥ कां० ॥ ९ ॥ कुंण जाणे मोत वि

त विध आसी, ओ घर छोड किसे घर जासी ॥ कां० ॥  
१० ॥ रामचंद्र कहै गर्व न कीजै तो पर भव सेती  
इरता रहीजै ॥ कां० ॥ ११ ॥ इति ॥

८ इण सरवरियारी पाळ ऊभा दोय राजवी, मोरा  
लाल, ऊभा दोय राजवी ॥ ए देशी ॥

भाखे श्रीजिनराज, काज सुधारजो; मोरा लाल,  
काज सुधारजो; देव गुरु सुधधर्म, हीयामे धारजो, मोरा  
लाल, हीयामे धारजो ॥ १ ॥ नर भव रतन अमोल,  
आळे मत हारजो ॥ मो० ॥ आ० ॥ विषय विकार प्रमा-  
द, दूर सहू दारजो ॥ मो० दू० ॥ २ ॥ तन धन सहू परि-  
वार, लार नही आवसी ॥ मो० ला० ॥ सुख दुख संच्या  
जीवकै, पर भव पावसी ॥ मो० प० ॥ ३ ॥ मात पिता सुत  
नार, परिवार स्वारथी ॥ मो० प० ॥ विरचे इण ससार,  
नही परमारथी ॥ मो० न० ॥ ४ ॥ सुरनर थिर नही कोय,  
जोय विचारने ॥ मो० जो० ॥ रुळियो जीव अनाद, प्रमाद  
धारने ॥ मो० प्र० ॥ ५ ॥ तो कीयां सत गुरु संग, श्रवण  
फल जानता ॥ मो० श्र० ॥ ज्ञान वकी विज्ञान, पछै पच-  
खानता ॥ मो० प० ॥ ६ ॥ त्यागथी सयम होय, पछै आश्र  
धरो कहै ॥ मो० प० ॥ तपथी तूटे कर्म, अक्रिय फल मोक्ष  
है ॥ मो० अ० ॥ ७ ॥ ऐ दस फल भगवइ अग, सुणी  
राखो आसता ॥ मो० सु० ॥ तो कीजे सतगुरु संग, जो  
सुख चाखो शाश्वता ॥ मो० जो० ॥ ८ ॥ दान झील तप भाव,  
सुग आराध जो ॥ मो० सु० ॥ सजम तप करी दोय, आ-  
तम साधजो ॥ मो० आ० ॥ ९ ॥ चेतो सहू नर नार,

त्यार हुवो मोखने ॥ मो० त्या० ॥ स्युं हुवे कहियां राम  
प्यारो पाप लोकनें ॥ मो० प्या० ॥ १० ॥ इति ॥

९ जल्हो म्हांरो जोड़ो उदियापुर माले रे ॥ ए देशी ।

दश दृष्टांते दोहिलो रे, पाम्यो नर अवतार; जिण  
वंछे देवता रे, ते किम जावो हार; चतुर नर चेतजो;  
निराज सुणावे रे; पर उपगारी साधुजी, इम सत्य व  
सावे रे ॥ च० ॥ १ ॥ गर्भावासमें ऊपनो रे, भृष्ट  
भाखसी मांय; नीचे माथे ऊंचे पगे रे, ते दुख जाणे  
जिनराय ॥ च० ॥ २ ॥ गर्भावासमें ऊपनो रे, बिसरी  
पूरव बात; चालपणो खोयो ख्यालमे रे, जोवन तिरिया  
साथ ॥ च० ॥ ३ ॥ परण्यो प्यारी प्रेमसूं रे, रहे आधे  
आखर त्यार; पलमांहे पर भव गयो रे, कठै प्रीतम कठै  
नार ॥ च० ॥ ४ ॥ मात पिता सुत भामिनी रे, एक न  
चालै लार; जासी जीव एकलो रे, इणमे फेर न सा  
॥ च० ॥ ५ ॥ पर नारी प्यारी लगे रे, जोवे आंख्यां  
फाड; काती कुत्तारी ओपमा रे, देवे सहू नर नार ॥ च० ॥ ६ ॥  
नांन्ही मोटी नार विप लता रे, जोवो हीये विचार; कम्पा  
राशी रवी आवही, जदि शीतल हुवे दिनकार ॥ च० ॥ ७ ॥  
ज्ञान सहित शील पाळजो रे, जोवन बयरे मांय; विजय  
कुमर विजया परे रे, शुद्ध पाळो मन वच काय ॥ च० ॥ ८ ॥  
पुद्गल त्याग किया थकां रे, चेतन निर्मल थाय; जो सुख  
चावो शाश्वता रे, ओही करोनी उपाय ॥ च० ॥ ९ ॥  
सुख दुख भुगत्या जीवड़े रे, केई अनंती वार; भटक्यो  
च्याकं गतमे रे, कर्मतणे अनुसार ॥ च० ॥ १० ॥ कीया  
कर्म सहू भोगवे रे, इम कहै श्री जिनराज; वांधो मती  
कर्म जीवड़ा रे, जो राखी चावो लाज ॥ च० ॥ ११ ॥

करो दान शील तप भावना रे, पतली चौकड़ी पाड़;  
 संजम तप दूणो करो रे, कीजे कर्मासूं राड़ ॥ च० ॥ १२ ॥  
 सार धर्म जिनराजनो रे, बीजू सह असार; रामचंद  
 कहै सांभळो रे, अवसर नही वारंवार ॥ च० ॥ १३ ॥  
 संवत वगणीसे दश समै रे, नागौर नगर मझार; ज्येष्ठ  
 मास शुद्ध त्रयोदशी रे, प्रथम जाम रविवार ॥ च० ॥  
 ॥ १४ ॥ इति ॥

१० नणदल बाळो ए जोवन झिल रह्यो ॥ ए देशी ॥

भविजण बांधो मतिकर्म चीकणा, ते तो भुगते आपो  
 आप ॥ भवि० बां० ॥ १ ॥ देर ॥ एक तौ जोवन थिर नहीं,  
 ओ तो दूजो अधिर परिवार ॥ भ० ॥ तीजो धन नहीं शा-  
 श्वतो, ओ तौ चौथो तन नहीं लार ॥ भ० बां० ॥ १ ॥  
 एक तो अटवी वजाडमे, ए तो दूजी विपसी ठौड़ ॥ भ० ॥  
 मुनिवर जातां मारगे, विचमें मिलियो चौर ॥ भ० बां० ॥ २ ॥  
 तन बल्ल लेतां तिहा ऋपिजी कीधो ध्यान ॥ भ० ॥ चौर  
 कहै कारण किसो, मुनि कहै सुण वर कान ॥ भ० बां० ॥ ३ ॥  
 तूं बांधे कर्मज एरुलो, खावे सगलो साथ ॥ भ० ॥ पां-  
 तीवार कुंण एहमें, तू तो पूछेनी घरमे वात ॥ भ० बां०  
 ॥ ४ ॥ चौर पूछे घर आयने, हंतो बांधू पापना पूरा ॥ भ० ॥  
 कुंण कुण सांमल एहमे, थे साच कहो नहीं कूड़ ॥ भ०  
 बां० ॥ ५ ॥ खावणरा सीरी सह, म्हे तो पापना सीरी  
 नहीं कोय ॥ भ० ॥ जो करसी सो पावसी, चौरनें सुली  
 देवे पोय ॥ भ० बां० ॥ ६ ॥ चौर आयो मुनिवर कने,  
 तुमे भलो दियो मोनें ज्ञान ॥ भ० ॥ मुनि राम कहै सह  
 सांभलो, थे समझो इन आख्यान ॥ भ० बां० ॥ ७ ॥ इति ॥

## ११ झमाकड़ो ॥

जीवा मोरा मानव भव लाधो भलो रे, पाम्यो आरज  
 देश ॥ जी० ॥ उत्तम कुलमें ऊपनो रे, आयू दीरघ विसे-  
 स; जीवा मोरा चेत सके तो चेत जो रे, ए सतगुरु उप-  
 देस ॥ देर ॥ जीवा मोरा पंच इंद्री दौरी मिली रे, बळी शरीर  
 निरोग ॥ जी० ॥ सत गुरु संगत छै किहां रे, ते पिण मिलियो  
 जोग ॥ जी० चे० ॥ १ ॥ जीवा मोरा गुरु विन ज्ञान  
 मिले नही रे, गुरु विन घोर अंधार ॥ जी० ॥ गुरु परमे-  
 श्वर सारिसा रे, देवै पार उतार ॥ जी० चे० ॥ २ ॥ जीवा  
 मोरा सुणयो शास्त्रज दो हिलो रे, धेठ हुई रह्यौ जीव  
 ॥ जी० ॥ विन श्रद्धा तिरणो नही रे, ए जिन वचन सदीब  
 ॥ जी० चे० ॥ ३ ॥ जीवा मोरा ज्ञान सहित करणी करो  
 रे, ज्युं हुवे खेवो पार ॥ जी० ॥ दान शील तप भावना  
 रे, क्षमा दया गुण धार ॥ जी० चे० ॥ ४ ॥ जीवा मोरा  
 उगणीसेरा पचवीसमें रे, नागौर शहर चौमास ॥ जी० ॥  
 राम कहै सह सांभलो रे, कीजो ज्ञान अभ्यास ॥ जी०  
 चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

१२ भांगडली पीवो तो ढोला म्हांरे महलां आईजो,  
 अमलियो अरोगो सोकड़ जाज्यो राज, भांगडली ॥  
 ॥ ए देशी ॥

दान तो दीजै प्राणी जील पालीजै, तप खजानो संग  
 लीजै रे, राज, सुण सीखडली ॥ अजी काई निर्मल भाव  
 राखीजै रे, राज, सुण सीखडली ॥ देर ॥ सीखडली  
 सुणीजै प्राणी चित्तमें धरीजै, साधु संगत नित कीजै रे ॥

रा० ॥ अजी कांई किणरी निंदा मत कीजै रे ॥ रा० ॥ १ ॥  
 दया तो पालीजै प्राणी झूट ढालीजै, पर चीज उठाई मत  
 लीजै रे ॥ रा० ॥ अजी कांई मोटकी चौरी मत कीजै रे  
 ॥ रा० ॥ २ ॥ पर त्रियानें प्राणी बैन जांणीजै, बुरी निजर मत  
 जोईजै रे ॥ रा० ॥ अजी कांई अळयो वचन मत कहै रे  
 ॥ रा० ॥ ३ ॥ दाम परायो प्राणी हराम थे जांणो, सतोष  
 दिलमांहे आंणो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई संतोष करि  
 सुख मांणो रे ॥ रा० ॥ ४ ॥ क्रोध मान माया लोभ त-  
 जी जो, राग द्वेष मत कीजो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई स-  
 मता भाव राखीजो रे ॥ रा० ॥ ५ ॥ वचन की राढ़ प्रा-  
 णी आलको देवो, जिसो देवो तिसो लेवो रे ॥ रा० ॥  
 अजी कांई तेरमो पाप मति सेवो रे ॥ रा० ॥ ६ ॥ चुग-  
 ली तो खासो प्राणी पर निंदा करसो, तो हरगज भव  
 नहीं तिरसो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई नीची गतमांहे प-  
 डसो रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ कृत अनृत माया मृपा म भाखो,  
 मिथ्या शल्य मति राखो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई सुगत  
 म्हेल सांमो ताको रे ॥ रा० ॥ ८ ॥ नैण, बैण, कर, कां-  
 नको साचो, लंगोटे साचे साचो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई  
 जयाने काचे काचो रे ॥ रा० ॥ ९ ॥ सवत उगणीसे प्रा-  
 णी तीसको साल, नागौर शेपे काल रे ॥ रा० ॥ अजी  
 कांई नजीक आयो वरसाल रे ॥ रा० ॥ १० ॥ इति अ-  
 ष्टादश पाप स्थान ॥

१३ गैरो जी फूल गुलावरो ॥ ए देशी ॥

तस धावरमें भटकता, बळे अटकतां घाटी नव नर  
 सैणां, दश दृष्टांते दोहीलो; ओ तौ पाम्यो मानव भव  
 नर सैणा, चेतो जी नर भव पायनं; ये तो चेतो चेतो

चतुर सुजांण ॥ न० चे० ॥ १ ॥ टेर ॥ गर्भावासमें अव-  
 तज्यौ, ओ तो वास दुर्गधिमांय ॥ न० ॥ मास सवा  
 नव गर्भमें, दुख जांणे जिनराय ॥ न० चे० ॥ २ ॥ गर्भा  
 वाससुं नीसज्यो, वळे विसज्यो पूरव वात ॥ न० ॥ रात  
 दिवस वस्यौ मोहमे, वळे सेवे विसन सात ॥ न० चे० ॥ ३ ॥  
 पर नारी प्यारी लगै, वळे जारी कीयां सिर धूड ॥ न० ॥  
 सारी ऋध खोवे हाथसुं, थारी वात माने सहू कूड ॥ न०  
 चे० ॥ ४ ॥ सत गुरु भाखे देशना, ओ तौ नर भव रतन  
 अमोल ॥ न० ॥ वार अनंती हारियो, पिण अवके तौ  
 सुरति खोल ॥ न० चे० ॥ ५ ॥ अरिहंतदेवने धारजो, वळे  
 करजो सत गुरु सेव ॥ न० ॥ धरजोजी धर्म दया मध्ये,  
 वळे डरजो पाखंड कुदेव ॥ न० चे० ॥ ६ ॥ क्रोध मान  
 माया लोभनें, थे तो छोडो च्यार कषाय ॥ न० ॥ जो सुख  
 चावो जीवनें, ऐ तो इम भाखे जिनराय ॥ न० चे० ॥ ७ ॥  
 मात पिता सुत भामिनी, वळे तन धन सहू परिवार ॥ न० ॥  
 एक न आवे परभवे, तूं तो अंतर ज्ञान विचार ॥ न० चे० ॥ ८ ॥  
 देखोनी ऋद्धि जादवतणी, आ तो क्षणमें गई विलाय ॥ न०  
 सुरवर नरवर थिर नहीं, जिम बादरनी छांय ॥ न० चे० ॥ ९ ॥  
 कीधा कर्म ज भोगवे, ऐ तो भोगव्यां छूटक होय ॥ न० ॥  
 कर्म बीज जिनवर कहै, ऐ तौ राग द्वेष छै दोय ॥ न०  
 चे० ॥ १० ॥ इम जांणी कर्म मति वांधो, वळी साधो  
 शिव पुर माग ॥ न० ॥ तप सयम दोय मूल है, इम करै  
 श्रीवीतराग ॥ न० चे० ॥ ११ ॥ दान उील तप भावना,  
 ऐ तो शिव पुर मारग च्यार ॥ न० ॥ जो सुख चारो  
 शाश्वता, तो उणसे राखो प्यार ॥ न० चे० ॥ १२ ॥ उगणीसे  
 निधि मधु मासमे, ओ तो वास जालोर सुख दाय ॥

॥ न० ॥ स्वामी वृद्धिचंदजी प्रसादसं, कपि राम कहै  
चित लाय ॥ न० चे० ॥ १३ ॥ इति ॥

### × १४ न्याल देकी देशी ॥

छपर पुराणा पड़ गया जी, कांई तूटण लागा बंध;  
सध सध खुलण लगी जी, कांई तऊ न दीसे मति  
मंद; अब घर छूटा चेतन समझिये जी ॥ १ ॥ अरोखे  
जाली लगी जी, कांई घारी आडी भीत; मूल नींव  
डिगमिग करे जी, कांई भई पुराणी रीत ॥ अ० ॥ २ ॥ लछन  
सुभद नासी गया जी, कांई स्याईनो लोक गयो दूर;  
सिक्खर धरहर धूजही जी, कांई आई नंदी पूर ॥ अ० ॥ ३ ॥  
येगली पिण ठहरे नही जी, कांई नही कोई रिछपाल;  
क्यूं सूता तू नीदमे जी, कांई अब तो सूरत संभाल ॥  
॥ अ० ॥ ४ ॥ अब करणा है सो कीजिये जी, कांई देणा  
है सो देह; लेणा है सो लीजिये जी, कांई कैणा है सो  
कैह ॥ अ० ॥ ५ ॥ लाय लगी चहुं फेरसू जी, कांई मिल  
रही आळो आळ; मुनि राम कहै सहु काढजो जी, कांई  
इण घरमें बहुमाल ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

### × १५ न्यालदेनी देशी ॥

दश पचखांणे जीवडो जी, कांई पांमे सुख अनपार;  
करतां एक नवकारसी जी २; सौ वरस नरक निवार,  
तप समो नही जगतमें जी, सुखतणो दातार ॥ त० ॥ १ ॥  
बीजू पोरसी वर्ष सहसनो जी, कांई साढ पोरसी दश  
हजार; पुरिमढ लक्ष एक वर्षनो जी, एकासणे दश लक्ष  
घार ॥ त० ॥ २ ॥ नीवी तोडे कोड चरसने जी, कांई  
दश कोड एकल ठाण; सो कोड एकल दत्त दहेजी, आं-



विल सहस कोड जाण ॥ ३ ॥ सहस दश काड उपषा  
समें जी, कांई छठतणो तप धार; लख कोटी वर्ष खपा  
वही जी, अठ्ठम कोटि दश लख टार ॥ ४ ॥ कोटाकोटी व  
पनो जी, कांई दशम भस्म करै कर्म; मुनि राम कहै तप  
कीजियो जी, पामे स्यौ शिव शर्म ॥ त० ॥ ५ ॥ इति ॥

१६ वेगा आईजो हो वाईसारा वीर, थां  
विना गड़िये न आसंगे ॥ ए देशी ॥

धड धड धूज्यो हे माय मोरी जीव अपार, दूलभ  
नर भव पावियो; रुळियो रुळियो माय मोरी बारंबार,  
तेहनो लेखो नही आवियो ॥ १ ॥ करियो करियो हे मा-  
य मोरी कुगुरुको संग, धरम हिसामें मानियो; भमियो  
भमियो हे करी धरमकां भंग, सुध धरम नही जाणियो  
॥ २ ॥ अब लेखूं हे माय मोरी संजम भार, वीर प्रभु  
गुरु धारखूं; गोतम स्वामी हे मिलिया तारनहार, नर भव  
बेग सुधारखूं ॥ ३ ॥ माता हसती हे बोले इण पर बात,  
तूं नांनडियो डावडो; खट बरसनो रे जाया तूं छै सा-  
क्षात, किम सैसी सी ने तावडो ॥ ४ ॥ कोमल केसां रे  
पुत्र करणो रे लोच, दुर्धर महाव्रत पालणा; मुनिपथ क  
रडो रे नही पाछलो सोच, छोटा मोटा दोष ढालणा  
॥ ५ ॥ कुमर ऐमंतो रे बोले इण पर बात, माताजी अ-  
नुमत दीजिये; ढील न कीजे हे माय मोरी खिण एक  
मात, मुनि राम कहै मुनी गुण कीजिये ॥ ६ ॥ इति ॥

१७ कर रायजादा सुगटणो ॥ ए देशी ॥

ऐ तो मारगमे लूटे पांच जणी, ऐ तो नही गिणे नि-

जल सबल भणी; इनसें भाग छटा ज्यांके खूब वणी, थारें  
 सांमा हुवा ज्यांमे हुई घणी; मारगमें लूटे पांच जणी  
 ॥ देर ॥ पेहली कुरंग मुजंगनें मार लिया, जो सन्मुख हु-  
 वा सो हार गया; भाग गया सो छट गया, ज्यांने मिल  
 गये धोंग धणी ॥ मा० ॥ १ ॥ दूजी शलभादिकनें भस्म  
 कीया, बच्ची मुक्ति जाताने रोक दीया; कामी पुरुषांने  
 नरकमे पटक लीया, ज्यांने मारदेवे यमराज धणी ॥ मा०  
 ॥ २ ॥ भमरादिक तीजी नाश करै, चौथी मत्स्यादिकना  
 प्राण हरे; मुनि झर वीर देखो इनसें लरे, इनके नहीं कोई  
 एक धणी ॥ मा० ॥ ३ ॥ गज महिष पचमी ढाह दीया,  
 एक एक इद्रिय जो वो जुलम कीया; साधू पचांने जीत  
 शिव राह लीया, मुनि राम कहै ज्यांरे खूब वणी  
 ॥ मा० ॥ ४ ॥ इति ॥

१८ चांदा थारी चांदनीसी रात रे, कोई नणदल रे  
 भोजायां पांणी नीसरी, चुकल्यो मे ल्यो जल  
 जमुनारी तीर रे, कोई आपज रे पधारथा चंपा  
 वाग में ॥ ए देशी ॥

जिन मारग छै सब मारगमे सार रे, कोई और ज रे नहीं  
 लागे जोड़े पहने; रतननें निंदे मूरख गिवाँर रे, कोई  
 परखे रे जँवरी जलदी जेहनें ॥ १ ॥ शुद्ध मारगके  
 जोड़े न लागे कोय रे, कोई ज्ञान ज रे दृष्टी करनें देखिये;  
 कंचन पीतल अतर कितनो होय रे, कोई रात ज रे दिन  
 के अतर पेखिये ॥ २ ॥ कुण कुण तरिया जिन मारगके  
 जोर रे, कोई भरत ज रे आदि बहला तर गया; इण  
 धर्मसे पाये शिव रमणीकी ठौर रे, कोई जनम ज रे भरण

तणा दुख टर गया ॥ ३ ॥ देखो भाईजी धर्मको  
 रे, कोई बीजो रे प्रताप न जगमें एहवो; जावे  
 संचिया इणसूं पाप रे, कोई तरियो रे राजा परदेशी जे  
 हवो ॥ ४ ॥ कुण करे जगमें जिन मारगकी होडजी, को  
 परखे रे बुध जन ज्ञान विचारसूं; मुनि राम कहै छै सु  
 णियो मत पख छोड जी, कोई ओड़ज रे मत करजो म  
 गिवोरसूं ॥ ५ ॥ इति ॥

१९ मालण मालण कांई करो म्हांने, ल्होड़ी  
 लाडी कै वतळाव हो मारुजी ॥ एदेशी ॥

एकेंद्रीमांथी नीकल्यो, अवे इंद्रिय पाई पंच हो, चे  
 तनजी ॥ संज्ञी मनुज आयू दीर्घ छै, बळे उत्तम कुल  
 पुन्य संच हो ॥ चे० ॥ १ ॥ तूं भमियो पुद्गल संगसं,  
 बळी गमियो काल अनत हो ॥ चे० ॥ जिन धर्म दुर्लभ  
 पामियो, बळे मिल गये उत्तम संत हो ॥ चे० ॥ २ ॥ झूठे  
 मात पिता भ्राता, सब झूठे पुत्र कलत्र हो ॥ चे० ॥ झूठे  
 कुटुंब धन परिग्रहो, सब झूठे शत्रु अर मित्र हो ॥ चे० ॥  
 ॥ ३ ॥ तेरे कुण तूं देखतो, तू पिण किणरो पेख हो ॥ चे० ॥  
 राग द्वेष अंदर भण्यौ, तो स्यूं हुवो लीधांवेष हो ॥ चे० ॥ ४ ॥  
 लोक रंजन क्रिया करी, पढ कर लोक रिझाय हो ॥ चे० ॥  
 आशा तृष्णा अंदर जगी, ते स्यूं कीयो माथो मुडाय  
 हो ॥ चे० ॥ ५ ॥ कथनी जैसी रेणी नहीं, तो स्यूं हुवे  
 कथनी कोड़ हो ॥ चे० ॥ शुद्ध करणी चिन जीवड़ा, सब  
 निकमी छै माथा फोड़ हो ॥ चे० ॥ ६ ॥ ऐ वात पाई सहस्र  
 कने, सब सरधी साची वात हो ॥ चे० ॥ मुनि राम कहै  
 शुद्ध संजम चहु; रहो सतपुरुषांरो साथ हो ॥ चे० ॥ ७ ॥ इति

## २० पनजी मूँडे बोल ॥ ए देशी ॥

उत्तम कुल मानव भय पायो, बळी निरोगी काया रे;  
 लंबो आयु इद्रिय निर्मल, आचारी गुरु पाया रे, चेतन  
 अयके चेत, दुःखामिये आरमें जनम लीधो रे ॥ चे० ॥ १ ॥  
 पंचम आरे दुःख घणोरा, कहतां न पारही आवे रे; काया  
 निरोगी तो धन नांही, धन तो पुत्र ही चावे रे ॥ चे० ॥ २ ॥  
 पुत्र हुवो तो हुवो दुखकारी, अथवा पढियो नांही रे;  
 जो पढियो संगत झुंडी, बह न मिली मन चायी रे ॥ चे०  
 ॥ ३ ॥ बह गमती तो पोतो नांही, पोती बह दुख भारी रे;  
 पुत्री घर तो नही मन गमतो, आ पिण चिता न्यारी रे  
 ॥ चे० ॥ ४ ॥ नारी सुपातर मरगई पैली, दूजी आई दुखदाई  
 रे; और सुख तो मिलगये सारे, दुखदाई हुवो भाई रे ॥ चे०  
 ॥ ५ ॥ पाडोसी दुखदाई मिलियो, नितको जग मचावे रे; जो  
 पाडोसी आछी मिलियो, तो तोटो व्यापारमें जावे रे  
 ॥ चे० ॥ ६ ॥ लेणायत तो आय संतावे, देणायत नहीं देवे रे;  
 और छांनी मार लगी बहुतेरी, सो किण आगे कैवे रे  
 ॥ चे० ॥ ७ ॥ धर्म करै जो दुखभी आरे, जेहनी अधिक  
 बडाई रे; मुनि राम कहे छै धर्म करोनी, बखत पावणी  
 आई रे ॥ चे० ॥ ८ ॥ इति ॥

## २१ देशी पूर्ववत् ॥

मनवा रस्ते चाल, यारे ने कारणिये दुखडा निपजे रे;  
 वैरी रस्ते चाल ॥ धारे० ॥ दुसमण रस्ते चाल ॥ डेर ॥ रस्ते  
 चाल्या नहीं दो चक्की, नर्क सातमी पोंता रे; कोडरीक  
 मुनिवर रस्तो झूलो, खावे नरकमे गोता रे ॥ म० ॥ १ ॥  
 नधूक राजा तो हिसाये दूधो, वसु नृप झूठ उचरने रे;

सत्यघोष तो चोरी करनें, रावण परत्रिय हरनें रे ॥ म० ॥  
 धनतृष्णाधे आठमो चक्री, चाल्यो भर दरियाव रे;  
 सह तो हुय गया दूरा, डूब गई जय नाव रे ॥ म० ॥  
 तंदुल मच्छ तो गयो सातमी, रे मन तुज परताप रे;  
 भरत महाराजा केवल पायो, छूट गया सब पाप रे  
 ॥ म० ॥ ४ ॥ मनसूं बंधन मनसू मोक्ष, जिणमे फेरनसार रे;  
 मन जीता तो जीता सब ही, मन हारे सब हार रे ॥ म० ॥  
 ॥ ५ ॥ ज्ञान थकी तौ व्यान नीपजे, ध्यान थकी मन रो  
 को रे; मन रुक्यां सूं राम कहे छै, दूर नही छै मोखो  
 ॥ म० ॥ ६ ॥ इति ॥

## २२ कुंजेरी देशी ॥

सुण भाई प्यारे, भग्ग्यो गत च्याहूं मांय रे; कीर्ति  
 मकोड़ी आदि तूं हुवो रे; तिर्यच में; तिरजंचमें काल  
 नंत वस्यो रे तिर्यचमें ॥ १ ॥ सु० ॥ कवि गयो नरक  
 मांय रे, छेदन भेदन दुख सख्या रे; कहणी नावै ॥ क०  
 दुःख एक सासरो रे, कहणी नावै ॥ २ ॥ सु० ॥ कवि  
 वो रांक कंगाल रे, विध विधना दुःख भोगव्या रे; सु  
 नायो ॥ सु० ॥ सुपने पापसूं रे, सुख नायो ॥ ३ ॥ सु०  
 लाधो लाधो मानव देह रे, उत्तम कुल आवक ययो रे  
 चेतोनी ॥ चे० ॥ अवसर दोहिलो रे, चेतोनी ॥ ४ ॥ सु०  
 धन्य धन्य नरकना जीव रे, जे निर्मल समकित धार  
 रे; जिण कारण ॥ जि० ॥ धन्य धन्य जेहने रे, जिण क  
 रण ॥ ५ ॥ सु० ॥ धिक् धिक् सुर अवतार रे, जे मिथ्य  
 मतमें राचही रे; तिण कारण ॥ ति० ॥ धिक् धिक् ते  
 रे, तिण कारण ॥ ६ ॥ सु० ॥ राम कहै बोल सात

धे नही समकित मध्ये रे; दृढ राखो ॥ दृ० ॥ समकित  
लुल छै रे ॥ दृ० ॥ ७ ॥ इति ॥

## २३ रुड़ो बथवारे ॥ ए देशी ॥

नहीं हसवो रे, प्यारे ॥ नहीं० ॥ रहो ज्ञानमें मगन,  
तहाँ० ॥ ढेर ॥ हँसियां सेती हलको होवे, दुश्मण होवे  
ठारा; पांडव कौरव जुद्धमच्यो थो, कटी क्षोहिणी ठारा  
नहीं० ॥ १ ॥ धणी धणियांणी दोनूं हँसिया, पुत्र बधू  
सिआई; कता भेद बतावो मोने, नहीतर जीमू नाई॥नहीं०  
॥ २ ॥ हट कर पुत्र पूछै पिताने, क्यू तुम हाँसो आयो;  
एक दिन तोरी जननी मोने, कूवामे डबकायो ॥  
नहीं० ॥ ३ ॥ आज जीमतां तडको टाल्यो, कर कर  
ठयो हात; सिमरण होते दोनूं हँसिया, दूजी नही कोई  
वात ॥ नहीं० ॥ ४ ॥ पायो भेद कंतके पास, एक दिन  
मोसो दीधो; अमरस आयो सासू झटके, गलमे पासो  
लीधो ॥ नहीं० ॥ ५ ॥ सेठ मरियो पुत्रही मरियो, बह गल  
मासो धरियो; मुनि राम कहे छै विन प्रस्तावे, झूल न  
हासो करियो ॥ नहीं० ॥ ६ ॥ इति हास्य निपेधिका ॥

२४ काजलियो काढीनें दरजण आरसीमें जोयो रे,  
आंखरे टमोरे तैं तो छेलो मोयो हे दरजण वारे आव;

## ॥ ए देशी ॥

मनुष्य जनम पायो, उत्तम कुलमे आयो रे, चिंतामणि  
रण तैं तो हाथे खोयो रे, सज्जन हारे मत, हारे सज्जन  
हारे मत, मनुष्य जनम हीरो हाथ आयो रे ॥स०॥ १ ॥  
॥ ढेर ॥ घर मध्ये धन देखी, मन्न माँहे फूल्यो रे, रूपवती

नारी पेखी ज्ञान झूल्यो रे ॥ स० ॥ २ ॥ पुत्रनं परणाय, तौ  
 तौ मनझामें मोयो रे, पूंजी संभाली लारे गाढो रोयो रे  
 ॥ स० ॥ ३ ॥ लेणायत घेज्यो, तोनं राजमें रुकायो रे, रीते  
 रीते कर्म भोगे, राम गायो रे ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

## २५ देशी नवीन सूरजमलरी ॥

सटक सटक थारी ऊमर जावे, बूढापो नैडो, आवे रे  
 चेतन भोळा, धर्म तूं कार ले रे, ओछी ऊमरका, आदमी रे  
 तूं तो, खरची तो ले ले रे ॥ टेर ॥ १ ॥ सटक सटक थारी  
 सासा रे जावे, जाणो अंजन उडियो, आवे रे ॥ चे० ॥  
 कवी तार ज्युं तूटे रे ॥ ओछी० ॥ २ ॥ आयू पत्थर तेरा  
 कोयला होय, अंजन रात दिन, दोय रे ॥ चे० ॥ गुरु सीटी  
 पुकारे रे ॥ ओछी० ॥ ३ ॥ पंचदश पनरा बीस पचीसा,  
 तीस चालीस पचासा रे ॥ चे० ॥ इस्तेसण जाणो रे ॥  
 ओछी० ॥ ४ ॥ टिकट उत्तम ग्रामका लेना, हुस्यांरी पूरीसे,  
 रैना रे ॥ चे० ॥ नही ब्हादे पर रहना रे ॥ ओ० ॥ ५ ॥ घड़ी  
 घड़ी जावे सो पाछी रे नावे, बृथा क्युं खोय गमावे रे  
 ॥ चे० वृ० ॥ हीरो हाथ तो आयो रे ॥ ओ० ॥ ६ ॥ तन धन  
 यौवन छिनमे रे छीजे, झूठो गुमान न, कीजे रे ॥ चे० झू० ॥  
 ऐ जुग सुपनो रे ॥ ओछी० ॥ ७ ॥ भटक भटक तूं तो, धन  
 कूं रे भटके, जानसू मन नही, हटके रे ॥ चे० ॥ मुनि राम  
 दरसावे रे ॥ ओछी० ॥ ८ ॥ इति ॥

## २६ सखि पनिर्यां भरन कैसे जाना ॥ ए देशी ॥

तूं चलता छै विनजारा, जिया मत कर बहोत पसारा  
 २; तू० ॥ टेर ॥ कहाँसें पोठ लद्वाया, तू कया कया माल

, दाता देवे दांनो ॥ ह० ॥ ५ ॥ वचन  
 रुपिये, दे ते व्यौपारी; वर्षे वर्षा नदियां  
 पतिव्रता नारी ॥ ह० ॥ ६ ॥ भगवत वचन प्रका-  
 से, मेटे अधारी; महाव्रत शुद्ध पाले सत जुगसा,  
 भारी ॥ ह० ॥ ७ ॥ करै न हिसा वदे न मृषा,  
 री; अकिचन रच नहीं है ममता, समता  
 नी ॥ ह० ॥ ८ ॥ सत पुरुषारे नितही सत जुग,  
 युग कांडे; मुनि राम कहै आ वखत भली है,  
 रो भाई ॥ ह० ॥ ९ ॥ इति ॥ सत्ययुगनी लावणी ॥

रुजी चेला तेरा; पड़ी जाज दरियाव वीचमें,  
 या वेड़ा मेरा ॥ ए देशी ॥ ✕

चलो तौ कहोनी प्यारे, आगे नहीं मिलती  
 ॥ एक रैन अधेरी बिजुरी चमके जी, कैदी  
 ये, सफलगिरी पोरायत सूते, बंदीचांन  
 सबही निकसो ऐ छै मारग, ऐ अवसर  
 ॥ अच्छा पिण जरा लेटके, है इरादा  
 ते घरकू पोचे, सूता ते जंजीर ज-  
 कब बे निकसे, इति ॥ रीते जगदासी  
 हे ॥ ११ ॥



॥ ह० ॥ ३ ॥ झगडे बेटो मात तातसें, नहीं बंधव मुह  
 बोले; साला सेती गूंज घणेरी, गुप्त बात खोले ॥ ह० ॥ ४ ॥  
 नारी कारण न्यारो होवे, मांगे सो लावे; वा नारी नि  
 ज पतिने छोडी, और पुरुष ध्यावे ॥ ह० ॥ ५ ॥ बूढेन बेटी  
 परणावे, लोभ दृष्टि जोवे; अल्प दिनांमे, हुवे ज दुखणी,  
 निज पतिने रोवे ॥ ह० ॥ ६ ॥ मुखमें न धोला सिर  
 पर धोला, परणीजण चावे; कुलवंती कोई रहै कार  
 में, और विगड जावे ॥ ह० ॥ ७ ॥ भला आदमी  
 बहू सिधावे, पापीनो पोरो; दुखिया रानी ऊमर मोदी,  
 सुखी जिवे थोडो ॥ ह० ॥ ८ ॥ दादो बैठा पोतो चल  
 जावे, नहीं सर्व सुखी पावे; निर्धनके बहु बेदा बेटी, धन-  
 धंत तरसावे ॥ ह० ॥ ९ ॥ मूरख धन जोबनसूं गर्वे, छिन  
 छिन आड छीजै; रामचंद्र कहै हलाहल कलुमें, चर्म त्याग  
 कीजै ॥ ह० ॥ १० ॥ इति ॥ कलियुगनी लावणी ॥

## २ देशी पूर्ववत् ॥

हलाहल कलि युग मत जाणो रे ॥ ह० ॥ बडे बडे  
 मुनिराज इसीमे, तपसी गुण खांनो ॥ टेर ॥ मारग च  
 लता झूडो न दीसे, ए खरुं उन्मांनो; अमृत पीते मूवां  
 न सुणियो, जेरेन रखे प्रांनो ॥ ह० ॥ १ ॥ एक अधि-  
 कार्ड हृदसे जादा, विना धणी झूझे; लाखों द्रव्य छोडी  
 मुनि होवे, सिंघ परे गूंजे ॥ ह० ॥ २ ॥ दुर्जी अधिकारि  
 सत युगसेती, दुहिता दी जावे; नाके मल घाले नहीं तिल  
 भर, नही औगुन गावे ॥ ह० ॥ ३ ॥ लूलो पगु अंग हीणो  
 अंधो, रोगी कुष्टी बूढो; कुरूप बधिरादि पिता पर  
 णावे, धी न फेरे मूढो ॥ ह० ॥ ४ ॥ अग्नि तेज  
 सरज प्रकाशा, धरा निपजे धांनो; खांड गळे पाते

सुत माता, दाता देवे दांनो ॥ ह० ॥ ५ ॥ वचन  
प्रमाणे लाखां रुपिये, दे ते व्यौपारी; वर्षे वर्षा नदियां  
चलती, पतिव्रता नारी ॥ ह० ॥ ६ ॥ भगवत वचन प्रका-  
श जगतमें, मेढे अंधारी; महाव्रत शुद्ध पाले सत जुगसा,  
कैरे तपस्या भारी ॥ ह० ॥ ७ ॥ कैरे न हिसा वदे न मृपा,  
दत्त ले ब्रह्मचारी; अकिंचन रंच नहीं है भमता, समता  
दिल धारी ॥ ह० ॥ ८ ॥ सत पुरुषारे नितही सत जुग,  
करे कलि युग कांडे; मुनि राम कहै आ वखत भली है,  
भजन करो भाई ॥ ह० ॥ ९ ॥ इति ॥ सत्ययुगनी लावणी ॥

३ मैं गुरुजी चेला तेरा; पड़ी जाज दरियाव बीचमें,  
पार लंघा वेड़ा मेरा ॥ ए देशी ॥ ✕

तुम भाग चलो तौ कहोनी प्यारे, आगे नहीं मिलती  
सेरी ॥ टेर ॥ एक रैन अंधेरी बिजुरी चमके जी, कैदी  
कैदमे रहते थे, सफीलगिरी पोरायत सूते, बंदीबांन  
एक कहते थे, सबही निकसो ऐ छै मारग, ऐ अवसर  
नहीं आनेका, बहोत अच्छा पिण जरा लेटके, है इरादा  
जानेका, जे निकस्या ते घरकूं पोचें, सूता ते जंजीर ज-  
डा, कब हुवे मारग कब वे निकसे, इन रीते जगवासी  
पडा, मत जानो जग साचा, हे काचेसे काचा, वीरत-  
णी है वाचा, आते नहीं अवसर फेरी ॥ \*तुम भा० ॥ १ ॥

“सर्वेयो-यधी ज्यू ससाहि नर कैदी खानो जानो घर, मोहसो कपाट दृढ बेदी नारी  
सागे है । चौकीदार परिवार जावा नहि देवे पार, मिय्या रूप अधनार निद्रालस लागे  
है ॥ गच्छो गच्छो कहै हानी क्षत्तकार रूप बानी, मोहनी दिवागिति मोक्षपुगी मागे है ।  
कहै मुनि रामचंद सुन हो भविरु वृद्ध, मनुष्य जनम जैसी सेरी नहा आगे है ॥ १ ॥

जगजाल जगत का है अति फंदाजी, मोह मायामें न  
 नारी; मात पिता अरु बैन भार्या, अंत समय नहीं है थारी  
 रूप गर्व अरु धन गर्वता, ऐ दोनूं है दुखकारी; तइफ तइ  
 फनें माया जोड़ी, जीवधकी लागे प्यारी; या माया तेरी  
 संग न चले, तातें सुकृत करलेनी; जे कोई लेग्या इस  
 लारे, उसका नाम कह देनी; देते सतगुरु हेला, तू मान  
 मान रे गैला; दिलसैं विचारे पैला, अरे बिगड गई क्या  
 मत तेरी ॥ भा० ॥ २ ॥ रूपवंत पर त्रिया देखी जी, बुरी  
 निजर क्यूं जोता है; सिर वदनामी दोजग होगी, क्यूं  
 सुकृतकुं खोता है; हीरकनीसा नरभव पाया, इससैं नहीं  
 कोई और बडा; नाहक इसकुं क्यूं तूं हारे, मैं कैताई  
 खड़ा खड़ा; मुनिराम कहै दिल पाक रखोनी, अच्छा  
 अबसर आय अडा; करणा है सो करलो प्यारे, ऐ घोड़ा  
 मैदान पड़ा; सुणते हो तुम बंदा, क्यूं होते हो अंधा, पड़ा  
 रहेगा धंधा, तेरे पूठ पीछे लागा बैरी, तुम भाग चलो  
 तौ कहोनी प्यारे, आगे नहीं मिलती सेरी ॥ ३ ॥ इति॥

### ४ देशी पूर्ववत् ॥

मैं अच्छा चाहता तेरा, पाखंड धर्म भरमकों छोड़ो,  
 आतम धर्म रखो नैड़ा ॥ ज्ञान प्रकाशक आगसो आतम  
 जी, ज्ञायक सब वस्तुकेरो; पाचक पाचक आतम करिये,  
 दर्शन पाचक है गैरो; सर्व पदारथ दर्शन करनें, पचते हैं  
 सूधी सरधो; विन श्रद्धा कुछ पचते नांही, तातें श्रद्धा  
 दृढ कर दो; दाहक आतम छै अग्रीसो, चारित रूप आ-  
 तम बोले; विन चारित कछु कर्म न जलता, शास्त्र बीच  
 सारा खोले; सुधी सुणीये सारा, देख स्वरूप तुमारा,  
 रहो एङ्गलसे न्यारा, ज्युं पार लंघे तेरा बेड़ा, पाखंड ध

राम भरमकूं छोड़ो, आतम धरम रक्खो नैड़ा ॥ १ ॥ इन  
आतमके दोय छै नारी जी, एक सुमति कुमती धीजी;  
कुमतिको भरमायो आतम, नाच रह्यौ करतो जी जी;  
सुमती जाया पुत्र च्यार वर, प्रबोध १ विवेक २ शील ३  
संतोस ४; कुमती जाया पंच कहाया, मोह १, काम २,  
तीजो रोस ३; मान ४, लोभ ५ है पुत्राभास हि, आत-  
मनं घाले फोड़ा; मोह भणी निज राज सूपियो, काम-  
तणा दौड़े घोड़ा; आतम दुख अति पायो, सुमति पास  
सिधायो; प्रबोध नृप ठहरायो, दले राम विवेकसूं बिखेड़ा;  
पाखंड धरम भरमको छोड़ो, आतम धरम रक्खो नैड़ा  
॥ २ ॥ इति ॥

## दोहा ॥

चेतनजी अब चेतिये, बैत वण्यो भल आय ।

पुढ़ल हेत न रक्खिये, निज घर चाल सभाय ॥ १ ॥

५ लाज मोरी रखले भवांनी ॥ ए देशी ॥

बैरी बीच धास भया तेरा, लग्या फिर कर्मनका घेरा;  
देखो तुम स्वरूप निज घरका, गिणो मत खळ गुळ सब  
सरखा; दुग्ध दुग्ध सब सारिसा, मुग्ध जनोंकी चात, खो-  
जी पावे धर्मने, अण खोजी खोटा खात; धर्मकी खोजना  
करना; २ ॥ झूल पग पाछा नही धरना; २ ॥ मुक्ति  
गढ़ कायमही करना २ ॥ मु० झू० ॥ १ ॥ ज्ञानकूं आगू  
संग रक्खो, भला बुरा रस्तेकू परखो; रतन औ ककरकूं  
ओळखो, ढोर जहर अमृतकू चक्खो; चाखो समता  
सूंखड़ी, नांखो ममता मार; राखो निर्मल भावना, भा-  
खो वचन विचार; मुक्तिके सांभा पग भरना २ ॥ मु०

भू० ॥ २ ॥ कठिन अति मारग मुनिवरका, दूजा नहीं जग-  
में इन सरखा; आठ मास बारे, घड़ी वरसा, करे छिन  
जल थल नदी खड़का, मौती सम व्रत साधुका, करजो  
कोड़ जतन; फटे तूटे नहीं अरथके, इम भाखे भगवन्;  
नहीं मुनि मारग विन तरणा २ ॥ मु० भू० ॥ ३ ॥ मुनीका  
महाव्रत शुद्ध पाळो, दोष सब दूरे ही टाळो; मुक्तके सांभो  
नित भाळो, प्रभूकी आज्ञाये चालो; चालो प्रभूकी कारमें,  
टाळो विषय विकार; मालो शिवपुर मागमें, झालो गुरु  
चरणार; लेवो गुरु देवनका सरना २ ॥ मु० भू० ॥ ४ ॥ क्षमाकी  
बांधो समशेरा, संयमकी सेना लो लेरा; खजाना ज्ञानका  
गहरा, लूटलो दुश्मनका डेरा; तेरा सघाती साथ लो,  
दुश्मन करो निरोध; ऊखारो जड़ मूलसूं, राग द्वेष दोष  
योध; क्रोधके ताला ही जड़णा २ ॥ मु० भू० ॥ ५ ॥ जिना-  
गम जय कुंजर सझ लो, सातसे नय घोड़े चढ लो; शी-  
लके रथ शस्त्रे भर लो, संवेगकी पलटण संग धर लो;  
कर केसरिया ऊर दो, कर्म कटकके मांय; चढ्यां घोड़ां  
लो शिवपुरी, साचका तीर चलाय; करो गज सुख  
माल जिसी जरणा २ ॥ मु० भू० ॥ ६ ॥ तपकी तोपांकूं भर  
दो, ध्यानकी बत्ती सिर धर दो; हिमतका हल्लाही कर दो,  
कर्मकी सेनाकूं मरदो; मारो मोह महिरानकों, जारो राग  
रु रीस, मुनि राम उजारो आतमा, तूं ईश्वर जगदीस,  
नही ज्यां जन्म जरा मरना २ ॥ मु० भू० ॥ ७ ॥ इति ॥

## दोहा ॥

प्रथम न वैसे पंचमे, धसे तौ कर दे छांन ।

पिण कालियुगनी पचायती, है अनरथकी छांन ॥ १ ॥

साच बराबर तप नही, साच धर्मको बीज ।  
रीझे सुरनर साचसूं, साच जगतमें चीज ॥ २ ॥

## ६ देशी पूर्ववत् ॥

साचसैं सेव करे देवा, साचसैं जीते नित्य मेवा;  
साचसे धीज उत्तर जेवा, साचसैं पारही उतरेवा;  
कार उतारे साचही, साच बढो ससार; कार हुवे सब  
साचसूं, साच भोळाऊ लार; साचसू गवड़ा खड़ा  
दूजो २, साचका पगल्या नित पूजो; साचसो धरम  
नहीं दूजो ॥ सा० ॥ १ ॥ साचसूं पैठ जमे भारी,  
साचसू धीजे नर नारी; साचकी बात लगे प्यारी, साचसूं  
रीजे व्यौपारी; सपत पावे साचसूं, जावे आपदा दूर;  
जेण नर साच न रक्खियो, तिण कीयो जमारो धूर;  
सूठसो दुश्मन नहीं दूजो २ ॥ सा० ॥ २ ॥ महीपति साचकू  
गरखे, तिहां सब दैवज्ञकू करखे; कहो मुझ मुष्टिमें हरखे,  
जीतसी बोलो बेधरके; दैवज्ञ शाख हेरनें, कहे श्वेत गौ-  
लमटोर; कहो शकुनी तुम शकुनसू, मै पूछू इन ठौर;  
शकुनी शकुनांकू बूजो २ ॥ सा० ॥ ३ ॥ शकुनि जोवे छै  
जेहवे, कन्या कच नीचोवे तेहवे; मौती अणबीध मुष्टीमें,  
पंच तव आये दृष्टीमें; पंच विचारे आपसूं, करणो किसो  
उपाय; बिना इलमको बोलवो, विन बोल्यां दुरमत जाय;  
आवे अब उर आडो दूजो २ ॥ सा० ॥ ४ ॥ पंच कहे करणो  
अब काई, बोल्यां विन सरसे कब ताई; पचायति झूठी  
नहीं भाखी, आपां नही रखाखी राखी; परमेश्वर साखी  
करी, डर पर भवको राख; खोटी न करी पचायती, झूठ  
न कह्यो हकनाक; आपां अब बोलत क्यू धूजो २ ॥ सा० ५ ॥

पंचांमें परमेश्वर कैवे, पंचांको ओठो सब लेवे; पंचांको  
 करकादी देवे, पंचांके भरोसे रेवे; पंच परमेश्वर सारीसा,  
 प्रगट कहै संसार; लाल कहो सब मिल करी, भली करे  
 करतार; आपां पख परमेश्वर हूजो २ ॥ सा० ॥ ६ ॥ पंच कहे  
 लालही खोलो, नृप कहे आलोची बोलो; पंच कहे सु-  
 णिये महाराजा, साचसैं सुधरे सब काजा; काज  
 सुधारे साजही, लाज रखे जिनराज; मौती फिदहुँ  
 लालही, देखे दुनियां राज; साच है मिथ्रीको कुजो ॥  
 ॥ २ ॥ सा० ॥ ७ ॥ भूपति साचकूं परख्यौ, पंचां पर तन  
 मन कर हरख्यौ; पंचांको वचन नहीं सरख्यो, कछां सैं  
 लालही निरख्यौ; निरखो साच प्रभावकों, देवो झूठकों  
 त्याग; मुनि राम कहै धन साच है, साच बोले बड भाग;  
 झूठ तज तिन्यौ चाह तू जो २ ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥

७ मत करना परतीत रांडकी मारा सेर देगई टारा ॥

॥ ए देशी ॥

चले न किसका जोर मिजाजी, होनहार होवे, मिजा  
 जी, होनहार होवे; जोसी सिद्ध भीये अर अबधू, खड़ा  
 खड़ा जोवे ॥ टेरा ॥ जो जोसी जोतसकूं वरते, बात सधि  
 दीसे उनकूं ॥ भला बा० ॥ राजा प्रजा पाये लग्गे, ईश्व-  
 रही जाने जिनकूं; तेजी मंदी होवेरे मालम, कयूं जाचे  
 औरनकूं; ॥ भला कयूं० ॥ अंक फर्क जोसीकूं दीसे, छिनमें  
 मार लेवे धनकूं; सब कोई जोमी फैल करत है, होतबन  
 को कुन धोवे ॥ भला हो० ॥ च० ॥ १॥ राख लगाये जटा  
 धधाये, क्या सिधि पाते है यादू; ॥ भला क्या० ॥ गंगा  
 पर हरद्वार दिकांना, रींगलाज रहै आत्र; जडी बुंटीका

रक्खे कुतका, तढाका भारे, मीजाजी ॥ त० ॥ भोळेकों  
 भरमावे विरथा, सबही धूतारे, साच किसीके पास नहीं  
 है, जन्म वृथा खोवे ॥ भला ज०॥च०॥२॥ मुसलमीन पर-  
 बीन हों देखा, जादूगर रमली; ॥ भला जा० ॥ डोरे गंडे  
 झाड़े फूँके, बात मिलाते हैं अगली; देख देखने सबही  
 देखा, पुरवासी जंगली; ॥ भला पु० ॥ इल्म किसीके पा-  
 स न सच्चा, ठगवाजी सगली; सिमिया हिमिया रिमि-  
 या बोले, किमियाकूं रोवे ॥ भला कि०॥च०॥३॥ जत्र मत्र  
 और टांणे टूँणे, उच्चादन सारे, भला उ० ॥ जो किसीका  
 किसपर चले, चाहे सो भारे; कर्म प्रमाणे सुख दुख भुगते  
 समझो दिल प्यारे; ॥ भला स० ॥ नास्ति नहीं को विरला  
 होगा, होते नहीं जहारे; सच्चा इल्मी उसकूं समझो, सु-  
 कृत फल बोवे ॥ भला सु० ॥ च० ॥ ४ ॥ साध मंत  
 अर अबधू नग्गे, मानी अर सुल्लां; ॥ भला मौ० ॥ साच  
 बात तौ मोइयन पाई, मारत है गल्लां; अदर छोडी बा-  
 हिर दूढे, किम पाते रस्ता; ॥ भला कि० ॥ क़ादिर सिद्धि  
 सब मांहि विराजे, क्यू इत उत बस्ता; मुनि राम कहै वो  
 इल्मी सच्चा, निज मठने धोवे ॥ भला नि०॥च०॥५॥ इति॥

७ तेरो सूतो सिंघ निशंक जगादे सिंघणी

॥ ए देशी ॥

बार बार मैं क्या तुज बोळं, मान कया मेरा; चतुर  
 नर मान कया मेरा; सब स्वारथके मिले मुसाफिर, नहीं  
 कोई तेरा ॥ देर ॥ एक दिन ऐसे जादव होते, सुर पाये  
 परता; ॥ भला सु० ॥ हेम पुरी सुर छिनमें कीधी, नहीं  
 किसे डरता; तीन खडंके भोक्का होके, पुंन्य पिछा फिर-



ता; ॥ भला पु० ॥ एक दिवस ओ आंखां देखे, जादव  
 सब जरता; जरा न लागो जोर कृष्णको, विन पानी  
 मरता; ॥ भला वि० ॥ धन दोलत कोई संग न चली,  
 खमा खमा करता; छपन कोड़ जादवको मालिक,  
 एक न गयो लेरां ॥ भला ए० ॥ वा० ॥ १ ॥  
 एक दिन रावण राज करत हो, बलवत जगमांही; भ  
 ला व० ॥ लाख जिसीके बेटे कहिये, सब्बा लग्न भाई;  
 घरभी फूटे नौकर बदले, बदले सीपाई; भला व० ॥ पर  
 नारीसैं प्रीति करीनें, फते किसे पाई; छिनमे लिछमण  
 मार लियो है, नर्क बीच डेरा; भला न० ॥ वा० ॥ २ ॥  
 किसके मात पिता सुत बंधू, किसके परिवारा; भला  
 कि० ॥ किसके नारी किसके बच्चे, झूठा संसारा; विन  
 सुतलब सब खारा लग्गे, सुतलबसे प्यारा; भला मु० ॥  
 पुन्य पाप दो संग चलेगा, और नही लारा; रामचंद्र कहे  
 सद्गुरु सच्चे, करते उजवेरा; भला क० ॥ वा० ॥ ३ ॥ इति ॥

## ९ अगड़धं अगड़धं वाजे दोकड़ा सवाय डंका पारसका ॥ ए देशी ॥

माल खरीदो मिले जो नफ्फा, घरका करलो सभारा;  
 मूल पूजीकों रख लो सैठी, तूं छै चलता विनजारा ॥ डेर ॥  
 जो जो वस्तु नफा न देगा, पोठ खालि कर दो सारा;  
 झूलचूक मत करो खरीदी, विवेक मित्र रखियो लारा  
 ॥ मा० ॥ १ ॥ जो जो वस्तु नफा तोय देगा, उनकूं संग्र-  
 ह कर प्यारा; दूर दिशावर माल चढेगा, रस्तेमें बहु  
 बट पारा ॥ मा० ॥ २ ॥ एकाएक तूं जासी दिशावर,  
 संगन आसी परिवारा; विदा हतेकूं विदा न देसी, खो-

स लेसी कपड़ा धारा ॥ मा० ॥ ३ ॥ थारो एक न दीसे  
 अंगत, तूं पिण मयसें है न्यारा; मुनि राम कहै तूं रट  
 जिनवरकूं, ज्युं येग हुवे घेडा पारा ॥ मा० ॥ ४ ॥ इति ॥  
 १० तुम चलो सखी कुछ जेज न करिये ॥ ए देशी ॥

गंधी देहका तूं रहवासी, क्या इतना तू सोच करे;  
 किनसें उत्पत्ति या तूं जाने, क्यूं आंके बांके पांव घरे ॥  
 ॥देर॥ माता रुधिर पिता शुक्रसें, जिससें तेरी देह बनी;  
 अधोमुख पांव नीचे तूं लटफ्या, मल निकस्या तेरी नाक  
 अनी ॥ गं० ॥ १ ॥ पुगीप कृमी पर तूं नित झूल्यो,  
 झूल्यो तूं याहिर आके; फूल्यो धन अरु तन जोवनसे,  
 पर नारी पिण तूं ताके ॥ ग० ॥ २ ॥ श्रवण पदारथ जब  
 छै तेरे, श्रवण करे भगवत बांणी; नहींतर निकम्मे खम्मे  
 कहिये, बात नही कछु एह छांणी ॥ गं० ॥ ३ ॥ ब्रस था-  
 वरकी दया जो पाळे, भगवत मुनिवरकूं देखे; शाम्भवा  
 चै धर्मसू राचे, जद आंख्यां जाणूं लेखे ॥ ग० ॥ ४ ॥  
 नर भव सेती सिद्ध पद पावे, नाकी जिण प्रांणी राखी;  
 नर भव खोयो जन्म विगोयो, गई सदा जिणकी नाकी  
 ॥ ग० ॥ ५ ॥ रसनाकर रदिया जिनवरकूं, जद ऐ जीभ  
 पवित्र रहै; काया सफल शुद्ध धर्म कीयां स, नहींतर अशु-  
 चितणो घर है ॥ ग० ॥ ६ ॥ मुनि राम कहै खजबांणा-  
 मारे, क्यूं न करो नर देह सफली; गुणचालीसे माघ बद  
 बारस, धरम करै जोई तित्थि भली ॥ गं० ॥ ७ ॥ इति ॥

११ एक घड़ीकी करते मोहोवत ऊमर निभा  
 देते सारी ॥ ए देशी ॥

सुण हे गोरीअग मरोरी, तूं काळामे ऐव घरे; काळा

हिरणा जंगल चरणा, वे भी छल बल बहोत करे; काला  
 नाग बंधी पर खेले, उसके खायां तुरत मरे; काली घा  
 अंबर पर गाजे, वरस्यां दुनियां पेट भरे; काला हसी  
 राजाके सोभे, वे फौजां सिणगार धरे; काली ढाल गै  
 डकी होती, उनसें जोधा खूब लरे; काली तो कस्तूरी  
 कहिये, औगुन ऊपर गुन्न करे; कालो सुरमो नयनां सोभे,  
 उसकी बिदली सुरंग धरे; काला तवा पर रोटी पके, उससे  
 तेरा पेट भरे; काली कीकी आंखमें सोभे, उनसे सब जग  
 सूझ परे; कालाही केश बहुतसा सोभे, उनसें तरुणी  
 चित्त हरे; कालाही पारस काली स्याही, जिण लिखियां  
 सब साख भरे; एक काली तलवारही होती, उससे  
 दुश्मन बहोत डरे; एक काली कोकिल भी होती, दहका  
 सुन कर दिहल ठरे; एक काली मंमाई होती, उन खायां  
 तो प्राण धरे; सुण गोरी नालतकी मारी, क्यू कालामें  
 ऐब धरे ॥ १ ॥ इति ॥

१२ सासू कहे रिसाई जी क ॥ ए देशी ॥

चौमासो अबी लागे जी क, सरावग सुण लीजो;  
 कोई धर्म करै बड भागे जी क॥स०॥ बहुत जीव उत्पत्ती  
 जी क ॥ स० ॥ नहीं विचरै जैनके जत्ती जीक ॥स०॥१॥  
 श्रीकृष्ण सभा नहीं करता जी क॥स०॥आवश्यक सूत्रमें  
 धरता जी क॥स०॥त्रिखंडतणा छा भोक्ता जी क ॥स०॥  
 अरिहंत पद लग पोतां जी क ॥स०॥२॥ अन्यमति आवण  
 हरी वरजे जी क ॥स०॥ तो आवण भादू तुम किमसरजे  
 जी क ॥स०॥ दो मासे शील ज पाळोजी क ॥स०॥ करो  
 रयणी भोजन टाळो जी क ॥स०॥ ३ ॥ नित प्रति सुणो  
 बखाणे जी क ॥स०॥ हुवे अवनधी नाण विनाणे जी क

स० ॥ भ्रावण भादू धन उपजै जी क ॥ स० ॥ इण रीत  
 म पिण निपजै जी क ॥ स० ॥ ४ ॥ सुणो थोड़ामें उच्च-  
 तयो जी क ॥ स० ॥ शुद्ध कृत्य ये करियो जी क ॥ स० ॥  
 तवठ्य करो एक तेलो जी क ॥ स० ॥ चौपढ़ पासा मत  
 लो जी क ॥ स० ॥ ५ ॥ छांणे इंधन धान शाक पाते  
 तिक ॥ धायां सु० ॥ करो जीव जतन दिन राते जी क  
 बा० ॥ पग पग उपयोग रक्खो जी क ॥ बा० ॥ धारे  
 हुकृत फल हुवे पक्षो जी क ॥ स० ॥ ६ ॥ टाळो जीवांनी  
 ताते जीक ॥ बा० ॥ गरणा कछा छै साते जी क ॥ बा० ॥  
 मचंद्र इम भाखे जी क ॥ स० ॥ पुन्यवंत जयणा राखे  
 ती क ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥ चौमासे कर्तव्य कर्म ॥

१३ मैं जाती हूं गिरनार कहूं नहीं छांना ॥ ए देशी ॥

तुम खूब करो धर्म ध्यान, पर्यूपण आये; धरो मती पर-  
 गद, प्रभू कुरमाये; दान शील तप भाव, क्षमा तुम  
 करियो; कठिन वचन मुख बोल, काहू मत लरियो; हुयो  
 केसीसं वैर, देर विन खामो, रखो न दुश्मन भाव, गु-  
 ति शिर नामो; रखो न मन अहकार, धर्म जो पायो;  
 तो रखो मन अहकार, तो धर्म गमायो; मुनिवरकेरी सेव,  
 करो मनभाये ॥ तुम खू० ॥ १ ॥ केई अत समै कहे तात,  
 मात पुत्रांन; अमुकसे जावज्जीव, न बोलो कोई दांन; र-  
 बजो गाढा वैर, कहूं तूं मानें; मरणे परणे न रक्खो रीत,  
 मपूत गिणूं धानें; जो रखोला कछ व्यवहार, तो हंलो दां-  
 नगिरी धारो; लीजो इनसे वैर, वचन सुनो म्हारो; दी-  
 जो छोराने सीख, लीक ऐ रक्खे; कोई उत्तम पुन्यवंत  
 जीव, धर्मकू लक्खे; करे संस पचखांण, साराने खमाये  
 ॥ तु० ॥ २ ॥ करो कुशीलका त्याग, रात्रि मत खावो;

रखो हरीका नेम, और मत न्हावो; रात्री भोजन दोष,  
 ज्ञानी कह्यो मोटो; द्रव्ये भावे दोष, इसीमें तोटो;  
 जो होय मलीन, फेर उजवालो; पग पग रखो उपयोग,  
 हिंसाकों टालो; एक देऊं तुमकूं सीख, हीयमें रखो,  
 कोई झूल चूक पर निद, करी मत बक्को; ना देवो हूका  
 रो झूल, न सुनियो काने; एह दीवी तुमकूं सीख बाँडे  
 नही-छानें; तो व्हेगा कारज सिद्ध, सदा मन चाये ॥ तु  
 ॥ ३ ॥ तुम करो सामायिक शुद्ध, और पढ़िकमणो; स  
 म्यक् दर्शन ज्ञान, चारित्रमें रमणो; जिन धर्मकूं जानो  
 सार, आत्मकूं दमणो; गुणोनी श्री नमुक्कार, छूटे तेरो  
 भमणो; सुनियो नित्य व्याख्यान, अज्ञानकूं धमणो; क  
 ठिन वचन सुनि कान, सुधे दिल खमणो; सुनि राम  
 कहे जिनराज, तणो लो सरणो; और कारजकूं छोड  
 दौड़ धर्म करणो; तातें तेरा जन्म, मरण मिट जाये;  
 तुम खूब करो धर्म ध्यान, पर्यूपण आये; २ ॥ धरो मती  
 परमाद, प्रभू फुर माये ॥ ४ ॥ इति ॥

### १४ वारे मास्यारी चाल ॥

मैं बोलूं छं हितकी चातां, सुलटी समझो शुद्धमती;  
 ऊलटी सरधे ऊंधमती नर, जिनकी किम हुवे ऊंच गती  
 ॥ टेर ॥ सम्यक् दृष्टी होवे प्रांती, जानी आरंभनें टाले;  
 अनसरतें वो करे मन मठे, भगवत वचनांसूं चाले; यदि  
 वा शुद्धलोक विरुद्ध, कदे नहीं रस्ते हाले; लोक विरुद्ध जो  
 कारज करतां, जिणने पिण हितसू पाले ॥ मे० ॥ १ ॥  
 सुनि पण लोक विरुद्धकूं वरजे, गरजे जिन मारगमांही;  
 सुवावड न्यात गोठ हलवाई, नही बहिरे रस्ते मांही; नारी

जात अरु अज्जा परमुख, भूँडो लगे परचो जाही; आल प्रमुख तो आवे उसकूँ, जिसमें शंका छै नांही ॥ मे० ॥ २ ॥ घर घर मांहि जावे वो चाली, मोकाण करावे मुनि होके; टेरो मिले जां जावे पाधरो, चौडे विगाड़े दोय लोके; भेष लजावे लोक रिझावे, गीदा थिलावे वो चौडे; गृहस्थी जिसकूँ जाणै ठीला, कुंण करे समझू सिरफोडं ॥ मे० ॥ ३ ॥ श्रद्धा शुद्ध नहीं फेर होवे, समझू साहमू कुंण जोवे; मत पखिया जो मांनैं जिसकूँ, मनमांहे पिण वो रोवे; ले हूयेगा जिसकूँ पी दे, कदे नही ऊचो होवे; लोकानैं पर मोद लगावे, पोते अंधो क्यू होवे ॥ मे० ॥ ४ ॥ कर्मतणी तो गत छै न्यारी, आप औगुण फेर नहीं जोवे; जिसको पढियो जरा न लेखे, नाहक जन्म वृथा खोवे; मुनि रामचंद्र कहे दश पूर्व महा, अभव्य पिण पढवोज करे; क्या होवे पढियां विन श्रद्धा, सम्यक् ज्ञान क्रियासैं तरे ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ख्याल ॥

### देशी ख्यालनी ॥

संसारि लोको सात व्यसन छोडो भावसू ॥ सं० ॥ देर ॥ जूवा खेलण मांस मद्य और, वेश्या व्यसन सिकार; चोरी पर रमणीको रमवो, सातूं व्यसन निवार हो ॥ सं० ॥ १ ॥ जूवा खेलिया पांडवास रे, मंस भखियो बकराय; मदिरा पीवी जादवास रे, जड्यां मूलसैं जाय हो ॥ सं० ॥ २ ॥ चारुदत्त वेश्याने सेबी, ब्रह्मदत्त आ-

खेद; सत्यघोष पर धनके कारन, पहुंतो नरकां धेद हो ॥  
 ॥ सं० ॥ ३ ॥ रावण राजा बडो अभिमांनी, तीन स  
 डको सांमी, रामचंद्रकी सीता हरतां, भयो न  
 गामी हो ॥ सं० ॥ ४ ॥ सात व्यसन ए छोड दोसरे, है  
 जीवन दुखकार; रामचंद्रकी आही सीख है, सात व्य  
 सन निवार हो ॥ सं० ॥ ५ ॥ इति ॥

## २ देशी पूर्ववत् ॥

संसारी लोको जूवा व्यसन तुमे छोड दो ॥ सं० ॥ १ ॥  
 सर्व व्यसनका राजा जूवा, भूल चूक मत खेलो; सर्व  
 व्यसनकों जूवा सिखावे, ओ सात व्यसनमें पेलो हो ॥  
 सं० ॥ १ ॥ सप्त व्यसनको राजा ओ तो, दुर्गतिमें पहुं  
 चावे; आर्त ध्यानको मूल कहावे, चौरी आदि सिखावे  
 हो ॥ सं० ॥ २ ॥ एक वस्तिको राजा जूवे, रमवा चाले  
 पड़ियो; कछो किसीको मानें नांही, जोगी आयो दूरसे  
 खड़ियो हो ॥ सं० ॥ ३ ॥ राजा बाबूका जूवा खेलन, युक्ती  
 साथ छोटाऊं; तो गुरुका पंजा शिर पर मेरे, नृपकू रस्ते  
 लाऊ हो ॥ सं० ॥ ४ ॥ अद्भुत जोगी जंगल नृप दीठो,  
 पूछे इम महिपाल; क्या कथा कक्षे नांही राजा, सफरी  
 बंधकूं जाल हो ॥ सं० ॥ ५ ॥ नृप कहे क्या तुम मछयां खाते,  
 हां खाते मदिरा सैत; क्या मटभी पीते बायो बोले, पीवां  
 वेइया समेत हो ॥ सं० ॥ ६ ॥ क्या वेइयाभी सेते बोले  
 जोगी, अरि शिर पग दे जाते; कुंन तुज बैरी वो मुज बैरी  
 भीत भेदहां राते हो ॥ सं० ॥ ७ ॥ क्या चौरीभी करते  
 दीसो बाबू. हां इत ऐत करां चौरी; सणनें दिलमें राजा

चमक्यौ, ए गत होसी मोरी हो ॥ सं० ॥८॥ राजा बोले  
 सुण बाबाजी, हू जूवारी मैं मोटो; किसीतणो मैं कह्यौ  
 न मांन्यो, जाण्यो व्यसन ए खोटो हो ॥ सं० ॥९॥ सुणिये  
 बाबू कहे इस जोगी, जो तूं जूवा रमसी; चारी नारीपर  
 मदिरा मांस, वेइया शिकार तूं भमसी हो ॥ सं० ॥१०॥  
 राजा बोले सुणो बाबाजी, झूल चूक नही रमसूं; सुनि  
 राम कहै संग उत्तम करिये, सीख देवो उत्तमसूं हो ॥  
 ॥ सं० ॥ ११ ॥ इति ॥

### ३ देशी पूर्ववत् ॥

संसारी लोको गंधी देहीका किसान गारबा ॥ सं०  
 ढेर ॥ गंधी देहीका किसान गारबा, बुध जन करो विचार;  
 सत्पुरुषांकी करलो सगत, ज्युं हुवे बेड़ा पार हो ॥ सं०  
 ॥ १ ॥ रंगी चंगी काया दीसे, छिनमे छेह दिखावे; धम  
 धम करतो चड्यो चौबारे, पाछो पगां नहीं आवे हो  
 ॥ सं० ॥ २ ॥ अश्व कुदावे मूछ मुरडावे, मनमे घमंड  
 घणैरो; पटके पड़ियो दम नीसरियो, कीयो ममाणे डैरो  
 हो ॥ सं० ॥ ३ ॥ चोवा चदन चरचे काया, रजही बेग  
 उडाडे; बाण ही बूवो पर वश हूवो, खाटमे जावे झाडे  
 हो ॥ सं० ॥ ४ ॥ माता रुधिर पिता वीर्य मिल, महा  
 अशुचिकी ठार; जिणमाहे तो चेतन उपजे, देखो कर्म-  
 का जार हो ॥ सं० ॥ ५ ॥ कल्कल एक रात्रि लग रहै,  
 पंच रात्री बुद्बुद रूप; पक्ष करीने डंडो होवे, डम धोले  
 जिन झूप हो ॥ सं० ॥ ६ ॥ शिरोकुर एक मास करी  
 होवे, मास दोय उर घाट; तीन माससे उदर बनत है,  
 चतु मासे कर फाट हो ॥ सं० ॥ ७ ॥ पंच मास करीने  
 अगुली प्रगटे, रोम दृष्टि पट मास; सर्वावयव नै मास



सातमें, जिनवर कीयो प्रकाश हो ॥ सं० ॥ ८ ॥ वर  
ऊर्ध्व अरु मस्तक नीचो, चर्म पक्षी परे टिरियो; नव दं-  
क्ष मासे वायू प्रकोपे, गर्भ धकी नीसरियो हो ॥ सं०  
॥ ९ ॥ नव द्वार करीनें अशुचि वहै नित, छै मल मूत्रकी  
खांन; मुनिराम कहै इण कायासेती, सदा करो धर्म  
ध्यान हो ॥ सं० ॥ १० ॥ इति ॥

### ४ देशी ख्यालनी ॥

कर्मतणी गत वांकड़ी, सुणजो भवि लोको ॥ क०  
॥ टेर ॥ बडा पुरुष वे राम रु लिछमण, ज्यां सेव्यो बन-  
वास; सती सीताकूं रावण ले गयो, राम भयो उदास  
हो ॥ सु० ॥ १ ॥ कर्म धको दीयो रावणकूं, सीतानें धा-  
त्यो हाथ; जीव संपदा सबही खोई, तीन खंडको नाथ  
हो ॥ सु० ॥ २ ॥ वन भुगत्यो है पांचे पांडव, जिनकी  
सुणजो बात, जूवामांही हारी संपदा, दुर्योधनके साथ  
हो ॥ सु० ॥ ३ ॥ धातकी खंडको राय पदमोत्तर, बड़ी  
करी उत्पात; समुद्र उलंघ द्रौपदी ले गयो, हुई असंभव  
बात हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ सती शिरोमण बड़ी अंजना, उ-  
त्तम वांकी जात; विखो सु भुगत्यो बीस वरस दो, संग  
दासीके साथ हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ देखोजी कर्मनकी या-  
थिति, बडा बडामें होय; मुनि राम कहै समझायनें स जी,  
कर्म बांधो मति कोय हो ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

५ हूं डरूं अकेली बादलमें, चमके वैरण बीजली

॥ ए देशी ॥

मूरख लग्नजा रे, कनक ने कामण जगमें पास है;  
निज मन समझा रे, इण भवमें विरचै, नहि थिर

वास है ॥ टेर ॥ नाणो नेह तोडो कखो स रे, जाणो  
 अनरथ मूल; हेत ठिकाणो ना गिणे स रे, सगण  
 जावे भूल; धन्य मुनिवर संसारमें स रे, धनकू जाणे  
 धूल रे ॥ मू० ॥ १ ॥ श्रेणिकरायनो डीकरो स रे,  
 कुणिक नामें राय; बाप मणी दीयो पीजरे स रे,  
 जोवो आगम मांय; इण परिग्रह कारणे स रे, अनरथ  
 होता जाय रे ॥ मू० ॥ २ ॥ हार हाथी था वहिल  
 पै सरे, कुणिककरी अभिलाख; दोय दिवसमें नर-  
 मुवा स रे, एक कोड असिलाख, महाभारत आगे हुवा  
 स रे, छै सूत्रनी साख रे ॥ मू० ॥ ३ ॥ जादव कुलमे  
 आयने स रे, कमला कीधो वास; पुरी द्वारका सुर करी  
 स रे, सय सोवन घर वास; इक दिन ऐसो आवियो स रे,  
 हुबो जादव केरो नास रे; ॥ मू० ॥ ४ ॥ राय प्रदेशी रै  
 हौंती स रे, सूरी कंता नार; इष्ट कांत वाली घणूं स रे,  
 सूत्रमें अधिकार; निज स्वारथ विन पापणी स रे, मा-  
 न्यो निज भरतार रे ॥ मू० ॥ ५ ॥ जुडल आवकने हूं  
 ती स रे, दयिता तीसनें दोय; अग्रीमांही प्रजालियो स  
 रे, दया न आंणी कोय; माठी गतनी पाहुणी स रे, गई  
 जमारो खोय रे ॥ मू० ॥ ६ ॥ ब्रह्मदत्त चक्रीतणी स रे,  
 हूंती चूलणी मात; विभचारण चूके गई स रे, दीर्घराय-  
 के साथ; घात विचारी पुत्रनी स रे, छै ए बहुली चात  
 रे ॥ मू० ॥ ७ ॥ सहस विद्या त्रिखड धणी स रे, रावण  
 मोटो राय; सीताने हरलां थका स रे, बैठो लक गमाय; घर  
 फट्यो वैरी हण्यो स रे, धका नरकमें खाय रे ॥ मू० ॥ ८ ॥  
 पदमोत्तर हुरमत गई स रे, गये कीचकना प्रांण; पांडव  
 त्रिया द्रौपदी स रे, मूल न राखी काण; माठी गत मरनें

गयो स रे, मारे छै जमरांण रे ॥ मू० ॥ ९ ॥ जिण कवि  
 नें जिन पालजी स रे, बंधव हूँता दोय; रेणा देवी रे वस  
 पड्या स रे, जक्ष सहाई होय; जिण रूप सांमो जो वि  
 यो स रे, लीयो सूळीमें पोय रे ॥ मू० ॥ १० ॥ रूपवंत  
 त्रिया देखनें स रे, जोवे विषयविकार; लंपट परनारीत  
 णां स रे, गया जमारो हार; जम घाले आंख्यामें ताक  
 ला स रे, दे गुरझांरी मार रे ॥ मू० ॥ ११ ॥ मल मृतरनी  
 कोथली स रे, अशुचितणो भंडार; ऊपरसें कल्ली लगी  
 स रे, जिण ऊपर सिणगार; हिगा देवी सम त्रिया स रे,  
 जोवो हीये विचार रे ॥ मू० ॥ १२ ॥ जर जोरुके कारणे  
 स रे, तूटे जूनो प्यार; जे नर जांणे आपणी स रे, ते नर  
 मूढ गिबोर; त्यागन कर संग्रह करे स रे, तिणने छै धि  
 कार रे ॥ मू० ॥ १३ ॥ कनक कांमणी छोडनें स रे, पाले  
 शुद्ध आचार; सुपनामें बंछे नहीं स रे, ते कहिये अण  
 गार; राम कहै मुनिवरभणी स रे, वदो वारं वार रे ॥ मू०  
 ॥ १४ ॥ उगणीसे अष्टादसे स रे, जोधपुर शोषे काल; स्वां  
 मी वृद्धिचंद प्रसादसूं स रे, जुगतसू जांडी ढाल; सत  
 गुरुनी किरपा थकी स रे, वरते मंगल माल रे ॥ मू०  
 ॥ १५ ॥ ॥ इति ॥

६ तूं आज्ञा सोजा रे ॥ ए देशी ॥

मै वरजू रे तोने पर नारीकी संगत क्यूं करे; तन छी  
 जे रे तारो, धन जावेनें जग निदा करे ॥ टेर ॥ पर नारी  
 धन मांगसी स रे, होसी जगमे भांड; गरमी चिणग्यो  
 लागसी स रे, मूंडे पडसी ग्वांड रे ॥ मै० ॥ १ ॥ कुलनें  
 काळो लागसी स रे, राजा करसी दंड; घर नारी रीसा-

बसी स रे, मिटसी सरब घमंड रे; ॥ मै० ॥ २ ॥ \* लाखी  
 गो तो मानव बाजे, जोतां १ हसतां २ बात; ३ फर्श ४  
 कुचेष्टा ५ मूल ६ सेवतां, कमसूं खट लो पात रे ॥ मै० ॥ ३ ॥  
 पैठ प्रतीत जावसी स रे, हूय चूकामे कैसी; सबसूं  
 नीचो जोवसी स रे, जंचो बोलतो रैसी रे ॥ मै० ॥ ४ ॥  
 सर्वापद की सार्ड ए छै, सदगततणा कपाट; नरकतणो  
 जाबाने मारग, अह निश रहे उचाट रे ॥ मै० ॥ ५ ॥  
 उभय लोक सूधारण मरजी, रग्वो परनारीका नेम;  
 अहिपुर तीसे काती शुद्धमें, मुनि राम कहे छै एम रे ॥  
 मै० ॥ ६ ॥ इति ॥

### ७ देशी ख्यालनी ॥

साब बातकी थाप जिसीमें, झूठतणो नही रच; किसी  
 जीवकू दुख नही देणा, तजणा सब परपच रे ॥ सुणि-  
 यो सब प्यारे, जैन धर्म नही छोडणा ॥ सु० टेर ॥ १ ॥  
 कष्ट आये पिण झूठ न कहना, झूठ पापका मूल; पर  
 तृण जिणने लिया उठाई, कीया जमारा धूल हो ॥ सु०  
 ॥ २ ॥ नारी सारी द्वार नरकको, स्वर्ग अर्गला जान;   
 धनकूं धूल गिणी तज निसरो, धन अनरथकी खान हो  
 ॥ सु० ॥ ३ ॥ ए उपदेश जिसी धर्ममें, समजो चतुर सु-  
 जाण; पर निदा स्व महिमा नांही, नहीं छै खांचाताण हो  
 ॥ सु० ॥ ४ ॥ भाई जमाई पुत्र कमाई, फेट शरीरे लागे;

\* आदमी लाखोंको अर्थात् लाख रुपयागे है सो प नागिने कुदृष्टि जोमता छ ६  
 भात मायसू एक आक छेली बिंदी घट जाय जद, दश हजारो रै जाये हसता दूजी  
 बिंदी जाय जद, हजारो रै जाये बात करता तीनी बिंदी जाये जद, सारो रै जाय स्पर्श  
 करता चोथी बिंदी जाये जद, दशरो रै जाये कुचेष्टा अर्थात् स्तनादि स्पर्श करता पाचवी  
 बिंदी जाये जद, एक रो रै जाये ने मूल अर्थात् मेनुन करता समूल नष्ट हो जाय

पूर्व कमाई धर्म सहाई, मिष्ट धर्म फल आगे हो ॥ सु०  
 ॥ ५ ॥ विरुद्धाभास नहीं पूर्वापर, नहि खंडन कोई ठौर  
 मुनि राम कहै जिन धर्म सरीखो, हुबो न होसी और  
 ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

## ८ देशी धूसारी ॥

एक करलो रे संग गुणी जन की ॥ ए० ॥ १ ॥ टेर ॥ गुणि  
 जन सग सदा सुखदाई २; सब टारत है भ्रम नामनकी  
 ॥ ए० ॥ १ ॥ भ्रमरा संग कीटक हुवे भ्रमरो २, वो उड़  
 उड़ वास ले फूलनकी ॥ ए० ॥ २ ॥ जल बिंदु तुच्छ शुक्ति  
 संगतसूं २, व्है मुक्ताफल जात अमोलनकी ॥ ए० ॥ ३ ॥  
 लोह अड़े जे पारस सेती २, छिनमें होवे जात सोवनकी  
 ॥ ए० ॥ ४ ॥ पुष्पकी संगत सूतको तागो २; मस्तक चंद  
 सुर भूपनकी ॥ ए० ॥ ५ ॥ निर्मल आंखतणे परसगे २  
 काणाक्षी होवे अंजनकी ॥ ए० ॥ ६ ॥ रज गगन चंद  
 पवनधी २, देखो ढांके जी क्रांती भाननकी ॥ ए० ॥ ७ ॥  
 राय प्रदेशी कैसी गुनी तान्यौ २, दृढ प्रहारी संग संत  
 नकी ॥ ए० ॥ ८ ॥ धर्मीकी संगत पापी सुधरे २, मुनि  
 राम कहै शाख शाखनकी ॥ ए० ॥ ९ ॥ इति ॥

## ९ देशी ख्यालनी ॥

वरजूं वरजूं रे पापीडा निंदा छोड दे ॥ व० ॥ १ ॥ टेर ॥  
 तूं क्रोध पूतळो शुद्ध न थारे, चोले आल पंपाल; कोड  
 पूरवकी तपस्या करने, छिनमे देवे जाल ॥ व० ॥ १ ॥ विना  
 पूंजीको निकमो कंगलो, विरथा जनम गमावे; साध  
 गृहस्थ दोनूंमे नाहीं, अव विच गोता सावे ॥ व० ॥ २ ॥



नारीसुं दंडीजे, म्हांरा वालमिया; रोग अंगे लग जाई ॥  
 ॥ म्हां० ॥ २ ॥ धन छीजै बल हटे, म्हांरा वालमिया; रीस  
 बळेला थारा भाई ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ ऊंचो बोल सके नहीं,  
 म्हांरा वालमिया; नीचो जोवेला सदाई ॥ म्हां० ॥ ४ ॥  
 लाखीणो ठिकाणो छटे ॥ म्हां० ॥ लोकमे दर घट जाई  
 ॥ म्हां० ॥ ५ ॥ पर नारीसुं दुख पावो ॥ म्हां० ॥ मुरझा-  
 बोला दिलमांही ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ मुनि राम कहै घर नारी  
 समझावे ॥ म्हां० ॥ करकरने नरमाई ॥ म्हां० ॥ ७ ॥ इति ॥

## दोहा

कोई निंदा मत करो, निंदा सम नहीं दोष ।  
 एह लोक बिगड्या फिरे, सुधरे नहीं पर लोक ॥ १ ॥

## १२ देशी ख्यालनी ॥

वरजूं वरजूं रे पापीडा निंदा छोड दे ॥ व० ॥ मूढ़े  
 मीठा बोले मूरख, पेटमे खोटा करमी; जैनी नहीं ते कैनी  
 कहिये, जाणो खरा अधरमी ॥ व० ॥ १ ॥ गुरु देवसुं बे  
 सुख हूवा, जिणरा न देखो मूंडा; सात पांच तो मोटा  
 पापी, जासी नरकमे ऊंडा ॥ व० ॥ २ ॥ सूत्रतणो तो मर्म  
 न जाणो; गुरु करया ऊंध मती; तपस्या मांहे छाछ पि-  
 लावे, किम सुधरेला गती ॥ व० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमाकर  
 डेपी पूरा, खोटी प्ररूपणा करता; भोळानें डहकावे पापी,  
 पूज पूज पग धरता ॥ व० ॥ ४ ॥ पात्रामांहे करे मातरो,  
 धर्म मर्म नहीं जाणो; तपसीकेरा नाम धरावे, रुढ आं-  
 णी तांणे ॥ व० ॥ ५ ॥ मन उपगसू करे थापना, निकमा  
 साधू वाजे; ज्ञानतणा उत्थापक पापी, निंदा करत नहीं

## १६ देशी ख्यालनी ॥

पुन सात वारमें, खरची बांधो रे एक दिन जावणां  
 ॥ ६ ॥ सात वारमें सबकों जाना, जिसमें क्या है फेर;  
 रंक रावकूं सबकूं चलना, खरची लेलो लेर; लेलो खरची  
 लेर; फेर पिछतावसो, बंधी मूठी आय, खाली हुय जा-  
 वसो ॥ तु० ॥ १ ॥ सूर्य वारमें सूर्य जगे नित, आयु खड  
 ले जावे; घटी जावे सो पाछी नावे, रवि तो णम जतावे  
 २; खरची बांधसो, मुनि लोकांसूं प्रीत, सैंठीथे सांधसो  
 ॥ तु० ॥ २ ॥ चंद्रवारमें करो चानणो, तेरा घटरे मांय;  
 जिनसेती तो मिटे अंधेरो, घट पट प्रगट दिखाय २;  
 आखर तो जावणां, राख्या नहीं रहे लाख, मेह अरु  
 गावणां ॥ तु० ॥ ३ ॥ मंगल वारमें मंगल वरते, धर्म कीयां  
 सुख पासी; धर्म विना तो खाली जासी, आखर तूं पि-  
 छतासी २; शास्त्र गाय छै; आंकी भली न बांकी भली,  
 भांख फेर मिचवाय छै ॥ तु० ॥ ४ ॥ बुद्ध वारमें बुद्ध वि-  
 बारो, जनम मरण मिट जाय; राग द्वेषने पतळा पाडो  
 जिणरो नाम कषाय २; पातळी पाडसो; ज्ञानथकी ग्रहो  
 ध्यान, समाधी चाढसो ॥ तु० ॥ ५ ॥ गुरुवारमें गुरु  
 वेतावे, इसा करो व्यौपार; जिसमें नप्का हुवे अनता,  
 गावा करे संसार २; ज्ञान कर हेरसी; तूं सूतो छै कुण  
 तिंद, मोत आय घेरसी ॥ तु० ॥ ६ ॥ शुक्रवारमें सुकृत  
 तर ले; धर ले गुरुका ध्यान; गुरु विना कुछ पता न लग्गे,  
 मत कर गुरुसे मान २; ज्ञान उर राखजो; सुधरे जिम पर  
 लोक, बचन सुध भाखजो ॥ तु० ॥ ७ ॥ थावर वारमें थिर  
 नहीं रहना, चलना विश्वा वीस; जैन धर्म शुद्ध पाळजो



श्री जिन धर्म पामियो रे, मेरे पाखंड सेवे बलाय; क्या  
हिंसा मती, क्या आशा मती, क्या नास्त मती, क्या  
वाम मती, क्या विष्णु मती, क्या शिव मती, ए जोड़े  
न लागे कोय, जैन धर्म पामियो रे, मेरे पाखंड सेवे ब-  
लाय ॥ ढेर ॥ सोना पीतल सारखो रे, और केसर धूल  
समान; मूरख पंडित सम गिणे रे, ते नर खरा अजान ॥  
॥ जै० ॥ १ ॥ जीवाजीव न जाणही रे, पुन्य पाप किम  
होय; धर्म अधर्म सम मानही रे, ते गये जमारो खोय ॥  
॥ जै० ॥ २ ॥ वीतराग तो देव छै रे, गुरु शुद्ध अणगार;  
अर्हेत प्रणीत धर्म कयो रे, ऐही उतारे पार ॥ जै० ॥ ३ ॥  
शस्त्र धरे नारी रक्खे रे, ते छै देव कुदेव; महाव्रत विन  
गुरु छै नही रे, हिंसा धर्म मत सेव ॥ जै० ॥ ४ ॥ केवल ज्ञान  
दर्शन धरा रे, ते छै देवाधिदेव; रामचंद बंदे सदा रे,  
जांकी इंद्र करे सब सेव ॥ जै० ॥ ५ ॥ इति ॥

### १५ देशी ख्यालनी ॥

सुणो चतुर सुजांना, खूटीकी बूंदी नहीं। कोई ग्रथमे;  
कयूं हूँ जान दिवांना, अमर नहीं सुणियो रे हुवो कोई  
पंथमे ॥ ढेर ॥ श्रीतीर्थकर अवतार अबालिया, नहीं देखा  
कोई संतमे; योगाभ्यासी लगा समाधी, मर खूटे सब  
अंतमें ॥ सु० ॥ १ ॥ धन्वंतरी या बूंदी हेरत, ते पिण ग-  
ये डडंतमें; कोई नहीं अमर देखा देहधारी, इम सुणी  
खरी सिद्धंतमे ॥ सु० ॥ २ ॥ अश्वत्थामा भीम गज भर्त-  
री, अमर कहे कथदंतमे; आईआई मर खूटे सबही, सब  
गये मुख कृतंतमें ॥ सु० ॥ ३ ॥ हरि हर ब्रह्मा सबकू छोटी,  
ध्यान रखो अरिहतमे; मुनि राम कहै अनंत पद भजिये,  
सो पद सिद्ध भगवतमें ॥ सु० ॥ ४ ॥ इति ॥

आट्टं तोड़िये स रे, कोई जुक्तिके साथ; जोग अष्टांग  
 धारिये स रे, है मन मारण बात; अष्ट आचार समकि-  
 ततणां स रे, पाळो शुद्ध विख्यात रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ नव-  
 मी निरणो कीजिये स रे, नवही तत्व विचार; जांण विना  
 पशु सारग्वो स रे, बोले सूत्र मझार; ज्ञान विना करणी  
 किसी स रे, ज्ञान विना अंधार रे ॥ वी० ॥ ९ ॥ दशमी  
 दश लक्षण धरो स रे, तातें मरण मिटाय; दश मूढन  
 पिण आदरो स रे, शिर मूढ्यां स्यूं थाय; केवल शिरही  
 मूढ़ियां स रे, खाज माथेकी जाय रे ॥ वी० ॥ १० ॥ एका  
 दशी कहे प्राणियां स रे, ग्यारा प्रतिमा धार; बारस  
 चौड़े बोलही स रे, लो श्रावक व्रत बार; बारे भावो भा-  
 वना स रे, जिणसू उतरो पार रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ तेरस  
 कहे तेरे क्रिया स रे, छोड़ो चतुर सुजांण; तेरे छोड़ो का-  
 ठिया स रे, छोड़ो रूढ अजांण; तेरेपंथी संग छोड़ दो  
 स रे, सूत्र लुं पक ते जांण रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ चवदश कहे  
 चौकस करी स रे, धारो चवदे नेम; दान करो थे शुद्ध  
 मने स रे, राग्वो अधिको प्रेम; झूत ग्राम रक्षा करो स रे,  
 चावो कुशल क्षेम रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ पूनम पूरो ऊगियो  
 स रे, जिणमें बड़ो प्रकाश; अधवा चंद विन रातड़ी स  
 रे, जिणमें नहीं उजास; मुनि राम कहे पखवाड़ो सफलो,  
 कीजो ज्ञान अभ्यास रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ तीन चालीस उगणी-  
 सके स रे, पाली शेपे काल; जेठ महीनो आकरो स रे,  
 पाजे झाल दुआल; धर्म कीयां पट रतु भली स रे, वरते  
 मंगल माल रे ॥ वी० ॥ १५ ॥ इति पखवाडो ॥

१८ देशी ख्यालनी ॥

तुम धारे माममें दिलने मंजो रे तीरथ कौन छै ॥ तु० ॥

स रे, पाछी मारो रीस २; जस थे लीजियो; मुनि राम  
कहे सत वारमें, सुकृत कीजियो ॥ तु० ॥ ८ ॥ इति सप्तवार ॥

## १७ देशी ख्यालनी ॥

वीते पखवाडो धर्म करो रे जानी जीवड़ा ॥ वी० ॥  
॥ ढेर ॥ एकम कहे तूं एकलो स रे, दूजा न तेरी संग; पुण्य  
पाप दो संग चलेगा, रखो धर्मसूं रंग; एकत्व भावो भा  
वना स रे, दुर्लभ मानव अग रे ॥ वी० ॥ १ ॥ बीज  
कहे बीज रोपलो स रे, समकित बीज जमाव; मुनि  
श्रावकपणो आदरो स रे, बैसो धर्मकी नाव; ज्ञानरूपी  
जल सींचलो स रे, उज्जल रक्खो भाव रे ॥ वी० ॥ २ ॥  
तीज तीन थे आदरो स रे, सम्यक् दर्शन ज्ञान; चारित्र  
विन तरना नहीं स रे, ऐ तूं साचो मान; देव गुरु धर्म  
आदरो स रे, ज्यू पोंचो निर्वाण रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ चौथ  
कहे च्यारूं तजो स रे, क्रोध मान माया लोभ; ऐ छोडा  
तरणो हुवे स रे, फैले जगमें शोभ; शिर मुंडायां स्यू  
हुवे स रे, मिठ्यो न मनको क्षोभ रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ पांचूं  
कहे पांचूं जण्यां स रे, लागी वारे लार; जिणने कब्जे  
रक्खिये स रे, जिम उतरो भव पार; पांचूं रोपो धर्ममें  
स रे, छोडो विषय विकार रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ छठ छकाया  
ओळखो स रे, पग पग जयणां राख; धर्म दया विन  
छै नहीं स रे, छै सूतरकी शाख; लाख वातकी  
एक है स रे, दया विना सब खाख रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ सा  
तम कहे सत राखजो स रे, सातूं व्यसन निवार; काळो  
लगासो देहनें स रे, डूबा काळी धार; मरणो किण विध  
सुधरे स रे, कीजो हीये विचार रे ॥ वी० ॥ ७ ॥ आठम

## १९ देशी ख्यालनी ॥

तुम सुणिये रे लोको कक्का बत्तीसी हिरदे धारिये ॥  
 ॥ तु० ॥ ढेर ॥ कक्का किरिया कीजिये स रे, क्रिया विना  
 स्यूँ ज्ञान; ज्ञान विना क्रिया नहीं स रे, तातें दोय प्रधान  
 रे ॥ तु० ॥ १ ॥ खक्खा खिलवत छोड़िये स रे, खिलव-  
 तमें नहीं सार; खिलवत खोवे जोगनें स रे, औरही वि-  
 धवा नार रे ॥ तु० ॥ २ ॥ गग्गा गर्व न कीजिये स रे, गर्व  
 कीयां लछ जाय; गर्व करी रावण गल्ले स रे, और  
 दुर्याधन राय रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ घग्घा घटमें चानणो स रे,  
 कर लो प्यारे लोक; घोर तपस्या कीजिये स रे, मिटे  
 कर्मका रोग रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ चच्चा चरचा ज्ञानकी स रे,  
 कर लो शास्त्र प्रमाण; चुगली चोरी छोड़िये स रे, जिण  
 सू होय कल्याण ॥ तु० ॥ ५ ॥ छच्छा छल नहीं कीजिये  
 स रे, मेढो मनकी छोल; छः कायांने ओळखो स रे,  
 जाणो आत्म तोल रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ जज्जा जसही ली-  
 जिये स रे, जस सम नहीं छै धन; जी जी करतां बोलि-  
 यो स रे, उज्जल रम्नो मन्न रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ झज्झा झूठ न  
 बोलिये स रे, झूठ महा दुखदाय; झूठ विगाड़े पैठने स  
 रे, पत पंचांमे जाय रे ॥ तु० ॥ ८ ॥ टट्टा टेक न छोड़िये  
 स रे, धर्मतणी नितमेव; टट्टी तूटे मांहिली स रे, ऐसा  
 सदगुरु सेव रे ॥ तु० ॥ ९ ॥ ठठ्ठा ठोठ न होजिये स रे, तज दो  
 ठट्टा रोल; ठीभरपणो थे आदरो स रे, ओछो न बोली  
 बोल रे ॥ तु० ॥ १० ॥ डट्टा डरही राखिये स रे, भगवत  
 श्रूप ससार; डरही विगाड़े अर्थनें स रे, सो डर वेग नि-  
 धार रे ॥ तु० ॥ ११ ॥ ढट्टा ढील न कीजिये स रे, जिण-

॥ टेरे ॥ चैत कहे तुम चेतजो स रे, चित राखो एक ठाम;  
चित्त उज्जल विन ताहरो स रे, सरे न एको काम रे तु  
॥ १ ॥ वैशाख शाख दोय कल्पसी स रे, वांछित देवण  
हार; श्रुत चारित्र दो धर्म छै स रे, भवोदधि तारण हार  
रे ॥ तु० ॥ २ ॥ ज्येष्ठ कहे तूं ज्येष्ठ है स रे, जो करे धर्म  
दढ धार; ढके दोष जो सकलके स रे, और करे उपगार  
रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ आपाढ आशा राखिये स रे, परमेश्वरकी  
एक; बीज बावो शुद्ध भूमिमें स रे, जिनसँ होय अनेक  
रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ आचण अचण कीजिये स रे, जिनागम  
परम पवित्त; लूँयां वरसे ज्ञानकी स रे, करे सकतनो  
हित रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ भाद्रव गहरो गाजियो स रे, पृथिवी  
होय सुकाल; गाजो धर्ममें प्राणियां स रे, जिणसेती  
हुवो न्याल रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ आसोज सोज भल भावसँ  
स रे, सीप समुद्रां जोय; मौती निपजे बखतका स रे,  
तिम दानादिक होय रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ काती काती वर  
सणो स रे, अथवा कटक समांन; अन्य मतकी करणी  
छै तैसँ, जनम मरणको स्थान रे ॥ तु० ॥ ८ ॥ मृगशिर  
मृग शिर सारिखो स रे, धर्म बिना नर देह; मृगा रूप  
पशु सारिखो स रे, जिणमें क्या संदेह रे ॥ तु० ॥ ९ ॥  
पोप पोप पातरभणी स रे, जिणसू सुधरे काज; शालि-  
भद्र जिम सुख लहो स रे, पांमो अविचल राज रे ॥ तु०  
॥ १० ॥ माह मोहने मारलो स रे, क्षमा खडग चलवाय;  
धारण ग्रहो गुरु चरणका स रे, ज्ञान चिराक जिगाय रे  
॥ तु० ॥ ११ ॥ फाल्गुन फाल गुनकी संधो स रे, तो तूं  
बडो रमाड; मुनि राम कहे छै बारे मासमे, रखो धर्म सँ  
गाढ रे ॥ तु० ॥ १२ ॥ इति बारे मास्यो ॥

लालच छोड़िये स रे, सब सरखी नहीं ठौर; अति लालच  
 नहीं अर्थरो स रे, लीन अलीन छै और रे ॥ तु० ॥ २५ ॥  
 बब्बा वाद न कीजिये स रे, वाद कीयां हुवे हांण; चंदो  
 गुणि जन देखनें स रे, रखो बडेकी कांण रे ॥ तु० ॥ २६ ॥  
 शठशा शंक न कीजिये स रे, जिन वचनांके मांघ; शील  
 बत शुद्ध पाळजो स रे, जो तुम तिरवा चाय रे ॥ तु०  
 ॥ २७ ॥ पप्पा खूब पिछांणिये स रे, स्यादवाद मत सार;  
 बाली वाद न कीजिये स रे, बोलो शास्त्रके लार रे ॥ तु०  
 ॥ २८ ॥ सस्सा सतही भाखणो स रे, सूत्र समो नहीं  
 धर्म; सूत्र विरुद्ध जे भाखही स रे, जिणरे बोहला कर्म  
 रे ॥ तु० ॥ २९ ॥ हहा हासो त्यागिये स रे, हास्यथकी  
 विषवाद; कौरवपांडव वीगड्या स रे, नहीं हांसीमे स्वा-  
 द रे ॥ तु० ॥ ३० ॥ हूं लखावे लिखणो भेळो, ररे विना  
 सब कोय; उलट पलट अक्षर वण बोले, वर्णसंकर ते होय  
 रे ॥ तु० ॥ ३१ ॥ क्ष क्षमा तुम कीजियो स रे, क्षमा करे  
 गुणवंत; मुनि राम कहे छै ककावतीसी, शीख चलो इण  
 पंथ रे तु० ॥ ३२ ॥ तयां लीस उगणीसको स रे, पाली  
 पीठ मभार, ज्यंष्ट वदी तेरस रची स रे, ककावतीसी  
 सार रे ॥ तुम सुणियो रे लोको ककावतीसी हिरदे धारि-  
 ये ॥ ३३ ॥ हति ककावतीसी ॥

## गाळ ।

१ जैपुरसें दोय चीज मंगाय दो ॥ ए देशी ॥

गुरु कृपासे दोय चीज ओळखसां, एक निश्चो ने व्यव

सुं होय सुधार; काज विगाड़े ढीलसुं स रे, ते नर मु  
 गिवाँर रे ॥ तु० ॥ १२ ॥ तत्ता तत्व पिछांणिये स रे, त  
 रुणपणो दिन च्यार; थोडा दिनकी चांनणी स र, सेव  
 घोर अंधार रे ॥ तु० ॥ १३ ॥ थत्था धिर रहणा नहीं स  
 रे, यौवन धन परिवार; आखर एक दिन जावणो स रे,  
 चल्थो जाय संसार रे ॥ तु० ॥ १४ ॥ ददा दिलमें रक्खिये  
 स रे, दया दान दिन रात; दगो न कीजे केहसुं स रे,  
 धर्म हारकी बात रे ॥ तु० ॥ १५ ॥ धद्धा धर्मही कीजिये  
 स रे, मनमें धीरज राख; ऋतु आयां फल नीपजे स रे,  
 धर्म बिना सब खाख रे ॥ तु० ॥ १६ ॥ नन्ना नर भव  
 दोहिलो स रे, तातें करो सुधार; खरची बांधो ऊजली  
 स रे, जिणसुं बेड़ा पार रे ॥ तु० ॥ १७ ॥ पप्पा पंडित  
 पारखा स रे, शके करतो पाप; पाप करे छै प्राणियो स  
 रे, भुगतो आपो आप रे ॥ तु० ॥ १८ ॥ फप्पा फकीरी  
 आदरो स रे, चलिये खांडे धार; लालचमें फसियो फिरे  
 स रे; धिक् ताको जमवार रे ॥ तु० ॥ १९ ॥ बब्बा बुध जेहनी  
 खरी स रे, इण भवमें जस लेह, पर भव सुधरे जेहनी  
 स रे, ज्यू शाख सुधारे मेह रे ॥ तु० ॥ २० ॥ भब्भा भमतो  
 क्यूं फिरे स रे, विन कारज पर गेह; भजन करो भगव  
 तरो स रे, जिणसुं सुधरे देह रे ॥ तु० ॥ २१ ॥ मम्मा  
 मर्म न भाखिये स रे, हुवे अनरथ किणवार; मात पिताने  
 मानिये स रे, और करो उपगार रे ॥ तु० ॥ २२ ॥ यय्या  
 यारी रक्खिये स रे, परमेश्वरके साथ; पार उत्तरे छिन  
 भर मांहे, दूजी खाली बात रे ॥ तु० ॥ २३ ॥ ररी रोस  
 निवारिये स रे, उपजे भली रसांण; रोसथकी तप खोय  
 है स रे, कोड़ पूरबको जांण रे ॥ तु० ॥ २४ ॥ लल्ला

लालच छोड़िये स रे, सब सरखी नहीं ठौर; अति लालच  
 नहीं अर्थरो म रे, लीन अलीन छै और रे ॥ तु० ॥ २५ ॥  
 बप्पा वाद न कीजिये स रे, वाद कीयां हुवे हांण; वंदो  
 गुणि जन देखनें स रे, रखो बटेकी कांण रे ॥ तु० ॥ २६ ॥  
 शशशा शंक न कीजिये स रे, जिन वचनांके मांय; शील  
 वत शुद्ध पाळजो स रे, जो तुम तिरवा चाय रे ॥ तु०  
 ॥ २७ ॥ पप्पा खूब पिछांणिये स रे, स्यादवाद मत सार;  
 खाली वाद न कीजिये स रे, बोलो शास्त्रके लार रे ॥ तु०  
 ॥ २८ ॥ सस्सा सतही भाखणो स रे, सूत्र समो नहीं  
 धर्म; सूत्र विरुद्ध जे भाखही स रे, जिणरे बोहला कर्म  
 रे ॥ तु० ॥ २९ ॥ हहा हासो त्यागिये स रे, हास्यथकी  
 विषवाद; कौरव पांडव वीगड़या स रे, नहीं हांसीमे स्वा-  
 द रे ॥ तु० ॥ ३० ॥ छु लखावे लिखणो भेळो, ररे विना  
 सब कोय; उलट पलट अक्षर वण बोले, वर्णसंकर ते होय  
 रे ॥ तु० ॥ ३१ ॥ क्ष क्षमा तुम कीजियो स रे, क्षमा करे  
 गुणवंत; मुनि राम कहे छै ककावतीसी, शीख चलो इण  
 मथ रे तु० ॥ ३२ ॥ तयां लीस उगणीसको स रे, पाली  
 पीठ मभार, ज्येष्ठ वदी तेरस रची स रे, ककावतीसी  
 सार रे ॥ तुम सुणियो रे लोको ककावतीसी हिरदे धारि-  
 ये ॥ ३३ ॥ इति ककावतीसी ॥

## गाळ ।

१ जैपुरसें दोय चीज मंगाय दो ॥ ए देशी ॥

शुरु कृपासें दोय चीज ओळखसां, एक निश्चो ने व्यव



हार; गुणि जन संग करसां; निश्चो तो म्हाने पार उतारे,  
 रहस्यां उद्यमकी लार ॥ गु० ॥ १ ॥ गुरु कृपासैं दोय चीज  
 ओळखसां, अगार ने अणगार ॥ गु० ॥ अगार धर्म आव  
 कनो जाणो, अणगार मुनि आचार ॥ गु० ॥ २ ॥ गुरु  
 कृपासैं तीन चीज ओळखसां, देव गुरु शुद्ध धर्म ॥ गु० ॥  
 देव गुरु धर्म पार उतारे, मेटे पुरातन कर्म ॥ गु० ॥ ३ ॥  
 गुरु कृपासूं तीन चीज ओळखसां, दर्शन ज्ञान चारित्र  
 ॥ गु० ॥ दर्शन देव ज्ञान गुरु जाणो, धर्म चारित्र पवित्र  
 ॥ गु० ॥ ४ ॥ गुरु कृपासूं च्यार चीज ओळखसां, दान शील  
 तप भाव; ॥ गु० ॥ दान सुपात्र शील शुद्ध पाळो, तप बो  
 दान भाव नाव ॥ गु० ॥ ५ ॥ गुरु कृपासैं पच षट् ओळखसां  
 पंचाश्रव षट् काय ॥ गु० ॥ पंचाश्रव कू छिनमांहे छोडां, जतन  
 करां जी षट् काय ॥ गु० ॥ ६ ॥ मुनि राम कहे गुरु कृपा-  
 सेती, सुधरे छै सगला काज ॥ गु० ॥ गुरु कृपा विन कहो  
 कुंण तरियो, कुंण पायो त्रिभुवन राज ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति ॥

### २ देशी पूर्ववत् ॥

वीर कृपासे मोह नृपनैं भगासां, म्हे तो नही रखां  
 हिरदे रे मांय; कायम गढ करसां ॥ प्रबोध नृपनैं बेग  
 बुलासां, म्हे तो लेमां मोतीडा बघाय ॥ का० ॥ १ ॥ विवे  
 कसैं राग ड्रेप हटासां, म्हे तो हणसां शीलसे काम ॥ का०  
 लोभ भरेसी संतोपके आगे, करां क्षमासे कोप निर्नाम  
 ॥ का० ॥ २ ॥ अहंकार घातस्यां विनय करीनैं, ओ तो  
 जीते प्रबोध महाराज ॥ का० ॥ राम कहे आतम जब  
 सुखियो, जो रखै सुमतकी लाज ॥ का० ॥ ३ ॥ इति ॥

३ दोय नारंगी दोय अनार ॥ ए देशी ॥

ए ससार असार अपार, मुनिवर भाखे चारंवार ॥ देर

दश दृष्टान्ते नर भव लाघो, मिले नहीं यो मूढ़ गिवाँर  
॥ मु० ॥ मात ताता त्रिया सुत भाई, एक न आवे धारी  
लार ॥ मु० ॥ हाथ कमाई सब ठकुराई, चलेन साथे एक  
लिंगार ॥ मु० ॥ आप कमाई साथे आसी, समझ समझ  
तू ज्ञान विचार ॥ मु० ॥ २ ॥ अशुभ कर्म उदय जय आवे,  
आवे चेतन आपही मार ॥ मु० ॥ कहाँसे आयो कहाँ तू  
जासी, नफेको कर ले तू व्यौपार ॥ मु० ॥ ३ ॥ रावण राजा  
पलमें पलट्यो, मिट्यो जिसीको सब अहंकार ॥ मु० ॥  
दुर्योधनसा जंगमें कट गये, अक्षौहिण सम्मेल अठार  
॥ मु० ॥ ४ ॥ किसी गिणतमें कुण तू भोड़, काँई करे तू  
घरसे प्यार ॥ मु० ॥ मुनि राम करे सुणजो सब भाई,  
सफल करीजो नर अवतार; ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

४ रंग मांणो रे म्हांरा वेलियां ॥ ए देशी ॥

धर्म करो रे म्हांरा वेलियां ॥ टेर ॥ मात तात नहीं दुर्गति  
दारे, नहीं तारे खेलाने खेलियां ॥ ध० ॥ १ ॥ धन दौलत  
तेरे संग न आवे, नहीं जावे थारे संग खेलियां ॥ ध०  
॥ २ ॥ रंग महल तेरे मनकूँ सुहावे, तू गावे छै हाट ह-  
खेलियां ॥ ध० ॥ ३ ॥ बालपणो हँस खेल गमायो, जोवन  
घाली सिर सेलियां ॥ ध० ॥ ४ ॥ रस इंद्रीके वश तू प-  
डियो, क्या चावे तू लड्डु जलेवियां ॥ ध० ॥ ५ ॥ कुदेव  
कुगुरु कुधर्म दारो, धारोनी गुरु मुख सेलियां ॥ ध० ॥ ६ ॥  
अजलि जल ज्यू जावे तेरी ऊमर, जरा आवे नित ठेलि-  
या ॥ ध० ॥ ७ ॥ मुनि राम करे सुण धर्म न करसी, जाने  
जानी कथा छै गेलियां ॥ ध० ॥ ८ ॥ इति ॥

५ नेह लंग्यो रंग मांणले ॥ ए देशी ॥

हां रे जीवा ! चौराकी में तू भम्यो, हां रे जीवा पाम्यो

दुःख अपार रे; अथ तो सुरत संभार रे, मत हारे नर अव-  
तार रे ॥ अ० ॥ १ ॥ हां रे जीवा नर भव दुर्लभ लाधियो,  
उत्तम कुल अवतार रे ॥ अ० ॥ २ ॥ हां० ॥ नर भव पायो  
तो स्युं धयो, धर्म विन मूढ गिवाँर रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ हां० ॥  
धर्म पायो तो स्युं धयो, दया विना नहीं कल्ल सार रे ॥ अ०  
॥ ४ ॥ हां० ॥ समकित विन पढ स्युं कियो, ऊँणो दश पूर  
धार रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ हां० ॥ क्रिया करी तौ क्या भयो,  
समकित विन सब छार रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ हां० ॥ ज्ञान विना  
क्रिया नहीं, क्रिया विन ज्ञान न सार रे ॥ अ० ॥ ७ ॥ हां० ॥  
दर्शन ज्ञान चारित्र धी, मुक्ती व्है ततकार रे ॥ अ० ॥ ८ ॥  
हां ॥ दब लगी पंगू बोलियो, अंधे सुणी है पुकार रे ॥ अ०  
॥ ९ ॥ हां० ॥ पंगु चढ्यो खंध अंधके, दोऊ मिल लघे बन  
पार रे ॥ अ० ॥ १० ॥ हां ॥ ज्ञान क्रियासँ मोख है, मुनि  
राम कहे अवधार रे ॥ अ० ॥ ११ ॥ इति ॥

६ वालमा नायण गईथी लूँटमें, हां रे वातो क्या ॥  
क्या लाई लूँट, वालमा नायण गईथी लूँटमें ॥ ए देशी ॥

जियडा प्रभुजीने गावो रंगसू, हां रे तुमे छोडो, हां  
रे तुमे छोडोनी झूठी भूखाल, जियडा प्रभुजीने गावो  
रंगसू ॥ जि० ॥ धर्म करिये उमंगसू, हां रे छिन भरमें २  
हूसो रे न्याल ॥ जी० प्र० ॥ हां रे तुमे छोडो २, झूठी  
भूखाल ॥ जी० प्र० ॥ १ ॥ कपाल वसे बुद्धि रीसडी, हां  
रे रीस करदे २, बुद्धि खराब ॥ जी० प्र० ॥ जी० ॥ नय  
नमे काम लज्जा वसे, हां रे लज्जा नें २, काम देवे दास  
॥ जी० प्र० ॥ २ ॥ जी० ॥ लोभ दया हिरदे वसे, हां रे  
लोभ देवे २, दयाने उठाय ॥ जी० प्र० ॥ जी० ॥ प्रसू

मान उरमें बसै, हां रे श्रृख देवे २, मान मिटाय ॥ जी०  
प्र० ॥ ३ ॥ जी० ॥ बुद्धिसूं रीसनें मारस्यां, हां रे लज्जासूं  
२, काम हटाय ॥ जी० प्र० ॥ जी० ॥ दयाधकी लोभ  
जीतस्यां, हां रे मन बलसूं २, श्रृख दुराय ॥ जी० प्र० ॥  
॥ ४ ॥ जी० ॥ प्रभु कृपासूं माहरे, हां रे सदा वरते २,  
कोड़ कल्यांन ॥ जी० प्र० ॥ जी० ॥ राम करे प्रभु भजनसूं,  
हां रे म्हांरे प्रगट्या २, नवही निधान ॥ जी० प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

७ छोड गोरीरा छैलरो दुपट्टो ॥ ए देशी ॥

मुनिवर देवे देशना रे, जीवा म्हांरा हिरदे राखो जान  
रे, सुजानी, सुजानीनर सांभळो रे; भवि जन हिरदे राखो  
जान रे, सुजानी ॥ टेर ॥ जीव हिंसा नही कीजिये रे ॥ जी० ॥  
हिंसा दुःखारी खान रे ॥ सु० ॥ १ ॥ झूठ कबू नही बो-  
लिये रे, झूठ सदा दुखदाय रे ॥ सु० ॥ बसु राजा गयो  
सातमी रे, जी० ॥ कल्यो आगमके मांय रे ॥ सु० ॥ २ ॥  
चोरी करतां दुख लहे रे ॥ जी० ॥ देखां निजरां आज रे  
॥ सु० ॥ सत्यघोष गयो सातमी रे ॥ जी० ॥ चोरीसैं जावे  
लाज रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ परनारीकी प्रीतढी रे ॥ जी० ॥  
शूल न करिये संग रे ॥ सु० ॥ राजा रावणसा वीगट्या रे  
जी० ॥ विगडे रूपनें रंग रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ धन धन करतो  
कयूं फिरे रे ॥ जी० ॥ धर्मसू पावे धन्न रे ॥ सु० ॥ धनसूं  
कुण तरियो नहीं रे ॥ जी० ॥ राखो धर्मसू मन्न रे ॥ सु० ॥  
॥ ५ ॥ ऐ उपदेश सांभळी रे ॥ जी० ॥ चेतो उत्तम जीव  
रे ॥ सु० ॥ मुनि राम करे खूब दीजिये रे ॥ जी० ॥ सद-  
गतकेरी नांव रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

८ पांच म्होर रोकड ले लो ॥ ए देशी ॥

परभवकी खरची ले लो, सत गुरुजी तो दे हेलो, प० ॥

॥ टेर ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म ऐ तीनें, तोनें आखर गोतो  
 देलो ॥ प० ॥ १ ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्म ऐ तीनें, खर  
 करी हिर दे भेलो ॥ प० ॥ २ ॥ परभव मांहे जासी अके-  
 लो, झूठो सब गोकुल मेलो ॥ प० ॥ ३ ॥ दशकोस गावां-  
 तर जावे, खरची विन कांई खावे लो ॥ प० ॥ ४ ॥ लाखो  
 कोस मुकांम वणे लो, हेतु विन कुंण खरची देलो ॥  
 प० ॥ ५ ॥ मात तात धन संग न चलसी, सग न चलसी गुरु  
 चेलो ॥ ॥ प० ॥ ६ ॥ त्याग बैरागकी खरची ले लो, छोट  
 दीजो उज्जड़ गैलो ॥ प० ॥ ७ ॥ मुनि राम कहे खरची  
 लो गैरी, सो रो सुखियो तूं रैलो ॥ प० ॥ ८ ॥ इति ॥

### ९ देशी पूर्ववत् ॥

तपस्या तुम करलो प्यारे, जिनसें कर्म टरे सारे ॥ त० ॥  
 ॥ टेर ॥ यथा कांतारं वनहि विशालं, दावानल विन कुंण  
 जारे ॥ त० ॥ १ ॥ दावानल बूझावन कारन, मेघ बिना  
 कहो कुंण टारे ॥ त० ॥ २ ॥ अभोधरनें दूरी करवा, पवन  
 बिना नहीं पडला रे ॥ त० ॥ ३ ॥ कर्म समूह विदारन  
 कारन, मुनि राम कहे तुम तप धारे ॥ त० ॥ ४ ॥ इति ॥

### १० हां सगीजीनें पेड़ा भावे ॥ ए देशी ॥

हां सबीनें खारो लागे, खारो लागे झूठ बोलणो; कुल  
 काळो लागे रे ॥ स० ॥ टेर ॥ यज्ञ भस्म न्है एक छिनम,  
 ज्युं दावाग्रि वन दागे रे ॥ स० ॥ १ ॥ झूठ दुःखको कारण  
 कहिये, ज्युं तरु जलसें जागे रे ॥ स० ॥ २ ॥ झूठ मध्य  
 तप चारित्र नांही ज्युं आतपे छाया भागे रे ॥ स० ॥ ३ ॥  
 मुनि राम कहे छै झूठ न बोलो, सुख पावोला आगे रे  
 ॥ स० ॥ ४ ॥ इति झूठ निंदा ॥

## ११ देशी पूर्ववत् ॥

सबीकं लागे प्यारो, प्यारो लागे साच बोलनो; दारो  
हीनो कारो रे ॥ स० ॥ टेरे ॥ सत्य विश्वासतणों घर  
गेल्यो, विपात्ति रहे सच लारो रे ॥ स० ॥ १ ॥ सुर असुर  
गे पाये लागे, हाकम रीभे न्यारो रे ॥ स० ॥ २ ॥ मुक्ती  
पथनों सचल कहिये, करै जल अनलही दारो रे ॥ स० ॥ ३ ॥  
व्याघ्र वरग स्तंभनको कारण, संपत्ति मिले अपारो रे  
॥ स० ॥ ४ ॥ मुनि राम कहे छै साचही बोलो, तोल  
बधेला धारो रे ॥ स० ॥ ५ ॥ इति सत्य महिमा ॥

## १२ वालम छोटे रे ॥ ए देशी ॥

सुखिया घरमें जनमियो, दुखी थयो किण काज; क-  
र्मको आंदो रे; कोई न खोलणहार, कर्मको आंदो रे; दुखी  
थकी सुखियो थयो, केई करता दीसे राज ॥ कर्म० ॥  
कोईन० ॥ कर्म० ॥ एक आतम खोलणहार ॥ कर्म० ॥ १ ॥  
यज्ञ तपस्वी अवलिया, केई पाले छै ब्रह्मचार ॥ क० ॥  
केई श्रेणी चढ पाछा पड्या, पंडित पेले पार ॥ क० को०  
क० ए० क० ॥ २ ॥ सिद्ध साधक केई पूछिया, फिरयो  
फकीरां लार ॥ क० ॥ ग्रह गोचर केई पूजिया, और पू-  
ज्या पर्वत पाड़ ॥ क० ॥ ३ ॥ किण विध कर्मज बांधियां,  
किण विध दीवी अतराय ॥ क० ॥ लाग्व लयम कर देखि-  
या, पिण कुंण नहीं सक्यो बताय ॥ क० ॥ ४ ॥ कोई आ-  
वक धोरी बाजिया, निंदा करत अपार ॥ क० ॥ केई  
साधुकी करणी करै, पिण पढ़्या निंदाके लार ॥ क०

- ॥ ५ ॥ अरिहंतनो विरहो पड़यो, और अथयो केवल ना  
 ण ॥ क० ॥ पूर्वधारी विच्छेदिया, किण विध पड़े पिछाण  
 ॥ क० ॥ ६ ॥ सम्यक्त्व ही आतां छतां, छटे मिथ्या गांठ  
 ॥ क० ॥ केवल घाती गये हुवे, सिद्ध हुवे क्षय आठ ॥ क०  
 ॥ ७ ॥ अकल पिण चले नही, और चले नहीं कछू जोर  
 ॥ क० ॥ मुनि राम कहे केवल विना, मचियो घोरमघोर  
 ॥ क० ॥ ८ ॥ इति कर्माको आंठो केवली गम्य ॥

१३ हुकम कर दिया सदरसें, पार बुलावे चाल  
 अधरसें ॥ ए देशी ॥

हां हुकम हम दिया सुगुरुनें, दुःख नही देना भूलही  
 परने; दोय बात तू भूल मती नर, दो जा विसरने रे ॥  
 ॥ हु० ॥ टेरा ॥ दोय बात याद रखो प्यारे २, दोय बात  
 देवो विसारे; लक्ष वेद ४ किस्से मथ काढे, कछू पुतरने रे ॥  
 ॥ हु० ॥ १ ॥ परमेश्वर जम यादही रखो २, नाहक वाद  
 करी कयूं वक्तो; कर दिल मंजन, रट ईश्वरने रे ॥ हु० ॥ २ ॥  
 परवर दिगार भजलो प्यारे २, खरची ले लो गैरी लारे;  
 खडे खडे गुरु देव पुकारे, पग धर डरने रे ॥ हु० ॥ ३ ॥ नित्यकी  
 मोतया सिर पर घुमै २, कयू नही माया खरचे संमै;  
 किसके साथ आत ऐ चली, जाना परभव मरने रे ॥ हु० ॥  
 ॥ ४ ॥ दोय बात तो भूलही जानां २, बोलू चौडे नहीं  
 कहुं छांना; कर उपकार विसार हिये सं, कै मत कछू  
 करने रे ॥ हु० ॥ ५ ॥ जो कोई बुरा तुमारा कीना २,  
 जाकूं तूं तो भूल प्रवीना; खडे खडे मुनि राम पुकारे,  
 साधो शिव पुरने रे ॥ हु० ॥ ६ ॥ इति ॥

१४ हांक समदण सदमतवाली ॥ ए देशी ॥

हांक प्रभुको धर्म पियारो, धर्म पियारो लागे प्यारो;  
अरिहंत चारो रे क ॥ प्र० ॥ ढेर ॥ जिसी धर्ममे हिसा  
वरजी, निदच ने व्यवहारो रे क ॥ प्र० ॥ १ ॥ झूठ जि-  
सीमें मूल न भाख्यौ, निरवद्य सत्य उचारो रे क ॥ प्र०  
॥ २ ॥ बिगर दिये कछु तृणा न लेना, रैना खांडेकी धा-  
रो रे क ॥ प्र० ॥ ३ ॥ चित्र प्रतरी वरजी निरखन, जिनसे  
होय विकारो रे क ॥ प्र० ॥ ४ ॥ परिग्रह कारन जग प-  
थत है, पिण तन ममता टारो रे क ॥ प्र० ॥ ५ ॥ रात्री  
भोजन वरज्या जिसमे, जिसके भंगे च्यारो रे क ॥ प्र०  
॥ ६ ॥ ऐसा धर्म तो हुवा न होसी, मुनि राम कहे तंत  
सारो रे क ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

१५ सीटी सननननन् ॥ ए देशी ॥

सुणजो सुगुरु सवाल, ऊमर चले जैसे तार; रहो  
सारे होसियार, चले सननननन् ॥ १ ॥ बखांन सुन्नेवा-  
ले सुनियो, नमोकार गुन्नेवाले गुनियो; सूत्र भग्नेवाले  
भणियो, सुकृत चुन्नेवाले चुनियो; सूत्र पंडितसे भंनि-  
यो, अर्थ पंडितसे सुंनियो; पंडित अग्नेही गुनियो, धूमे  
घननननन् ॥ २ ॥ पंडित करते हैं तरक, नहीं जराही  
करक; जिके ज्ञानमे गरक, फिलके भननननन् ॥ ३ ॥  
ज्ञानके सरने ही आवो, गुरुके चरने सिर नांवो; किमी-  
के औगुन मत गावो, जीवका सुखही जो चावो; प्रभूके  
गुन सुखही गावां, व्यसनके रस्ते मत जावो; मिटेगो  
नरकको दावो, तूटे तननननन् ॥ ४ ॥ अहो गुरुके चरन,  
यावो शीघ्रही तरन; राम गुरुके सरन, अहो गननननन्  
॥ ५ ॥ इति ॥



## १६ लाली रांड छदामी रे ॥ ए देशी ॥

एक बात तौ साची कहूं, सब के जियका हितहा ब-  
हूं; गुरु हुक्मसें बोलूं एम, ऐ जग चलियो जावे रे; मूरख  
भेद न पावे रे, गाफल गोता खावे रे, सत गुरुयूं फुरमावे रे  
॥ टेरे ॥ १ ॥ च्यार गतीमें रुळियो घणो, पारन आयो दुखड़ा  
तणो; जन्म मरणको नाथो पार ॥ ऐ० ॥ २ ॥ मात तात भ्राता  
ने नार, है सगला सुतलवका यार; दुखरी विरियां जावे  
दूर ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ किसकी निंदा भूल न करो, मिनखा  
देहकूं धूल न करो; परका मल कयूं सुखमे धरो, जलती  
लायमे किम तुम परो; पत्थरसे कयूं फोड़ो सीस ॥ ऐ० ॥  
॥ ४ ॥ दान समान नहीं गुण छै और, निंदा सम नहीं  
पापकी ठौर; स्वमत पर मतमें कहे एम ॥ ऐ० ॥ ६ ॥  
साधु संतकी सेवा करो, दान शील तप हियमें धरो;  
मुनि राम कहे सुख रखो विवेक ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ इति ॥

## १७ कुंण मारी पिचकारी रे ॥ ए देशी ॥

आवक वाजे धोरी रे, जांकी करणी फोरी ॥ टेरे ॥  
जिण कर बधियो महा उपकारी, जांरी काटे डोरी रे,  
द्रोही पापी अधोरी ॥ आ० ॥ १ ॥ जमा दबाय चाँडे  
नट जावे, करे पराई चोरी रे; लेवे अधिको जोरी ॥ आ०  
॥ २ ॥ धर्मी वाजने पर धन ठगियो, लगियो कुकर्मके  
दोरी रे; करे वातां ठगोरी ॥ आ० ॥ ३ ॥ पैसा साटे  
पगडी उतारे, निरखी पारकी गोरी रे; खेले परगट होरी  
॥ आ० ॥ ४ ॥ कांदा मूळा सब गटकावे, नहीं छोडे  
काची कोरी रे; नहीं त्याग एकोरी ॥ आ० ॥ ५ ॥ त्यागको  
नहीं कछु ठाह ठिकाणो, वातां वणावे कोरी रे; करे निंदा

साधोंरी ॥ आ० ॥ ६ ॥ स्थादाद धर्म मूल न जाणै, मिल गये मू-  
ख दोरी रे; हठग्राह बकोरी ॥ आ० ॥ ७ ॥ शठ गुरु उत्सूत्र के  
बक्ता, मिल गई सरिखी जोरी रे; सूत्र अर्थ मरोरी ॥  
॥ आ० ॥ ८ ॥ ओछो देव अधिको लेवे, वासै नारदा  
मोरी रे; नहीं यतना जीवोंरी ॥ आ० ॥ ९ ॥ रामचंद्र तो  
यू चेतावे, शुद्ध सामायिक दोरी रे; निंदा करणी सोरी ॥  
॥ आ० ॥ १० ॥ इति ॥

१८ कमर टूटीकी बूटी नहीं है सलम ॥ ए देशी ॥  
खूदीकी बूटी नहीं होती मेरे जालम ॥ खू० ॥ १ ॥ डेर ॥  
धन्वंतरी वैद्य भयो कृष्ण राज्ये, जिणनें पिण नहीं बूटी  
की मालम ॥ खू० ॥ १ ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें टूटी थी,  
रावणसे पिण रहगयो ठालम ॥ खू० ॥ २ ॥ अमर ब-  
ली बली नहीं किसकी, काम पड़ेसे होगई पोलम पा-  
लम ॥ खू० ॥ ३ ॥ सुर नर असुर कणिक्र इंद्रादित्य,  
आई आई खूद मरे सय आलम ॥ खू० ॥ ४ ॥ देहधारी  
फोई एक न बंचियो, मुनि राम कहे खायो रसान भावे  
सालम ॥ खू० ॥ ५ ॥ इति ॥

१९ जिनवर पास पियारो ॥ ए देशी ॥

धोड़ा धोले १ मीठा धोले २, काम पढ्यांसे धोले रे ३  
क; आवक धोड़ा धोले; हां क आवक मीठा धोले; धोड़ा  
धोले मीठा धोले, काम पढ्यांसें धोले रे क ॥ आ० ॥ १ ॥ चिबे-  
कसें धोले ४ निगवे धोले ५, भरम न परका धोले ६ रे क  
॥ आ० ॥ २ ॥ न्यायसे धोले ७ हितसे धोले ८, जबही हो-  
य अमोल रे क ॥ आ० ॥ ३ ॥ अष्ट गुण चाचा आवक सा-  
चा, मुनि राम ते अमृत तोले रे क ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

## २० देशी पूर्ववत् ॥

बहुला बोले १ खारा बोले २, नाहक सिरही पचावे ३ रेक;  
 आवक धर्म लजावे, धर्म लजावे, शोभन पावे, ते किम  
 ऊंचा जावे रे क॥आ०॥१॥विवेकन रक्खे ४ गर्वसें बक्के ५,  
 अखै मर्म विरोध घलावे ६ रे क॥आ०॥२॥न्याय न बोले ७  
 अपकारी बोले ८, मुनि राम तो बसु छुडावे रे॥आ०॥३॥

## २१ देशी पूर्ववत् ॥

थोड़ा बोले १ बोवे बहुला, गर्जसें मिष्ट कहावे २ रे क,  
 आवक धर्म लजावे ॥ १ ॥ काम पळ्यासें झूटूं बोले ३,  
 निर्लज वचन सुणावे ४ रे क ॥ आ०॥ २ ॥ मान न मूके  
 ५ मर्म न चूके ६, श्रुंके विना प्रस्तावे रे क ॥ आ०॥ ३ ॥  
 न्याय उधापे ७ हिंसा थापे ८, उत्सूत्र व्यक्त दृढावे रे क  
 ॥ आ०॥ ४ ॥ आंति पडावे आल चढावे, परकी निंदा  
 गावे रे क ॥ आ०॥ ५ ॥ दान न देवे आडी देवे, मुनि  
 राम तो प्रगट सुणावे रे क ॥ आ०॥ ६ ॥ इति ॥

## २२ पांच म्होर रोकड़ ले लो ॥ ए देशी ॥

परम मंत्र नवकार शिरोमणि, जिनवाणी दाली सब  
 कूड़; जहां देखा जहां कूड़ ही कूड़, छांण कीया तो धूड़ही  
 धूड़ ॥टेर॥ मंत्र यंत्र रसायन इन नामें, ठग खावे खाली  
 मगरूड़ ॥ ज० ॥ १ ॥ इणसे लक्षाधिप कुंण वणियो, गत  
 लक्ष्मी तो सुंणिया जरूड़ ॥ ज० ॥ २ ॥ धूलतणी किम  
 खांड वणेगा, गोमयको किम होवे गूड़ ॥ ज० ॥ ३ ॥  
 पदमणी कामनी वने कहो कैसे, जिण घर शंखनी कर्क-  
 शा फूड़ ॥ ज० ॥ ४ ॥ लाखको मूठियो हाथमें पैंने, केम  
 वने सोनेको चूड़ ॥ ज० ॥ ५ ॥ किसकी सिधाई निजर

न आई, उलटी ठगाई दीसे जरूट ॥ ज० ॥ ५ ॥ वह चूटे  
बलद करे छूटे जोतसी, मंत्रवादी लूटे अरूट मरूट ॥ ज०  
॥ ७ ॥ मुनि राम करे मंत्र यंत्रके चाले, मत पड़ियो जा-  
बोगा बूढ ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति ॥

२३ पांच म्होर रोकड़ लेलो ॥ ए देशी ॥

जहां देवो जहां मुतलय बात, मुतलय विन कोई क-  
त न साथ ॥ ढेर ॥ पुत्र सपुत्र कुलमणि दीपक, स्वार-  
सैं करे मात रुतात ॥ ज० ॥ १ ॥ नारी भर्ता भर्ता  
नारी, सारी दुनियां मुतलय साथ ॥ ज० ॥ २ ॥ बांटो  
बवावे फेर घुचकारे, दूजती गायरी खावे लात ॥ ज०  
॥ ३ ॥ आवण मासमें छाछ न घाले, नृती ज्येष्ठमें क्षीर  
जिमात ॥ ज० ॥ ४ ॥ वैद्य घुलावे औषध खावे, मज्यूं  
काम दुश्मन हो जात ॥ ज० ॥ ५ ॥ पूंजी सूप पिता हु-  
वो घेरी, कृतदारा बैरण हुई मात ॥ ज० ॥ ६ ॥ थाके  
बैलकी सार न पूछै, पक्षी तरु फल क्षीण तजात ॥ ज०  
॥ ७ ॥ चढ़स भरे पर हाथ पसारे, खाली हुवां फेर मारे  
लात ॥ ज० ॥ ८ ॥ केती कहूँ कबू पार न आवे, नारी  
स्वारथके गीतही गात ॥ ज० ॥ ९ ॥ उत्तम पंच महाव्रत  
धारी, पर उपगारी जगमे विख्यात ॥ ज० ॥ १० ॥ धर्मो  
नर विन सब स्वारथिया, मुनि रामचंद साची दरसात  
॥ ज० ॥ ११ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ थारी फूलसी देह पलकमांहे पलटे ॥ ए देशी ॥

वार वार सत गुरु समझावे, सीख हीयामांही धारो

रे ॥ देर ॥ नर भव पाय आय उत्तम कुल, पामीनें मत  
 हारो रे ॥ हां रे पा० ॥ २ ॥ वार० ॥ १ ॥ अलप आज्ञा  
 माटे प्राणी, बांधो मती पापनो भारो रे; बांधे हँसकर  
 भुगतवो दोरो, चेते क्यूं न गिवाँरो रे ॥ हां० वा० ॥ २ ॥  
 सह कुटुंब विटंब कह्यौ जिन, जिनवर वच उर धारो रे;  
 अत सम चेतन एक तारे, नहीं चलसी थारे लारो रे ॥ हा  
 वा० ॥ ३ ॥ काम भोग विपाक सरीखा, क्षण सुख दुःख  
 अपारो रे; इम जाणीनें कोई चेतन चेतो, आ छै वहती  
 वारो रे ॥ हां० वा० ॥ ४ ॥ रामचंद्र कहे गुरु प्रसादे,  
 आगमनें अधिकारो रे; पांचे शीलसातम हरसाळे, बडो  
 धर्म न पगारो रे ॥ हा० वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

### दोहा ॥

परम दुलभ श्रद्धा कही, विन श्रद्धा सब छार ।  
 जिण कारण भविषण सुणो, श्रद्धानो विस्तार ॥ १ ॥  
 मुनि श्रद्धपणो ग्रह्यो, नहीं समकित जो मांय ।  
 पाळे गोयम आणंद ज्युं, तो न लेखे जिनराय ॥ २ ॥  
 अनुतांन बंधी चौकडी ४, समकित ६ मिश्र ६ मिथ्यात ७  
 ऐ सात क्षयोपशम कीयां, पीछे समकित आत ॥ ३ ॥  
 दश थयां श्रावकपणो, चवदे थयां अणगार ।  
 इण विन संजम अभव्यनो, लेखे नहीं नर नार ॥ ४ ॥  
 साधुपणो जो ना पळे, श्रावकना व्रत धार ।  
 पाळो शुद्ध मन भावसुं, हुवे ज खेवो पार ॥ ५ ॥

२ नवकार मंत्रनो ध्यान धरो ॥ ए देशी ॥

प्रमाद मांहे बैस जावे, पछै समायकने मांडो आवे;  
 फेर राग द्वेषनी लागि डोरी, शुद्ध समायक करणी दौरी

विषय विपै निजर जोवे, फेर मैल परायो ते घो-  
वे; निज औगुनने ढकयो री ॥ सु० ॥ २ ॥ मूढो धांधने  
वैस जावे, पछै मैल उतारे खत्त जमावे; सुग्वसूं बोले  
जिम होरी ॥ सु० ॥ ३ ॥ विकथा मांड रखौ चारे, विन  
कारन ओठो लियो लारे; आवक बाज रखौ धोरी ॥ सु०  
॥ ४ ॥ सामायिकमांय करे अटको, सामायिकमांय करे  
मटको; हँसे हँसावे नर गोरी ॥ सु० ॥ ५ ॥ सतासेती करे  
कजियो, कदे कजिया विना नहीं रजियो; पर निदा करणी  
सारी ॥ सु० ॥ ६ ॥ विनय भक्तसूरहे दूरो, पर निदा  
करणनै सदा सूरु; दशमे अग कही चोरी ॥ सु० ॥ ७ ॥  
जीव अजीव नहीं ओळखिया, आवकमांहे बाजे सु-  
खिया; ठाह नहीं अझाको री ॥ सु० ॥ ८ ॥ छळ छिद्र  
जोवे परका, औ गुण नहीं जोवे घरका; सावद्य भापा  
बोले जोरी ॥ सु० ॥ ९ ॥ रामचंद्र कहे सुंण लीजो,  
भाई शुद्ध सामायिक थे कीजो, ज्ञानी सकारे जिम  
तोरी ॥ सु० ॥ १० ॥ इति ॥

३ हमकों छोड चले वन माधो, राधा सोच करे ॥

ए देशी ॥

क्या परकू परमोद लगावे, तू पोते पिंड पाप भन्यौ  
रे ॥ अंदर कपटी बकवद्ध्यानी, तो तेरा काज कबू न  
सन्धौ रे ॥ क्या० ॥ १ ॥ परकू कहे दया उर धारो,  
धारो वचन मत उच रो रे; तूं अविचान्यौ बदे महा  
कडबो, तू हिसक पापी दुष्ट खरो रे ॥ क्या० ॥ २ ॥  
औरनकू कहे मिथ्या मत भाखो, मिथ्या बरोबर पाप  
नहीं रे; तोने झूठतणी नहीं सुग्या, पग पग झूठ बोले

यूं हीरे ॥ क्या० ॥ ३ ॥ मनकूं जीत महाव्रत पाळो,  
 लोभ न करिये एक रती रे; तूं महा लोभी महा-व्यभि-  
 चारी, तो तेरी सुधरे केम गती रे ॥ क्या० ॥ ४ ॥ क्रोधी  
 १ लोभी २ तूं नही पढियो ३, अद्धा हीण ४ प्रवीण नहीं  
 रे; सह सदोष तूं निर्दोष; निज औगुन कयूं न देखे तूं  
 ही रे ॥ क्या० ॥ ५ ॥ जो पोते परमोद लगावे, तो राम-  
 चंद भव पार लहो रे; शिव जातां कोई पल्ला न पकडे,  
 जो कहो जिण रीत बहो रे ॥ क्या० ॥ ६ ॥ इति ॥

### ४ प्यारो मोहणगारो राज मन म्हारो मुगत महलसूं लागो ॥ ए देशी ॥

कोइएक आवक नाम बरावै, जीवाजीव न जाणै; ठे-  
 प बधावै भांता बलावै, रुद्ध आपणी तांणै ॥ आवक  
 सुणजो, थे सुणने हिरदे धरजो; थे आतम कारज कर-  
 जो, थे शुद्ध कृत्य आचरजो ॥ टेर॥ १ ॥ कोइयक निर्धन  
 धनवंत कहिये, हाते लावो लेवै; कोइयक धनवंत निजरां  
 देखो देतां आडी देवै ॥ आ० ॥ २ ॥ केई बखाण सुणे-  
 वा आवै, बायां सांमो जोवै; पूजी बंदणी रही कठेई,  
 उलटी पूंजी खोवै ॥ आ० ॥ ३ ॥ केईयक तो प्रतिलेखन  
 करता, अठी उठीने भांगवै, जयणां करणी रही जठेई,  
 चुग चुग जूवां नाखै ॥ आ० ॥ ४ ॥ केई उत्तम आवक  
 शील ज पाळे, मन रोकीने राखै; केइएक तो पर तिरि-  
 या काजै, ऊपरवाड़ा ताकै ॥ आ० ॥ ५ ॥ केई लघु वयमें  
 हरीकू त्यागै, दुर्गति ताळा जडिया; केई बूढ़ा मूळा कां-  
 दा भोटे, खावणलारे पडिया ॥ आ० ॥ ६ ॥ उत्तम आ-  
 वक झूठ न बोलै, झूठो लागै खारो; केई झूठसु खोवै

जमारो, अपजस होवे न्यारो ॥ आ० ॥ ७ ॥ केहयक स-  
तियां शील ज पाळे, पती कन्हैया जोडै; केहँ व्यभिचा-  
रण पतिने छोडी, पर नर नीच न छोडै ॥ आ० ॥ ८ ॥  
रामचंद्र मुनी हम भाखै, राखो निरमल किरिया; कपट  
करी उत्सूत्र प्ररूपी, कोई पूरवे नहीं तिरिया ॥ आ०  
॥ ९ ॥ इति ॥

### ५ देशी नवरासानी ॥

विना विचारी तूं क्यूं बोले, तोल घटे छै थारो रे, पंचां  
माँहे पतळी होवे, तूं काज बिगाड़े छै म्हांरो रे; हू तोने  
वरजूं छूं, तू विना विचारी मत बोल, रसना वरजू  
छू ॥ १ ॥ डेर ॥ दोहा पहेली गीत ख्याल ते, विन सीख्यां  
तोने आवे रे; धर्मतणो अक्षर नही बैसे, जो बहुली बार  
यतावे रे ॥ हू० ॥ २ ॥ विन पूछ्यां ही पर निदा तूं, छत्ती  
अछती गावे रे; गुणवतना गुण पूछ्यां ढांके, ओ काँई  
थारो स्वभाव रे; रसना वरजूं छू, वैरण वरजूं छू ॥ वि०  
॥ ३ ॥ च्यार ह्वां तौ चौडे रे वे, रखवाळो नहीं ज्यां रे  
रे; तू विलवासी बहु रखवाळा, तो पिण धस आवे  
वारे रे ॥ र० हू० ॥ ४ ॥ शब्द रूप गंध फरस च्यारुमे;  
एक एक औगुन होय रे; तूं खाय बिगाड़े बोल बिगाड़े,  
तोमँ अवगुण दोय रे ॥ र० हू० ॥ ५ ॥ तूं पोते रस्ते नहीं  
चाले, वे परने उपदेश रे; जो तोने प्रभु भजवा छेडूं,  
तो आलस करनें बैसे रे ॥ र० हू० ॥ ६ ॥ रसना बोली  
सुण चेतनजी, जो नहीं पोखो मोय रे; तो पंजर सूके  
च्यारुं मुरमावे, देश ऊजड होय रे ॥ र० हू० ॥ ७ ॥ चेतन  
बोले सुण जीभडली, म्हाँ देश वसास्यां और रे; रामचंद्र  
कहे छै मन म्हांरो, ज्यां नहीं थारो जोर रे ॥ र हू० ॥ ८ ॥



यूं हीरे ॥ क्या० ॥ ३ ॥ मनकूं जीत महाव्रत पाळो,  
लोभ न करिये एक रती रे; तूं महा लोभी महा व्यभि-  
चारी, तो तेरी सुधरे केम गती रे ॥ क्या० ॥ ४ ॥ क्रोधी  
१ लोभी २ तूं नहीं पढियो ३, अद्धा हीण ४ प्रवीण नहीं  
रे; सह सदोष तूं निर्दोष; निज औगुन कयूं न देखे तूं  
ही रे ॥ क्या० ॥ ५ ॥ जो पोते परमोद लगावे, तो राम-  
चंद भव पार लहो रे; शिव जातां कोई पल्ला न पकडे,  
जो कहो जिण रीत बहो रे ॥ क्या० ॥ ६ ॥ इति ॥

४ प्यारो मोहणगारो राज मन म्हारो  
मुगत महलसूं लागो ॥ ए देशी ॥

कोइएक आवक नाम धरावै, जीवाजीव न जाणै; दे-  
प वधावै भांता घलावै, रुढ आपणी तांणै ॥ आवक  
सुणजो, थे सुणनं हिरदे धरजो; थे आतम कारज कर-  
जो, थे शुद्ध कृत्य आचरजो ॥ टेर ॥ १ ॥ कोइयक निर्धन  
धनवंत कहिये, हाते लावो लेवै; कोइयक धनवंत निजरां  
देखो देतां आडी देवै ॥ आ० ॥ २ ॥ केई बखाण सुणे-  
वा आवै, बायां सांमो जोवै; पूंजी बंदणी रही कठेई,  
उलटी पूंजी खोवै ॥ आ० ॥ ३ ॥ केईयक तो प्रतिलेखन  
करता, अठी उठीने भांखै, जयणां करणी रही जठेई,  
चुग चुग जूवां नांखै ॥ आ० ॥ ४ ॥ केई उत्तम आवक  
शील ज पाळे, मन रोकीने राखै; केइएक तो पर तिरि-  
या काजै, ऊपरवाड़ा ताकै ॥ आ० ॥ ५ ॥ केई लघु वयमें  
हरीकूं त्यागै, दुर्गति ताळा जडिया; केई बूढा मूळा कां-  
दा भोटे, खावणलारे पडिया ॥ आ० ॥ ६ ॥ उत्तम आ-  
वक झूठ न बोलै, झूठो लागै खारो; केई झूठसूं खोवै

जमारो, अपजस होवे न्यारो ॥ आ० ॥ ७ ॥ केइयक स-  
तियां शील ज पाळे, पती कन्हैया जोडै; केई व्यभिचा-  
रण पतिनें छोडी, पर नर नीच न छोडै ॥ आ० ॥ ८ ॥  
रामचंद्र मुनी हम भाखै, राखो निरमल किरिया; कपट  
करी उत्सूत्र प्ररूपी, कोई पूरवे नही तिरिया ॥ आ०  
॥ ९ ॥ इति ॥

### ५ देशी नवरासानी ॥

विना विचारी तूं क्यू बोले, तोल घटे छै थारो रे, पंचां  
मांहे पतळी होवे, तूं काज विगाडे छै म्हारो रे; हूं तोने  
वरजू छूं, तूं विना विचारी मत बोल, रसना वरजू  
छू ॥ १ ॥ ढेर ॥ दोहा पहेली गीत ख्याल ते, विन सीख्यां  
तोने आवे रे; धर्मतणो अक्षर नही बैसे, जो बहुली बार  
घतावे रे ॥ हूं० ॥ २ ॥ विन पूछ्यां ही पर निदा तूं, छत्ती  
अछती गावे रे; गुणवतना गुण पूछ्यां ढांके, ओ कांई  
थारो स्वभाव रे; रसना वरजू छूं, बैरण वरजू छू ॥ वि०  
॥ ३ ॥ च्यार इत्यां तौ चौडे रे वे, रुखवाळो नहीं ज्यां रे  
रे; तूं विलवासी बहु रुखवाळा, तो पिण धस आवे  
घारे रे ॥ र० हूं० ॥ ४ ॥ शब्द रूप गध फरस च्यारूंमे;  
एक एक औगुन होय रे; तूं खाय विगाडे बोल विगाडे,  
तोमे अवगुण दोय रे ॥ र० हूं० ॥ ५ ॥ तू पोते रस्ते नहीं  
चाले, ये परने उपदेश रे; जो तोने प्रभु भजवा छेडू,  
तो आलस करने बैसे रे ॥ र० हूं० ॥ ६ ॥ रसना बोली  
सुण चेतनजी, जो नहीं पोखो मोय रे; तो पंजर सूके  
च्यारूं मुरभावे, देश ऊजड होय रे ॥ र० हूं० ॥ ७ ॥ चेतन  
बोले सुण जीमडली, म्हा देश वसास्यां और रे; रामचंद्र  
कहे छै मन म्हारो, ज्यां नहीं थारो जोर रे ॥ र हूं० ॥ ८ ॥

## ६ देशी सूदानी ॥

बोल रे जगवासी जिवड़ा, जिन वरना गुण मुखसूं बोल  
 ॥टेरे॥ सर्व जंजाल ख्यालसा जांणी, निज गुण आतम परगट  
 खोल ॥ बो० ॥ १ ॥ पुद्गल संग प्रसंगे रुळियो, सद्गुरु वचनसूं  
 पडि अय तोल ॥ बो० ॥ २ ॥ मत कर जीव ममत्व तूं  
 भोळा, कयूं हारे नर भव रतन अमोल ॥ बो० ॥ ३ ॥  
 मात पिता घर कुटुंब कबीलो, कुंण छै थारा मुखसूं खो-  
 ल ॥ बो० ॥ ४ ॥ रंक राव सब कालको चारो, क्या बोलूं  
 मै बजाई ढोल ॥ बो० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहै सुणजो सब  
 भाई, मत राखीजो अबके पोल ॥ बो० ॥ ६ ॥ इति ॥

## ७ नाथ कैसे गजको फंद छुड़ायो ॥ ए देशी ॥

दश दूषण तो मनके जांणो, दश वचन बारे काया;  
 आणा प्रमाणे करो सुध भावे, श्री जिनराज सुणाया  
 रे; आवक शुद्ध सामायिक करिये, दोष बतीस परिह-  
 रिये रे ॥ आ० ॥ १ ॥ विन अवसर १ जसकाजे दूजो २,  
 तीजो लाभ ३ चिते मन मांहीं; अहंकार ४ चौथो भय  
 ५ मन आंणे, छठे निदान ६ कराही रे ॥ आ० ॥ २ ॥  
 सशय ७ धारे गुसो ८ मन राखे, बैगारी ९ परे लागे;  
 दशमो दोष विनय कर हीणो १०, वचनके दश सुणो  
 आगे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ कुवचन १ दूजो विना विचार्यो  
 २, डिगतो डिगतो बोले ३; विपै वचन ४ डंताचलो भाखे  
 ५, वाद करे विन तोले ६ रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अक्षर ओछो  
 ७ हास्य मुख करतो ८, विकथा ९ नवमे वखांणो; आवो  
 पधारो करे खुलेसूं १०, ऐ दश वचनका जांणो रे ॥ आ०  
 ॥ ५ ॥ बारे कायारा ठांसली मारे १, चंचल आसन

घारे २; विपै दृष्ट जोतो ३ घर काम करतो ४, विन हेतु घोठो लियो लारे ५ रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ अंग उघाडे अति अंग दांके ६, सातमे आलस मोडे ७, मोडे कडका ८ खाज खिणे तन ९, मैल उतारे चौडे रे १० आ० ॥ ॥ ७ ॥ चरण चंपावे ११ नांद घुरावे १२, इम दोष वारे काया; मुनि राम कहे दाळणके ताई, दोष बतीस सुणाया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति ॥

८ हूं तो तोनें नहीं पिछाणूं रे वीरा ॥ ए देशी ॥

जीवा एक चित्त कर उर धरिये, साधू सगत नित करिये ॥ जी० ॥ १ ॥ पेले बोले परणाम जेहवा, कर्म हुवे पिण तेहवा ॥ जी० ॥ २ ॥ कर्म प्रमाणे गति पामीजै, बीजो बोल सुण लीजै ॥ जी० ॥ ३ ॥ तीजे बोले गत प्रमाणे, शरीरतणो उनमान ॥ जी० ॥ ४ ॥ शरीर प्रमाणे इट्टी कहिये, इट्टीसो विषय लहिये ॥ जी० ॥ ५ ॥ छठे बोले विषय कहिये, जेहवा भाव लहिये ॥ जी० ॥ ६ ॥ रामचंद्र कहै सुण लीजो, समझीनें धर्म करीजो ॥ जी० ॥ ७ ॥ इति ॥

९ लालन लील करुंगी रे ॥ ए देशी ॥

नीठ नीठ नरनो भव लाघो, आर्य देशमे आयो; उत्तम कुल आउ लंबो इंद्रिय, शरीर निरोगो पायो; चेतन तूं फिणरो कुंण थारो, चेतन कर रखौ म्हारो म्हारो ॥ १ ॥ मुनि सामग्री सुणवो सिद्धांत, रुचिकर रहो जिन मतमे; अज्ञा विना विना पराक्रम, भटक्यो च्यारूं गतमे ॥ चे० ॥ २ ॥ रे चेतन तूं पुद्गल राची, रुळियो काल अनादी; पर गुण राच्यो निज गुण श्रुत्यो, नहीं समकित तें लाभी ॥ चे० ॥ ३ ॥ भलो हुवो श्रीगुरु देवको, ग्रव सम-

॥ आ० ॥ देर ॥ चुन चुन मटिया महल चुनाया, ऊंडी नीब  
 लगाई; ॥ आ० ॥ १ ॥ नारी रूपा अपछर सरिखा, जोड़ी  
 मिली मन चाई ॥ आ० ॥ २ ॥ सोना रूपा हीरा मोती,  
 म्होरांकी येली चुनाई ॥ आ० ॥ ३ ॥ मात पिता भ्राता सुत  
 भगिनी, जाती न्याती ने मित्राई ॥ आ० ॥ ४ ॥ बसन  
 भूखन बाहन बहुते रे, और सहू ठकुराई ॥ आ० ॥ ५ ॥  
 मंत्र यंत्र ज्योतिष ने वैद्यक, इलम और पंडिताई ॥ आ०  
 ॥ ६ ॥ राज काज हाथी ने घोडे, पलटण और सिपाई ॥ आ०  
 ॥ ७ ॥ दान शील तप भावना भावो, ऐ छै साची कमाई  
 ॥ आ० ॥ ८ ॥ धर्म ध्यान कर पर भव साधो, जद लेखे  
 चतुराई ॥ आ० ॥ ९ ॥ मुनि राम कहे नहीं काया तेरी, क्या  
 कहू दोल बजाई ॥ आ० ॥ १० ॥ इति ॥

## राग ॥

### १ गिरनारी सोरठ ॥

लेले क्यूनी खरची रे, दूर मुकाम ॥ ले ले ॥ कहाँसे आयो  
 कहाँ उठ जासी रे, जहाँ नहीं जाने तेरा नाम ॥ ले ॥ १ ॥  
 नांनिको घर छै नहीं आगे रे, वहाँ नहीं तेरा धाम ॥ ले ॥  
 ॥ २ ॥ बाप दादेको थारे कमायो रे, एक न चाले दाम  
 ॥ ले ॥ ॥ ३ ॥ आ काया तेरे संग न आसी रे, बल जल  
 होसी निकाम ॥ ले ॥ ॥ ४ ॥ राम कहे कहू सुकृत कर ले रे,  
 ज्यू पांमेलो आराम ॥ ले ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥

### २ राग मारु ॥

जीवा तोनें मोह रुलावे हो ॥ जी० ॥ आठ कर्मको

राजियो, जानी पुरुष बतावे हो; शिव नगरीमें जावतां,  
 ओही अटकावे हो ॥ जी० ॥ १ ॥ मोहरायनं जीतवा,  
 कोई विरला पावे हो; नर सुर दूबा एहमे, नहीं ऊंचो  
 पावे हो ॥ जी० ॥ २ ॥ अहि हरि करि अरि जीतवा,  
 नर बहुला धावे हो; पिण राग द्वेषनूं जीतवा, कोई निजरां  
 नावे हो ॥ जी० ॥ ३ ॥ जबरमोह जग जाल छै, सब आगम गावे  
 हो; पति वियोगा कामिनी, जीवत जल जावे हो ॥ जी० ॥ ४ ॥  
 पशु पक्षी बचे पाळही, स्यो नरकी रीत दिखावे हो; सिध  
 सन्मुख कर सीगडा, निज प्राण गमावे हो ॥ जी० ॥ ५ ॥  
 सुकर मोडे लोह सांकळां, दुकर एहनूं तुडावे हो; मुनि  
 राम कहे निरमोहीडा, जियडा जियडा मोक्ष सिधावे  
 हो ॥ जी० ॥ ६ ॥ इति ॥

### ३ राग मांच ॥

परकी हिंसा लागे तोय, मरन तेरा या विध भव भव  
 होय ॥ देर ॥ अजिया सुत कहे सुन मेरे अघमी, क्यू मारत  
 है मोय; जैसी पीडा तेरे होवे, तैसी मेरे होय; मेरा  
 मांस तू हँस कर खावे, ऐसे खावेगा जोय ॥ प० ॥ १ ॥  
 तृणां खाऊं शस्त्र न घाऊं, मै छू जात गरीब; मात हमा-  
 री दूधज देवे, मै भी खुदाका जीव; साहिब पासे पछ्छा  
 पकडू, विना गुन्हे लीया जीव ॥ प० ॥ २ ॥ मुजकूं होमे  
 धर्म बतावे, क्यू होमे न अपना बाप; चबे बचेकू होमे  
 नांही, ज्यू मोचन हुवे तेरा पाप; रे हत्यारा मुक्तकू होमे,  
 ऐसे मरेगा तू आप ॥ प० ॥ ३ ॥ मांसका गृधी मांस  
 खात है, खातां करत बखान; दुष्ट जीवांकू सूग न आवे,  
 धाली मांहे मसान; कुंभीपाकमे मरकर जासी, मारे-  
 सी जम रांन ॥ प० ॥ ४ ॥ जीव उबारे पीड न देवे, झुठ

न बोले कोय; परचीज हरांम जाणे मनसैं, शील वरत  
शुद्ध होय; ममता मारे समता धारे, रामपला न पकडे  
कोय ॥ ५० ॥ ५ ॥ इति ॥

## होरी ॥

१ परदेशीरो कांई पतियारो ॥ ए देशी ॥

झूठा बोलो वचनको पोलो, नही बचनको बंध लिगा  
रो, हाथो ताली कही नट जावे, धिक् धिक् तास जमारो;  
बांधे बहू पापको भारो; झूठा बोलाको कांई पतियारो,  
सदा तुम झूठ निवारो ॥ झू० ॥ १ ॥ क्रोध १ मान  
२ माया ३ लोभसैं ४ बोले, राग ५ रु द्वेष ६ विचारो;  
हास्य ७ भय ८ विकथा ९ सूं बोले, दशमो भेद  
हिसारो १०; बोले सो झूठ छै सारो ॥ झू० ॥ २ ॥  
पैठ प्रतीत नेम सूंस धर्म, खोवे फुन लागे खारो; झूठ  
बरोबर पाप नही है, सुण्यो हेतु वसु राजारो; गयो  
सीधो नरक मभारो ॥ झू० ॥ ३ ॥ संजम आवे मुक्ति  
सिधावे, भंग जो व्रत चौथारो, मृपावादीकूं संजम न  
आवे, पर तन होवे सुधारो; हुवे परभव सुख कारो ॥  
॥ झू० ॥ ४ ॥ चोरी जारी सात व्यसनकूं, सेठ किया  
अगीकारो; झूठको नाम सुणी चित चमक्यो, काळ्यो  
घरने वारो; नही विसवास झूठारो ॥ झू० ॥ ५ ॥ सावदा  
निरवद्य निर्णय करीनैं, पछै वचन उचारो; मुनि राम  
कहे ऐसो बोलीजे, सो लागे सहनैं प्यारो; करो सदा  
झूठको टारो ॥ झू० ॥ ६ ॥ इति ॥

२ किण मार्यौ म्हांरो मोरवताय पापी ॥ कि० ॥ ए देशी  
 किम भूलो रे चिदानंद चाल धरकी ॥ कि० ॥ टेर ॥  
 मृगतृष्णाये मृग घन हूँडे, सिघ भूलो चाल संग भेडरकी  
 ॥ कि० ॥ १ ॥ परी जेवरी रात अघेरी, मानो सर्प नाठो  
 छाती धरकी ॥ कि० ॥ २ ॥ नलिनीको सूवो उडन नहीं  
 पावे, जैसे श्वान भुस्यो निज रूप निरखी ॥ कि० ॥ ३ ॥  
 कपि मुष्टि बांधि घट भीतर, नहीं छोडे मार खाय परकी  
 ॥ कि० ॥ ४ ॥ रामचंद निज रूप निहारो, संग करो तुमे  
 सतगुरुकी ॥ कि० ॥ ५ ॥ इति ॥

### ३ देशी पूर्ववत् ॥

ज्ञान दीपक जोती जगी हियमें रे ॥ ज० ज्ञा० ॥ टेर ॥  
 धूमको लेश न वात प्रवेश न, कर्म पतंग जरे जियमें ॥ ज्ञा०  
 ॥ १ ॥ वाटको भोग न लोग सनेहको, मिथ्या अंधकार  
 विध्वंस तियमें ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ ज्ञान शिखा मुनि राम वेदत  
 है, प्रगट दीसे मोख पथ हियमें ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ इति ॥

### १ रेखतो

किधर गये पापमें मन्ना रे ॥ कि० ॥ इधरकूं फेर नहीं  
 जाना ॥ टेर ॥ गये तो होत नुकसांना रे ॥ ग० ॥ हुवो  
 कोई रंक और रांना ॥ हु० ॥ विषय बीच सुख नहीं पाना  
 रे ॥ वि० ॥ जानो तुम नरककी खांना ॥ जां० ॥ कि० ॥ १ ॥ विषय  
 सुख कस कसके दाना रे ॥ वि० ॥ ताके दुःख मेरु परवांना  
 रे ॥ ता० ॥ मानो तुमवीर परवांना रे ॥ मां० ॥ दूजो तुम  
 कीजो उनमांना ॥ दू० ॥ कि० ॥ २ ॥ रावनसे खोत निज प्राणा



बिन जन्म गमावे, सत्य कहां छां सुणजो भावे; निंदा  
कारण बांधी गाती, संतांनी पिण बाळे छाती; दयाहीण  
ने घणा कठोर, क्षुद्र नीच वळे गुण चोर; निंदासं भुगते  
बहु पीडा, विगडे डील ने पडे ज कीडा; पूत मरे घर  
वीखर जावे, निर्धन होय बहु दुख पावे; घणां निदकनी  
विगडी देखी, निंदकनी विगडे सब शेखी; अंत समो तो  
निश्चै विगडे, मरने नीची गतमें पडे; निंदासं विगडे इह  
लोक, किंसां पुनां सुध रे पर लोक; स्वामी वृद्धिचंदजी  
गुरु हमारा, भेद बताया न्यारा न्यारा; रामचंद कहे सुण  
लो सारा, मत बांधो थे पापना भारा; निंदा फल भुग-  
त्यां छूटेला, भोगवतां हीया फूटेला; इणरा फल खायां  
खूटेला, ज्यां जावो त्यां सिर तूटेला; हम जांणी निज  
निंदा करो, भव सागरथी वेगा तरो ॥ इति ॥

## दुष्ट स्वभाव ॥

### १ देशी ख्यालनी ॥

पापी जीव आवै, कोयलामाटी खावै, ठीकरियां छोडे  
नहीं रे हां; फेर जंग मचावै, जमीकंद चावै, भावे जिम  
बोलै सही रे हां ॥ १ ॥ मोटो ओझर वधावै, पीडा उप-  
जावै, काळो लगावै कोई बातसूं रे हां; दाम छिजावै, ऊं-  
धी मत लावै, वैर वधावै सब साथसूं रे हां ॥ २ ॥ सास-  
जीसूं बोलै, लाज सारी खोलै, बोलै कड़वा बोलड़ा रेहां;  
छाने छाने खावै, वस्तु चुरावै, सुंस भंगावै बड़ा बड़ा रे

हां ॥ ३ ॥ झुंडो भावै, नीद घणी आवै, चित करावै ये-  
कामरी रे हां; धर्म घटावै, पाप बधावै, रीस अणावै राम  
नामरी रे हां ॥ ४ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महाभुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे-  
द्वितीयोपदेशनामकं पष्ठं प्रकरणम् ॥ ६ ॥

## आचार ॥

### दोहा ॥

साधू नाम धरायने, छै अनरथना मूल ।  
धूल कौर जमवारनै, मनमे रह्या ज फूल ॥ १ ॥  
वरतणसुं मालम पड़ै, नहिं समकितनो लेस ।  
निश्चय जाणै केवली, लच्छ अभव्य विशेस ॥ २ ॥  
ऊदाई नृपको यथा, मारयौ ठगने बेस ।  
तद्वत् पापी भेष धर, वरते नीच विसेस ॥ ३ ॥

### ढाळ ॥

१ निन्हव जाणो इण चलगतसू ॥ ए देशी ॥

तदिनी तटे वृक्ष खडो है, निरंकुश होय नारजी; मं-  
त्री हीन होय जो राजा, ज्यू पूज्य विटल परवार जी;  
साध न जाणो इण चलगतसू ॥ १ ॥ पती निबळसुं नारी  
विगडै, घोडो विन ग्रसवार जी; स्थान विगडै निबळ  
धणीसुं, ज्यू पूज्य विटल परवार जी ॥ सा० ॥ २ ॥ राज

विगडै फूटफाटसूं, गृहस्थीनो घर बार जी; थारो म्हारो-  
 राग छेपसूं, केई संत गया परवार जी ॥ सा० ॥ ३ ॥  
 ए मुज समणी ए मुज बाई, ए मुज चेलो होय जी; ज-  
 रा न संकै वीतरागसू, जावै जमारो खोय जी ॥ सा०  
 ॥ ४ ॥ पूज्य आचारे अधिको होवै, तो साधू मानै संक-  
 जी; सबसूं ढीलो पूज होय तो, साधू होय निसंक जी  
 ॥ सा० ॥ ५ ॥ साधू साध्वी भेळा विचरै, साथे करै वि-  
 हारजी; सर्व बातसूं विगड्या समझो, लोप्यो जिण व्य-  
 वहारजी ॥ सा० ॥ ६ ॥ चेला चेली लेई नाठै, देवे भेप  
 पैरायजी; करै चोरी सो चोर कहावै, किम बाजै मुनिराय  
 जी ॥ सा० ॥ ७ ॥ गुरु चेला ने चेली गुरुणी, लडतां देखै लोग-  
 जी; जिन मारगने पूरो लजावै, इम किम मिलसी मोख  
 जी ॥ सा० ॥ ८ ॥ तरुणी अज्जा काजल सारे, नहीं हीर  
 हटक मरजादजी; पट भीणो ओढै तनु भांकै, करै सीख  
 दीयां बकवाद जी ॥ सा० ॥ ९ ॥ पखी चौमासी सब-  
 त्सरी आयां, गृही न रक्खै बैरभाव जी; काट क्रोधसूं  
 जावै जमारो, वळी धारै साधू नांव जी ॥ सा० ॥ १० ॥  
 चंडाल चौकड़ी पासे रैवै, विकल विदल भंडसूर जी;  
 कुमति देवैकुं सदा परायण, सुमतिथकी रहै दूरजी ॥  
 ॥ सा० ॥ ११ ॥ जूं भरिया कपड़ा धर देवै, सह जूवां  
 मर जायजी; खीरा लावै तगरा भरनें, लेई आदी रघाय  
 जी, पहिलो महाव्रत पूरो पड़ियो ॥ १२ ॥ मिथ्या भाखै  
 साट उथापै, पग पग बोलै झूठ जी; आल धुराधुर झूठो  
 दवै, दूजो व्रत गयो ऊठ जी; दूजो महाव्रत पूरो पड़ियो  
 ॥ १३ ॥ चोरी मिनखतणी कर नाछै, वळी पुस्तक चोरै  
 ओरजी; रात्री लेई करै विहार, ते सहकार कै चोर जी;

तीजो महाव्रत पूरो पड़ियो ॥ १४ ॥ चौथा व्रतनी बात  
घणी है, नवि करां एहनी तांण जी; जेहनी बात केवली  
जाणै, स्युं विगडै व्याव बखांण जी; चौथो व्रत कहो  
किम कर रहियो ॥ १५ ॥ पंचमे व्रतमे परिग्रह त्यागै,  
ते कहिये अणगार जी; गृहस्थी मांहे जमा करावै, जद  
विगड्यौ सब व्यवहार जी; पंचमो महाव्रत पूरो पड़ियो  
॥ १६ ॥ तृष्णा लोभ आग पलीता, क्रोधी महा चंडाल  
जी; कपट्टा पुस्तक सचे बहुला, जांणो बडा कंगाल जी;  
पंच महाव्रत कहो किम रहिया ॥ १७ ॥ छटा व्रतमें रात्री  
भोजन, वज्र्यां भंगे न्यार जी; वासी राखै गृही सारिखो,  
दशवें कालिक भभारजी; साध न जांणो इण चलगतसूं  
॥ १८ ॥ दंडवाळेकों दंड विगरही, असणादिक करै अहारजी;  
श्वान गधेनो चाट्यौ मूढो, कुंण होय न्यातने बार जी  
॥ सा० ॥ १९ ॥ आचार्य सपदा एक बतावो, वण्यो राग  
द्वेषनो पुज जी; एकणसूं तो मुग्वै न बोलै, एकणसूं करै  
शुंज जी ॥ सा० ॥ २० ॥ पूज्य शिथिलतौ साधू शिथिला,  
सुद्धारे सुद्धार जी; बीद मूढे जो लाळ पडै तौ, स्यू करै  
जांनी लार जी ॥ सा० ॥ २१ ॥ नीचतणो तो कथन ज  
मानै, शुद्ध साधांसं वैर जी; इह लोके महिमा घट जावै,  
देवे समुदाय विखेर जी ॥ सा० ॥ २२ ॥ समभावे वरतै  
जय पूजै, तब मानै समुदाय जी; नहीतर पूज्यभणी नहीं  
मानै, एह सूधो छै न्याय जी ॥ सा० ॥ २३ ॥ पूज्य तौ बृ-  
भ करै नहीं तिल भर, खळ गुळ एरही भाव जी; हांज-  
रिया आवक मिल जावै, झूठेनी पत्र कराय जी ॥ सा०  
॥ २४ ॥ पूज्य विवेकी विरली ठौडे, विरलो शुद्ध परिवार  
जी; सब समुदाये भाव ए समझो, नहीं एक समुदाय  
विचार जी ॥ सा० ॥ २५ ॥ ए ढाळ सुणीने चढको लागै,

जिणमें ओगुण जाण जी; राम मुनी ए समुचे भाली,  
नहीं छै खांचाताण जी ॥ सा० ॥ २६ ॥ इति ॥

## छंद ॥

काजल सारे तन सिणगारै, डारे दुर्गतिमें अप्पां, नि  
तकी खावै फांद बधावै, आवै जिम मारै गप्पां। तन  
भीणो ओढे दिनकी पोढे, दौड़ी चाले थइ बकं, केईक  
अज्जा खरी निलज्जा, करै अकज्जा निःशंकं ॥ १ ॥ सवा-  
गण थोड़ी विधवा थोड़ी, दौड़ी दाड़ी लार फिरे, बेली  
अलबेली जिणरे थेली, ओळी दोली जास फिरे। नहीं  
रेहे धेठी हुइ गई सैंठी, वैठी रे वे निज अंकं ॥ के० ॥ २ ॥  
थानकमे लावै साधु बोलावै, वात वणावै प्रेमनकी, हसै  
हसावै दंत दिखलावै, लज्जा गमावै तन मनकी। मोह  
अळुभै कछु बन सूझै, अळुभै माखी जिम पंकं ॥ के० ॥ ३ ॥  
साधु मांहै राखै चारै भांखै, रखै निगे सब बारनकं,  
पाट बिछावै साधु बिठावै, अंग दिखावै जारनकं। सं-  
घट्ट कर दे कुचादि मरदै, वाजै छिनमे व्रत भंगं ॥ के० ॥ ४ ॥  
साधु विगड्यौ साध्वी विगडी, रंडी विगडी भेषधर,  
अब होय गई पक्की भई निसंकी, रंगी चंगी थइ निदर।  
पग ऐड़ी धोवै साधु विगोवै, खोल दिखावै निज अंगं ॥  
के० ॥ ५ ॥ कोई छोरी मुंडावै जोवन आवै, गुरणी लावै  
भेषधरं, सुरभी जिम देखी संड विशेषी, केकी घन घूं  
नृत्यकरं। काती जिम श्यानं लगै ओपमानं, लगै न  
ज्ञानं द्रव्यलिंगं ॥ के० ॥ ६ ॥ अक्का जिम रैती बेली सैं-  
ती, संदर बदर सब करती, भूडवापणो करती लज्जारी-  
णी, सीख न माने एक रती। भेष धर भूंडो जासी ऊंडो  
काळो मूंडो कर संगं ॥ के० ॥ ७ ॥ इति ॥

## गीत ॥

१ नागजी सूतो खूटी तांण रे, वैरी म्हारा, वत-  
ळायो बोले नहीं रे जी ॥ ए देशी ॥

साधजी बोलोनी बोल विचार रे, कांई, विन विचा-  
न्यू बोलो मती रे ॥ सा० ॥ यती सरावै नार रे, कांई,  
साध सरावै सो सती रे ॥ १ ॥ सा० ॥ निरबध  
भापा बोल रे, और, साबध कठिन नहीं भाखिये  
रे ॥ सा० ॥ रे तुं अमित अणतोल रे, छोड, पुरो  
विवेक राखिये रे ॥ २ ॥ सा० ॥ चडपुर एक सेठ रे, तहां  
तपस्वी मुनि एक आधीयो रे ॥ सा० ॥ ऊभो गोखे हे-  
ठरे, मुनि, तपत करी दुख पावीयो रे ॥ ३ ॥ सा० ॥  
नहीं पडि मुनि की ठीक रे, तहां, गोखे बैठी नर्मदा रे  
॥ सा० ॥ बाईजी थूक दीयो जहां पीक रे, तब, कोपभ-  
ज्यो मुनिवर तदा रे ॥ ४ ॥ सा० ॥ तूं तो पति वियोगा  
होय रे, डम, शाप दीयो छै मुनिवरू रे ॥ सा० ॥ शापन  
दीजै मोय रे, ह, लुळ लुळने लटका करूं रे ॥ ५ ॥ सा० ॥  
बोले छै अमृत वैण रे, बाई, दीयो शाप टळै नहीं रे,  
बाईजी, मत भर डब डब नैण रे, मैं संयम खोयो छै  
सही रे ॥ ६ ॥ सा० ॥ सो वाते एक बात रे, डम, साध-  
य झूल न भाखणो रे ॥ सा० ॥ राम कहै दिन रात रे,  
मुनि पुरो विवेक राखणो रे ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥

साधजी सीखोनी भाखा विचार रे, ओ, विन भाखा

संयम नहीं रे ॥ सा० ॥ तप संयम जावे हार रे, काँई,  
 सावद्य भाखा जो कही रे ॥ १ ॥ सा० ॥ द्रव्य क्षेत्र का-  
 ल भाव रे, ऐतो, भाखा च्यार प्रकारनी रे ॥ सा० ॥  
 सीखो मन धर चाव रे, काँई, पछै भाखा उच्चारनी रे  
 ॥ २ ॥ सा० ॥ द्रव्यथकी भेद दोय रे, तुमे, सत्य व्यव-  
 हार दो बोलिये रे ॥ सा० ॥ टाळो जे सावज्ज होय रे,  
 तुमे, बोलो पछै धुर तोलिये रे ॥ ३ ॥ सा० ॥ चलता न  
 करणी बात रे, आतो, क्षेत्रथकी भाखा कथी रे ॥ सा० ॥  
 कालथकी पौर रात रे, जिण, उप्रंत थे बोलो मती रे  
 ॥ ४ ॥ सा० ॥ भावथकी बोल आठ रे, काँई, क्रोध मान  
 भाया लोभ ही रे ॥ सा० ॥ भय हासो दो दाट रे, और,  
 मुखारी कथा नही सोभही रे ॥ ५ ॥ भेख अनंतीवार रे,  
 पिण भाखा भेद न जांणियो रे ॥ सा० ॥ रामचंद्र उच्चा-  
 र रे, तुमे, मत कहो कांणानें काणियो रे ॥ ६ ॥ इति ॥

## लावणी ॥

१ तुम चलो सखी कुछ जेजन करिये ॥ ए देशी ॥

अष्टादश तौ दोष ही टाळो, पाळो मुनिवर व्रत चो-  
 खा; जोखा नहीं छै मुक्त जावतां, जरा नहीं इसमें धो-  
 खा ॥ अ० ॥ ढेर ॥ व्रत पढ़ काय पढ़ ऐ चारै, अकल्प १३  
 गृह भाजन १४ जानों; पल्यंक १५ गृहस्थ घर ही बैठन १६,  
 स्नान १७ शोभा १८ ठारह मानों ॥ अ० ॥ १ ॥ हिंसा १  
 झूठ २ अदत्त ३ मिथुन ४ ऐ, परिग्रह ५ निश भोजन  
 दारो; वासी रखै सो गृहस्थ सरीखो, जिसका भंगा छै  
 च्यारो ॥ अ० ॥ २ ॥ पृथिवी १ अप २ तेजने ३ वायू ४,

वनस्पती ५ असका कथना ६; वनस्पतीमें जीव अनन्ता,  
शेष असंख करो जतना ॥ अ० ॥ ३ ॥ द्वादश बोल तो  
हो गये ऐसैं, अकल्प बोल कहीये, च्यारं; वस्तर पातर  
आहार रु धानक, निर्दोष ग्रहे अनगारं ॥ अ० ॥ ४ ॥  
गृहीका भाजन सब ही वरज्या, बोल भये चवदे ऐसैं;  
पनरमे बोल पल्यंकासन ही, मुनिवरजी भोगे कैसे ॥  
॥ अ० ॥ ५ ॥ गृहस्थी घर नहीं वैसे मुनिवर, तपस्वी  
रोगी वृद्ध खरो; और भणी नहीं हुक्म दिया है, बोल  
सोलमे अमल करो ॥ अ० ॥ ६ ॥ स्नान देशनें सबही  
वरजी, जावजीव मुनि वरताई; सोभा वरजी बोल ठा-  
रमे, कज्जल पीठी करे नाई ॥ अ० ॥ ७ ॥ दशवें कालिक  
ग्रध्येन छठेमे, सूत्र टीका विस्तार जहां; मुनि राम कहे  
एक बोल सेवे तो, जिस पदसैं मुनि अष्ट कहा ॥  
॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनिश्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतसरसंग्रहे  
आचारनामकं सप्तमं प्रकरणम् ॥ ७ ॥

## चरचा

चरचा विपरीत प्ररूपक तथा तेना  
आचरणनी लावणी ॥

१ सदाशिव पाखती प्यारा ॥ ए देशी ॥

सदा मुज सूत्र लगै प्यारा, कुशुका करियो मुख  
कारा ॥ देर ॥ अजी सूत्र सरीसो धर्म नहीं जग, उस्सूत्र



सम नहीं पाप; अडंग बडंगकी गप्पा भारै, करै कल्पना  
 थाप; लोक गढरिया जाणै सच्चा, दीये सूत्र उत्थाप; नर-  
 कमें करसी डेरा, आवकनैं लेसी लेरा, नंदी बैतरनी  
 पासी, ऊंचा फेर कबू न आसी; मीधा वे निगोद जासी  
 बे ॥ सदा मु० ॥ १ ॥ बत्रीस सूत्र मांना म्हे तो, ते पिण  
 मांनां पाठ; आगम तीन प्रकार बरावर, निदे गहली टाट;  
 इस कहनीसैं भ्रष्टी कहिये, ग्रही नरककी बाट; केवलीकूं  
 भूत लगावे, तेरसकी पखी ठावे; निगोदकूं मारे हाथां,  
 अभक्ष तो चौडे खाता; मूरख जानैं सरातावे ॥ स० ॥ २ ॥  
 उष्ण जल तो तपमें पीणां, कुगुरां थापी छास; सूत्र  
 ठाणांगे परगट देखो, दीखे जैनाभास; लघुनीतसैं जावे  
 भाडे, करै धर्मका नास; चौडे छै भृष्टी पूरा, निगोदमें  
 पटके फूरा; सूत्रसैं पात्र भराया, धर्मनैं पूरा लजाया,  
 गृहस्थका धर्म गमाया बे ॥ स० ॥ ३ ॥ साधू धदन गृह-  
 स्था जावे, तामें पाप बतावे; पुस्तक पड़ला धोवे मात्रे,  
 मधु माखणने चावे; टीका उथापे खरा अज्ञानी, जानैं  
 शीश नमावे; भूलतो मोटी कहिये, दुष्टसैं दूरा रहिये;  
 लेखे नहीं करनी जेहनी, करो मत महिमा तेहनी; भूल  
 संग करो न एहनी बे ॥ स० ॥ ४ ॥ गृहस्थकी आठ  
 खावे अरु थापे, जैनी सुन सरमावे; जनम मरनका स-  
 तक वरज्या, ते पिण लावे खावे; रजस्वलादि मूल न  
 टाळे, अकाले सूत्र सुनावे; सूत्रसैं विरुद्ध आचरना, सब  
 त्सरी चौथकी करना; मिथ्याती आज्ञा बारे, सूत्रकूं  
 नांही विचारे; भोलेकूं फंदमे डारे; राम कहे ते किम  
 तारे बे ॥ स० ॥ ५ ॥ इति विपरीत प्ररूपक तथा तेना  
 आचरणनी चरचा समाप्ता ॥

## २ चरचा छाछनी-सवैया ॥

मासादि करावै तप छाछादि पिवावै और, घोलिया  
 महेकी जात पिब्यो ही बखाने है । ऊन्हो जल निंदे कोई  
 पीनेकर करावै त्याग, ऊन्हो जल बज्यो कहां पूछ्या  
 ऊधी ताने है ॥ वासमें अगार केते बोले हैं सूत्रके बीच,  
 कदसैं सरू ए हुई कौन कौन माने है । आधो दूक रक्खा  
 पैली वास ही दोरो हुवां, खायेत बनेगो वास न्याय  
 हुन जाने है ॥ १ ॥ एक बात पूछां महे तो पचखाण कहे  
 दस; नोकारसी आदी ऐतो कौनमे धसाये है । तेले उप-  
 रांत देखो ठाणांगजी तीजे ठाणे, ऊन्हा जल विना मा-  
 त्र दूजा न दिखाये हैं ॥ सूत्रमे वरज कीये तेई काम करे  
 थापे, जिसो दूजो कौन पापी बोधे भरमाये है । मनही-  
 सूं करे थाप मनसूं उथाप करे, सूत्रसेती नांही डरे राम  
 कलु आये है ॥ २ ॥ ऊन्हा जलसेती अच्छी कहे छास  
 वास मांहे खरा है अजान जाने सूत्र ज्ञान नांही है ।  
 हीयेकू ठंठोके नाह धर्म आजामांहे कखो, दूध दही छा-  
 छ देखो कौन शास्त्रे गाई है ॥ मनसूं करे छै छांन छः  
 कायको कूटो होवै, कबो जल अच्छो जदि ऐसे ही सु-  
 नाई है । राम करे न्यातकेरा त्याग कीया कोई भाई,  
 घरमांहे जीमे कैसे आरंभ कराई है ॥ ३ ॥ इति छा-  
 छनी चरचा ॥

## ३ चरचा थानकरी ॥

## दोहा ॥

थानकमे रहना नहीं, कहते केइयक मूढ ।

सूत्र रहस्य जानें नहीं, तानें अपनी खुद ॥ १ ॥

आधाकर्मी दोष है, भोळानें कहे एम ।

तेहनों उत्तर हूं कहूं, सांभळजो घर प्रेम ॥ २ ॥

धर्मसाल थांनक कहो, कहो वा पोपधसाल ।

जिणमें उतरे साधु सुध, लीजो सूत्र निहाल ॥ ३ ॥

गृहस्थ रहे जिण जायगां, जिणमें रहे जो साध ।

भेषधारी द्रव्य साधु है, उपजे बहोत उपाध ॥ ४ ॥

भूत भविष्यत् वर्तते, निश्चय मुनिवर तेह ।

केवलि वचनांसें कहूं, जरा नही संदेह ॥ ५ ॥

थांनक उथप्यो खोडले, परथम तेरा पंथ ।

रतन हुकम पंथी अवर, निद ही बाजे संत ॥ ६ ॥

थांनक शाला उतरे, जिणरो शासतर लेख ।

जंघमती चरचा करे, साधू नहि ते भेख ॥ ७ ॥

छेले आरे लाधसी, उपाश्रम शुध साध ।

थांनक बाहिर साधु कुंण, कहे कोई करनें बाद ॥ ८ ॥

थांनक उतरे साधु है, देखो सूत्रकी राह ।

बाहिर उतरे साधु हे, सो जाने जगनाह ॥ ९ ॥

थांनक उथापै पैल ही, थे साधूकै नाह ।

मूढ मती समझे नहीं, नहीं समझणकी चाह ॥ १० ॥

दांन दया थांनक उथप, चलियो भीखम पंथ ।

एक उथपे तेहनें, किम जाणो शुध संत ॥ ११ ॥

आचारांगजु सूत्र मां, कछो साधु आचार ।

भिन भिन करनें ओळखो, जिम पांसो भव पार ॥ १२ ॥

जो करणी दुःकर करे, तो न करे पर \*निद ।

कर्म वधे निदाथकी, कछो सिद्धांत जिनंद ॥ १३ ॥

दुखमी आरौ पांचमो, बधियो वेष अपार ।  
भेख देख झूलो मती, ओळखजो आचार ॥१४॥  
जिनचर धचन उथापने, थापे आपनो मत्त ।  
ते पाखंडी सारिसा, रुळसी च्यारु गत्त ॥१५॥

## ढाळ ॥

१ सूरि जन कर्म समो नहीं कोई ॥ ए देशी ॥

दशवैकालिक सूत्र मांदि, चाल्या बोल च्यार; पिड  
सिज्जा वस्त्र पात्र, भोगवे शुद्ध अणगार रे, प्रांणी, समभे  
आचारमे विरला ॥ १ ॥ असांण पांण खादम सादम,  
नहीं लगावे दोख; मुहादाइ मुहाजीवी, पांमे दोनूं मोख  
रे, ॥ प्रां० ॥ २ ॥ अठारे प्रकारे धानक चाल्या, तिणमे साधू  
रेवे; इत्थि पशू पिंडग हुवे ते, मन करी नहीं सेवे रे ॥  
प्रां० ॥ ३ ॥ केई केहे धानक मांहे, साधूनें नही रहणो;  
कैसो दोष लागे साधूनें, पाछो तिणने कहणो रे ॥ प्रां० ॥ ४ ॥  
आधाकर्मी दोष बतावे, धानक साधां काजे; नीपे गूप्ते  
आछो करावे, बळी साधारं नांवे वाजे रे ॥ प्रां० ॥ ५ ॥  
पाछो तिणनें प्रत्युत्तर देणो, साधू नांमे वाजे धान; यथा  
दृष्टान्त कोईयक नर, संजम लीघो बुद्धिवान रे ॥ प्रां० ॥  
॥ ६ ॥ लारे जिणरी स्त्री जायगां, तिणरे नांवे वाजे; कांई  
दोष लागे साधूनें, कछ्यासुं भर्म भाजे रे ॥ प्रां० ॥ ७ ॥  
अथवा साधू मुक्ति विराज्यो, आठ कर्मानें काप; ते  
शरीर मुनि वाजे प्रजाल्या, कांई सिद्धानें लागे पाप रे,  
कुमति, कयूं दूबो निदा करने ॥ ८ ॥ इण चरचामे  
चतुर समभे, नही समभे धोगा; निदा करी करे आत

मा भारी, जाणो च्यारुं गति जोगा रे कु० ॥ ९ ॥ आचा-  
 रांग दूजा श्रुतस्कंधे, अध्यायन पेहेलो वाचो; वाचीने तो  
 निंदा निवारो, अणूता मति नाचो रे ॥ कु० ॥ १० ॥ नोरा  
 दुकांनारा ताला खुलावो, उतरो मझमें देखी; नीपे गूंपे  
 आरंभ थावे, उतरो किम करो सेखी रे ॥ कु० ॥ ११ ॥  
 यत्र ममता तत्र दोष, कांई थांनक दुकांन; सूत्र वांचो  
 ने अर्थने धारो, क्यूं करो कूडा तोफांन रे ॥ कु० ॥ १२ ॥  
 जिण जागामें अन्य साध हुवे तो, शहरमें नहीं आवो;  
 जो आवो तो वारे कढावो, थे चडफेर तंबू खंचावो  
 रे ॥ १३ ॥ तंबू खंचावे जिण जायगां, चौडे दोष लागे;  
 पछै गृही कांई तंबू खंचावे, थे करो रेवणरा त्याग रे ॥ कु०  
 ॥ १४ ॥ नित्य घरनो म्हे पांणी न लावां, भाषा बोलो ऐ-  
 सी; वारी बंधियो पांणी लावो, ओ संजम किम रेसी रे  
 ॥ कु० ॥ १५ ॥ पांणीनें म्हे एकांतरे आसां, मति बीजाने  
 बहिराजे; एक दिवस तो पांणी न देवे, एकांतरे थारें  
 काजे रे ॥ कु० ॥ १६ ॥ नित्य पांणी बायां भेल्लो कीयो  
 ते, लावो हांडा भर भर पांणी; कपडाई करी संजम खो-  
 वो, इण सोभामें कांई खांणी रे ॥ कु० ॥ १७ ॥ अधिकाई  
 तो कांई न दीसे, दीसे अधिक कपडाई; निंदा पिण ईजापै  
 दीसे, एह करी अधिकाई रे ॥ कु० ॥ १८ ॥ घाई जातसं  
 परचो ईजापै, वखत कुवखत गिणै नाई; आघाकर्मी  
 आहार ईजापै, एह करी अधिकाई रे ॥ कु० ॥ १९ ॥ अंग  
 विझूया पिण ईजापै, हीये विचारी जोवो; थापना थांन-  
 क परगट सेवो, तो थांनक थांनक स्युं रोवो रे ॥ कु० ॥  
 ॥ २० ॥ इत्यादिक विचारी जोज्यो, जठै मूर्छा तठै दोख; राम-  
 चंद कहे निंदा निवारो, तो पामेस्यो मोख रे ॥ कु० ॥ २१ ॥

स्वामी वृद्धिचंदजी प्रसादे जोड़ी, लाभ अधिको जांणी;  
ढीला होसी सो रीसां बळमी, लेसी आपमें तांणी रे;  
कुमति कयूं डूबो निदा करने ॥ २२ ॥ इति धानकरी  
चरचा समाप्ता ॥

### ४ चरचा तेरापंथियोंकी-सवैया ॥

उनिको अभाग पूरो गुरु किये तेरापथी, दया दान हीया  
सेती पूछने मिटाहो है । कपटमे कपट जांके दुष्ट प्रणांभी  
पूरे, कूरे कूरे सूत्रकेरी शाख दरसायो है ॥ दया दान  
जावै जब लिलाडीको तेज मिटै, ऐ तो चौड़े बात नहीं  
ढेपसू सुनायो है । बुद्धिवांन होवे प्रांणी इनकी श्रद्धाकूं  
त्यागै, जांको भाग जागै शुद्ध श्रद्धामांय आयो है ॥ १ ॥  
पाठहीको मौड़े चौड़े असजती पोषणिया, ऐसो खोटो  
पाठ लिख सूत्रही सिखायो है । महावीर स्वामी चूका  
बतावै निशंक मूढ, रूढ़हीको तांणै जांरे हीये तम छायो  
है ॥ साधूहीके फासी दर्द दयावंत खोलै कोई, दोनूकूं  
बतावै तुल्य ऐसो तत पायो है । जीवकूं बचावै कोई  
मारै सो सरीखा गिणै धिक्क धिक्क ऐसो पथ दाय नहीं  
आयो है ॥ २ ॥ सौळमां शतक बीच उद्देशे तीजे कै मांह,  
अर्श मुनीकी देख वैद्य काट डारी है । ध्यानारूढ ऋषी ख-  
डै दोपारां लां त्याग्यो तन, नाक श्वास स्थे मुनि वेदना  
तौ भारी है ॥ मुनी के क्रियाही नांह धर्म अंतराय वि-  
ना, वैद्यके क्रिया छै शुभ बडो उपगारी है । सूत्रमे सु-  
लास पाठ अर्धाकार किये अर्थ, मूरख उलटी कहै जाकी  
मति कारी है ॥ ३ ॥ आचारांग दूजै स्कथ अध्ययन तीजेके  
बीच, मुनी तौ विहार करै मृग यूथ देखा है । पारधी  
पूछै छै मुनी मृगादिक देखा तुम, जानै झूठ घोलै जान्यू

लाभ ही अलेखा है ॥ सूत्रहीके पाठ मौडे मौनहीकी करे  
 थाप, मौन पाठ लारे और भगवती पेखा है । मूल सूत्र  
 टीकाकार अर्थ नहीं माने मूढ, पहाड उडाडे जहां पूछे  
 पूंणी लेखा है ॥४॥ देव गुरु धर्म लोप मन मते पंथ काढ,  
 अर्थ हीन जी जी कहै देखो ऊंधमती है । वीर चूका गुरु  
 झूला लुपक दयाके पूरा, तेरापंथी भेखधारी देखो नीच  
 गती है ॥ तत्त्वकी खबर नांह चातां तौ जबर करै, दोष  
 सूं भरे है पूरे कहै नहीं रत्ती है। पूछे प्रश्न दयाहीन झूला  
 खायां कांई हुवे, आवकको पेट आछो करै क्योंन जत्ती  
 है ॥ ५ ॥ भगवती आदि सूत्रे आवक अभंग छार, अनु-  
 कंपा दान देखो कहां वरज किये हैं । प्रदेशी तौ भाग  
 च्यार ज्यामें दानशाला चल्लू, कीधी और प्रभू सारे वरसी  
 दान दिये हैं ॥ तेरापंथी साधू बिना सबीकों दियेमें पाप,  
 ऐसी थाप करै दुष्ट जरा नहीं बिये है । भोळेको भ्रमाय  
 पापी खोटे पंथ मांहि राळै, अमृतकू छोर दोर मूढ जैर  
 पीये हैं ॥६॥ बृहत्कल्प पैलाध्ययन कंवाड़ साधून घरज्यो  
 साध्वी उघाडे खोलै मूढ ऐसी गाई है । पैतीसमाध्ययन  
 उत्तराध्ययनजीको नाम लेवै, खरा है अजाण जांमे ज्ञान  
 रत्ती नांही है ॥ जिन कल्पी न खोलै स्थविर कल्पी खोलै  
 जडे, दिखावां म्हे सूत्र मांह देखो कयूं न आई है । सूत्र  
 रहस्य जाणै नांह शब्दको बोध नांह, परलोक डर नांह सुसं-  
 भ्वान दाई है ॥ ७ ॥ मूंजी नेकठोर और कदाग्रही निरदयी  
 ऐसे जीव हुवे ताकूं अन्धा एह रुचे है । सूत्रके न्यायसेती माड  
 ग्रंथ म्लेच्छ बिना, विरुद्ध ओ कुरूप्य ऐसो माने झूठे लुचे है ।  
 खोजी होई सूत्र रुची शास्त्रज्ञ विवेकी कोई, पुन्यधारी अद  
 पाय पाछी फेर मुचे है । इचर्ज आवै है एक होवै जे वि

वेकवंत, देख अंध कूप परे मानो ग्रह कचे हैं ॥ ८ ॥ तेरा पंथी सेती मेरा द्वेष नहीं प्यारे भाई, उत्सूत्र कहन सेती द्वेष मेरा जानजो । भीषमजीकी कीवी ढाळां सूत्र शाख दीवी देखो, खोजी होई सूत्र जोई ज्ञान दृष्टी छांन जो ॥ चर्चाहीको काम काई पक्षपात विना देखो, ढालियांकी बात पर अद्धा मत आंनजो । राम सुनी कहै प्यारे अद्धा शुद्ध करो सारे, सबैया सुनीने नव रीस मत मानजो ॥ ९ ॥ इति ॥

## लावणी ॥

१ अगड़दं अगड़दं वजे दोकड़ा सवाय डंका पारसका  
॥ ए देशी ॥

क्या हमसे तूं करेगा चरचा, दान दया उद्वावत है;  
आगम आगे पता न लागै, बोधांकुं भरमावत है ॥ देर ॥  
प्रतिमाभारी उत्तम आवक, ग्यारमी प्रतिमा बहते हैं ।  
ग्यारे ग्यारे उपवास पारणे, साधूकी पर रहते हैं ॥ क्या०  
॥ १ ॥ दोष धयालीस टाळी बहिरे, आवक शुद्ध बहिराते है;  
उसमें मूरख पाप बतावै, मूं देख्या नहीं जाते हैं ॥ क्या० ॥ २ ॥ भगवती सूतर शतक अष्टमें, छठे उद्देशे गाते हैं;  
अमण शब्दे साधू बोले, आवक माहण कहाते हैं ॥ क्या० ॥ ३ ॥ अमणोपासक दोनु जनेकूं,  
प्राप्तुक शुद्ध प्रतिलाभत है; गौतम गणधर पूछै प्रभूकूं,  
दाता फल क्या पावत है ॥ क्या० ॥ ४ ॥ श्री वीर कहे छै सुण तूं गौतम, एकांत निर्जरा धाते हैं;  
पाप कर्म नहीं किंचित इसमे, परगट पाठ दिग्वाते हैं ॥ क्या० ॥ ५ ॥ अमण मा हण वा दोनु शब्दमें, एक



साधू दरसाते हैं; सूत्र अरथको मरम न जानें, खोटा  
 अर्थ लगाते हैं ॥ क्या० ॥ ६ ॥ इन दोनू शब्दके अर्थ  
 पूर्वे, शतकादि उद्देशे साते हैं; दूजै शतक फुन उद्देश  
 पचमे, साधू आवक फुरमाते हैं ॥ क्या० ॥ ७ ॥ तथा  
 रूप साधू आवकको, शुद्ध आवक प्रतिलाभत है; व्रत  
 बारमो निपज्यो तेहनें, कुमती घोचा घालत है ॥ क्या०  
 ॥ ८ ॥ शतक द्वादश प्रथमोद्देशे, शंख सावस्ति रहते हैं;  
 प्रभु वंदीनें घरकों जावत, सवि आवककों कहते हैं  
 ॥ क्या० ॥ ९ ॥ च्यार प्रकारे विपुल आहार कर, पाक्षि-  
 क पोसा करते हैं । शंख आवक को वचन प्रमाणे, तहत  
 करी उच्चरते है ॥ क्या० ॥ १० ॥ माल खायके पाक्षिक  
 पोसा, किम होते शंका धरते है; पोपध द्विविध वृत्ति  
 खुलासे, सुन कर भरम निसरते हैं ॥ क्या० ॥ ११ ॥  
 इष्ट जन भोजन दान सोई पोसध, प्रथम भेद पुकारत  
 है; आहार त्याग सो द्वितीय पोपध, शंख प्रथम विचा-  
 रत हैं ॥ क्या० ॥ १२ ॥ प्रत्यय टीका वचन विचारो,  
 क्यूं झूठे हमसे लरते है; मज्झम पात्रे आवक भणिया,  
 मूरख व्यर्थ भगरते है ॥ क्या० ॥ १३ ॥ भगवती सूत्र  
 शतक तीसरे, प्रथम उद्देश बखानत है; शकेशानको  
 वाद मिटावा, डंढ तीजो समजावत है ॥ क्या० ॥ १४ ॥  
 द्वादश बोल भव्यादिक आदि, प्रभुक्रं गौतम पूछत है;  
 किन कारन जाव चरम भयो छै, सुन कर भर्म ही  
 गच्छत है ॥ क्या० ॥ १५ ॥ प्रभु भाखे सुण गौतम

गणधर, चण्डविह संघ सुहावत है; हित सुख पथ्य  
 कृपादिक कामुक, सनत्कुमार फल पावत है ॥ कथा० ॥ १६ ॥  
 शतक आठमे छठे उद्देशे, तीजे पाठको तांनत है । असं-  
 यती दान एकांते पाप, जिसकी रैस न जानत है ॥ कथा०  
 ॥ १७ ॥ मोक्षके अर्थ आवक देते, ताकू पाप दिखावत है;  
 \*अनुकृपा नहीं दान निषेधो, जिण जागां अर्थ दृढावत  
 हैं ॥ कथा० ॥ १८ ॥ प्रतिमाधारी तो दूर ही रहियो, अ-  
 नुकृपा दानन उठते है; पापमती तौ पाप बतावे, सो भर  
 नरकां पड़ते है ॥ कथा० ॥ १९ ॥ इत्यादिक तौ पाठ घणा  
 छै, मूरख भेद न पाते हैं; उत्सूत्र प्ररूपी नरकां जासी,  
 आवक पिण जां साथे हैं ॥ कथा० ॥ २० ॥ प्रश्न दयाका  
 दूजा चलत है, अभयदान अति मोटे है; जीव बचाये पा-  
 प बतावत, जिसके लक्षण खोटे है ॥ कथा० ॥ २१ ॥ आ-  
 चारांगजी दूजे श्रुत स्कंधे, अध्ययनतीसरे पठते हैं; जीव  
 बचावा परगट देखो, जानत मुनिवर नटते है ॥ कथा०  
 ॥ २२ ॥ हरिणादिकको टोळो मुनिवर, रस्ते जावत पेखा  
 है; पूछे पारधी कथा तुम देखा ? मुनि कहे हम नहीं दे-  
 खा है ॥ कथा० ॥ २३ ॥ सूत्र भगवती शतक पंचमें, छ-  
 ठे उद्देशे लिखते हैं; मृगादिक द्रव्य झूठको टाली, आ-  
 लादि कटु फल लगते है ॥ कथा० ॥ २४ ॥ सूत्र भगवती  
 शतक पनरमे, प्रभु गोशालो बंचायो है; उत्तर देनेकूं ठौर  
 न लाधी, प्रभुको चूरु बतायो है ॥ कथा० ॥ २५ ॥ जीव  
 बचाये नेम प्रभूजी, जिसमे गोते खाते है; गायों बळती  
 दया करी काढै, जिसकूं पाप लगाते हैं ॥ कथा० ॥ २६ ॥

\* मेवैरुत्थ ज दाण, त पइ एसो निही समवसाओ । अनुकृपा दाण पुण निणेहि न  
 कयाद पडित्तिदम ॥ १ ॥

जीव बंचाये धर्म छै मोटो, टोटो कठै न दाखत हैं; दया  
दान उत्थापे दुष्टी, सूत्र विरुद्ध ही भाखत हैं ॥ क्या०  
॥ २७ ॥ सूत्र पाठ और टीका शास्त्र, सयका वचन उठाते  
हैं; इसा दुष्टकी संग न करिये, रामचंद समझाते हैं ॥ क्या०  
॥ २८ ॥ समत उगणीसे घरस सैंतीसे, फाल्गुन शुद्ध पख  
लगते हैं । ग्राम वकांणी मांहे प्रकाशी, सुन आवक अद्धा  
रखते है ॥ क्या० ॥ २९ ॥ इति सिद्धांतसूचनिका दान  
दयाप्रकाशिका कुमतमतखंडनिका संपूर्णा ॥

## २ तुम चलो सखी ॥ ए देशी ॥

चउव्विह संघनें साता दीजै, जिणसूं शिवपुर थे जासो;  
पंचम अंगे वीरजी भाख्यो, गोतम कर दीयो परकासो  
॥ ढेर ॥ तीजै शतक अरु प्रथमोद्देशे, गोतम पूछै सिर  
नांमी; सनत्कुमार ईशान शक्रको, वाद मिटावै किम  
स्वांमी ॥ च० ॥ १ ॥ जुवानतणे अनुसारे दोनुं, इंद्र तदा  
चुपचाप रहे; वडी पुन्याई तीजा इद्रनी, हंता गोयम  
वीर कहे ॥ च० ॥ २ ॥ उत्तर सूत्रे गोयम इंद्र भव्य, सम्यक्  
दुष्टी परत खरो; सुर्लभबोधी आराधक चर्म, इक संशय  
प्रभु फेर हरो ॥ च० ॥ ३ ॥ किण अर्थे भव्यादिक कहिये,  
चरम शरीरी होय रह्यो; चउविह संघभणी हित कामुक,  
वीर प्रभूजी एम कह्यो ॥ च० ॥ ४ ॥ सुखकामुक पथ्य-  
कामुक वर्ते, कृपादि वांछक संघकेरो; तिण कारण पद  
बोलही सुलंटा, सूत्र पाठ परगट हेरो ॥ च० ॥ ५ ॥ साधु  
आवक दो रत्नकी माला, धर्मपक्षमे दोनुं खडा; जैरको  
बटको कहे आवकने, ते निगुरा महा सूख वडा ॥ च० ॥  
॥ ६ ॥ प्रतिमाधारी आवक उत्तम, जिणने निर्दांप आहार  
दीयो; देणेवालेकुं डूबो बतावे, जिणरो फूटगयो हीयो

॥ च० ॥ ७ ॥ चउब्बिह संघनी वंदगी करतां, उत्तम फल  
सब जीव लहे; भगवतीसूत्रमें परगट देखो; रामचंद्र तो  
एम कहे ॥ च० ॥ ८ ॥ इति ॥

## ढाळ ॥

१ सिद्ध चक्र पद वंदो रे भविकां ॥ ए देशी ॥

कयूंदया दान उधापो रे कुमति, कयूंदया दान उधापो  
॥ देर ॥ प्रतिमाधारी आद्ध साधू सरिखो, दोप बयाळी सटाळे;  
तिण उत्तमनें वैरावत डूवे, कयूं वोलो झूठ पंपाळ रे ॥ कु०  
॥ कयू० ॥ १ ॥ कौनसे सूत्रे पाठ दिखाडो, जदी प्रतीत  
ज आवै; आगम पैताळीसे पाठ न लाधै, जो माथो फो-  
ड मर जावै रे ॥ कु० कयू० ॥ २ ॥ प्रतिमाधारीकूं दीये  
एकांतपापिं, तो दूजारो स्यू केणो; इम सुणतां सब दान  
उथप्पो, एरु ज साधूने देणो रे ॥ कु० ॥ कयू० ॥ ३ ॥  
दान दयाकी जडही काटी, जुक्त लगावै झूठी, धीर प्र-  
भूने चूका बतावै, ज्यांरे हीयारी फूटी रे ॥ कु० कयू०  
॥ ४ ॥ साधू आवक दोनू रत्नांरी माला, सूत्रे कही जि-  
नराज; आवकने कहे जैरको वटको, कहता न नकटा  
लाजे रे ॥ कु० कयू० ॥ ५ ॥ ढीला पासत्या हीणाचारी,  
कपदी कहिये पूरा; निगुरा अवगुण गावण सुरा, साध  
नहीं भंटसूरा रे ॥ कु० कयू० ॥ ६ ॥ आवरु साधू प्रति-  
माधारीकू, दोनूने शुद्ध वहिरावै; धारमो व्रत तौ चौंढे  
दिखायो, पिण भूरख भूला जावै रे ॥ कु० कयू० ॥ ७ ॥  
च्यार संघनै साता दीधां, सनत्कुमार ग्रधिकार; तीजा  
शतकके पहिले उद्देशे, पिण मूढ न समझे लगार रे ॥ कु०

क्यूं० ॥ ८ ॥ जीव वंचायेमें नफ्फो चौडे, गोशालो वीर  
 वंचायो; जब बोलणको रस्तो न लाधो, तब वीरको चू-  
 क दिखायो रे ॥ कु० क्यूं० ॥ ९ ॥ हरिणादिक बहु जीव  
 वंचावा, साधू पिण झूठ बोले; प्रथमांगे सुय खंघ बीजे  
 अध्ययन तीजे, चौडे पाठ अमोल रे ॥ कु० क्यूं० ॥ १० ॥  
 इत्यादिक दान दयाकी चरचा, पिण मूरख उलटी तांणे;  
 मुनि राम कहे हठग्राही म होवो, कीजो सूत्र प्रमाण रे  
 ॥ कु० क्यूं० ॥ ११ ॥ इति दान दया थापन कुमति मुख  
 चपेटिका स्वाध्याय संपूर्णा ॥

## गीत ॥

१ घोड़ी तो आई थारा देशमें, मारुजी ॥ ए देशी ॥

साधू टाळी दान सर्वमे, वारुजी, ऐ पाप बतावै मूढ  
 हो, कुम तीड़ा; इये ससारमें, तारुजी, सूत्र रहस्य जाणे  
 नहीं ॥ वा० ॥ तांणे आपणी रूढ हो, दुरमतिडा, इये  
 संसारमे, तारुजी ॥ १ ॥ अनुकंपा दान न वरजीयो ॥ वा० ॥  
 देखोनी आंख उघाड़ हो ॥ कु० ॥ सूत्र सिद्धांते देख लो  
 ॥ वा० ॥ मत बोलो कुहाड़ाफाड़ हो ॥ दु० ॥ २ ॥ कैई  
 पुन्यपंथी पुन्य मानही ॥ वा० ॥ ते पिण खरा है अजाण  
 हो ॥ कु० ॥ अनुकंपा पुन्य कछां ना रहै ॥ वा० ॥ सम-  
 भोनी चतुर सुजाण हो ॥ दु० ॥ ३ ॥ मिश्रपंथी मिश्र  
 भाखही ॥ वा० ॥ नहीं जांणी तत्त्वनी चात हो ॥ कु० ॥  
 जिनवर वचन उधापिया ॥ वा० ॥ मौन खुलियां थयो  
 मिथ्यात हो ॥ दु० ॥ ४ ॥ मौन कहै उत्तम मुनि ॥ वा० ॥

देखो सूत्र कृत शाख हो ॥कु०॥ मुनि राम कहै सहू सां-  
भळो ॥ वा० ॥ वीर गया इम भाख हो ॥ दु० ॥५॥ इति॥

## गाळ ॥

१ रंग मांणो रे म्हांरा वेलियां ॥ ए देशी ॥

वात सुणो रे एक ज्ञानकी, छोडोनी रूढ अज्ञानकी ॥  
वा० ॥६॥ शास्त्र प्रमाणे उच्चार करीजै, नही कीजै वात  
कहू मानकी ॥ वा० ॥१॥ स्याद्वाद मत श्रीजिनकेरो, न्याय  
सहित परमानकी ॥ वा० ॥२॥ रूढमती तो रूढको तांनै,  
मांनै न सीख गुणवानकी ॥ वा० ॥३॥ केईतरेका घोचा  
घाले, खबर नहीं जानै जानकी ॥ वा० ॥४॥ उत्सर्ग  
अपवाद अपेक्षा, खबर ना वचन विधानकी ॥ वा० ॥५॥  
उत्सूत्र तो मनसूं थापे, आज्ञा उथापे वर्धमानकी ॥ वा० ॥६॥  
जीव वचायांमे पाप बतावै, वात उठावै दानकी ॥ वा०  
॥७॥ कूड़ा चोज कुलिगी दिखावै, झूल बतावै भग-  
वानकी ॥ वा० ॥८॥ जांकी सगत झूल न करिये, जो  
चाह करो रे निरवानकी ॥ वा० ॥९॥ मुनि राम कहे छै  
सूत्रही तारे, कै तारे मंगत गुणवानकी ॥ वा० ॥१०॥  
इति तेरे पधियांकी चरचा समाप्ता ॥

## ५ चरचा कालादिकनी ।

॥ गाहा सम्मत्तिसूत्रम् ॥

कालो १ सहाव २ नियइ ३, पुव्वकयं ४ पुरिस ५ कारणे  
पंच । समवाए संमत्तं, एगंत होई मित्थत्तम् ॥ १ ॥

## ढाळ ॥

१ कळकळ करती वोले छै नारी ॥ ए देशी ॥

कालवादी तो कालको मानें, काल विना नही कोय जी; काल लब्धि पाके जीवा रे, सम्यक्त्वादिक सब होय जी ॥ १ ॥ पांच माने सो ज्ञानी जगमें, एकांते अज्ञान जी; इसकी व्याख्या छै बहुतेरी, समझो तुमे बुद्धिमान् जी ॥ पां० ॥ २ ॥ काल पक्यां विन सम्यक्त्व नांही, कारण सबको काल जी; कार्य होवण हार वणे छै, काल विना नही बाल जी ॥ पां० ॥ ३ ॥ शिष्य पूछे छै काले नीपजै, क्यों अभव्य सम्यक्त्व नाह जी; बांझ नारी नही होय प्रसूता, इम समझो बोल अथाह जी ॥ पां ॥ ४ ॥ दूजो स्वभाव गुरु इम बोलै, अभव्य भव्य स्वभावजी; बांझ स्वभावे पुत्र न होवे, जलमें तिरे छै नाव जी ॥ पां० ॥ ५ ॥ शिष्य कहे जो होय स्वभावे, सम्यक्ति होवे सब भव्य जी; बांझ विना नहीं सब त्रिय जणती, जांको उत्तर कहो अव्यजी ॥ पां० ॥ ६ ॥ तीजो नियति कारण चेला, देव गुरु धर्म योग जी; भव्य सम्यक्त्व लहे भावी कारण, पुत्र न होय संयोग जी ॥ पां० ॥ ७ ॥ शिष्य पूछे भावी जो कारण, देव गुरु धर्म होय जी; बहू भव्य तौ रस्ते न आवे, नहीं सके मिथ्यात्व खोयजी ॥ पां० ॥ ८ ॥ गुरु कहे पूर्व कृत छै चौथो, सात कर्मको जाणजी; दो से त्रीस कोटा कोटी सागर, स्थिति कही जग भाणजी ॥ पां० ॥ ९ ॥ यथा प्रवृत्ति करण आयो थो, अपूर्व करण नहीं आय जी; जिणसूं समकित भव्य न पांमै, किम धनो शिव नही जाय जी ॥ पां० ॥

॥ १० ॥ पुरुषाकार पंचमो चेला, पूर्ण धये निर्वीण जी;  
मुनि राम कहे पंच मानें सो ज्ञानी, मूढ एकांत वखांण  
जी ॥ पां० ॥ ११ ॥ इति कालादिकनी चरचा समाप्ता ॥

## ६ चरचा षट् मतनी-गीत ॥

### १ देशी केरवानी ॥

चल जा कदर नहीं जानी, कदर नहीं जानी, धरलेनी  
ज्ञान निशान ॥ च० ॥ देर ॥ मत मिले नहीं एकसें रे ॥ मि०  
सब देखोनी वेद पुरान ॥ च० ॥ १ ॥ शैवी तौ विष्णु  
माने नहीं रे ॥ वि० ॥ वैष्णव करै न शंभू वखान ॥ च० ॥  
॥ २ ॥ शाक्त विष्णु शिव ना गिने रे ॥ वि० ॥ देखोनी  
खांचातान ॥ ३ ॥ नैयायिक कर्ता मानही रे ॥ क० ॥ वेद-  
पाठी न करत प्रमान ॥ च० ॥ ४ ॥ मुनि राम कहे स्याह्या-  
दकू रे ॥ क० ॥ अगी करो ज्यूं होय कल्यान ॥ च० ॥ ५ ॥  
इति षट् मतकी चरचा समाप्ता ॥

### ७ चरचा मंदिरपंथीनी-सवैयो ॥

भट्ट ही प्रवीन नर पटके बनाये कीर, ताही कीर देख  
कर थिल्ली ह न मारे है । कागजके कोर कोर ठौर ठौर  
नाना रंगे, ताही फूल देख दूर मधुर छारे है ॥ चित्र-  
हका चीता देख श्वान तासे डरे नांह, बनावट ईला ता-  
से पछीह न पारे है । असल औ नकलको जाने राम  
पशु पछी, मूढ नर जाने नहीं नकल कैसे तारे है ॥ १ ॥



## लावणी ॥

जीव हणीनें धर्म प्ररूपे, जिसका मुख होसी काला;  
 बगवत्वाणी सुनिचे प्रांनी, हिसा धर्मका कर ढाला  
 ॥ जी० ॥ १ ॥ जीव हणे अरू हणवावे, हणतेकू जाणे  
 भल्ला, जिसकू साधू मूरख माने, समझू नहीं भीटे पल्ला  
 ॥ जी० ॥ २ ॥ आवक सात क्षेत्र धन खरचै, ऐसी झूठ  
 कहे गल्ला, सूत्रकेरी शाख बतावै, खत प्रमाणे नहीं न-  
 कलां ॥ जी० ॥ ३ ॥ सात क्षेत्र धनकू खरचो, भगवत  
 इम नहीं फुरमावै; भृष्टाचारी परिग्रहाधारी, भोळा न-  
 रनें भरमावै ॥ जी० ॥ ४ ॥ कापडी हूयने राखे छड़िया,  
 वळे ज राखे चपरासा; उण भृष्टीको संग न कीजै, सग-  
 तसें दुर्गति वासा ॥ जी० ॥ ५ ॥ रंडीकू राखे पाखंडी,  
 एकांते रेवे भेला; ऊंचा जाणैका हुकम नहीं है, उनकू  
 साधू कहे गेला ॥ जी० ॥ ६ ॥ साधू शुचि कुसाग्र जित-  
 नी, वायूकू नहीं हणवावै; साधू नहीं वै भ्रष्टी कहिये,  
 नोयत द्वारे बजवावै ॥ जी० ॥ ७ ॥ गृहस्थी साथे जल  
 मंगवावै, उष्णोदक कही करवावै; दुर्गतिमांहे रूपसी  
 भंडा, आवक पिण साथे जावै ॥ जी० ॥ ८ ॥ कनक  
 कामिनीसे नहीं न्यारा, राम कहे सहु जाण लियो;  
 फूटी नाव पर बैठै मूरख, जिणरो फूट गयो हीयो ॥ जी०  
 ॥ ९ ॥ इति मंदिर पंधियांकी चरचा ॥

चरचा निश्चय व्यवहारनी—गाळ ॥

१ पांच म्होर रोकड़ लेलो ॥ ए देशी ॥

एही मत सारां सिरदार, मिटे न किणसू होवनहार;

॥ टेर ॥ उत्थान कर्म बल वीर्य पुरपार्थ, नाहक उद्यम करे  
 नर नार ॥ मि० ॥ १ ॥ पुरुषार्थ करके केई प्रांनि, उलटी  
 लेवे गलामें जाल ॥ मि० ॥ २ ॥ उद्यम कवि कीधो थो  
 सर्पे, मूषक भक्खके निकस्यो बार ॥ मि० ॥ ३ ॥ पुरुषा-  
 कार बलात्प्रयत्ने, भवितव्यनें कुंण धोवणवार ॥ मि०  
 ॥ ४ ॥ नियति बलात् ते अवश्यही होवे, शुभ अशुभ  
 अरु नानाकार ॥ मि० ॥ ५ ॥ महत्प्रयत्ने द्वारका दाहन,  
 भेट न सक्यो कृष्ण मुरार ॥ मि० ॥ ६ ॥ कुंडरीक तपतो  
 सहस्र वर्षको, खोय दीयो एक छिनक मभार ॥ मि०  
 ॥ ७ ॥ मरुदेव्या कवि कीधो थो उद्यम, नर भव लही ल-  
 द्यौ केवल सार ॥ मि० ॥ ८ ॥ नाहक उद्यम करे केई मू-  
 रख, अणहोणी कुंण करे रे जूंभार ॥ मि० ॥ ९ ॥ जोत-  
 सी अपनो इल्म दे आयो, लायो न सोवन सिद्धि प्रकार  
 ॥ मि० ॥ १० ॥ रामचंद्र कहे एकांत ए मत, निश्चै नहीं  
 छै तारणकार ॥ मि० ॥ ११ ॥ इति ॥

## २ देशी पूर्ववत् ॥

सब शास्त्रनको एही सार, निश्चैसू मोटो व्यवहार  
 ॥ टेर ॥ व्यवहार निश्चै गर्भितनय साते, प्रथम व्यवहार  
 को कज्यो उच्चार ॥ नि० ॥ व्यवहार विना नहीं काज  
 होत है, देखोनी तुमे आंख उघार ॥ नि० ॥ १ ॥ विद्या  
 धन अरु गमन क्रियादि, उद्यम विना किम लहे फलसार  
 ॥ नि० ॥ सर्प उद्यम भक्षणको कीधो, विन उद्यम किण  
 कीधूं पार ॥ नि० ॥ २ ॥ कुंडरीक तप करत फल लगियो,  
 नरक गयो व्यवहार विगाड ॥ नि० ॥ मरुदेव्या  
 पिण भावना भावी, मुक्त हुवा छै कर्म निवार  
 ॥ नि० ॥ ३ ॥ सिद्धि न लायो इल्म दे आयो, पूरय

उद्यम फल्यो सहकार ॥ नि० ॥ तुं बोले छै लिखि-  
 यो होसी, तो किम मांड रख्यो व्योपार ॥ नि० ॥ ४ ॥  
 ताला कूँठा क्युं भूतल गाडे; धन आडा क्युं जडे कि-  
 वाड ॥ नि० ॥ निश्चै लिखियो कहो कित जासी, धैल्यां  
 घरदे घरके बार ॥ नि० ॥ ५ ॥ चादर करके मेघही वर्षे,  
 ज्युं निश्चै पिण उद्यमके लार ॥ नि० ॥ नियत बलात्  
 पिण व्यवहार अग्रे, जिसमें सारा लेवो विचार ॥ नि०  
 निकांचित रस मंद होत है, जो साचो उद्यम करे दिल  
 धार ॥ नि० ॥ निकांचित कर्म टले एक छिनमें, क्षण श्रेणि  
 सब चढे नरनार ॥ नि० ॥ ७ ॥ निश्चै लिखी जब मुक्ति  
 होयगा, करे कुंण करणी विविध प्रकार ॥ नि० ॥ एक निश्चै  
 मानें कोई मूरख, उलट पुलट सब होवे संसार ॥ नि० ॥  
 ॥ ८ ॥ सात प्रकारे आयु घटत है, जोवो ठाणांगसूत्र  
 मभार ॥ नि० ॥ गाय भैसको नहि घर धोंगे, दुग्ध दाहि  
 घृत खावै मंजार ॥ नि० ॥ ९ ॥ वीर प्रभूजी ओषद लीधो,  
 व्यवहारनें रखियो मुखत्यार ॥ नि० ॥ व्यवहार निश्चै  
 दोय जैनी मानें, स्थान प्रधान कथंचित् धार ॥ नि० ॥ १० ॥  
 वचन सापेक्षिक सब ही ठौरे, गौण मुख्यको करो नि-  
 रधार ॥ नि० ॥ राम मुनि कहे गुरु गम धारो, नय  
 प्रमाणे करोनी उच्चार ॥ नि० ॥ ११ ॥ इति व्यवहारस्य  
 प्रधानत्व ख्यापनम् ॥ इति निश्चय व्यवहारनी चरचा  
 समाप्ता ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे-

चरचानामकं अष्टमं प्रकरणम् ॥ ८ ॥

## नेमनाथ-चरित्र ॥

### १ सिलोको ॥

सद्गुरु कृपा करजो जी हमसे, नित नित पाये लागुं  
 जी तमसे; कैसु सिलोको नेमजीकेरो, सुणताई होवे काज  
 भलैरो; नगरी द्वारामती कृष्ण बसाई, जादवांकेरी  
 चढती पुन्याई; सोनेकी नगरी अद्भुत दीपे, क्षिणमे तो  
 बेरी जादव जीपे ॥ १ ॥ एक दिवस श्रीनेम कुमारो, आये  
 गन्ध शालामे साथीड़ा लारो; शख वजवायो धनुष्य  
 चढायो, सुणताई शब्द कृष्ण धररायो; ओ राज लेवे  
 जो नारी परणाउं, परणे नहीं परणे निश्चै करवाउं; राजि  
 मतीनी कीधी सगाई, छपने कोढ़सूं जान वणाई ॥ २ ॥  
 हार्थ पर शोभे नेम जिणंदो, अधिका तो शोभे तारामे  
 चंदो; नर नारीका मिलिया यहु वृंदो, घर घरमे होवे  
 अधिक आनंदो; पशुवांसूं बाढो दीठो जी भरियो, छोटी  
 पशुवाने उपगार करियो; तोरणसूं पाछा प्रभुजी बलिया,  
 राजिमतीरे आंसू जी ढलिया ॥ ३ ॥ सखियां थे जावो  
 नेम मनावो, अध परणी छोट्यां शोभा नहीं पावो; स-  
 खियां तो बोले नेमजी काळा, दूजा थे परणो रूपरसाळा;  
 राजिमती बोली सखियां थे गेली, इण भवमे म्हारे  
 प्रभुजी बेली; संजम लेस्यां भवोदधि तरस्यां, निर्मल  
 भावांसूं किरिया जी करस्यां ॥ ४ ॥ सातसो सखियां  
 धई छै लारी, मारगमे वर्षा धई छै भारी; गुफा मध्य  
 ग्रार्ह धई उघाडी, रहनेमि मुनिको दिया सुधारी; प्र-  
 भुजी पामे सजम धारी, प्रभुजी पेली मुक्ति पधारी;  
 समत उगणीसे इगतीसे साल, मेनसरमे जोट्यो शेपे

जीकाल ॥ ५ ॥ मुनि राम कहे छै जेठ महीनो, वद पक्ष  
और एकादशी दीनो; सुणे सुणावे जे नर नारी; ज्यांरो-  
तो होवे खेवो जी पारी ॥ ६ ॥ इति ॥

## होरी ॥

१ मत ताको नार विरानी ॥ ए देशी ॥

सूरज वारमें सूरज पूजूं, जो मिले नेम दुलारी; जो  
नहीं नेम मिले इण भवमें, तो नहीं पूजूं दूजीवारी; स्पृ  
करे कहोनी पुजारी; सुणिये सखि बात हमारी, पिड  
मिले सो सुधवारी ॥ सु० ॥ १ ॥ चंद्र वारमें चंद्रमुखि  
कहे, मेळो मुज भरतारी; थारी सेवा निश दिन करसं  
जो आवे नेम कुमारी ॥ सु० ॥ २ ॥ मंगल वारमें मंगल  
गासां, जो पूगे मन आसा री; नहींतर जंगल मंगल  
गासां, सुणसी बहु नर नारी; कहे हम राजुल हारी  
॥ सु० ॥ ३ ॥ बुद्ध वार सखि बुध एक उपजै, जो आवे  
दिल तुम्हारी; अरजी लिख भेजां साहबकूं, विचमें र-  
क्खो मुरारी; मिटे सखि बात मोसारी ॥ सु० ॥ ४ ॥  
शुक्र वार सुर शुक्र खरो जो, आवे प्राण आधारी; हिल  
मिल बात करु दिल खोली, तेल चढी किम छारी; सीखी  
ए रीत कठारी ॥ सु० ॥ ५ ॥ शुक्र वारमे बात करत ही,  
संकत बुनिया सारी; म्हारी सार करे पिड म्हारो, तो  
मानूं तुज उपगारी; जपूला माला थारी ॥ सु० ॥ ६ ॥  
धावर वारमें मन थिर कीधू, धन धन राजुल नारी; राम-  
चंद्र कहे नेम जिनेंदसु, पेळी मोक्ष पधारी; बळी रह नेम  
सुधारी ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

## गीत ॥

१ पनजी थांरो माथारो डुमालो फूलांहंदो भारो  
जी ॥ ए देशी ॥

जिनजी थांरे दर्शनरी बलिहारी, वारी जाऊं थांरी  
जी, जिनवरजी वारी जाऊं थांरी जी प्रभू म्हांरा ॥ जि० ॥  
थे तो सेवादेजीरा नंदा, समुद्रविजय कुलचदाजी ॥ जि०  
१ ॥ जि० ॥ पशुवनकी करुणा कीधी, दीक्षा शुद्ध लीधी  
जी ॥ जि० ॥ जिनजी थांने राजीमति वंदन आवे, रह  
नेमि समजावे जी ॥ जि० २० प्र० ॥ २ ॥ जिनजी दोनूं  
शुद्ध मन कीधी किरिया, भव सागरथी तिरियाजी  
॥ जि० भ० प्र० ॥ जिनजी थे तो भव्य जीवांने ताज्या,  
आतम कारज साज्या जी ॥ जि० आ० प्र० ॥ ३ ॥ जि-  
नजी थे तो राजीमतिनें तारी, अब छै म्हांरी वारी जी  
॥ जि० ॥ जिनजी दीजो भव भव सेवा तोरी, मुनि  
राम कहे कर जोरी ॥ जि० मु० प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

२ देखो मोरी सहियां हे, राजा तखतसिंघजीरी  
गिणगोर ॥ ए देशी ॥

देखो मोरी सहियां हे, राजा समुद्रविजयजीरो नद;  
देखो मोरी सहियां हे, बाई राजमतीजीरो कंत ॥ डेर ॥  
सखि सोभे जादव मुख जिम चद, देखो रूप सुरतरुनो  
जिम कद ॥ दे० ॥ १ ॥ देखे थांने नर नारीका वृंद, नि-  
रखे थांने सोहम ईसाणेंद ॥ दे० ॥ २ ॥ प्रभुजी सोभे  
जिम तारांमे चद, बाजू सोभे मुकुद ने गोविंद ॥ दे०  
॥ ३ ॥ तोरण देखे पशुवनकेरा बंध, मेढ्या प्रभु सकल

जीवारा फंद ॥ दे० ॥ ४ ॥ मुनि राम वंदे धरनें आनंद,  
करुणानिधि तारो भव समंद ॥ दे० ॥ ५ ॥ इति ॥

श्वांस मंगावो हो वगड़ीका च्यार गाधर धूमेलो  
॥ ए देशी ॥

आ नही जाणें हो जादवकी जांन, जादव रुसेलो; मैं  
नही जाण्या हो जांनी नादांन ॥ जा० ॥ नहीं जांणी हो क्युं  
तोडी तांन ॥ जा० ॥ नहीं जाणी हो कीयो कूडो सामांन  
॥ जा० ॥ १ ॥ जांनी वणिया हो गोपाल मुकुंद ॥ जा० ॥  
देखण आया हो नर सुरका वृंद ॥ जा० ॥ नहीं जांणी  
हो कूडो रचियो फंद ॥ जा० ॥ नहीं जांणी हो फिरे नेम  
जिणंद ॥ जा० ॥ २ ॥ जांन आई हो तोरणकी पोल ॥  
जा० ॥ नहीं पाई हो जादव मन तोल ॥ जा० ॥ घर  
जावे हो क्युं करणी ए रोळ ॥ जा० ॥ नही आवे हो  
पाछी एह छोळ ॥ जा० ॥ ३ ॥ ऐ कुंण कैसी हो जाद-  
वनें जाय ॥ जा० ॥ ऐ कुंण दीधा हो जादव भरमाय ॥  
जा० ॥ म्हे लेसां हो संजम सुखदाय ॥ जा० ॥ नहीं रही  
हो म्हारे तिल भर चाय ॥ जा० ॥ ४ ॥ सती लीधो हो  
संयम शुद्ध धार ॥ जा० ॥ सब सखियां हो थई जिणके  
लार ॥ जा० ॥ मुनि राम हो वंदे वारंवार ॥ जा० ॥ धन्य  
प्रभुजी हो धन राजुल नार ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥

४ वामणका नंद लाला, तुझे पिलाऊं रंग भर  
प्याला ॥ ए देशी ॥

जादवका नेमि लाला, मुझे पिलावो अनुभव प्याला;  
अनुभव पर झुकतो, मुक्ति पथ रमतो, लागी ताळी; ते

प्रीतम आंटी घाली; आंटीको नाम तो खोलो ख्याली;  
 राजीमति वंदन चाली ॥ टेर ॥ जादवका नेमि लाला,  
 रेखा हुवे तो धोय लूं ॥ जा० ॥ कर्म न धोया जाय ॥  
 जा० मु० जा० ॥ और रूठो तो मनाय लूं ॥ जा० ॥ पिण  
 प्रभू न रूठो मनाय ॥ जा० मु० अ० मु० ला० ते० आं० रा० ॥ १ ॥  
 जादवका नेमि लाला, गैणो तूटो तो घड़ाय लूं ॥ जा० ॥  
 प्रीत न जोरे जुड़ाय ॥ जा० मु० जा० ॥ मन मोती तौ  
 ना जुड़े ॥ जा० ॥ लाख जो करिये उपाय ॥ जा० मु०  
 अ० मु० ला० ते० आं० रा० ॥ २ ॥ जादवका नेमि ला  
 ला, थे तो छोड़ी मुजभणी ॥ जा० ॥ मै छोड़्यो संसार  
 ॥ जा० मु० जा० ॥ पच मुष्टी लोचन कीधो ॥ जा० ॥  
 लीधो संयम भार ॥ जा० मु० अ० मु० ला० ते० आं०  
 रा० ॥ ३ ॥ जादवका नेमि लाला वर्षा वरसी माणे  
 ॥ जा० ॥ श्री नेम वंदननें जाय ॥ जा० मु० जा० ॥ रह-  
 नेमिने तारियो ॥ जा० ॥ मुनि राम वदे तोरा पाय ॥ जा०  
 मु० अ० मु० ला० ते० आं० रा० ॥ ४ ॥ इति ॥

५ वामणका आठ कूवा नव वावड़ी ॥ ए देशी ॥

जादवका आठ भवारी पीतडी, जादवका नवमे दी  
 छिटकाय, जिनरायाजी, एकरसा घर आवजो रे ॥ जा० ॥  
 तेल चढी किम छोडीये ॥ जा० ॥ किण दीया थांनु भर-  
 माय ॥ जि० ॥ १ ॥ जा० ॥ इण भव थांसू पीतडी  
 ॥ जा० ॥ बांधी मैं एकतार ॥ जि० ॥ जा० ॥ मन कर  
 अवर वल्ल नहीं ॥ जा० ॥ इण भव तूं भरतार ॥ जि०  
 ॥ २ ॥ जा० ॥ सखी सहेली भेली यई ॥ जा० ॥ कैसी  
 मुं मचकोड़ ॥ जि० ॥ जा० ॥ राजुल तजी किम नेमजी



॥ जा० ॥ होसी कांई एक खोड़ ॥ जि० ॥ ३ ॥ जा० ॥  
 कतयारीरा सूत ज्युं ॥ जा० ॥ ज्युं तूटे ज्युं जोड़ ॥ जि०  
 ॥ जा० ॥ विगर गुन्हे किम छोडिये ॥ जा० ॥ जूनी ममत  
 मत तोड़ ॥ जि० ॥ ४ ॥ जा० ॥ एक पखी स्यो पीतडी ॥ जा० ॥  
 एक स्यो पूतमें पूत ॥ जि० ॥ जा० ॥ एक स्यो आंखमें  
 आंखडी ॥ जा० ॥ हम मन कीधो थिरभूत ॥ जि० ॥ ५ ॥  
 जा० ॥ लोच कीयो सवेगसूं रे ॥ जा० ॥ लीधो संयम भार  
 ॥ जि० ॥ जा० ॥ रहनेमी प्रतियोधनें ॥ जा० ॥ पहुंती गढ  
 गिरनार ॥ जि० ॥ ६ ॥ जा० ॥ पिड पेली गई मोखमें ॥ जा० ॥  
 धन्य धन्य राजुल नार ॥ जि० ॥ जा० ॥ रामचंद्र आनंदसं  
 ॥ जा० ॥ वंदे चारंचार ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥

६ हां रे लाला भाभी कहे सुण सुंदरा रे, हां रे  
 म्हां रे आंगणिये होद खिणाय रे, हूं तो घर बैठी  
 घड़ला भरूं रे; हां रे म्हां रे पिण घटजाय रे बला-  
 य, काजळियो कड़वा तेलको रे ॥ ए देशी ॥

हां रे लाला सखी कहे सुण सांमनी रे, हां रे म्हां रे  
 नेमजी २, न आया कछु दाय रे; धानें और परणावसां  
 रे, हां रे इण कपटी २, नें छुरे रे बलाय रे; सांवारियो  
 कपटी नीसज्यो रे, हां रे यांरा भाई २, सहू दगादार रे;  
 और काळी सूरत नेमकी रे ॥ सां० १ ॥ हां रे लाला  
 राजीमति सती हम कहे रे; हां रे म्हां रे इण भव २, ने-  
 मि भरतार रे; हूं और वर चाहूं नहीं रे, हां रे थे तो  
 सखियां २, मूढ गिवांर रे; सांवारियो हां रे सांवारियो मोरे  
 मन वस्यो रे, हां रे जारी सूरत देखण चाय रे; बांरी  
 सूरतरो नहीं आदमी रे ॥ सां० ॥ २ ॥ हां रे लाला सखी

कहे आपां तेहनो रे, हारे काई गुन हो २, नहीं रे कराय  
रे; क्यू गये तोरन आयने रे, हारे म्हांरे मनको २, भर्म  
न जाय रे ॥ स० ॥ ३ ॥ हां रे लाला राजीमति पाछो  
कहे रे, हारे सखी मत रखो २, भर्म लगार रे; सती स-  
यम लीयो कर्म तोड़िया रे, हारे मुनि राम २, वंदे वारं-  
वार रे; सांवरियो मोरे मन वस्यो रे ॥ ४ ॥ इति ॥

७ गूजर आठ कूवा नव वावड़ी, हे गू० सोले से  
पणिहार, गूजर हे हवादार गूजर, म्हांरो मैहलारो  
मेवासी, छेलो तैं मोह्यो; म्हांरो मैहलारो कमध-  
जियो, ढोलो तैं मोह्यो ॥ ए देशी

सखियां आठ भवारी पीतड़ी हे ॥ स० ॥ नवमो भव  
थयो एह, नेमजी हे दगादार नेमजी, म्हांरो प्राणारो,  
पियारो, साहिव किम रूठो है; म्हांरो नव भवको प्यारो,  
किम रूठो ॥ देर ॥ स० ॥ वसु भवमें नहीं आंतरो हे ॥ स० ॥  
नवमे किम दीयो छेह ॥ ने० ॥ १ ॥ स० ॥ जाती सुमरन  
सुभ थयो हे ॥ स० ॥ जाणू पूरव वात ॥ ने० स० ॥  
सुभ मुख देखी जीमता हे ॥ स० ॥ रहता साथका साथ  
॥ ने० ॥ २ ॥ स० ॥ दोस देऊ किम औग्ने हे ॥ स० ॥ म्हां रे  
पुनारी वात ॥ ने० स० ॥ रतनाकर रतने भज्यो हे ॥ स० ॥  
मीडक लागे हाथ ॥ ने० ॥ ३ ॥ स० ॥ नेमजी छोडी विन  
कारणे हे ॥ स० ॥ हु तो रक्ख ओही रग ॥ ने० स० ॥  
राम वदे कर जोड़नें ॥ स० ॥ कीयो मुगतको सग ॥ नेम-  
जी हे दगादार, नेमजी म्हांरे प्राणारो पियारो साहिव;  
किम रूठो है, म्हांरे नव भव ॥ ४ ॥ इति ॥

## ८ देशी गूजर तथा अलबेल्यानो ॥

सरसत सारद विनबूं हे, गणघर लागूं पाय हे सही-  
हर, म्हे श्रीनेमजीनें वांदसारें लाल; तोरण आय फिर  
कयूं गये हे, दीना लोक हसाय हे सहीहर ॥ म्हे० ॥ १ ॥  
वैर निकाल्यो कोई भवतणो रे लाल, जिणरी खबर न  
काय हे ॥ स० म्हे० ॥ २ ॥ बडा कुलके आदमी हे, करे  
विचारी काम हे ॥ स० ॥ विगर गुने मुजनें तजीरे लाल,  
कयूं कीवी मुज वदनाम हे ॥ स० ॥ म्हे० ॥ ३ ॥ मेरा  
मनमें ए वसी हे, मैं कयूं लीयो जग अवतार हे ॥ स० ॥  
कलंक दीयो कयूं मोभणी रे लाल, प्रभु गयो गढ गिर-  
नार हे ॥ स० म्हे० ॥ ४ ॥ लेऊं फकीरी नेम नामकी हे,  
नां रहूं घरके मांय हे ॥ स० ॥ वन जाऊं व्रत लेयनें रे  
लाल, अब नहीं रखूं किसीकी चाय हे ॥ स० ॥ म्हे०  
॥ ५ ॥ सखी कहे बाई सुणो हे, म्हे पिण तजसां आय  
हे ॥ स० ॥ सुनि राम कहे धन जेहनें रे लाल, करे धर्म-  
को साथ हे ॥ स० म्हे० ॥ श्रीनेमजीनें वांदसां लाल,  
करसां सफल जमार हे ॥ स० म्हे० क० म्हे० ॥ ६ ॥ इति ॥

९ नैणां छाई म्हांरा राज भांगड़ली, धुळ रही  
म्हांरा राज भांगड़ली, एक रुपैकी ढौला भांग  
मंगाऊं ॥ ए देशी ॥

तुम सुनो महाराज वीनतड़ी, म्हांरी मांनो महाराज  
वीनतड़ी, अबघारो म्हांरा राज वीनतड़ी, गिरनारी न  
पधारो म्हांरा राज वीनतड़ी, पाछा पधारो म्हांरा राज  
वीनतड़ी ॥ देर ॥ तोरनथी कयूं पाछा पधारे २, माखी

नहीं मुल्लको मारे, ॥ म्हा० ॥ मुझनें कीवी प्रभु आश  
 निरासी, दूजू सखी करै मोरी हासी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ इसो  
 गुनो तो जाणां म्हे नहीं कीनो, कयूं पशुवन शिर दोष  
 दीनो ॥ म्हा० ॥ तोरन लग किम निकमा आये, कयूं जग  
 लोक हसाये ॥ म्हा० ॥ २ ॥ सखियां कहै धाई आंसू कयूं  
 ढारो, अब तुम छोडोनी नेमको लारो ॥ म्हा० ॥ कपटी  
 नरका क्या विसवासा, छिन छोड चले न गिने वनवा-  
 सा ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ नव भवकेरी देखो प्रीत कयू तोडी,  
 एक भली सो विन परणी छोडी ॥ म्हा० ॥ जनम नि-  
 भाज रूपको साज २, वनडो आछेसे आछो बताऊं  
 ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ राजीमती कहै सखी दूजो न वरसूं, प्र-  
 भुके लारे लारो करसूं ॥ म्हा० ॥ सयम लेसां भव जल  
 तरसां, प्रभुके लार विचरसां ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ राजीमती  
 सती मुक्ति पधारी, मुनि राम कहै जाऊ बलिहारी  
 ॥ म्हा० ॥ इण रीते धन्य प्रीत निभावे, सो कयूं नहीं  
 मुक्त सिधावे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति ॥

१० आवोजी मुसाफर, वैठोजी मुसाफर, को थारै  
 मनकी वातां है; सांवरी सूरत पर कांई कांई वारूं,  
 जो वारूं सोई थोरा है; हीरा वारूं जुहारा वारूं,  
 ओर मोतियनकी माला है ॥ ए देशी ॥

तुमे जावोजी सहेली, लावो जी जादबकू, कहौ जांके  
 मनकी वातां है; जादब जान तो खूब लजाई, मनमां हे  
 राता माता है; सांवरियाजीने देऊ उलभा, ज्यू देऊं  
 ज्यूई थोरा है; ओलभा दे दे हू तो हारी, प्रभुजी थये

कठोरा है ॥ टेर ॥ एक अचंभो आवे मोरी सजनी, क्यूं  
 ए जान वणाई है; लाजन आई फिर क्यूं भागे, नीचा  
 जोवे जांके भाई है ॥ सां० ॥ २ ॥ थे तो मोरी वातां सुणीजो  
 प्रभु लीधा संजम भारा है; हू पिण संजम धारूं मोरी  
 सजनी, कहो स्थूं तोरा विचारा है ॥ सां० ॥ ३ ॥ सातसे  
 सखियां थई तिण संगे, रहनेमी प्रतियोध्या है; राम  
 मुनी तौ सीस नमावे, सती गई शिव जोग निरोध्या है  
 ॥ सां० ॥ ४ ॥ इति ॥

### ११ देशी कुंजेरी ॥

लावो लावो नेमजी मनाय रे, हे म्हांरी सखी सहेली  
 ॥ ला० ॥ तोरणिये आयोडो सायवो किम गयो रे, बुल-  
 वाय दे बुलवाय देरे; तेरा पग पूजूं रे बुलवाय दे; वावारे  
 नेम प्रभु म्हांरो, हां है यादूपति म्हांरो, सांवरो रूढ च-  
 ल्यो रे, किण काज चल्यो रे, वावारे ॥ टेर ॥ वांके म्हारे  
 अष्ट भवरी प्रीतरे ॥ हे म्हां० वारे० ॥ नवमां भवमां छेह  
 दीयो रे, नहीं जाणूं नहीं जाणूं, आंदो किम पड्यो रे;  
 नहीं जाणूं वावारे ॥ ने० ॥ २ ॥ सोहे सोहे नेमजीरो  
 रूप रे ॥ हे म्हां० सोहे० ॥ इण रे जोडे तो जुगमे ना जु-  
 डे रे; सारा जगमें, सारा जगमे, जोयो ना जुडे रे, सारा  
 जगमें ॥ वावारे ॥ ने० ॥ ३ ॥ आई आई चौमासारी रैण  
 रे ॥ हे म्हां० आई० ॥ कंत विना कैसी कामनी रे; नहीं  
 रैसूं नहीं रैसूं रे, न संजम लेवसूं रे; नहीं रैसूं वावारे ॥  
 ने० ॥ ४ ॥ लीधो लीधो संजम भार रे ॥ हे म्हां० ली० ॥  
 केवल लही ने शिव गई रे, थाने वदे थाने वंदे रामचंद्र-  
 मुनि रे, थाने वंदे वावारे ॥ ने० ॥ ५ ॥ इति ॥

१२ उदिया पुरसूं बीजड़लो मंगाय, हो म्हांरी जोड़ी  
राहो ढोलाजी, आंणने रे बुहावो आ कमधजियांरी  
कोटड़ी रे म्हांरा राज ॥ ए देशी ॥

हे दारा पुरीसूं जानड़ली बणाय, हे म्हांरी जोड़ीरी  
हो सहियां; जानी रे माधवसा आ कुमी नही किण  
वातरी रे म्हांरा राज; प्रभुजी रे पासे, जलदी कुंण जाय,  
हे म्हांरी मन गमती हे सहियां, लावे दिलरी रे वात-  
ड़ली, आ आवे पत्री हाथरी रे म्हांरा राज ॥ १ ॥ हे  
जोसीड़ाने बेग बुलाय ॥ हे० ॥ टीपणियो रे फड़ावो,  
ओ खोटो मोरत क्यू दीयो रे म्हांरा राज; जोसीड़ाने  
कैदड़ली कराय ॥ हे० ॥ भूडो रे जोसीड़ो ओ जन्म  
म्हारो विगाड़ियो रे ॥ म्हां० २ ॥ पशुवांसू वाड़ो जी  
भराय ॥ हे० ॥ पथमे रे कुण राख्या, भाख्या कुंण, ए  
मारसी रे म्हांरा राज; मिनखरी दया नही कांय ॥ हे० ॥  
परणीने रे छिटकावे तो पावे शोभ अपारसी रे ॥ म्हां०  
॥ ३ ॥ नहीं तो म्हारो कछु प्रभु जोर ॥ हे० ॥ मुक्ति रे  
जावणसू ओ दिल अब म्हारो जलस्यो रे ॥ म्हां० ॥ मुनि  
राम वदे कर जोर ॥ हे० ॥ प्रभुनारे गुणगातां, सीस न-  
मावतां, दिल वस्यो रे म्हांरा राज ॥ ४ ॥ इति ॥

१३ चतुर गौरीनें मालर खायो जी राज ॥ ए देशी ॥

सहियां कहे राजुल सुणो, बाईजी, काळो नेम कुमा-  
र, बाईजी, काळो मोरा नेम कुमार, हठीला नेमजीनें  
पाछा लावो जी राज; वैरागी नेमजीने जाय मनावो  
जी राज ॥ दाय न आयो मांहरे जी बाईजी, दूजो वरो  
भरतार, बाईजी मोरा ॥ दूजो० ह० ॥ १ ॥ काळो का-

ळो कांई करो हे सहियां, थे तो मूढ गिवाँर; सहेल्यां मोरी थे तो ॥ ह० ॥ अनंत रूप रळियामणो हे सहियां, तीन भवनमें सार; सहेल्यां मोरी ॥ ती० ॥ ह० ॥ २ ॥ जो परणू तो नेमनें हे सहियां, नही तो अकन कँवार ॥ स० नही० ह० ॥ लो कयूं आया ने कयूं गया हे सहियां, इणरो कवन विचार सहियां ॥ इ० ह० ॥ ३ ॥ वार वार थे स्पूँ कवो हो, बाईजी, पूछ कियो निरधार; बाईजी मोरा ॥ पू० ह० ॥ वरसीदान देई करी हो, बाईजी; लेसी संजम भार ॥ बा० ले० ह० ॥ ४ ॥ नेम प्रभु संजम लीयो है सहियां, सुणियो राजुल नार सहियां, ॥ सु० ह० ॥ सातसे सखी संग लेईनें हे सहियां, पौती गढ गिरनार सहियां ॥ पौ० ह० ॥ ५ ॥ रहनेमी प्रतियोधने हे सहियां, सारथा आतम काज सहियां ॥ सा० ॥ रामचंद्र सुनिवर कहे हे सहियां, पांम्यो त्रिभुवन राज सहियां ॥ पां० ह० ॥ ६ ॥

### १४ देशी पन्नारी ॥

श्री नेम प्रभूजी, धोको एक मारे जी अपार, अरजी सुंण लीजै कांई रे दिल आई, हे जगत हसाई कयूं करी रे, म्हांरा राज ॥ देर ॥ गुणवंती राजुल, धोको मति राखो जी लिंगार, म्हांने आंण गळारी सुगती रे जा-वासं, मनसा दढता म्हे घरी रे ॥ म्हां० ॥ १ ॥ छेवा मुक्ति धूतारी नार ॥ अ० ॥ राखेला विलमाई, सो आजं देखण तेहने रे ॥ म्हां० गु० ॥ देखण आबो जी म्हां-री लार ॥ थानें० ॥ दोनूं रे देखेस्यां, हे हिलमिल आपां जेहने रे, म्हांरा राज ॥ २ ॥ श्रीने० ॥ धेईज चाल्या जी म्हांने छोड ॥ अ० ॥ म्हे पिण जी आवां छां, हे कां छां मन साचले रे ॥ म्हां० गु० ॥ राग छेप बध तोड ॥ थां० ॥

पीतडली रे निभास्यो, तो रेस्यो नहीं पाछले रे ॥ म्हां०  
॥ ३ ॥ श्रीने० ॥ तारी तारी राजुल नार ॥ हे अ० ॥ जा-  
दवकुल रे उधारयौ, सारयौ कारज आपरो रे ॥ म्हां०  
गु० ॥ राम वंदे जी वारंवार ॥ हे थां० ॥ गैलो रे छुडावो,  
जलदी पैढो पापरो रे म्हां० ॥ ४ ॥ इति ॥

१५ पाळ चढंतां जी राज, रावजी म्हांरो भरियो  
माट उठाय जी हो मेड़तिया जी राज, हो लश-  
करिया जी राज, नींबू थे लाज्यो राज, रस  
भरियो ॥ ए देशी ॥

प्रभु थे सुणजो जी राज, वीनती म्हारा मनका भर्म  
मिदाय, जीहो मांवरिया जी हो राज, हो के सरिया जी  
राज, पत्र थे दीज्यो राज, रग भरयो ॥ ढेर ॥ चूकथे व-  
तावोजी राज वेगसूं, नहीं तो जीया बहु घबराय जीहों  
सां० ॥ १ ॥ जीहो घाईजी राज क्यूं घबरावो जी राज,  
वाट क्यूं हेरो जी राज पत्रकी ॥ ढेर ॥ सखियां तो बोले  
राज प्रेमसू, किसा वैर कीया जादूनाथ जी हो ॥ घाई० ॥  
ऐ तो जनमका कपटी जी नीकळ्या, गई जादवांकेरी  
वात, जी हो बा० ॥ २ ॥ जाणूं सासूजीरे पाये लागसू,  
देखण सासरियेको कोड ॥ जी हो सां० ॥ जाणूं नणदी  
घाईसू बोलसूं, आप कर दीवी तोडातोड ॥ जीहो सां०  
॥ ३ ॥ जिसांरी जिसी होवे राज माघडी, जिसांरी जि-  
सी होवे छै जी चैन ॥ जी हो बा० ॥ पिण चिन परणीने  
ओडता, वरल्या छै अधिका चैन ॥ जी हो बा० ॥ ४ ॥  
सब प्रतियोवी राज.राजीमति, चिन परणी संयम लेह



॥ जी हो सां० ॥ मुनि राम वंदे जी राज प्रेमसं, छं उत्तम  
मुनि पग खिह ॥ जी हो सां० ॥ ५ ॥ इति ॥

१६ ढोला जी थानें ढोलो जी कहूं क गाढा  
मारुजी; लशकरिये कै वतलाऊं राज वालम  
रसियो ॥ ए देशी ॥

प्रभुजी थानें कपटी कहूं कै धूताराजी; कांई कह वत-  
लाऊं, राज दिल वसियो; जादवजी थे तो दगाबाजीसे  
नहीं न्यारा जी, क्या दिलकी बात सुणाऊं राज ॥ प्र० ॥  
॥ १ ॥ प्रभुजी थे तो कपट सीख्या किण साथे जी, क्यूं  
झूठो दोष दीनो राज ॥ प्र० ॥ थे तो पत्र दीजो लिख हाथे  
जी, कांई गुनो हम कीनो राज ॥ प्र० ॥ २ ॥ जादव  
देखो कपटसें कपट कीजे जी, विन कपटीसें कपट न  
आछो राज ॥ प्र० ॥ मुनि राम कहे मोह तजीजे जी,  
तो पुनरपि नावे पाछो राज ॥ प्र० ॥ ३ ॥ इति ॥

१७ कह गये राजन कह गये जी, कर गये आश  
निराश ॥ ए देशी ॥

फिर गये जादव फिर गये जी, कर गये आस निरास;  
सिर वदनांमी दे गये जी, कांई सखियां कर रही हास  
जी; नींद न आवेजी, लख भेजू, ओछूं थारी आवेजी,  
जायर कही जो वेगा घर आवेजी ॥ ढेर ॥ ऐसा कपटी  
न जांणिया जी, निकले कपटके पूर; ऊपर प्रेम दिखा-  
यनं, कांई पछै उडावे धूर जी ॥ जा० ॥ १ ॥ क्यूं हँसाये  
लोकनें जी, क्यूं लाडा वण्या निशंक; क्यूं तोरण लग  
प्रभु आविया, क्यूं कूडो दीयो कलंक जी ॥ जा० ॥ २ ॥

जो जन्मके कपटी जाणती जी, तो कदेय न करती प्रीत;  
रीत न रक्खी प्रीतकी जी, निकमी करी फजीत जी ॥  
जा० ॥ ३ ॥ मै प्रीत करी छै आपसूं जी, जिणमें न पड-  
जो भंग; मुनि राम कहे धन्य राजमती जी, राख्यो कि-  
रमची रंग जी ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥

१८ कायथका म्हारी अरजी सुन लीजो, काढ कमरमें  
सूँदात कलम म्हारी सूरत लख लीजो ॥ ए देशी ॥

॥ नेम म्हारी अरजी सुन लेना नाथ मे० ॥ श्याम मे०  
प्रभुजी मे० ॥ मुज औगुन जो कछु भी देखा सो, पत्री  
लिख देना ॥ देर ॥ मुज औगुन जो देखिया स कांई;  
पत्री दीजो मांड ॥ प्र० ॥ तोरणसूं रथ फेरने स कांई,  
क्यू जगमे कीनी भांड ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ १ ॥  
जरा औगुन मुज देखिया स कांई, पत्री दीजो अब्ब ॥  
॥ प्र० ॥ सो छाडू एक श्वासमे स कांई, सुन लीजो कहूं  
सब्य ॥ ने० ॥ २ ॥ निकलंक कलंक लगावसो स कांई,  
छो तुम दीन दयाल ॥ प्र० ॥ पूकारू किण आगले स  
कांई, किसकूं काटूं गाल ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ ३ ॥  
पत्री न देवो हाथकी स कांई, वात सुणो एक नाथ ॥  
प्र० ॥ तुम निर्मोही हो रहे स कांई, हम नहीं छोडां  
साथ ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ ४ ॥ साथे सखियां  
लेयने स कांई, चाली छै गिरनार ॥ प्र० ॥ प्रीति निभा-  
वा कारणे स कांई लीधो संयम भार ॥ ने० ना० श्या०  
प्र० मु० ॥ ५ ॥ एक पक्षी प्रीत रक्खू स कांई, लखूं जु  
दिलकी यात ॥ प्र० ॥ राम मुनि चंदे चरणने स कांई,  
कीया मुक्तिका साथ ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ ६ ॥ इति

## १९ जवाईं धोवे धोतियाजी ॥ ए देशी ॥

हांजी नेमजी बावीसमां जिनराज, आय रथ बाळियोजी  
 जिनराज॥आ०॥हां जी नेमजी, राजुल सखियांमांय, सुणी  
 नेम सालियो जी॥जि० सु० जि०॥१॥हांरे वाला, राजुल कहे  
 सखि केम, नेम पाछा रध्या जी ॥ जि० ने० ॥ हांजी प्रभु-  
 जी, पशु पंखियन सिर दोष, देई पाछा गयाजी ॥ जि०  
 दे० ॥ २ ॥ हां रे सजनी, वपे नैणे जल धार, वार विना  
 माछळी जी ॥ जि० वा० ॥ हां रे सजनी, इण अवसर  
 मुज छोड, तोड़ प्रीत पाछली जी ॥ जि० तो० ॥ ३ ॥  
 हांजी नेमजी, हूं ती मनमें हूंस, सारी मनमें रही जी  
 ॥ जि० सा॥ ॥ हांजी नेमजी, सुख दुख दिलरी बात,  
 नाथ मैं तो ना कही जी ॥ जि० ना० ॥ ४ ॥ हां० ॥ सी  
 देखी मुजमें खोड़, तेल चढी छोड़ दीजी ॥ जि० ते० ॥  
 हां० ॥ नव भवकेरी प्रीत, छिनकमांहे तोड़ दीजी ॥ जि०  
 छि० ॥ ५ ॥ हां० निपट कपटरी खान, राज थानें जा-  
 णिया जी ॥ जि० रा० ॥ हां० क्षत्री वंश शिर ताज,  
 आछां थांसूं वांणियां जी ॥ जि० आ० ॥ ६ ॥ हां० ॥  
 नैणां नावे नीद, जादू जादव कीयो जी ॥ जि० जा० ॥  
 हां० ॥ जिम जिम आवो याद, फाटे तिम तिम होया जी  
 ॥ जि० फा० ॥ ७ ॥ हां० ॥ मुक्त धूतारी नार, भरमाया  
 थाने कोडसू जी ॥ जि० भ०॥ हां०॥ हू पिण आसूं ला-  
 र, पलो नहीं छोडसूं जी ॥ जि० प० ॥ ८ ॥ हांजी हीवे,  
 बावीसमा जिनराज, जाय गिरवर चढ्या जी ॥ जि०  
 जा० ॥ हां जी जिनजी, लीयो संजम सुख दाय, धाय  
 क्रमसूं अढ्या जी ॥ जि० धा० ॥ ९ ॥ हां० ॥ सुणियो  
 राजुल एम, नेम संजम लीयो जी ॥ जि० ने० ॥ हा जी

प्रभुजी, उलट्यौ अंतर प्रेम, तेम लोचन कीयो जी ॥ जि०  
ते० ॥ १० ॥ हां० ॥ बहु सखियां परिवार, लार ले नीसरी  
जी ॥ जि० ला० ॥ हां० ॥ चाली गढ़ गिरनार, तार ला-  
गी भरी जी ॥ जि० ता० ॥ ११ ॥ हां० ॥ वरसण लागो नीर,  
धीर भीजे गयो जी ॥ जि० ची० ॥ हां० ॥ गुफा नेम जिन-  
दनो वीर, धीर सती कीयो जी ॥ जि० धी० ॥ १२ ॥ हा० ॥  
राजुल बाधा है नेम जिनद, आनंद मनमे सती जी ॥  
॥ जि० आ० ॥ हां० ॥ काट कर्मना फंद, गई शिव राज  
मती जी ॥ जि० ग० ॥ १३ ॥ हां० ॥ उगणीसे निधि  
मधु मास, वास जालोरने जी ॥ जि० वा० ॥ हा० ॥  
गाया जिन गुण ग्राम, राम कर जोरने जी ॥ जि० रा०  
॥ १४ ॥ इति ॥

२० हूं तोनें पूछूं सुणे रे वेढा माळीका, सड़क पर  
नींबूडो कुंण लगवायो ॥ ए देशी ॥

हूं तोने पूछ सुणरी मेरी सजनी, श्रीनेमीसर वनडाने  
किण भरमायो; तोरण पर हो जी हो, तोरण पर वनडाने  
कुण भरमायो ॥ देर ॥ राजा भरमायो, महाराजा भर  
मायो ॥ तो० ॥ १ ॥ मरमको वचनके साठे सुणवायो ॥  
तो० ॥ २ ॥ जानी रिसवायो के मांटी रिसवायो तो०  
॥ ३ ॥ लेणे देणेको कोई रुकन रखायो ॥ तो० ॥ ४ ॥ इति ॥

२१ देशी पूर्ववत् ॥

हूं तोनें पूछूं सुणरी मेरी सजनी, तोरण पर हो जी  
हो, तोरण पर वनडाने नहीं भरमायो; श्रीनेमीसर वन  
डाने नहीं भरमायो ॥ देर ॥ न राजा भरमायो, महाराजा

भरमायो ॥ तो० ॥ १ ॥ न मरमको वचन साळे सुण-  
वायो ॥ तो० ॥ २ ॥ न जानी रिसवायो न मांडी रिस-  
वायो ॥ तो० ॥ ३ ॥ लेणे देणेको नहीं रुकन रखायो ॥  
तो० ॥ ४ ॥ पशुवांको वाडो प्रभुजी वंचायो ॥ तो० ॥ ५ ॥  
मुनि राम कहे प्रभु धर्म दिपायो ॥ तो० ॥ ६ ॥ इति ॥

२२ जोसीड़ाकी हाटे विलंब रह्यो वनडो, लगन  
ऊपर रीझ रह्यो सिरदार बनो, आछी थांरी बोली,  
पीयारी लागे वनडा, आछी थांरी हाली, सवाई  
लागे वनडा ॥ ए देशी ॥

हाथी होदे छाजे, विराज रह्यो नेमी जिन, तोरण  
ऊपर देखे, रह्या पशु वृंद; आछी थांने दया, पीयारी  
लागे नेमी जिन; आछो थांने शील, सुहायो सागे नेमी  
जिन; इंद्र ही तो आये, सुहाये प्रभु नेमी जिन, विमा-  
नमें खड़े, देखे कृष्णचंद ॥ आ० ॥ १ ॥ क्यूं इंद्र तुम  
आये, बुलाये विन सुरपति, नेमी जिन परणे, नहीं जडु  
नाथ ॥ आ० ॥ म्हे पिण देखे स्या, परणास्यो जदि नर-  
पति, नहीं म्हे तो बोलां, देखेस्यां हुई बात ॥ आ० ॥ २ ॥  
हरिण सूर सूसा, आदि देखे जिन वर, सब बंधही तु-  
झाये, बुढाये दयाल सिधु ॥ आ० ॥ तोरणथी तो घिरि-  
या, चढिया प्रभु गिरि वर, मुनि रामहीकू तारो, उतारो  
पार जग बंधु ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

२३ हस हस पूछूं वात गौरी, आंखड ल्यांरो काज-  
ळ फीको क्यूं पड़्यौ हो राज ॥ ए देशी ॥

हूं तोनें पूछूं वात सजनी ॥ हूं० ॥ नाथ क्यूं फिरिया

वे तो तोरण आयनें हो राज ॥ स० ना० ॥ घड़ी करी  
उत्पात ॥ स० व० ॥ केहने तो हूं भाखूं दुखडो, जायनें  
हो राज ॥ स० के० ॥ थे जावो सासूजीके पास ॥ स०  
थे० स० ॥ आश निराशा मुजने, तुज पुत्तर करी हो  
राज ॥ स० आ० ॥ २ ॥ एकसां करो समजास ॥ प्र०  
ए० स० ॥ परणीने तो जाईजो वन भल संचरी हो  
राज ॥ स० प० ॥ २ ॥ क्यूं करी मुज वदनांम, प्रभुजी  
॥ क्यू स० ॥ किण भरमाया, आया क्यू तोरण ऊपरे  
हो ॥ प्र० कि० ॥ ऐ तो ख्याली नरका काम ॥ प्र० ए०  
प्र० ॥ समरथने नही दोष, जगत हम ऊचरे हो राज ॥  
प्र० स० ॥ ३ ॥ देखी निरमोही थारी प्रीत ॥ प्र० दे० प्र० ॥  
पिण देखोनी करणी, अबे मांहरी हो राज ॥ प्र० पि० ॥  
मुनि राम वंदे थाने नीत ॥ प्र० सु० प्र० ॥ राजीमतीने  
तारी, बलिहारी ताहरी हो राज ॥ प्र० रा० ॥ ४ ॥ इति ॥

### २४ लुहरकी देशी ॥

सखियां हू तोने पूछ वारता, केम गये प्रभु आय;  
घाईजी म्हे पाई छै वारता, कांई हिसा न आई दायं ॥  
वा० ॥ रूप अनतो घणो गुणवतो सांवरो हे ॥ १ ॥ स० ॥  
आपे स्यू करस्यां अयी, कांई जासी किम जमवार ॥  
वा० ॥ अजू कछू नही वीगड्यो, कांई दूजो वरो भरतार  
वा० रू० घ० ॥ २ ॥ स० ॥ दूजाने वांझूं नहीं, कांई लेस्यूं  
सयम भार ॥ वा० ॥ म्हे पिण सजम लेयस्या, कांई रैस्यां  
थारी लार ॥ वा० रू० घ० ॥ ३ ॥ स० ॥ लोच कियो  
जिण महलमें, कांई चाली अनुमति लेह ॥ वा० ॥ श्याम  
घटा उमटी भली, कांई वरमण लागो मेह ॥ वा० रू०  
घ० ॥ ४ ॥ स० ॥ रहनेमीने तारियो, कांई पौंती मुक्त

मभार ॥ वा० ॥ राम मुनि करे वंदना काई दिनमें सो  
सो वार ॥ वा० रू० घ० ॥ ५ ॥ इति ॥

## लावणी ॥

१ वर जोरी ना मिली सखी री मैं जवान वालम  
छोटा ॥ ए देशी ॥

प्राणनाथ ना मिल्यो सखीरी, मुज दिलमें उपजे गोटा  
किसे दोष देऊ, पुरवला पाप कीया मैंने खोटा ॥ टेरा ॥ बडी बरा  
त बनी सखी री, जादव मिल सबही आये; हंसी कुसीसे,  
कुसीसे बाजा सबही बजवाये; उसी बखतमें इंद्रही आये,  
इम करतां तोरण आये; बाडामे देखकें, देखके पशु बंध  
सब तुडवाये ॥ प्रा० ॥ १ ॥ तोरणवी फिर गये सखीरी,  
बडी खराबी कर मेरी; नही मांनी किसीकी, किसीकी  
एक न मांनी हुबो वैरी; वरसीदांन दे संजम धार्यौ, जाय  
चढ्यो गढ गिरनारी; संग उसके जाऊ, जाऊं मुक्त मैल  
नहीं रहूं न्यारी ॥ प्रा० ॥ २ ॥ सबी सखी मिल करे म-  
श्करी, नेमनाथ कैसे छोडी; कुछ औगुण होगा, होगा  
वरावरीकी नही जोडी; दिलकी बात कहा कहूँ सखी  
री, सरमा भरती घबराऊ; अब कहा करीजै, करीजै जो  
गन बन वनमें जाऊ ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ किसका माता पिता  
सखी री, कुंण भरता किसकी नारी; नहीं सग चलेगा,  
चलेगा शुभाशुभ करणी लारी; सातसे सखी संग संज-  
म लीनो, भई रस्ते वरसा भारी, रहनेमी सुधार्यौ, सु-  
धार्यौ मुनि राम कहे हूं बलिहारी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इति ॥

२ गौरी चली सासरे फेरतो कबी आंना ॥ ए देशी ॥

मै जातीहूँ गिरनार कहूँ नहीं छांना, जी रख लेना  
धर्मकूँ याद झूल मत जाना ॥ ढेर ॥ मै नहीं रहूँ घरके  
मांय सधी सुन लेना, जी कुछ कहणे लायक हुये सो अ-  
धी कर देना ॥ मै० ॥ १ ॥ मै नेमनाथका साथ कबी नहीं  
छोड़ूँ, जी हम जिसके सगसे कठिन कर्मकूँ तोड़ूँ ॥ मै०  
॥ २ ॥ श्रीनेम दयाल कृपाल तारेगो हमकूँ, मुज देवो  
रजा मै साच कहूँ छू तुमकूँ ॥ मै० ॥ ३ ॥ सब सखियन-  
की बात हिये नहीं भाती, मेरे नेम बिना नहीं और ज-  
गतमें साथी ॥ मै० ॥ ४ ॥ नही किसीके साथ नहीं  
कोई चलता, विन स्वारथ विन बात कोई नहीं  
करता ॥ मै० ॥ ५ ॥ सती चली गिरनार मार निज  
मनकूँ, जी किसका छै परिवार धूल है धनकूँ ॥ मै०  
॥ ६ ॥ कर सिर लोचन केश संकोची तनकूँ, जी  
चली रस्ताके बीच लग्यो वरसनकूँ ॥ मै० ॥ ७ ॥ रहनेमी  
प्रतिबोध सुधारी काया, जी मुनि राम कहे मै शरण  
तुमारी आया ॥ मै० ॥ ८ ॥ इति ॥

३ अगड़दं अगड़दं बाजे ढंका सवाय ढंका  
पारसका ॥ ए देशी ॥

तुम चलो सखी कुछ जेज न करिये, श्रीनेमीश्वरने यूँ  
कहना ॥ तुम विन अपराध छोडि राजुलकूँ, जाय ओ-  
लभा यूँ देना ॥ तु० ॥ १ ॥ सब शृंगारी सज हय तयारी,  
सधही मुज सगे रहना; गढ गिरनार जाय स्वामिपे,  
दिल्का दर्द कही देना ॥ तु० ॥ २ ॥ मुह मचकोड़ी दे



कर ताली, मुं बिचमें अंगुली घाली; नेम गया सखि  
जावा देनी, उनकी छिब होती काली ॥ तु० ॥ ३ ॥ अ-  
ली वात किम करिये काली, क्या देखूं तुजकूं गाली; अ-  
नंत रूप श्रीनेम विराजे, उनकी छिब मुझकूं वाली  
॥ तु० ॥ ४ ॥ पंच मुष्टि लोच करी आलोच, चलि सखि-  
यनका बृंदन मे; कारी घटा उमठी धुमठ अंधेरा, विजुरी  
पसरी गगननमें ॥ तु० ॥ ५ ॥ मृगपति गाज ओगाज,  
जिम मृगली, तिमही सब सखियन बाठी; जलधारा सारा  
भीना कपरा, दशो दिश सखियन नाठी ॥ तु० ॥ ६ ॥ राजुल  
गुप्ता मांहे पैठी, कपरा सारा सुकवाया; रहनेमी ज्ञान  
ध्यान सब भूलो, नगन रूप देखी काया ॥ तु० ॥ ७ ॥  
रहनेमी बोले सुंण है सुंदर, आपां रहसां घरबासे,  
दुर्लभ लाधो मनुष्य जमारो, बार बार ए नहीं आसे  
॥ तु० ॥ ८ ॥ राजुल बोले सुंण रहनेमी, इम किम बोल  
रह्यौ मुजकूं; कहणो भलो न भलो तुज मरणो, धिक्  
धिक् रहनेमी तुजकूं ॥ तु० ॥ ९ ॥ दे उपदेश विशेष  
हुय हठता, रहनेमी इन पर बोले; तूं गुरणी मात  
समांणी मोरे, तोरे जुगमे नहीं तोले ॥ तु० ॥ १० ॥  
राजमती सती संजम लेकर, भव तरणी कीधी करणी,  
रहनेमी पिण केवल पांमी, दोनू गये है शिव रमणी ॥  
॥ तु० ॥ ११ ॥ संवत उगणीसे वसुधा वरसे, मधुमासे  
विचरत आया; रामचंद मुनि मन आनंदे, उदियापुरमे  
गुण गाया ॥ तु० ॥ १२ ॥ इति ॥

४ अधवीच मोहोवत तोड़ी, वेदरदी रे दिवाना ॥

॥ ए देशी ॥

अध परनी मुजकूं छोड़ी, पिया करी तै नादानी ॥

क० ॥ अच्छा पि० ॥ टेर ॥ प्रभु तेरी मेरी जोड़ी, मांनि-  
क ज्यूं जड़ी थी ॥ अच्छा मां० ॥ चंदासे रजनी प्यारी,  
भाडुकी भड़ी थी; सखि रग रूप चतुराई, गुण करके  
भरी थी ॥ अच्छा गु० ॥ पिया विना परखते त्यागी,  
खोटी के खरी थी, सखी वनमें कोईल घोले, लगे खोटी  
रे जव्यानी ॥ अच्छा ल० ॥ अध प० ॥ १ ॥ प्रभु तेरी  
सोयत करके, एक फंदमे जो पड़ी थी ॥ अच्छा ॥ १० ॥  
ए सास बास रहे छाये, अरदोंकी घड़ी थी, वज घड़ी  
घड़ी घडियाले, क्या वक्त तो अड़ी थी, ॥ अच्छा क्या० ॥  
चल दीये तोरनसे केम, असवारी खड़ी थी; सखि कौन  
तान तो तृदी, हमकों रे वतानी ॥ अच्छा ह० ॥ अध० ॥ २ ॥  
मैं असल फकीरी लूगी रे जंगल में करूं वासा ॥ अच्छा  
जं० ॥ सब आशा तृष्णा मोड़ू, अर छोड़ूं घरवासा, सखि  
कामदेवकू मारूं, लगी प्यारेकी आशा ॥ अच्छा ल० ॥  
गिरनारी पै जाऊ, अर तोड़ू मोह पासा, सखि प्रभुके  
कारनमे तो, वन चलू रे अगवानी ॥ अच्छा व० अध ॥ ३ ॥  
कहे राम सुनि सुनों सारे, सती गई तो निर्वाणा ॥  
अच्छा स० ॥ अँ भरी सभाके मांहि तुम तन मनसैं गांना;  
सखि गुनवतके गुन गाते, अरु सुनते निज कांना ॥  
अच्छा भला सु० ॥ एक जैन धर्मके मांही, मुक्तिका  
ठिकांना, सखि जिसका जीया लेखे, औ घरमी मर्दानी ॥  
अच्छा ओधर्मी० अध प० ॥ ४ ॥ इति ॥

५ सखि पनिया भरन कैसे जाना, पनघट पै  
खड़ा है कांना ॥ ए देशी ॥

सखि रहा नहीं कछू छांना, तोरन पै करा अपमांना

॥ तो० सखी० तो० ॥ टेर ॥ नही इधर उधर कछ सोचा,  
 नही किसके संग आलोचाजी, किम तेल चढी छिटकां-  
 ना ॥ तो० ॥ १ ॥ को किन विध मुं दिखलाऊं, मेरे मनकूं  
 किम ठहराऊं जी; कीये मात पिता सरमांना तो० ॥ २ ॥  
 सखि बात गमाकर जीना, जैसे गृहस्थी धन कर हीना  
 जी; ए दोनूं है मृत्यु समांना ॥ तो० ॥ ३ ॥ गाली गुप्ता  
 घर विच देना, कैना सो गुप चुप कैना जी, नहीं लोक-  
 नमें बुरा दिखाना ॥ तो० ॥ ४ ॥ कहा देखा मुजमे खोरी,  
 क्यूं नव भव मोहवत तोरी जी; कीया दुश्मनका मन  
 जाना ॥ तो० ॥ ५ ॥ सखि करी प्रभु नादांनी, हूं पाछूं-  
 गी प्रीत पुरांनी जी; जाय हेरुंगी मुक्ति ठिकांना ॥ तो० ॥  
 ॥ ६ ॥ पंच मुष्टि लोच कर डारा, हूँते लंबे केस सिर  
 कारा जी; सती कहा न किसका मांना ॥ तो० ॥ ७ ॥  
 सातसे सखी संग लीना, रस्तेमे कपरा भीना जी; रहने-  
 मीनुं लाये ठिकांना ॥ तो० ॥ ८ ॥ सती नेम प्रभूने भेदी,  
 सब मनकी भ्रमना भेदी जी; फेर पाया है केवल ज्ञाना  
 ॥ तो० ॥ ९ ॥ मुनि रामचंद इम गावे, उत्तम इम प्रीत  
 निभावे जी; इम गावत जैन पुरांना ॥ तो ॥ १० ॥ इति ॥

६ तेरी किलंगीरे मारी लात सखी ॥ ए देशी ॥

प्रभु नेम नाथ, तज गये साथ, मैं कहू कहाँ लग बात  
 सखी २; कहे राजुल नार, मेरे प्रभुसे प्यार, मैं जाऊं  
 नेमके साथ सखी २ ॥ टेर ॥ थे आठ भवाँके सजन मेरे,  
 कर गये गमन उत्प्रात सखी २; ना आप आये, ना पा-  
 ती लखी, ना रखी कछ लोकात सखी; भये बार मास,  
 करे सबही हास, जां दिनसँ चढीं बरात सखी; केरांकी

वार, मैं गुनेगार, मन मार मार पिछतात सखी; चुप  
 कासे रहूं, दुख कासे कहूं, हुये दुश्मनके दिल चात सखी  
 २; कहे राजुल नार मेरे ॥ प्र० ॥ १ ॥ मोहकी जडी, मैं  
 सती पडी, थी मगन खूब मिथ्यात सखी २; अब आपा  
 सझ्या, मैं दिलकू बूझ्या, अब निसंकु गिरिकूं जात स-  
 खी; एस्तेके बीच, मच रहे कीच, थी बैरन ऋतु वरसात  
 सखी; भीजे है चीर, वरसे है नीर, सती चीर सुकानें  
 जात सखी; रहनेमी झूला, ज्ञान ध्यान झूला, जां देव  
 उधारा गात सखी २ ॥ कहे रा० प्र० २ ॥ रहनेमी बोले,  
 नहीं तेरे तोले, अदभूत रूप विख्यात सखी २; घर मांहि  
 रहो, फिर कासू चहो, सुख विलसो मेरे साथ सखी;  
 कहे सती पहचान, सुनह सुजान, तेरे दिलकूं तू समझात  
 सखी; संयमकू धार, फिर बछे नार, धिक्कार हुवो तुज  
 सात सखी; सुन सती बैन, खुल गये नैन, रहनेम ठिकाने  
 आत सखी २ ॥ कहे० प्र० ॥ ३ ॥ हुय गये धीर, रहनेमि  
 धीर, तै तार दिये मुज मात सखी २; केवलकूं पाय, शि  
 व पुरकू जाय, कर गयेनाम अख्यात सखी; सती भव  
 सुधार, रहनेमि तार, हुये ब्रह्मरूप सख्यात सखी; दा-  
 खिला दिया, धन्य उसका जीया, सुन समझे उत्तम  
 जात सखी; वीकानेर, गुलजार सेर, मुनि रामचंद छद  
 गात सखी २ क० प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

## वारमास्यो ॥

१ चैत मास वन केसर फूली ॥ ए देशी ॥

मास श्रावण लग्यो डरावन, विजुरी पसरी बहुतेरी;

घरर घरर घराट करत है, झरर झरर वर्षा गैरी; मेरे  
 श्याम जो हाजर होते, तो हूं कदेन डर लाती; पिउ विन  
 जिवरा बहु घवरावे, थरर थरर कंपे छाती; ऐसी वैरण  
 रैन डरपावे, सखी मेरा करती हासा; नेम गये गिरनार  
 सखी री, मिलणेकी लग रही आसा॥१॥ भाद्र मास जादू  
 घर नांही, पांनी न मावे परनाले, पापी पपीया पिउ  
 पिउ बोले, इनकी पिण बोली साले; कारी घटालो उम-  
 टके आई, वरसाये जल थल करती; हरियाली महमंत  
 वनी है, जोरदार दीसे धरती; श्रीश्याम विना सब सूनी  
 माया, बुरा लगत है चउमासा ॥ ने० ॥ २ ॥ आसु मास  
 सखि चल कर आयो, देवो तनकी पांसुरियां; झुर झुरनें  
 हूं होगी पूनी, गिन गिन घस गई आंगुरियां; पूंख  
 फली आ कली फूलनकी, आछी न लग्गे, इन बिरियां;  
 ककड़ी मुठकचरे और मती रे, बुरे लगे मेवो गिरियां;  
 दसरावो नही पूजूं सखीरी, झूठ न बोलूं एक मासा॥ने०  
 ॥ ३ ॥ काती मासका महीना चौथा, रोता किम कर  
 काहूंगी; कुलदेवी तूं पिया मिला दे, तोय सीरणी  
 चाहूंगी; मैं छ सरणे थारे माता, साता पियकी चाती  
 हूं; रूठो मनावो पिउ घर लावो, अन्न पूरा नही खाती हूं;  
 दीपमालिका लगे न अच्छी, नेम नहीं पाये पासा॥ने०॥४॥  
 मिगसर मास सखी ठंड चमकी, धमकी तपकी चढ जावे;  
 शरीर तपे विरह आग करीने, वैरण निद्रा नही आवे;  
 श्याम विना ऐ सांग सखीही, शरीर तपे दिन रात घणो;  
 और दुःख सब हुवो सखी री, दुःख मोटो एक नाथ-  
 तणो; त्रिया जातका जनम अक्यारथ, मालक विन  
 धिक् घरवासा ॥ ने० ॥ ५ ॥ पोष मासकी वैरण रतियां

वतियां कर कर वरताऊं; पूरी न होवे लंबी हो रही,  
 इधर उधर गोता खाऊ; जाऊं किसके शरणे सखीरी,  
 जोगन हुय वन रळजाऊ; पाऊं न पियड़ा जियड़ा तरसे,  
 नितकी कगवा उडवाऊ; पिऊ मिले तौ ठंड न लग्गे,  
 रंग महल रहनें खासा ॥ ने० ॥ ६ ॥ माघ महीनो बहुत  
 धुरो है, जिण घर पीतम नही होवे; पिऊ घरे तो बहुत  
 भलेरो, ऊंडे पडवेमे सोवे; खावे विध विध माल मसाला,  
 साळां ऊंडी सोणेकी; सांवरियो नहीं आयो सखी री,  
 रात न पूरी होणेकी; वसंत पंचमी घर घर मंगला, चग  
 डप्फ वाजे तासा ॥ ने० ॥ ७ ॥ फाग मासमें फग रमत  
 है, गम्मत इसकी बहु तेरी, पिऊं विना ए मास निकम्मो,  
 इसो नहीं दूजो वैरी; टिप्पा दोहा ख्याल जहरसा, काने  
 मुझ जो भनक परे; गिर पर जाकर वस्यो सांवरियो,  
 पशुवांके शिर दोष धरे; विरह आग कर जरू सखीरी,  
 मानो जंगलका घासा ॥ ने० ॥ ८ ॥ चैत महीने चैती  
 फूली, झूली सखीय हीडोरनमे; मेरा जियरा एक न  
 जाहे, हू झूलू सोच समुद्रनमें; हूं तोने पूजूं हे म्हारी  
 गवरल, क्यू पिउ तजी भोग जोवनमे; वनमें जाकर  
 वस्यो अकेलो, क्या बात वसी पियके मनमें; जिनकी  
 खबर कछु वन पाई, सहे ताप शीत धुत पीयासा ॥ ने० ॥ ९ ॥  
 वैशाखांकी बात सुनो सखी, ऋतु गरमीकी झुक आई;  
 घदन घस घस और कपूरे, करूं टहल मनकी चाई;  
 धीडी बांधकर पिउकू देती, खड़ी गवड़ी हाजर रहती;  
 पखा ढोलके पवन घालती, दे घूमर दुपटो गहती; धोट  
 ठंडाई पियो मेरा पियड़ा, पिउ विन होगई निरासा ॥  
 ने० ॥ १० ॥ ज्येष्ठ महीनो महा गरमीको, चौंदिश ज्वा-

ला चलती है; विरह आग अर तपत दूसरी, लूसें छा  
जलती है; मोनें पवन मत घालो सखीरी, दूनी तप  
लगती है; श्याम मिलावो जावो सजनी, नहींतर जा  
निकलती है; मनकी बात जो नाथ सुनेरी, ढरे जु म  
चाये पासा ॥ने० ॥११॥ आपाढ मास आशा कर लीने  
अब तो साहय घर आवो, एक बेर मुक्त मनकी सुनल  
पछे भलां वनकूं जावो; अथ मेरा मन पिण निश्चल  
गया, मुक्ति महिल देखन आऊं; संजम लेकर भव ज  
तरसूं, कर करणी शिव पद पाऊं; मुनि राम कहै धन  
राजीमति सती, केवल कीधा परकाशा ॥ नेम गये मि  
रनार सखीरी, मिलनेकी लग रही आशा ॥१२॥ इति

२ कहोरी सखी श्याम कव घर आसी ॥ ए देशी ॥

सांवण मासमें लूबां वरसे, जी थानें जिम जिम रा  
जुल तरसे; कहोरी सखी नेम कव घर आसी, कही र  
सखी श्याम कव घर आसी; आसी जबही मिटसी  
उदासी ॥ क० ॥ १ ॥ जी भाद्र मासमें घटा चढी कारी  
जी राजुलनें लग्गे डर भारी ॥ क० ॥ २ ॥ जी आस  
मासमें मोटी छै आशा, जी तुमे आसो तो सखी तजे  
हासा ॥ क० ॥ ३ ॥ जी काती मासमें वहे जिम काती, जी  
इम तजतां चले किम छाती ॥ क० ॥ ४ ॥ जी मिंगसर मासमें  
चमकी ठारी, जी थाने कह कहने राजुल हारी ॥ क० ॥ ५ ॥  
जी पौष मासको शीत अकारो, जी घर रैणोको भरोनी  
हंकारो ॥ क० ॥ ६ ॥ जी माघ मासमे टांफर वाजे, जी  
वनरार्द वनमांहे दाजे ॥ क० ॥ ७ ॥ जी फाग मास तो  
बहुत सुहावे, जी सांवरियो जो महलां आवे ॥ क० ॥ ८ ॥

जी चैत मासमें फूली चैती, जी हम जाणूं तो जाण न  
देती ॥ क० ॥ ९ ॥ जी वैशाख महीनो आयो, जी सांव-  
रियानें किण भरमायो ॥ क० ॥ १० ॥ जी जेठ मासमें लूषां  
चलती, जी मेरी प्रसु विन जान निकलती ॥ क० ॥ ११ ॥  
जी आपाढ आशा कर लीनो, जी अजु नायो नेम नगी-  
नो ॥ क० ॥ १२ ॥ जी आवण मास तो पाछो आयो,  
जी नेमीसर पुरो रिसायो ॥ क० ॥ १३ ॥ जी सती राजुल  
सयम लीनो, जी वां तो उत्तम कारज कीनो ॥ क० ॥ १४ ॥  
जी केवल लहीनें मुक्त सिधाया, जी मुनि रामचंद गुण  
गाया ॥ क० ॥ १५ ॥ इति ॥

## दोहा ॥

बार मास आशा करी, निगमियां धर प्यार ।  
होय निराश संवेग धर, लीधो संयम बार ॥ १ ॥

## ३ देशी ऊगुणी दोहामें ॥

श्याम क्यूं मुजकूं छोडी जी, राख्यो प्रतिज्ञा राजुल ना-  
रकी; महाराज नेमजी, राख्यो प्रतिज्ञा अपला नारकी  
॥ डेर ॥ आवण मन भावन गयो म जी, मैना नीर  
बरसायो; जान वनामी आवियो म जी, तौरनसें फिर  
जायो; कुंन भरमायो श्रुठ न पोल्हू जी, छटो कलक  
लगायो; सकल सखी तुम सांभलो, परस केस मन  
धीर; कुणख ने किणन कहुं म म्हारे, मैना परस नीर,  
पीर कुण देगे पराई जी ॥ राख्यो ० ॥ १ ॥ भादू-  
में जादू किम कर ग्यो जी, छटो धांप लगायो; लीयो  
भरायो धोल न आया जी, मैना नीर भर लायो; पञ्च-  
वनके शिर दीप देहनें, फायो गुदमनकां चायो; लायो



पतियां नाथकी, केम गये छिटकाय; मीयांकी दाढी बले  
 स देखो, लोक तापवा जाय; हाय किम जगत हंसायो  
 जी ॥ राखो० ॥ २ ॥ आसोज आशा सबी गमाई जी,  
 स्यू आई दिल मायो; भाई सह विलखा किया स जी,  
 दुख सहियो नही जायो; जनम डबोयो नाहक मेरो जी,  
 सग्वियां हास्य करायो; काई करूं म्हें वीनती, काई सु-  
 णाऊं कूक; मूक गयो मुक्त नाथजी स काई, जैसे बीडी  
 धूक; चूक कोई नाथ बतावो जी ॥ राखो० ॥ ३ ॥ का-  
 तीमे कागळ नही स जी, समंचार पिण नायो; मास  
 वरस आशा कटे स जी, आशा जन्म विहायो; आशा  
 विन वासा किसान स जी, अमनं प्रभू बतायो; दीसे, बा-  
 हिर निर्मला, मांही कठिन कठोर; ऊपर लाली भिल  
 रही स देखो, जैसे भाटी बोर और काई, फंद लगायो  
 जी ॥ राखो० ॥ ४ ॥ मृगसरमें सी चमकियो स जी,  
 कत गयो किम छोड; पशु पक्षी भेळा रहे स जी, क्या  
 मुक्तमें थी खोड; और न चाहूं कंतनें स जी, नेम मुक्त  
 शिर मौड; एक बेर कंत आवजो, करजो मन की बात;  
 निजरां का भेळा करो स मैं, चलूं तुमारी साथ नाथ एक,  
 बेर पधारो जी ॥ राखो० ॥ ५ ॥ पोष मासकी बैरन रजनी,  
 काटी कटे न कोय; कुण मुक्त राखे रोवती स जी,  
 रही अंसु वन मुख घोय; सार न पूछी पाछली स जी,  
 ऐसी रीस क्यू होय; कुण ही त्यारो माहरो, कंत दियो  
 भरमाय; घाल्यो बिछोहो पापिये सजी, जिणरो मुख  
 हुवो श्याह दाह क्यू, हीये लगायो जी ॥ रा० ॥ ६ ॥  
 माघ मास सखी आवियो सजी, लावो कंत मनाय;  
 देऊं बधाई तेहनें सजी, पूजू तेहना पाय; जाय मनावो

नेमनें स जी, दूजी न मेरे चाय; कंत कंत करती फिरूं,  
 हेरूं जिसकी चाट; फेरूं माला तेहनी स मेरे, किण विध  
 मिटे उचाट; घाट मुक्त थई पुन्याई जी ॥ रा० ॥ ७ ॥  
 फागुण वाजे बायरो स जी, वृछ पत्ते दिय खोय; दूजे  
 मासमे आविया स जी, पाछा हरिया होय; हूं फूल  
 किण आशसू स जी, कह दो सखियां भोय; और पुरुष  
 मुक्त भ्रात है, अधवा बाप समान; काई भ्रांत छै नाथ-  
 के स सखी, सो जाणें भगवान; प्राण कहो किस विध  
 रक्खूं जी ॥ रा० ॥ ८ ॥ चैती फूली फूटरी स जी, तरु  
 विलंबी बेल; बाग बगीचा फूलिया स जी, जाई जुई  
 चपेल; हूं मुरझी प्रीतम बिना सजी, ज्यू दीपक बिन  
 तेल; हेल करी मुक्त नाथजी, तोरनसू फिर जाय; मनमे  
 आवे एहवी स हूं, मरूं कटारी खाय; हाय मुक्त जळो  
 जवांन जी ॥ रा० ॥ ९ ॥ वैशाख मास छै आरु स  
 जी, वाजे भाळ दुभाळ; चंदन चरचे पद्मिनी स जी,  
 पखो हाथमें भाल; घाले शीतल बायरो स जी, करै  
 प्रीतमसू ख्याल; मनकी सब मनमे रही, कही कठाल-  
 लग जाय; तोरनसू फिरजावतां स सखी, दीधो दाग  
 लगाय; दाय किम हू नहीं आई जी ॥ रा० ॥ १० ॥  
 जेठ मास सखी आवियो स जी, धूप पढ़े असराल;  
 दूजो तप विरहतणो स जी, सखी पवन मत घाल; क्यू  
 आये थे परणवा स जी, कीधो बालक ख्याल; दुख पाऊ  
 जाऊं कहां, कीधी खोटी कत; मांगी न आवे मोतडी  
 स सखी, दुख जाणें भगवत; दत सब लोक दिखावे जी  
 ॥ रा० ॥ ११ ॥ आषाढ आशा कर लीयो स जी, विध  
 विध करी उपाय; क्यूं स्ठो छै सांवरो स जी, रही छूं

मनाय मनाय; इण मास नही आवसी स तो, देसं घर छिटकाय; राम मुनी वंदना करे, धरे चरनमें शीश; राजी-मति संयम लीयो स जी, जाय मिली जगदीश; शीश तुम सदा नमावो जी ॥ रा० ॥ १२ ॥ चमालीस उगणी-सको स जी, मिगसर शुक्रवार; तीज चौथ सुद भेली तिथ छै, जसरासर सुखकार; बारमास्थो जोड़ियो स जी, लागी थोड़ी वार; बृद्धीचंदजी गुरुतणो, वरते सदा प्रताप; रामचंद्र शिष्य तेहनो सजी, जोड़करी धर छाप; जाप तुम प्रभुनो करो जी ॥ रा० ॥ १३ ॥ इति

४ कहोरी सखी श्याम कब घर आसी ॥ ए देशी ॥

कहोरी सखी नेम कब घर आसी, कहोरी सखी सांवरियो कब आसी ॥ टेरे ॥ सूरज वारमें सूरज जगो, जी गिरनार सांवरियो पूगो ॥ क० ॥ १ ॥ सोमवारमें चंद्र-वदनी, जी किम परणोनी कचन वरनी ॥ क० ॥ २ ॥ मंगल वारमें मंगल करना, जी जाय जादवनें देवो धरना ॥ क० ॥ ३ ॥ बुद्ध वारमें बुध एक करणी, जी-मंत्र जपवा बैसावो वरणी ॥ क० ॥ ४ ॥ गुरुवारमें गुरु मनावो, जी सांवरियानें वेग मिलावो ॥ क० ॥ ५ ॥ शुक्रवारमें घर नहीं तजणा, जी घर बैठों ही ईश्वर भजणा ॥ क० ॥ ६ ॥ शनी-वारमें दीक्षा नहीं लीजे, जी घर बैठों ही सिमरण कीजे ॥ क० ॥ ७ ॥ नहीं नव भवनी प्रीत विचारी, जी थानें झुर रही राजुल नारी ॥ क० ॥ ८ ॥ संयम लीधो राजुल नारी, जी थानें राम वंदे वारं वारी ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

## चौमासो ॥

१ देशी गुजराती गरवाना गीतनी ॥

जात्रीड़ा जात्रा निनांणू करियेरे ॥ ए देशी ॥

जादवजी, चौमासो निज घर करियेजी, पर घर सां-  
सुं पगला न भरिये ॥ जा० ॥ १ ॥ देर ॥ आवण वीजुरी हुय  
खिडे खिनमें रे, भादू रंग करे बहू दिनमें रे, आसू डंबर  
फीका गगनमें रे, बहु विघ्न भरा कातन मे ॥ जा० ॥ २ ॥  
आवण विद्युत्तवत् ससारा रे, भादू रंग ज्युं विविध प्रका-  
रा रे; आसू डबर होत अपारा रे काती बाती तौ करत  
उचारा ॥ जा० ॥ ३ ॥ आवण मास तो हरिया छाया रे,  
भादू दीसे सध कुम्हलाया रे; आसूमे जल बल थाया रे,  
कार्तिक मास पता नही पाया ॥ जा० ॥ ४ ॥ आवण  
मासमे संजम लीजे रे, भादू भावना निर्मल कीजे रे;  
आसू आसन दृढ धर दीजे रे, कार्तिक काज सारा सिध  
कीजे ॥ जा० ॥ ५ ॥ रामचदनी एह छै वाणी रे, कोई  
समके उत्तम प्राणी रे; इम गूढ अरथ निरवांणी रे, कोई  
लेसी चतुर पिछांणी ॥ जा० ॥ ६ ॥ इति ॥

## गाळ ॥

१ ओ पंखो किसरि नगरसूं आयो रे ॥ ए देशी ॥

को सखी किसारे मोरतिये आया रे, जोर कांई जां-  
नीको; को सखी निकमा रे लोक हसाया रे, गयो  
मोती पानीको; को सखी किणरे सुकन बंदाया रे  
॥ जो० ॥ को सखी कुणरे पशुवाने घताया रे ॥ ग० ॥



३ गवरल ईसरजी कवे तो हस बोलणा हे ॥  
ए देशी ॥

सखियां क्यू आया, क्यू फिर चल्या हे॥स०॥जिणरी  
खबर न काय ॥ स०॥ तोरनथी फिर जाय ॥ स० ॥ स्यौ  
आई दिलमाय, आपां नेम जिनंदजीनें बांदसां हे, आपां  
गिरवर जिनवर बांदसां हे, आपां नेम प्रभुजीने बांदसां  
हे ॥ १ ॥ बाईजी दगावाजी करी सांवरे हे २, बाईजी  
झूठो चोज लगाय ॥ बा० ॥ तोरणसूं फिरजाय ॥ बा० ॥  
दीनी जान लजाय ॥ आ० ॥ २ ॥ स० ॥ नेम प्रभु संयम  
लीयो हे २ ॥ स० ॥ चढिया गढ गिरनार ॥ स० ॥ जा-  
सां प्रभुके लार ॥ स० ॥ लेसां संयम भार ॥ आ० ॥ ३ ॥  
बा० ॥ म्हे पिण साथे चालसां हे २ ॥ बा० ॥ रैसा थारी  
लार ॥ बा० ॥ लेसां संयम भार ॥ बा० ॥ जासां गढ  
गिरनार ॥ आ० ॥ ४ ॥ बा० ॥ राजीमती संयम लीयो  
हे २ ॥ स० ॥ कीधो मस्तक लोच ॥ स० ॥ चाली तन  
संकोच ॥ स० ॥ छोट्या सगळ्या सोच ॥ आ० ॥ ५ ॥  
बा० ॥ मारगमे वर्षा भई हे २॥बा०॥वर्ष मूसल धार॥बा०  
रहनेमीने तार ॥ बा० ॥ राम चदे चरणार॥आ०॥६॥इति ॥

४ हांक जिणरो तने काई ॥ ए देशी ॥

काळो तो वीद किसी कामरो, भंडो ही जग लागे रे,  
हसे बहु लोग लुगाई; हांक जिणरो तने काई ॥ १ ॥  
काळो मांहे वारे काळो, कपटीने धुतारो रे; जादवकी  
जान लजाई ॥ हां०॥ २ ॥ क्यू वीद वणीने तोरण आयो,  
क्यू आडंबर लायो रे, गयो फिर शरम न आई ॥ हां०  
॥ ३ ॥ परण छोटतो मुठकल होतो, देतो अधविच गोतो

रे; हंती तूं दुखणी वाई ॥ हां० ॥ ४ ॥ विन कारण वो  
करे रूसणों, किम कहिये कंतो श्याणों रे, गयो तुम वेंचो  
वधाई ॥ हां० ॥ ५ ॥ गोरो वीद घणो रूपाळो, जोवो वड  
भूपाळो रे; मालिक वो रक्खे लुगाई ॥ हां० ॥ ६ ॥ वो  
नही चाहे थे कयूं चाहो, कयूं थे लारे जावो रे; रहो थे  
घरके मांही ॥ हां० ॥ ७ ॥ मुनि राम कहे सती एक न  
धारे, जावे प्रभुके लारे रे; मिलेगा मुक्तिके मांई ॥ हां० ॥  
हांक वंदो शीश नमाई ॥ ८ ॥ इति ॥

५ थारी आकडारी झूपडीमें कौन सोवे, हूं तो  
मैलामें पोढणवाळी रेवालमा, ओ हो रे वालमा,  
आयो रे बावो लंगोटियो ॥ ए देशी ॥

थारी सांवरीसी सूरत देख मोही, मै तो जोऊ हूं  
वाट तुमारी रे सांवरा, ओ हो रे सांवरा, आछो तो  
लागे सांवरियो, प्यारो तो लागे डूंगरियो ॥ १ ॥ थारे  
विना मैलामें कौन रेवे, ए तो कलंक देवे ससारी रे ॥  
॥ सां० ओहो० आछो० प्यारो० ॥ २ ॥ थारी रे सूरतके  
कुंण जोडे, थारी आख्यां छै कामणगारी रे ॥ सां० ॥  
म्हारे सूनारे जंगलमें कुंण दौडे, हूं तो चलूगी लार तुमारी  
रे ॥ सां० ॥ ३ ॥ थारे रूप बराबर कुण आवे, मोनें सखी  
संतावे सारी रे ॥ सां० ॥ म्हारे उज्जड रस्ते कुंण जावे,  
मै तो मुक्तीमें जावण हारी रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ म्हारे नव-  
सर हारने कुंण पेने, कुण पेनें गोटेकी सारी रे ॥ मा० ॥  
म्हारे शिरका केश तो कुंण गूथे, मै तो लोच करू सुख-  
कारी रे ॥ सां० ॥ ५ ॥ चार महाव्रत शिर पर धारू, मारूं  
मै ममता सारी रे ॥ सां० ॥ संयम ले सती मोक्ष पधारी,  
मुनि राम जावे बलिहारी रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ इति ॥

## ढाळ ॥

१ वर पायो हे कैलास निवासी प्रीतसूं ॥ ए देशी ॥

वर पायो हे सहीयर वड भागसूं, तोय वखांणी हे तूं  
भई पूज्य त्रय लोकरी ॥ देर ॥ धारो भाग उदय हुय आयो हे,  
तें लोक त्रय पति वर पायो है; धारो सुजस जगमे छा-  
यो हे, धारे लागे इंद्रांणी पायो हे ॥ व० ॥ १ ॥ तें तो  
करी तपस्या सरसी हे, ऐसी करी न फेर कोई करसी हे;  
धारो नाम लीयो दुख टरसी हे, धारा दर्शनसूं जग ठरसी  
हे ॥ व० ॥ २ ॥ तोनें इंद्र निरखण आयो हे, तोने इंद्रा-  
णी सीस नमायो है; धारो वीद तोरनपर आयो है, धा-  
रो दिन दिन भाग सवायो है ॥ व० ॥ ३ ॥ ते तो दान  
सुपातर करियो हे, धारो सुकृत तरुवर करियो है; तें तो  
घन्य जनम जग धरियो है, तोरो वीद देखि राम ठरियो  
हे ॥ व० ॥ ४ ॥ इति ॥

## ख्याल ॥

१ आवो रंजा मिल म्हेल करावां वे, वीचमें  
खावां, दोय वारियां ॥ ए देशी ॥

वारियां वारियां वारियां, हां म्हांरो नेम मिले तो  
वारियां हो ॥ देर ॥ आवो सखि मिल नेम मनावां वे,  
वे तो पुरुष आपे नारियां ॥ वा० ॥ १ ॥ आवो सखि मिल  
पत्र भेजावां वे, आपा वी चालां ज्यांरी लारियां ॥ वा० ॥  
२ ॥ आवो सखि मिल संयम धारां वे, चालो चढां  
गिरनारियां ॥ वा० ॥ ३ ॥ सातसे सखी मिल रस्ते चा-  
लो वे, फेर रहनेमीनें सुधारियां ॥ वा० ॥ ४ ॥ राम कहे



रे; हूँती तूं दुखणी बाई ॥ हां० ॥ ४ ॥ विन कारण वो  
करे रूसणों, किम कहिये कंतो श्याणों रे, गयो तुम वैचो  
वधाई ॥ हां० ॥ ५ ॥ गोरो वीद घणो रूपाळो, जोवो वड  
भूपाळो रे; मालिक वो रक्खे लुगाई ॥ हां० ॥ ६ ॥ वो  
नही चाहे थे कयूं चाहो, कयूं ये लारे जावो रे; रहो थे  
घरके मांही ॥ हां० ॥ ७ ॥ मुनि राम कहे सती एक न  
धारे, जावे प्रभुके लारे रे; मिलेगा मुक्तिके मांई ॥ हां० ॥  
हांक चंदो शीश नमाई ॥ ८ ॥ इति ॥

५ थारी आकड़ारी झूपड़ीमें कौन सोवे, हूं तो  
मैलामें पोढणवाळी रेवालमा, ओ हो रे वालमा,  
आयो रे वावो लंगोटियो ॥ ए देशी ॥

थारी सांवरीसी सूरत देख मोही, मैं तो जोऊं छूं  
वाट तुमारी रे सांवरा, ओ हो रे सांवरा, आछो तो  
लागे सांवरियो, प्यारो तो लागे डूगरियो ॥ १ ॥ थारे  
विना मैलामें कौन रेवे, ए तो कलंक देवे संसारी रे ॥  
॥ सां० ओहो० आछो० प्यारो० ॥ २ ॥ थारी रे सूरतके  
कुंण जोडे, थारी आख्यां छै कामणगारी रे ॥ सां० ॥  
म्हारे सूनारजगलमें कुण दौडे, हू तो चलंगी लार तुमारी  
रे ॥ सां० ॥ ३ ॥ थारे रूप बराबर कुंण आवे, मोने सखी  
संतावे सारी रे ॥ सां० ॥ म्हारे वज्जड रस्ते कुंण जावे,  
मैं तो मुक्तीमें जावण हारी रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ म्हारे नव-  
सर हारने कुण पेने, कुंण पेने गोटेकी सारी रे ॥ सां० ॥  
म्हारे शिरका केश तो कुंण गूंये, मैं तो लोच करू सुख-  
कारी रे ॥ सां० ॥ ५ ॥ चार महाव्रत शिर पर धारू, मारू  
मैं ममता सारी रे ॥ सां० ॥ सयम ले सती मोक्ष पधारी,  
मुनि राम जावे बलिहारी रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ इति ॥

## ढाळ ॥

१ वर पायो हे कैलास निवासी प्रीतसूं ॥ ए देशी ॥

वर पायो हे सहीयर बड भागसूं, तोय वखांणी हे तूं  
भई पूज्य त्रय लोकरी ॥ टेर ॥ थारो भाग उदय हुय आयो हे,  
ते लोक त्रय पति वर पायो है; थारो सुजस जगमे छा-  
यो हे, थारे लागे इंद्रांणी पायो हे ॥ व० ॥ १ ॥ ते तो  
करी तपस्या सरसी हे, ऐसी करी न फेर कोई करसी हे;  
थारो नाम लीयो दुख टरसी हे, थारा दर्शनसू जग ठरसी  
हे ॥ व० ॥ २ ॥ तोने इंद्र निरखण आयो हे, तोने इंद्रा-  
णी सीस नमायो है; थारो वीद तोरनपर आयो है, था-  
रो दिन दिन भाग सवायो हे ॥ व० ॥ ३ ॥ ते तो दान  
सुपातर करियो हे, थारो सुकृत तरुवर फरियो है; ते तो  
धन्य जनम जग धरियो है, तोरो वीद देखि राम ठरियो  
हे ॥ व० ॥ ४ ॥ इति ॥

## ख्याल ॥

१ आवो रंजा मिल म्हेल करावां वे, वीचमें

रखावां, दोय वारियां ॥ ए देशी ॥

वारियां वारियां वारियां, हां म्हांरो नेम मिले तो  
वारियां हो ॥ टेर ॥ आवो सखि मिल नेम मनावां वे,  
वे तो पुरुष आपे नारियां ॥ वा० ॥ १ ॥ आवो सखि मिल  
पत्र भेजावां वे, आपां वी चालां ज्यांरी लारियां ॥ वा० ॥  
२ ॥ आवो सखि मिल सयम धारां वे, चालो चढां  
गिरनारियां ॥ वा० ॥ ३ ॥ सातसे मग्गी मिल रस्ते चा-  
लो वे, फेर रहनेमीने सुधारियां ॥ वा० ॥ ४ ॥ राम कहे

सती केवल धाय्यौ बे, ज्ञान करी मन मारियां ॥ वा० ॥  
॥ ५ ॥ इति ॥

## २ देशी ख्यालनी ॥

चालो बाई जी आपां देखवा, जादूपति आवे है;  
जादूपति आवे, ओ तो जगत सुहावे बाई, ओपे इंद्र  
समान; ऐसो वर कोउ निजर न आयो बाई, खुली थारें  
सुकृत खान ॥ चा० ॥ १ ॥ छत्र धरावे ओ तो चमर  
ढुळावे बाई, पड़े नगांरारी ठोड़; सुरत प्यारी आ तो  
मोहनगारी बाई, तपे सूरज ज्युं मोड़ ॥ चा० ॥ २ ॥ राजी  
मती कहे हे सह साचूं बाई, पिण फुरके जीमणो नैण;  
होसी उदासी कोई विघन ज धासी बाई, ओ मिले नहीं  
सुख देंण ॥ चा० ॥ ३ ॥ तोरण आये ऐ तो मंगल गाये  
बाई, पशुवाने दीयो अभै दान; जान लजाई आंतो  
वात गमाई बाई, भली कीवी भगवान ॥ चा० ॥ ४ ॥  
नेमजी साथे सती संयम लीनो, ओ तो कीनो उत्तम  
काम; आतम तारयौ ओ तो काज सुधारयौ, धाने वदे  
नित नित राम ॥ चा० ॥ ५ ॥ इति ॥

## राग ॥

### १ राग मारु ॥

भोजाई व्याव मनावे रे, व्याव मनावे नेमको, बहु वात  
वनावे रे ॥ भो० ॥ डेर ॥ देवरियो डरतो रहे, जाणो ला-  
डी संतावे रे; लाडी बिना किसो लाडलो, वृथा जन्म  
गमावे रे ॥ भो० ॥ १ ॥ नेम्युवाच ॥ वृथा जनम छै जेह-  
नो, ते धर्म न जाणो है; पाप मूल नारी तजै, जांको जन्म

प्रमाणे है; सयांनी कयूं झूठ वखांणे है, झूठ न प्यारो सां-  
इयां, झूठ तौ पनरै ठिकाणे है ॥ स० ढेर ॥ २ ॥ पूर्वज  
परण्यां ताहरा, जे शास्त्रांमें गावे रे; जो परणनमें पाप  
थो, तो कयूं मुक्त सिधावे रे ॥ भो० ॥ ३ ॥ पूर्वज पर-  
ण्या मांहरा, भुक्त भोग प्रमाणे है; मुक्त गये त्यागन  
करी, सो शास्त्र वखांणे है ॥ स० ॥ ४ ॥ देवर नारी परण  
जो, कयूं लोक हंसावे रे; व्याव करी त्यागन करो, माईत  
सुख पावे रे ॥ भो० ॥ ५ ॥ भावज म्हे नहीं परणसां,  
मो मत ना पिछांणे है; अभुक्तभोगी संयम ग्रही, राम  
जासी निरवाणे है ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

## २ राग पूर्ववत् ॥

॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ भाई तूं लोक हंसावे रे, तोरनसे  
फिर जावतां, तोने लाज न आवे रे ॥ भा० ॥ ढेर ॥ जो तूं  
परणे न चावतो, तो कयूं जान वणावे रे; म्हाने संग कयूं  
लावणां, सह चात गमावे रे ॥ भा० ॥ १ ॥ भाईजी ऐसो चोज  
लगावो रे, माडां व्याव मंडावियो, फेर ग्रवगुण गावो रे  
॥ भा० ॥ ढेर ॥ कहो कुंण पल्ला पाथरया, मुक्त घरहि मंडावो रे;  
बिना मन ग्रामे जाइयो, बिना मन परणावो रे ॥ भा० ॥ २ ॥  
जादव जगमें दीपता, जानी सरमावे रे; ग्रपणी मांग  
कोई परणतां, नाकी नहीं रहावे रे ॥ भा० ॥ ३ ॥ जानी  
शरमावे सजम ग्रहो, मांग चाहे जां जावो रे; म्हाने  
जीव वचायिवा, राम चाहे ज्यूं गावो रे ॥ भा० ॥ ऐसो ॥ ४ ॥

## ३ राग मांच ॥

नेमजी केम गये छिटकाय, सखी हूं तो नहीं सकू मूढो  
देखाय ॥ प्रभुजी केम ॥ ढेर ॥ तीर ज्ञान ले गर्भमें आये,

वाजे त्रिभुवननाथ; वात जिणांसूं नही रही छांनी, जानी लाये बहु साथ; दगावाजीकी वात करी छै, रैसी जुगो-जुग अखियात ॥ ने० ॥ १ ॥ बाईजी आंखे आंसूं मत मूक; नहीं छै तिल भर धामें चूक ॥ वा० ॥ ढेर ॥ जानी हुय कर वात गमाई, जानी दिये लजाय; तिल भर वात नहीं गई थारी, कयूं सोचो मन मांय; सरमां मरतो-गढ़ गिरनारे, बैठो मूढो छिपाय ॥ वा० ॥ २ ॥ कोई कैसी आ छै विषकन्या, कोई कैसी अंग हीन; कोई कैसी आ रूप कुरूपा, कोई कैसी नहीं प्रवीन; कोई कैसी आ खुरड-पगी छै, मो सकलंकी कीन ॥ ने० ॥ ३ ॥ कूडो पिण नहीं कहे विषकन्या, नीच न कहै अंग हीन; अंधो नहीं कहे रूप कुरूपा, अज न कहे अप्रवीन; कोई खुरडपगो कहे खुरडपगी छै, सो होसी तेरेतीन ॥ वा० ॥ ४ ॥ आठ भवांमें प्रीत बधाई, नवमे दी छिटकाय; पशुवनके शिर दोष देईनैं, तोरणथी फिर जाय; माखी नहीं ओ मुलको मारे, आय बण्यो छै न्याय ॥ ने० ॥ ५ ॥ लगी प्रीत विन अवगुण तोड़े; ते किम महिमा जोग; राजीमती कहे प्रीत न तोड़ूं, सूधारूं पर लोक; मुनि राम कहे धन्य नेम राजुल छै, जाय विराज्या मोख ॥ वा० ॥ ६ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रप्रिरचिते अमृतरससंग्रहे नेमना-थचरित्रनामकं नवमं प्रकरणम् ॥ ९ ॥

## रामचरित-लावणी ॥

१ तुम चलो सखी कलु जेज न करिये ॥ ए देशी ॥ सहस्र विद्या त्रिखंडको भोक्ता, रावन मनमे गरभा-

यो; सुर नर पाय परे सब मेरे, कुंन मुजसैं साम्हो थायो  
 ॥ देर ॥ १ ॥ सुर देव ओ तपै रसार्द्ध, चंद्र आप दीपक  
 थायो; बेमाता मुज दळे कोद्रवा, यम राजा पांणी लायो  
 ॥ स० ॥ २ ॥ नव ग्रह खाट तले नित रहते, दुर्गा आरती  
 उत्तरायो; पवन देव नित महल ब्रुहारे, पार नहीं कोई  
 पायो ॥ स० ॥ ३ ॥ मो सरीखो विरलो होगो, नामधकी  
 जग थरीयो; कुंण मुज आज अड़े हुय सांमो, किनकी  
 मा अजमो खायो ॥ स० ॥ ४ ॥ अब मुज मनमै ऐसी  
 आवे, धार सदा मुज औ रैसी; केवल ज्ञानी बात न  
 छांती, पिण निमित्ती कैवे कैसी ॥ स० ॥ ५ ॥ रावनके  
 मन ऐसी भासी, नैमित्तिक तद बुलवायो; रामचंद्र कहे  
 गर्व न कीजो, गर्व न कोई ठहरायो ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

### २ वेसर सोनाकी देशी ॥

नगरी रामकी या तो देवता कीधी त्यार ॥ न० ॥ पगे  
 पगे प्रगटे नव निधान, सुर नर किंकर समान ॥ न० ॥ १ ॥  
 जहां जावे जहां होवे आनंद, काटे पराया फद ॥ न० ॥  
 ॥ २ ॥ सुवन कोट विराजै ऐन, पुन्यवत करता चैन ॥  
 ॥ न० ॥ ३ ॥ रामपुरी नगरीका नाम, यां राज करै श्री-  
 राम ॥ न० ॥ ४ ॥ परम जैनी परम दयाल, गड ब्राह्मण  
 प्रतिपाल ॥ न० ॥ ५ ॥ इति ॥

### दोहा ॥

लिछमन मन्न विलखियो, लखियो नहीं लिंगार ।  
 पकियो फल पूरो परयो, रगियो नहीं रखवार ॥ १ ॥

३ असी रुपैया लो कलदार ॥ ए देशो ॥

कोई नर मरियो शिर धर परियो, करियो लिछमन

हाहाकार; भावीनें कुंण टालणहार, टाळी नही टळै ला-  
ख प्रकार ॥ टेर ॥ १ ॥ शरीर सुगंधो ते जदि नंदो, चं-  
दो लज्जित हुवै चदन निहार ॥ भा०॥२॥ राज कुमार वर,  
उत्तम नरवर, दिनकर कर सम तेज अपार ॥ भा०॥३॥  
क्यूं इहां आजं खड्ग उठाजं, क्यूं वाजं मैं विना विचार  
॥ भा० ॥ ४ ॥ आयो हूं भटक्यो क्यूं इहां अटक्यो, भ-  
टक्यो खड्ग मुज लग्यो अनाचार ॥ भा० ॥ ५ ॥ विन  
अपराध धन विद्या साधन, आराधन करतो लीयो मार  
॥ भा० ॥ ६ ॥ इम पिछतावै शीस धुनावै, आवै न पा-  
छो फल तरु डार ॥ भा० ॥ ७ ॥ खड्ग ले बळियो रस्ते  
चलियो, मळियो रामने कछू विचार ॥ भा० ॥ ८ ॥  
जिनको खांडो सो नर चांडो, बाडो होसी इनको परि-  
वार ॥ भा० ॥ ९ ॥ सीय कहे देवर वहे बीज तरवर,  
फर लगेंगे रहो हुसियार ॥ भा० ॥ १० ॥ राम कहे भाई  
दरै नही राई, पिछताई रहै उत्तम आचार ॥ भा०॥११॥ इति॥

### ४ देशी वीरानी ॥

वीरा, हूं आई तुज पास हो, वीरा, बतें झूचर जो-  
रावरी जी; वीरा, शंबूक कुमार विणास हो, वीरा, वीर  
विराध धरूं अनुचरी जी ॥ १ ॥ वीरा, मुज बल बलि-  
या दोय हो, वीरा, निशचरसूं बंधु एक लड़े जी; वीरा,  
हूं रही दुखणी रोय हो, वीरा, रखे मुज खूणे बैसण  
पड़े जी ॥ २ ॥ वीरा, तीजी नारी जांरे संग हो, वीरा,  
इंद्राणी रूप वांछा करे जी; वीरा, देखी जिणरो अग  
हो, वीरा, रति पिण गर्व नवि घरे जी ॥ ३ ॥ वीरा, ना-  
क सुबेकी चांच हो, वीरा, मुख पूनम चंद सारिखो जी;  
वीरा, पीन पयोधर साच हो, वीरा, कदी तदी केसरी

पारखो जी ॥ ४ ॥ वीरा, नख चख वर्णवै कौन हो,  
 वीरा, त्रिया त्रिलोकी जोई ना मळे जी; वीरा,  
 फरसी सुगध होय पौन हो, वीरा, नारी अछि-  
 तीया भूतले जी ॥ ५ ॥ वीरा, काग गळे नोळी जाण हो,  
 वीरा, थारे जोडे ए फावही जी; वीरा, थारी त्रिखंडमे  
 ग्राण हो, वीरा, इण विन राज न फावही जी ॥ ६ ॥  
 वीरा, वैर भाणजेको लेण हो, वीरा कैवा आई छ भा-  
 जने जी; वीरा, कुण देवेल रैण हो, वीरा, कुण देसी  
 करवा राजने जी ॥ ७ ॥ बेनड, जावो पयाळे लरु हो,  
 बेनड, स्यो गावे रंक कगालने जी; बेनड, रैजो मन नि-  
 शरु हो, बेनड, तु जाणे नही सुज चालने जी ॥ ८ ॥ वीरा,  
 लाख घातको सार हो, वीरा, राम सुनि साची करे जी;  
 वीरा, जावे पुन्य परवार हो, वीरा, जो काची बातने  
 सरद है जी ॥ ९ ॥ इति ॥

### ५ सिलोको ॥

सुणजो महाराजा वचन हमारो, भलोचावांछां राज  
 तुमारो; बेना तट पासे मोटो एक ग्राम, विनेदंत व्यौपारी  
 बसे तिण ठाम; तिणरे तो घरमें सुदर नारी, रूप अनो-  
 पम नही कोई पारी ॥ १ ॥ बौपार माढ्यो पल्लिपत साथे,  
 दूणा तिगुणा वधे हाथो जी हाथे; वरजे सजन तो ते  
 नही माने, आवे जावे ने खावे जी छाने; इण पर करतां  
 धीता बहुमास, पूजी तो रही चौरा जी पास ॥ २ ॥  
 पल्लिपत बोले सुणजो प्रकासां, देसां मिजमांनि दांम  
 चुकासां; करने विभूपा आजो नारीने लीधां; तिमहीज  
 हुवो पालतां विदा; आव्यो पल्लिमें चोरां विचार्यो,  
 लीधी नारी ने उणने जी मार्यो; उणरी रीते तो वाद न  
 कीजे, आले माटेमे केम मरीजे ॥ ३ ॥



## दोहा ॥

पल्लि समांणी लंक है, पल्लिपत रावण जांण ।  
 नार समांणी सीत है, राज हो वणिक समांण ॥१॥  
 रावण नाम डरावणो, लड़ता न रहै लाज ।  
 तिण कारण सीतातणी, गई करो महाराज ॥२॥  
 लिछमण सुणनें कोपियो, बोले मूँछ मरोड़ ।  
 लावां बेगी सीतनें, दश मस्तक शिर तोड़ ॥३॥

सुणनें तो लिछमण सिंघ ज्यूं गूंज्यो, विद्याधरांनो  
 हीयो ज धूज्यो; सुणजो विद्याधर बात हमारी, सुणनें  
 तो चुपका जोवे एकतारी; नगर कुसुमपुर धनो बोपारी,  
 ताके तो जमुना सुंदर प्यारी; पांच पुत्रांमें नहीं एक क-  
 माऊ, तनमे तो रोग अपमानें जांऊ ॥ ४ ॥ अटवीमें मि-  
 लियो पुरुष जी सिद्ध, कृपा करीने लोहकड़ो दिद्ध; इण-  
 सूं तो रोग मोटका जावे, लेई कड़ो ने रोग गमावे; च-  
 लियो तो आयो निज पुर बार, मुई नृप कन्या हुवो हा-  
 हाकार; नागनो जहर गयो कड़ानी करणी, नृप हुकमसूं  
 कन्या जी परणी; मात पिता सहु मिलिया हूलासे, सुख  
 भोगवे लील विलासे ॥ ५ ॥ एक दिन मंजन नदीं तट  
 आयो, वड़ विकट ने पांनां जी छायो; तिणमें तो रैवे  
 गोह जलांठी, कड़ो अवरमे लेईने नाठी; वडतां तो दीठी  
 आतमसेण, सगळा सुभट नहीं कड़ो जी लेण; आतमसेण  
 तो कीधो उपायो, नाखि लकड़ ने वडनें फूंफायो; गोह  
 मारीने कड़ो जी लीधो, आतमसेणरो कारज सिद्धो;  
 मनमें हरख्यो ज्यूं अमृत पीधो, एह सिलोको रामचंद  
 कीधो ॥ ६ ॥ इति ॥

## दोहा ॥

गोह रावण सीता कडो, आतमसेण सु रांम ।  
लंका गढ़ बड चूरकै, लिये रत्न बहु दांम ॥ १ ॥  
नभचर अति विस्मय भये, सुन लिछमनकी बात ।  
कही अनोपम तुम कथा, महा सुभट अवदात ॥ २ ॥  
एह भूंचर अति जोर है, नहीं किसीके हात ।  
कोटिशिलाकी बात कहो, ज्युं सशय मिट जात ॥ ३ ॥  
श्री मुनिवर परमारथे, बोले वचन रसाल ।  
कठिन व्यर्थ वदे नं कदि, ऐसे दीनदयाल ॥ ४ ॥  
अयन मुनी यक्षदत्तनं, माता याद कराय ।  
तारथौ भव भय सिंधुथी, नहींतर डूबो जाय ॥ ५ ॥

## ५ लशकरियानीदेशी ॥

सब सुनिये लिछमन, कहे हो नरवरजी, एक कौंच-  
पुरी अभिधान, सुणिये वारता हो नरवरजी, यक्ष नृप  
रांणी राजिला हो ॥ न० ॥ यक्षदत्त कुमार प्रधान ॥ सु०  
॥ १ ॥ पुर बाहिर एक कुटीरिका हो ॥ न० ॥ ज्युं सुंदर  
देखी नार ॥ सु० ॥ काम बाण पीडित भयो हो ॥ न० ॥  
यक्षदत्त नाम कुमार ॥ सु० ॥ २ ॥ निशिभर आयो ए-  
कलो हो ॥ न० ॥ तब अयन नाम मुनिंद ॥ सु० ॥ मा  
कही टोक्यो कुमरने हो ॥ न० ॥ तब कोप्यो जांणे फु-  
णेंद ॥ सु० ॥ ३ ॥ विजुरी चमके ओळख्या हो ॥ न० ॥  
मा किम कह्यो मुणद ॥ सु० ॥ इण भव जननी ताहरी  
हो ॥ न० ॥ जिण देख तूं थयुं कामद ॥ सु० ॥ ४ ॥  
निशि भर यदि नवि बोलणो हो ॥ न० ॥ तदपि देख्युं  
अकाज ॥ सु० ॥ इण भव जननी किम भई हो ॥ न० ॥  
थे सहृ भाखो मुनि राज ॥ सु० ॥ ५ ॥

## दोहा ॥

आगम ज्ञानी मुनि वदे, सुण तूं राज कुमारे ।  
इण भवनी या मात है, शील शिरोमन नार ॥ १ ॥

## ढाळ ॥

७ तो पर मुगल मया करे ॥ ए देशी ॥

अमृतकावती नगरी भली, कांई वणिक हो एक क-  
नक उदार; यंधुदत्त पुत्र ज दीप तो, मित्रवती हो ए  
शीलवंती नार; सुणजो जी वांत सुहामणी ॥ १ ॥  
गोप्य आधान पति नवि घरे, सासू सुसरो हो जांणी  
माठी नार घर बारे काढी परी, उत्पलिका हो एक  
दासी लार ॥ सु० ॥ इण कौंचपुरे लतादत्त पिता, पीर  
आवै हो इण सैर उद्यान; दासी मुई नंदन; थयुं, सर  
तीरे हो गई करण सीनान ॥ सु० ॥ २ ॥ रत्न कंबली  
सुत वीटियो, लेई नाठो हो एक श्वान तिवार, काहू  
छुडाय नृप संपियो, सो तूं भयो हो यक्षदत्त कुमार  
॥ सु० ॥ वस्त्र परवाल जननी थारी नहीं, देखे हो तुज  
कीध विलाप; देव पूजा रे दया करी, इण कुटीये हो  
रखी भगनी थाप ॥ सु० ॥ ५ ॥ लज्जा करी नहीं पितु  
घरे, आई हो रहै कुटीये मझार; मैं वज्यो इण कारणे,  
तू पूछी हो करजे निरधार ॥ सु० ॥ ६ ॥ रत्न कंबली  
खंड देखियो, सुणीयो हो सह घर विरतंत; माता निज  
मानी खरी, मुनि मान्यो हो उपगार अनंत ॥ सु० ॥ ७ ॥

## दोहा ॥

कहे लिछमण सुग्रीव तूं, माने मो उपगार ।  
वचन गयो जिण पुरुषनो, धिक्क धिक्क तास जमार ॥ १ ॥

विद्याधर कहे धुद्र जिम, मयूर पत्र हठ कीन ।  
मूढ़ थई चूको भला, आप सदा परवीन ॥ २ ॥

ढाळ ॥

८ आंगण वाऊं एळवी रे ॥ ए देशी ॥

वेणा तट एक ग्राम छै रे, सर्वरुची ग्रही नाम; स्वामी  
सुणजो विनयदत्त नामे, भलो रे पुत्रको धाम ॥ स्वा०  
॥ १ ॥ विशाल भूपति कुमित्र छै रे, थयूं लुब्ध विनय-  
दत्त नार ॥ स्वा० ॥ स्त्रीकेणे वन ले गयो रे, बांधूं एक  
वृच्छनी डार ॥ स्वा० ॥ २ ॥ मिथ्या उत्तर देते रहै रे,  
स्त्री कहे कीयो भल काम ॥ स्वा० ॥ धुद्र नाम एक मा-  
रगू रे, लीयो जिण तरु विश्राम ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ विनय-  
दत्तकूं दया करी रे, खोली कीयो उपगार ॥ स्वा० ॥ धु-  
द्रभणी घर लावियो रे, घरमांहे द्रव्य अपार ॥ स्वा०  
॥ ४ ॥ विशालभूति नासीगयो रे, धुद्रकों रक्खे करि  
प्राण ॥ स्वा० ॥ धुद्रनी मयूर छै पत्रनी रे, क्रीडा  
करै परम कल्याण ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ पवनथी उड नृप  
महिलमे रे, पड्यो लीयो राज कुमार ॥ स्वा० ॥ धुद्रभ-  
णे मयूरदत्तने रे, मयूर देकर प्रति उपकार ॥ स्वा० ॥ ६ ॥  
विनयदत्त कहे मित्रजी रे, रत्नांरो करावूं मोर ॥ स्वा० ॥  
अथवा साचेलो लायवू रे, गयो नावे विपमी ठोर ॥ स्वा०  
॥ ७ ॥ रत्नांको ल्यू न साचलो रे, लेऊ तो सागे ही मोर  
॥ स्वा० ॥ मैं उपगार मोटो कीयो रे, तू थयो गुणनो  
चोर ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ जांववान कहे सुणो स्वामजी रे, वो  
तो चूको मूढ़ गिवाँर ॥ स्वा० ॥ आप नरोत्तम हट किम  
करो रे, परणो राज कुमार ॥ स्वा० ॥ ९ ॥

## दोहा ॥

लिछमण सुण कोप्यो अधिक, सुणो विद्याधर साथ  
सीतानें किम छोडसां, भली कही तुम वात ॥ १ ॥

## ९ देशी कुंजेनी ।

## मंदोदरी वाक्य ॥

मत करो हठ शठ जेम रे, हो, सुन प्रानपति जी ॥ म  
॥ १ ॥ ए पिछतावो पछै मारसी रे, नवि सूझै, नही सूझै  
कहं छं हित भणी रे ॥ न० ॥ २ ॥ छोडो सीतासूं प्रेम रे  
॥ सु० ॥ नहीं पतिपणे तुज धारसी रे; कयूं तांणो; तांणो  
नहीं तो हुवे भली रे ॥ कयूं० ॥ १ ॥ अपकीरत जगमाय  
रे ॥ सु० ॥ पर भव नही सुधरे जरा रे, दिष्ट जीवो  
जीवो विचारी ज्ञानसूं रे २; ए छै बळती लाय रे  
॥ सु० ॥ शीघ्र निकाळो सुख पावसो रे, सह विगड्या २,  
राम सुर नर मानसूं रे ॥ ३ ॥ इति ॥

## ढाळ ॥

## १० सीता वाक्य ॥

हूं तोने नहीं पिछाणूं रे वीरा, तूं छै अमोलक हीरा  
॥ हूं० ॥ देर ॥ लघु वय धारी सूरत प्यारी, बलधारी तूं  
धीरा ॥ हूं० ॥ १ ॥ कुंण तुज मात तात कुंण जात, किम  
आयो लघी नीरा ॥ हूं० ॥ २ ॥ दुर्लघ लंक मांय किम  
आव्यो, नहीं आई तुझ तन पीरा ॥ हूं० ॥ ३ ॥ अंजन  
मात पवन जय तात, हनुमत नाम हमीरा ॥ हूं० ॥ ४ ॥  
हूं चाकर छूं सुग्रीवजीनो, श्रीराम ठाकुर सधीरा ॥ हूं०  
॥ ५ ॥ राम लिछमनके तेज प्रतापे, हूं आयो लंघी नीरा  
॥ हूं ॥ ६ ॥ असालिका विद्या तोड़ दीवी है, जैसे जी-  
रण लीरा ॥ हूं० ॥ ७ ॥ इति ॥

## दोहा ॥

सीतानें समजायवा, प्रगट थयो तिण ठाम ।

हूं लायो छं मुद्रिका, हणुमत म्हारो नाम ॥ १ ॥

आवत देखी मंदोदरी, छिपियो विद्या प्रभाव ।

देख्यांसुं बोले वचन, करस्युं पछे जताव ॥ २ ॥

सुन सीता मुज बातडी, तो सम नही जग नार ।

राजा रावण भोगवो, सफल करो अवतार ॥ ३ ॥

प्रगटाणो निजरूपसुं, देखी हणुमत नैण ।

मंदोदरी पुलकित कहै, कठीन कडवा वैण ॥ ४ ॥

## ११ दाढ ॥

मंदोदरी वाक्य-मंदोदरी कहे सुणो जमाई, या क्या  
 झुंडी कीधी; सायरसुं तोडी बेकाजे, भली गलेमे लीधी;  
 म्हाने झुंडो लागे जी, रंकतणी तो सेवा करतां, झूख न  
 भागे जी ॥ १ ॥ सहु राजामे कीयो शिरोमनि, कांई  
 विगाड्यो मै तो; म्हाने छोडी झूचर सेवे; दूतपणेमे रेतो  
 ॥ म्हा० ॥ २ ॥ नीच काम तो दूतपणाको, करतां लाज  
 न आवे; सात पीडीने कलंक लगावे, थांसम पूत ज थावे  
 ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ हणुमत बोले सुणो सासूजी, म्हे तो आ-  
 छो कीधो; छोड अन्याई न्याई भेल्या, राघव शरणो लीधो;  
 म्हे तो साचूं धोल्याजी, झूठतणो पखपात तजीने, श्री-  
 रामने छेल्याजी ॥ ४ ॥ दूतपणो करतां स्युं म्हेणी, भड-  
 धापणे छै म्हेणी; तुज भडवी कहूं कै कहूं तुज दूती,  
 देख लीवी तुज रैणी ॥ म्हे० ॥ ५ ॥ थासरीखी नीच जग-  
 तमे, दूजी नही कोई होसी; पति लंपट घरनारी दूती,  
 तुज पति बहुलो रोसी ॥ म्हे० ॥ ६ ॥ राम कहे इस हण

मंत बोले, राम भक्ति संग रातो; सासू कड़वा वैण सु-  
णीनें, मनमें हुय गयो तातो ॥ म्हे० ॥ ७ ॥ इति ॥

## लावणी ॥

कहे मंदोदरी वात नाथ मुज मानो ॥ ना० ॥ छोडो  
सीताकी गैल आधी मत तांनो, रघुवरको महातेज जगत  
नही छांनो ॥ ज० ॥ घर फूटो महाराज भाई लीयो  
कांनो; नौकर सब इन ठौर दौर गये भाजी ॥ दो० ॥ दिन  
बदले महाराज लड़त है पाजी; तुमकुं को सिखवत नही  
कोइ स्यांनो ॥ ब० ॥ १ ॥ कुंन जानी हस्त प्रहस्त सबी  
घट जासी ॥ स० ॥ कुन जानी रन बीच राक्षस हट  
जासी; कुंन जानी जंवूमाली नद कट जासी ॥ न० ॥  
कुंन जानी सुग्रीव आदि छुट जासी, कुंन जानी कपि  
रीछ जंगे अड जासी ॥ जं० ॥ कुंन जानी गढ़ लंक बक  
धुड जासी; अठा आगे क्या होसी जाने भगवांनो ॥ जां०  
क० ॥ २ ॥ कुंन जानी थी शक्ति खालि चल जासी ॥ खा०  
कुंन जानी इंद्रजीत जोधा बंध जासी; कुंन जानी लिछ-  
मन धीर सहस परणेसी ॥ स० ॥ कुंन जानी बैरी फोज  
घेरो आय देसी, नंदन बंधन बीच देवर पिण जानो ॥ दे० ॥  
राम सुनी कह वातनाथ मत तांनो; कोई कहैसी ऐसी  
वात नही थो दांनो ॥ न० क० ॥ ३ ॥ इति ॥

## १३ हो पिड पंखीडा ॥ ए देशी ॥

हो पिड मतवाला, हजेयन समजो कांय जो, भाई  
अरु नंदन सगला बबिया रे लो ॥ हो० ॥ सहू थाका सम-  
भाय जो, शक्ति रे पर मुख शस्त्र शर नहीं सधिया रे लो  
॥ १ ॥ हो० ॥ पवन देव गयो आज जो, धूवां फूका पिण

कीधा हमे हाथसूं रे लो॥हो॥दुरगा पिण गई भाज जो,  
आरती पिण नही हुई छै आज प्रभातसूं रे लो॥२॥हो॥  
सूर देव गयो रूठ जो, बेमाता पिण कोद्रव आज नां  
दले रे लो ॥ हो॥ ॥ पुनां पिण दीवी पृष्ठ जो, दिन दिन  
निज दल राम अरि दलसे मिले रे लो ॥ ३ ॥ इति ॥

१४ गैरो जी फूल गुलावरो ॥ ए देशी ॥

थे मांनो जी सीख सुहामणी,थे तो मांनो मांनो नण-  
दीरा बीरा,महारा साहिवा,मै निरखी परखी एक बातमे;  
शील रखने रखे शरीरा ॥ म्हा० ये०॥ देर ॥ ए रामचंद्रकी  
भारजा, आ तो सतियांमै सिरताज ॥ म्हा० ॥ केवली  
आगू भावियो, कांई झूल गया महाराज ॥ म्हा० ये०॥१  
थे जानकी लाया घर जान की,आ तो प्रांनकी लेवणहा-  
रा ॥ म्हा० ॥ क्यू सुपोनी पाछी एहनें, सहू वगते मंग-  
लाचारा ॥ म्हा० ॥ २ ॥ आ पिण निश्चय होय रही,  
नही मांने वचन तुमारा ॥ म्हा० ॥ भाई बंधव सब बद-  
लिया, कुल मैणी देवे ससारा ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ कुमी नहीं  
किण वातरी, थारि नारी सहस अठारा ॥ म्हा० ॥ बळी  
जोबोनी बखत विचारने, रही थोडीसी घणी गई लारा  
॥ म्हा० ॥ ४ ॥ एरु हणुमत दूत आयने, करधूं लका म-  
ध्य हाहाकारा ॥ म्हा० ॥ खर दृपण हण वस गया, ह-  
ण्या राक्षस चवदे हजार ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ स्वप्न हुवो  
एक रातरो, मै तो गिर घड देख्या तुम न्यारा ॥ म्हा०॥  
क्यू समजोनी इण बातमें, मै तो कहि कहिने सब हा-  
स्था ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ हठीला हठने छोडिये, थाने साच  
वचन लागे खारा ॥ म्हा० ॥ मुनि राम कहे स्यो भाखीये,  
कुण टाळे होवणहारा ॥ म्हा० ॥ ७ ॥ इति ॥



१५ हां सगीजीनें पेड़ा भावे ॥ एदेशी ॥

थे किम झूला राजवी, आ घर जावणकी वात; मंदो-  
दरी थूं समजावे, मनमे सोचो साहिवा, वो गृध्र लडियो  
तुम साथ ॥ मं० ॥ हां पतिनें थूं समजावे ॥ टेर ॥ १ ॥  
वा नहीं यांछे साहिवा, थे किम खोवो राज ॥ मं० ॥  
बंदर राजा बदलियो, और रघुवर आयो गाज ॥ मं०  
हां० ॥ २ ॥ पद प्रणमीनें चीनऊं, आप स्यूं कीयो सीता  
लाय ॥ मं० ॥ करणी देखी दूतकी, सब लंका दीवी धु-  
जाय ॥ मं० हां ॥ ३ ॥ अब राम आये चमू लेईने, सो  
करसी कौन हवाल ॥ मं० ॥ सीता लीये चिन ना फिरे,  
कुंण छोडे अपनी नार ॥ मं० म्हां० ॥ ४ ॥ शीत निशा  
सम जानकी, और तव कुल कमल विनास ॥ मं० ॥ निज  
सचिव संग देईने, आ मेलो रघुवर पास ॥ मं० म्हां०  
॥ ५ ॥ राम थाण अहिगण सारिखा, निकर निशाचर  
भेक ॥ मं० ॥ जां लग असत न तां लगे, जतन करो तज  
टेक ॥ मं० म्हां० ॥ ६ ॥ हस कर रावण बोलियो, सल  
डरकण नारी जात ॥ मं० ॥ त्रिलोक डरे ताकी त्रिया,  
कयूं निडर न रहै दिन रात ॥ मं० म्हां० ॥ ७ ॥ दिन फि-  
रियो रावणतणो, सो अमृत पीये नाथ ॥ मं० ॥ राम दिव-  
स छै एहवो, मनु मदी सोवन थाय ॥ मं० म्हां० ॥ ८ ॥ इति ॥

१६ सुंदर क्या नैनां झमकावे ॥ एदेशी ॥

अब हूं नहीं रहूं रे अटक्यो, म्हारो मन लागो लिछ-  
मनसूं ॥ अ० ॥ १ ॥ क्या जानी थी क्या हुय आई, बं-  
धव धरा पटक्यो ॥ अ० ॥ २ ॥ सीया हूतो दुश्मन घर  
बैठी, धिक् धिक् जीवत घटक्यो ॥ अ० ॥ ३ ॥ मुज सगे मुज

बंधव निकस्यो, मुज संगे वनमें भटक्यो ॥ अ० ॥४॥ जावो  
जावो रे भीर सब छारो, बांह बल मोरो घटग्यो ॥ अ० ॥५॥  
राम बंधवनो होत है विरहो, फिट हीया तूं नहीं फट-  
ग्यो ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

### १७ लावणी ॥

नहीं मांन्यो विभीषण बोल, हिवे पिछतायो ॥ हि० ॥  
सतीभणी दीयो दुःख हाथ नहीं आयो; भाई बेटा बध-  
वाय घरे हू आयो ॥ घ० ॥ मुजलगि कुमतकी संग यूही  
भरमायो; मै कीयो नहीं जिन धर्म कर्म, बधवायो ॥ क०  
न० ॥ लंकासो मुज राज काज नहीं सुधरयो ॥ का० ॥  
शुरु ज्ञानीका वचन जानत हूं विसरयो; निमिस्तीको बोल  
अमोल जावे किम खाली ॥ जा० ॥ सह संपतको खोय  
आपदा घाली; आंख मीच होय अध सती हर लायो ॥  
स० न० ॥ २ ॥ अब आवे न पाछी बात हातसें खोई ॥  
हा० ॥ म्हां जैसो महानीच भयो नहीं कोई; मंदोदरी-  
को सुपन साच दरसावे ॥ सा० ॥ इण पर रावण राय  
बहो पिछतावे; सूर्यणखा मुज बैन मुजे भरमायो ॥ सु०  
न० ॥ ३ ॥ कछु न विगरयो हाल सीता जो सौपू ॥ सी० ॥  
सब सुधरे मनका काज भंड जस रोपू; घाल विमानके  
मांहि सैन्यके बारे ॥ सै० ॥ सती जावे रामके पास हुवे  
जस सारे; रावण एम विमास सती सग आयो ॥ स०  
न० ॥ ४ ॥ हे सीता चल लार रामने देऊ ॥ रा० ॥ अब  
अळ्यो वचन मुखमांय तुम्हे नहीं केऊं; डम करी सीता  
लेइ गयो दिल गाढे ॥ ग० ॥ पिण सूर्यणखा तो वैर पूर्व  
तो काढे; मुनि राम कहे सग नीच तणी दुखदायो ॥ त०  
न० ॥ ५ ॥ इति ॥

## १५ हां सगीजीनें पेड़ा भावे ॥ ए देशी ॥

थे किम झूला राजवी, आ घर जावणकी बात; मंद  
दरी थूं समजावे, मनमें सोचो साहिबा, वो गृध्र लडिय  
तुम साथ ॥ मं० ॥ हां पतिनें थूं समजावे ॥ ढेर ॥ १  
वा नहीं बांछे साहिबा, थे किम खोवो राज ॥ मं०  
चंदर राजा बदलियो, और रघुवर आयो गाज ॥ मं०  
हां० ॥ २ ॥ पद प्रणमीनें वीनऊं, आप स्यूं कीयो सीत  
लाय ॥ मं० ॥ करणी देखी दूतकी, सब लंका दीवी  
जाय ॥ मं० ॥ हां ॥ ३ ॥ अब राम आये चमू लेईने, स  
करसी कौन हवाल ॥ मं० ॥ सीता लीये विन ना कि  
कुंण छोडे अपनी नार ॥ मं० ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ शीत निश  
सम जानकी, और तव कुल कमल विनास ॥ मं० ॥ नि  
सचिव संग देईने, आ मेलो रघुवर पास ॥ मं० ॥ म्हां  
॥ ५ ॥ राम बाण अहिगण सारिखा, निकर निशाच  
भेक ॥ मं० ॥ जां लग असत न तां लगे, जतन करो त  
टेक ॥ मं० ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ हस कर रावण बोलियो, ख  
डरकण नारी जात ॥ मं० ॥ त्रिलोक डरे ताकी वि  
क्यू निडर न रहै दिन रात ॥ मं० ॥ म्हां० ॥ ७ ॥ दिन ॥ १  
रियो रावणतणो, सो असृत पीये नाय ॥ मं० ॥ रामा  
स छै एहवो, मनु मदी सोवन थाय ॥ मं० ॥ म्हां० ॥ ८ ॥ हा

## १६ सुंदर क्या नैनां झमकावे ॥ ए देशी ॥

अब हूं नहीं रहूं रे अटक्यो, म्हारो मन लागो लिछ  
मनसूं ॥ अ० ॥ १ ॥ क्या जानी थी क्या हुय आई, ब  
धव घरा पटक्यो ॥ अ० ॥ २ ॥ सीया हतो दुठमन घ  
बैठी, धिक् धिक् जीवत घटक्यो ॥ अ० ॥ ३ ॥ मुज संगे मुज

॥ दे० ॥ देखो जी जिसकी चाल देखो पुन्यवता; जरा  
न जिसके झूठ बड़े है न्याई ॥ व० व० ॥ २ ॥ श्रीराम  
दयाल कृपाल शाल दुश्मनका ॥ शा० ॥ कुंन भेले महा-  
राज जोर लिछमनका; म्हे चढसां महाराज मुझे फुर-  
मायो ॥ मु० ॥ पिण हट कर अरज मनाय मिलण मिस  
आयो; हस्त प्रहस्तादि योध कटे छिनमाई ॥ क० व० ॥  
॥ ३ ॥ धररर धरा धसकाय पाय जब धरसी ॥ पा० ॥  
सररर चलसी धाण बहोत नर भरसी; अररर करसी  
लोक एक नहीं अरसी ॥ ए० ॥ अररर हीयो अरीय का-  
यर पाय परसी; ऐसे लिछमनका जंग होसे रन माई  
॥ हो० व० ॥ ४ ॥ मै हितकी बोलू बात इसीमे सोचो  
॥ ड० ॥ माथे पड़ियो पेच बखत है पोचो; भाभंडल  
सुयीव बधे ये पासे ॥ बं० ॥ छिनमे छटा तेह हजे नवि  
मासे; उलटी पडे सब बात सीता जब आई ॥ सी० व०  
॥ ५ ॥ गरुडाधिप सुर ग्राय साय थयो भारी ॥ सा० ॥  
दीधी अमोलक चीज उभो फुन त्यारी; दोय बधव शुद्ध  
रीति दीसे अवतारी ॥ दी० ॥ पर रमणीके बंधु बडे उप-  
गारी; अजे न विगडी बात देवो फुरमाई ॥ दे० व० ॥  
॥ ६ ॥ कर विसटाळो बात ठिराणे लाऊ ॥ टि० ॥ आप  
सर्व बातका जाण काई समजाऊं; अबके विगरी बात  
लगे नही कारी ॥ ल० ॥ सो बातोंकी बात मानो ए  
म्हारी; रत्नअवाजी तात केकसी माई ॥ के० व० ॥ ७ ॥  
तरक भरक लाय रीस पीस दाताने ॥ पी० ॥ तैं लरुने  
धोयो मुख, खबर है म्हाने; पिण देख जमिनके छेह  
काढ साराने ॥ का० ॥ वनवासीकूं मार सेऊ सीताने;  
मुनि राम कहै सत्य बात ठरे किम आई ॥ ट० व० ॥ ८ ॥

अन उचित कर बात फते कुंन पाई ॥ फ० ॥ उचित क  
त विमास जगत जस थाई; उगणीसे दोय तीस फल  
धि चउमासे ॥ फ० ॥ शुद्ध तेरस बुधवार आसोज  
मासे; करो सुनी चउमास फलोधि सुखदाई ॥ फ० व  
॥ ९ ॥ इति ॥

## २० लावनी

तुम चलो सखी कछु जेज न करिये ॥ ए देशी ॥

विभीषनकी अरज सुनीजे, बखत नही है आनेकी  
सीता दीजे ढील न कीजे, बात नही है छानेकी ॥ व०  
शक्ती गई गई बहु विद्या, सुत बंधू बंधवानेकी; पाँ  
नहीं भई सब जगकेसी, मैणी देसी नृप रानेकी ॥ व०  
॥ २ ॥ राज्यधानी सब रानी हारी, नहीं मांनी कोई द  
नेकी; चक्र गये तुज दुश्मन हाथे, बखत आई जि  
जानेकी ॥ व० ॥ ३ ॥ चार बार ए अर्जी साहिय, कि  
रहे वस्तु विरानेकी; सीता संपू बनी सब रक्खू, रज  
देवो पहुँचानेकी ॥ व० ॥ ४ ॥ हूँ चाकर तूँ ठाकर मेरे  
मोज करो लंक थांनेकी; श्रीरघुवर भाखे नेक कहे छै  
बखत नही छै तांनेकी ॥ व० ॥ ५ ॥ गुन्हो माफ कीये  
सब तोनुं, मत चूको अवसानेकी; लिछमन भाखे ओ  
न राखे, राम, कहे परमानेकी ॥ व० ॥ ६ ॥ इति ॥

## २१ देशी ख्यालनी ॥

गढ लंका मांयनें, आई रे असवारी राजा रामकी  
राम लिछमन तौ दीपे अधिका, हाथी होदे बैठा; सार  
लोक लुगाई देखे, नगरी मांहे पैठा; दरवाजामे बड़त  
ऊंचा, मोती लूँक दीठारे ॥ ग० ॥ १ ॥ सवा मणकी

मोती सोभे, बाजू सोभे और; रामचंद्रजी दिलमें सोचे, ह-  
सो न दूँजी ठोड; अजोध्यामें सोभे ओ तो, लेवां इसीकुं  
तोड जी ॥ ग० ॥ २ ॥ मनोगत भाव जाणया कविवरनें,  
बोले समस्या बोल; वमी चीजकुं वंछे न उत्तम, या क्या  
और अमोल; एक एकसे अधिकाधिक है, देखो आगली  
पोलजी ॥ ग० ॥ ३ ॥ सुनकर राम विचारे दिलमें, साच  
कहे छै एह; ए सब चीज विरानी इनसे, भूल न करना  
नेह; अजयतरेकी वस्तु देखत, कहतां न आवे छेह जी  
॥ ग० ॥ ४ ॥ लोकरतणे सुख शोभा सुनते, सीता पास  
पधारे; सीता देखनकी अभिलाषा, सो जांणे किरतार; पग  
पग लाखपसाव ज देते, इन पर राम पधारे जी ॥ ग० ॥ ५ ॥

२२ विभीषण प्रति भामंडल वाक्य ॥

दोहा ॥

पर शोच तज निज काज कर, ज्युं सुधरे जमवार ।  
अरिदम नृपनी सुन कथा, समझो सह नर नार ॥ १ ॥

ढाळ ॥

लक्षरियानी देशी.

अक्षपुर नामा एक पुरी हो, राजेद्रजी, जां अरिदम  
नामे राय; सुणिये वारता हो, राजेद्रजी, एक दिन काहूक त-  
र्फसैं हो, राजेद्रजी, आयो अचितित अश्व दबाय ॥ सु० ॥ १ ॥  
रानी शृंगार ल्यारी महलकी हो, ॥ रा० ॥ तब पूछे रानीने  
नरेद्र ॥ सु० ॥ मुज आगम किम जाणियो हो ॥ रा० ॥  
जब रांनी कहे कछो मुनींद्र ॥ सु० ॥ कीर्तिधर नामे  
मुनी हो ॥ रा० ॥ आज आये आहारके काज ॥ सु० ॥  
तिनकू हम पूछ्या इसैं हो ॥ रा० ॥ कब आसी कहो

यो जन्म सुधार हे, बाभी, आ थोड़ा दिनांरी थारी सा-  
हिबी हूं, वारी ॥ ६ ॥ इति ॥

२ गहरा वाजा वाजे नोबत घुरियां ॥ ए देशी ॥

थारो नंदन लागे जगत नीको ॥ था० ॥ पभणे रांणी वां-  
णी हरखांणी, तो नंदन त्रिमवन टीको ॥ थां० ॥ तुंवड  
खता जसोमती बाई, जायो थे नंदन सुंदर कीको ॥ थां०  
॥ १ ॥ सुरनरको मन मोहनगारो, प्यारो लागै बाई हम  
जीको ॥ थां० ॥ अद्भुत रूप अनूप बिराजे, मदन कर  
दीयो इन फीको ॥ थां० ॥ २ ॥ मान महा मद छिनमां  
हे मारे, मूल उछेद डारे सहु वैरीको ॥ थां० ॥ आनन  
चंद पूनम सम छाजे, बहालो लागै सब तीको ॥ थां० ॥  
॥ ३ ॥ सज्जन जननी मन लागै, बल्लम ज्युं हार छातीको  
॥ थां० ॥ दुर्जन जन मन खारो लागे, जैसे घाव काती-  
को ॥ था० ॥ ४ ॥ दही दूध शुद्ध खवावे धेनड, क्याम  
अरमातीको ॥ था० ॥ हम तुम कुल मंडन छै एही, चित्त  
हरत नित्त इंद्रानीको ॥ था० ॥ ५ ॥ नख सिख तांई श्याम  
सलूनो, वरन न होवे रोम राजीको ॥ था० ॥ जोतां तु-  
पत न उपजै दिलमे, धन्य जन्म मानुं माजीको ॥ था०  
॥ ६ ॥ दरस परसकुं तरस तरस है, जोगी करै जस  
गिरधारीको ॥ था० ॥ पूत कहावे जसोदा थारो, है अच  
रज अवतारीको ॥ था० ॥ ७ ॥ ढाळ भली वत्तीसमी  
गाई, गुणसागर कहै जस धारीको ॥ थां० ॥ खान पान  
अरु अमृत होजो, पूरो मनोरथ उर धारीको ॥ था० ॥  
॥ ८ ॥ इति ॥

३ अनोखा भंवरजी हो मारुजी बालो  
देउं घर आव ॥ ए देशी ॥

फाली नागनें नाथने हो, कनांजी, लीधी गोकुलकी वाट,  
जावे मथुरा गूजरी हो, कानजी, रोक्यो जमुनाको घाट;  
रगीला कानजी हो, लालजी, छोड जमुनाको घाट ॥ ढेर ॥  
दाण लेण सारु खडा हे, गुजरी, क्यू करो तांणोतांण;  
बिन दीना नहीं जावसो हे, गुजरी, नदरायकी आण  
॥ २० ॥ २ ॥

२३ सवैयो ॥

मैं तो नई निकसी नहीं मोहन, या अब रीत नई  
तुम कीनी; आज अनोज अफोज ग्रहे हरि, या  
अंगियां जु नई तुम छीनी; मैं तो सदा ब्रजमे मही  
वेचती, दांन मिसे दमरी नहीं दीनी; नद ददाजीकों  
पूछही देखो, कवे तुम ग्वालकी गागरी लीनी ॥ १ ॥  
[ कृष्णवाक्यम्—काहेको पूछहि देखो ददाजीकों, छाडि  
गुमान गुवाल हठीली, या ब्रजमे सब जानत है इक, न-  
दको लाल दधीको जु दांनी; डडके लोक महेशके लोकमे,  
आन हमारी कीने नहीं भांनी; बेरहीबेर कहो ब्रज ना-  
गरी, जाती है जोयन जोर जोरानी ॥ २ ॥ [ गूजरीवा-  
क्यम्—एतो कहा अभिमान धरो हरि, बात बडी बडी  
मोहिसो तांनो, मात तिहारी सदा महि वेचत, साची  
कहेते बुरो जिन मानो; काहेको गाय चरावत हो हरि,  
तातें कहावत घोषको रांनो; जात अहीरकी एक सवे ह-  
रि, को दश गायनको अधिकानो ॥ ३ ॥ [ कृष्णवाक्यम्—  
बात विचारके बोलरी भामनी, एकही जातमे भांत घनी



## ६ जवाईं दाय न आवे रे ॥ ए देशी ॥

भूवाजी अब किम करसूं हो, किणविध जासूं वागमें;  
 किण विध हरि वरसूं हो ॥ भू० ॥ ढेर ॥ कहां द्वारापुरी  
 साहियो, मिलियां विन भरसूं हो; वागमांहे किम जा-  
 वसूं, डरूं शिशुपाल नरसूं हो ॥ भू० ॥ १ ॥ सयानी  
 हरि नहीं न्यारो हे, धरियो रैसी जावतो; भूक मारे  
 शिशुपारो हे ॥ स० ॥ ढेर ॥ द्वारापुरीको साहियो, आयो  
 वाग मभारो हे; हूं काढूं अणियां वीचसूं, स्यूं शिशु-  
 पाल विचारो हे ॥ स० ॥ १ ॥ शिशुपालनें त्यागीयो,  
 कीयो हेत हरसूं हो; जो इण भव नहीं पावसूं, तो पाव-  
 कमें जरसूं हो ॥ भू० ॥ २ ॥ दूजा नर सब त्यागीया,  
 हरि मोहन गारो हे; तोय मिलाजं एक वातमे, धौं  
 धौं वजत नगारो हे ॥ स० ॥ २ ॥ भाई बाप तो  
 व्यावसी, हूं तो कूवे परसूं हो; आफू पिजं भर वाटको,  
 नहीं शिशुपाल वरसूं हो ॥ भू० ॥ ३ ॥ बाप भाई  
 मुख जोवसी, स्यूं शिशुपाल पीजारो हे; कयूं मरन  
 विचारे ताहरो, तोरो हरि भरतारो हे ॥ स० ॥ ३ ॥ इति॥

## ७ सोकडलनी साल म्हांने भूंडो लागेजी ॥ ए देशी ॥

भूडा घरांकी जाई भूंडी, मोडेकी परणार्ई; भीषमको  
 घर भांडी भूंडी, ओ घर भांडण आई; अमनें दौरा लागे  
 जी, सोकडलीको साल; म्हांने दौरा लागेजी ॥ ढेर ॥ लाखां  
 मिनखानें इण खाया, भाईनें बघाई; चौडी वणने करै  
 बडाई, आ किसो दायजो लाई ॥ म्हा० ॥ २ ॥ गीदे बैठी  
 हुकम हलावे, सतरे करती सांग; बाबलीयेके घरमे फिर  
 ती, वारे हाथकी डांग ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ मान पाय भाई

वण बैठी, गैणे गांठे रहे लहि; थोडा दिनांमे देखों इण  
 नें, माती होय गई गद्धि ॥ म्हा ॥ ४ ॥ गोलो वणने एह  
 गवाल्पो, अमथी चाले आडो; इण धांगीने कर धणि-  
 यांणी, लाल वण्यो छै लाडो ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ राजनीत  
 नहीं जाणे गवाळयो, काळयो वण रह्यो पाट्यो; गायों  
 चराई माय जसोदा, कदको राज जमाळ्यो ॥ म्हा० ॥  
 ॥ ६ ॥ उणरे मैलां नितको जावे, सारी रात जगावे,  
 म्हारे मैलामे झूलने आवे, तो नैणां नोंद घुरावे ॥ म्हा०  
 ॥ ७ ॥ सुजकू पलभर नहीं जो देखे, तो जक नहीं पड-  
 ती लारे; अय नैणांमे प्रीत न सागे, माखी न मुळको  
 मारे ॥ म्हा० ॥ ८ ॥ इति ढाळ सागर ॥

## पांडव चरित्र-लावणी ॥

१ लाज मोरी रखले भवानी ॥ ए देशी ॥

च्यारके उत्तर सुन लैना, मैं तुज देताहू मैना ॥ ढेर ॥  
 मोद जुत देह कौन कहिये, जगतमे आश्चर्य को लहिये;  
 को पथका बात सरदहीये, च्यार ए उत्तरही चाहिये,  
 उत्तर च्यार कह दीजिये, तो जीवे बधु एक तोय; मोय  
 सुनेवा चाय है, सुनता आनद होय; घोय पीछे मुहमे जल  
 देना २ ॥ च्या० ॥ १ ॥ पच वा छट्टे वासर जाई, साक वा पचते  
 घर माई; किसीका देना सिर नाई, नौकरी बिन मोज करै  
 चाई; राई भर परवश नहीं, करज किसीका नाह; नीद  
 आपकी ऊठही, वो मोद जुक्त जग मांह; जांह कछु  
 लेना नादनो २ ॥ च्या० ॥ २ ॥ बात ना जगमे कछु  
 छांनी, दिन दिन मरता है प्रांनी, पाव रूप रहते अज्ञा-

नी, पापमें हो रहे अगवानी; मानी नर जग एहवा, म्हे  
 कदे न मरसां कोय, आख्यां मरता देखही, क्या इनसें  
 इचरज होय; कोय तो अमरं नही रैना २ ॥ च्या० ॥ ३ ॥  
 पंथ नहीं एकसा सारे, मुनीका मत पिण है न्यारे; ग्रंथ  
 मत एक नही प्यारे, पंथ खरा एक कौन धारे; पंथ कौन  
 है साचलो, कौन साचलो सत; महंत गये जिण मारगे,  
 सो साचो है पंथ; तंत तो पंथ उसे वैना २ ॥ च्या० ॥ ४ ॥  
 मोहको कटाह जग भारी, रात दिन रूप इंधन जारी;  
 रबी जां अगनी छै न्यारी, पचावे कालही अधिकारी;  
 पचै प्राणी मात्र जे, क्या बात इसीसें और; मुनि राम  
 कहे धर्म ना करै, ते नर जंगली ढोर; और क्या इधक  
 इससे कैना २ ॥ च्या० ॥ ५ ॥ कहे सो बंधू जियलाऊ,  
 नृप कहे नकुल जीयो चाऊं; भीमार्जुन मांगो समभाऊं,  
 माद्रीको वंश ही रखवाऊ; कुंती नाम मैं राख हू,  
 माद्री नकुल रखाय; सुर कहे धन्य तुम धीरतां, महिमा  
 करी सुर राय, आय मैं देखी निज नैना ॥ २ ॥ च्या०  
 ॥ ६ ॥ इति ॥

### राग मांच ॥

पत्तर आयो, मांनो मांनो जी, पत्तर लायो, काका-  
 जीको जी, वांचो प्रेमसू ॥ ढेर ॥ म्हे पूछां तोय वारता,  
 किम जाण्या इण ठाय; कारन किन तूं आवियो, सह  
 कहो विगताय जी ॥ ५० ॥ १ ॥ अरज करूं मैं चीनती  
 हू आयो शुभ काज-विदुरसा मुज भेजियो, कारन  
 सुनो महाराज जी ॥ ५० ॥ २ ॥ छाने मुजनें भेजियो,  
 कोईय न जाणे मोय; अवश्य काज हूं भेजियो, सुणतां  
 आनंद होय जी ॥ ५० ॥ ३ ॥ इति ॥

## ढाल ॥

बाहुवल खड़ा जोग वन धरियो ॥ ए देशी ॥

प्रियंवद आई मिलियो वनमें, औ तो पांडव हर्ष्या  
मनमें ॥ प्रि० ॥ ढेर ॥ वारणावत मुज विदुरजी भेज्यो,  
सुणिया बळिया तुमने ॥ प्रि० ॥ आगे देखू तो लोग  
पुकारे, देवे धिक्कार सुयोधनने ॥ प्रि० पां० ॥ १ ॥ सांभ-  
ळनें हूं सूछित हूयो, सुद्ध नहीं कछु तनमे ॥ प्रि० ॥ पद  
पुरुषने नारी दोई, भस्म हुवा एक छितमें ॥ प्रि० ॥ २ ॥  
मैं विदुर पंडवकू जई भाखी, दुःख न आवे कछु कहवनमे  
॥ प्रि० ॥ छांने बखाने विदुर पंडवसे, नहीं दुःख तेरा  
नंदनमे ॥ प्रि० ॥ ३ ॥ दुर्योधन मन भयो कुड्याली, अघि  
राज कलंगा आनंदमे ॥ प्रि० ॥ एक दिन एक चक्रापुर  
सेती, नर एक कह्यो जन जनमे ॥ प्रि० ॥ ४ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे

ढालसागर तथा पाण्डवचरित्रान्तर्गतं फुटकरनामक

एकादश प्रकरणम् ॥ ११ ॥

## व्याख्यान ॥

१ अथ विजय कुमारनो चौढालियो प्रारंभ ॥

दोहा ॥

आदिनाथ आदेश्वरू, सकल विदारण कर्म ।

उपगारी भवि तारवा, कह्यौ च्यार प्रकारे धर्म ॥ १ ॥

दान शील तप भावना, इन विन मुक्ति न होय ।

तो पिण सब व्रत देखता, शील समो नहीं कोय ॥ २ ॥

शील भागां भागा सबै, हम कहै श्रीजगचंद ।  
 शीलवंत जे पुरुषनें, सेवे सुर नर वृंद ॥ ३ ॥  
 जस कीर्ति फैलै इला, जे ब्रह्म व्रतमे लील ।  
 जो सुख चावो जीवने, तो पाळो शुध मन शील ॥ ४ ॥  
 विजय कुमार विजया बळी, शील पाळयो खग धार ।  
 तेहतणां गुण वर्णवुं, लिखित कथा अनुसार ॥ ५ ॥  
 निसुणी करो सारी सभा, पर नारी पच खाण ।  
 पंचपर्वि दिन आंखड़ी, करो यथाशक्ति प्रमाण ॥ ६ ॥  
 यौवन वय छति योगमे, नारि रहै जिण पास ।  
 ब्रह्मचारी त्रिहुं योगसु, दुकर दुकर परकाश ॥ ७ ॥

## ढाल ॥

१ मेड़तिया भँवरजीरो करहलो ॥ ए देशी ॥

जंबू द्वीपना भरतमें, दक्षिणे कछ देशो जी; नगर  
 कौशंधी तेहमे, अमरापुरी कहे सोजी; शीलतणी महिम  
 सुणो ॥ १ ॥ धनावो सेठ तिहां वसै, तिणरे विजय  
 कुमारोजी; रूप कला गुण आगलो, यौवन वय हुंसिया  
 रो जी ॥ सी० ॥ २ ॥ तिण अवसर मुनि पांगुज्या, सुमति  
 गुप्ति प्रति पन्नो जी; आपतिरे पर तारता, लोक कहै ध  
 धन्नो जी ॥ सी० ॥ ३ ॥ लोक आया मुनि चांदवा, ति  
 ही विजय कुमारो जी; धर्म कथा मुनिवर कहै, ए ससा  
 असारो जी ॥ सी० ॥ ४ ॥ जनम जरा दुख मरणनो  
 कहतां नावै पारो जी; नर भव पामतां दोहिलो, चेतं  
 सह नर नारो जी ॥ सी० ॥ ५ ॥ उत्कृष्टो बंध कर्मनो  
 विषय विष विचारो जी; नव लाख सनि मनुष्यनो  
 श्रीजिन कथो सहारो जी ॥ सी० ॥ ६ ॥ दुःख अनेक ह

जोग सैं, पर नारी दुख ग्वांनो जी; फल किंपाकनी ओ-  
पमा, हम भाल्यो भगवांनो जी ॥ सी० ॥ ७ ॥ हम सुणि  
सह धरहन्पा, विजय कुमार जोडी हाथो जी; हे मुनि  
सयम लेहवा, हूं समरथ नहीं किरपानाथो जी ॥ सी० ॥  
॥ ८ ॥ जावज्जीव पर नारनो, मोने मुनि पचखांणो जी;  
स्वदारा पिण जावज्जीव, कृष्ण पक्ष नां जांणो जी ॥  
॥ सी० ॥ ९ ॥ दुष्कर काम कुमार कीयो, मुनिवर कीध  
विहारोजी; रामचंद्र कहै शीलने, धन्य पाळे नर नारो  
जी ॥ सी० ॥ १० ॥ इति ॥

### दोहा ॥

तिण नगरी मांहे वसै, अपर सेठ धनसार ।  
विजया कुमरी जेहने, अद्भुत रूप उदार ॥ १ ॥  
सयणी चतुरा बहु लजा, चौसठ कला भंडार ।  
भर यौवन आई तदा, सादी विजय कुमार ॥ २ ॥  
आरण कारण सहु करी, कियो व्याव तिणवार ।  
जेहवी विजया सुंदरी, ते हवो विजय कुमार ॥ ३ ॥

### ढाळ ॥

२ मेंदुलाना गीतनी देशी ॥ मोटी जुगमें मोहनी ॥

सौळे शृंगार समी भला, कांडे आईहो रंगमहल  
भभार; नयन वधन प्रिय मोहती, माय वभीहो जिहां  
विजय कुमार; सुण जो जी शील सुहामणो ॥ १ ॥ कंत  
कहै भल आविया, दिन तीनेहो नहीं आवण काज; स्यूं  
कारण कहै सुंदरी, किम वरजी हो इण अवसर आज ॥  
सु० ॥ २ ॥ कृष्ण पक्ष व्रत मै लीयो, इण सुणने हो आ  
धई है उदास; शुक्ल पक्ष व्रत मै कीयो, दूजी परणी हो

मांडो घरवास ॥ सु० ॥ ३ ॥ विजय कुमार कहै हे प्रिया,  
 सहिजे हुळियो हो अनरथको मूल; जावजीव व्रत पा-  
 लसां, नर मूरख हो रखा छै भूल ॥ सु० ॥ ४ ॥ कहै  
 प्यारी प्रीतम सुणो जी कांई कहै, किम रहसी हो आ-  
 छांनी वात; प्रगट हुवां संयम लेसां, कांई लड़सांहो  
 कर्मारी साथ ॥ सु० ॥ ५ ॥ काम भोग बहु भोगव्या,  
 केईवार हो अनत विचार; तोई तृप्त न हुवो जीवदो,  
 कांई बोलेहो इम विजय कुमार ॥ सु० ॥ ६ ॥ करै सा-  
 माई पोसा भेळा, कांई सोवेहो एक सेज मंभार; जोवै  
 भगिनी भ्रात ज्युं, शील पाळेहो खांडारी धार ॥ सु०  
 ॥ ७ ॥ मन वचन काया करी, नही व्यापेहो कदी काम  
 विकार; सार धर्म जाणै जिनतणो, कांई बीजो हो सह  
 जाणै असार ॥ सु० ॥ ८ ॥ नहीं रुचि पुद्गल ऊपरे, कांई  
 लेखेहो जेहनो अवतार; राम कहै ढाळ दूसरी, धन्य  
 पाळे हो जे नर ब्रह्मचार ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥

दोहा ॥

धर्म ध्यान करतां थकां, द्वादश वर्ष ज थाय ॥  
 किम कर वात परगट हुवै, ते सुणजो चित लाय ॥ १ ॥  
 लक्ष्मि भाग्यने रागता, दाता सूर सुवास ॥  
 एता छांनां किम रहै, विद्वत् कवी प्रकास ॥ २ ॥

ढाळ ॥

३ जल्हानी देशी ॥

तिण अवसर तिण काले दक्षिण देशेहो सुखकारी  
 मुनिराज ॥ ति० ॥ मुनिंद ॥ विमल केवलि नामे मुनि शुभ  
 वेशे हो ॥ सु० वि० मु० ॥ १ ॥ चंपा पुरीना वागमांहे

ऊतरिया हो ॥ सु० चं० मु० ॥ बहु नर नारी मुनि वंदन  
 परवरीया हो ॥ सु० व० मु० ॥ २ ॥ ऐ संसार असार  
 मुनि दिखलावे हो ॥ सु० ए० मु० ॥ तन धन यौवन  
 जातां वार न लावे हो ॥ सु० त० मु० ॥ ३ ॥ मात पिता  
 सुत भामिनी संग न आवे हो ॥ सु० मा० मु० ॥ सह  
 सग छोडी चेतन पर भव जावे हो ॥ सु० स० मु० ॥ ४ ॥  
 विषय विकार प्रमादे नर भव हारे हो ॥ सु० वि० मु० ॥  
 मूरख चेतन रतन अमोलिक डारे हो ॥ सु० मू० मु० ॥ ५ ॥  
 इत्यादिक मुनि वर्म देशना दीधी हो ॥ सु० इ० मु० ॥  
 श्रोता श्रवणे अमृत रस कर पीधी हो ॥ सु० श्रो० मु०  
 ॥ ६ ॥ जिनदास आवक विनये सीस नमायो हो ॥ सु०  
 जि० मु० ॥ हे प्रभुजी मुज रयणि सुपनो आयो हो  
 ॥ सु० हे० मु० ॥ ७ ॥ सहस्र चौरासी मास खमण मुनि-  
 राज हो ॥ सु० ॥ स० मु० ॥ मैं प्रतिलाभ्या निर्दोषण प्रभू  
 आज हो ॥ सु० मैं० मु० ॥ ८ ॥ तेहनो स्यू फल दाखो  
 कृपा करने हो ॥ सु० ते० मु० ॥ भाखै मुनिवर सेठ सुणो  
 चित धरने हो ॥ सु० भा० मु० ॥ ९ ॥ नगर कौशांबी  
 विजय कुमार गुणधारी हो ॥ सु० न० मु० ॥ त्रिकुण योगे  
 दंपती बाल ब्रह्मचारी हो ॥ सु० त्रि० मु० ॥ १० ॥ राम कहै  
 शुध शील पाळै नर नारी हो ॥ सु० रा० मु० ॥ धन धन जे  
 नर तेहनी हूं बलिहारी हो ॥ सु० थ० मु० ॥ ११ ॥ इति ॥

दोहा ॥

इक सेज्या सोवै विन्हे, शुध पाळै ब्रह्मचार ।

द्वादश वर्ष ज नीकळ्या, धन तेहनो अवतार ॥ १ ॥

चर्म शरीरी महा उत्तम, किया ज्ञानि गुणग्राम ।

सुणने सह विस्मय थपा, सहको कियो प्रणाम ॥ २ ॥



जिनदास मनमें चिंतवै, जाय करूं दरसत्र ।  
तुम मिलिया संयम लेवसी, मुनिवर कियो प्रसन्न ॥३॥

ढाळ ॥

४ अनोखा भँवरजी हो साहिवा झालो देऊं घर  
आव ॥ ए देशी ॥

जिनदास मुनिवर वांदने हो, भवियण, नगर कौशा-  
वी जाय; बहु परिवारे परिवन्धौ हो ॥ भ० ॥ दरसन की  
मनमांय; धन धन जेहनें हो भवियण जे पाळै ब्रह्मचार ॥  
॥ १ ॥ नगर कौशांवीना वागमें हो ॥ भ० ॥ सेठजी डेरो  
करेह; विजय कुमरना तातसूं हो ॥ भ० ॥ मिलियो हर्ष धरेह  
॥ ध० ॥ २ ॥ स्यों कारण पधारिया हो, सेठजी, दाखो मुजने  
राज; धमें सगपण आविया हो ॥ से० ॥ तुज सुत दर्शन  
काज ॥ ध० ॥ ३ ॥ विमल केवली गुण कीया हो ॥ से० ॥ बाल  
ब्रह्मचारी तेह, मुज दर्शन मनमें लगी हो ॥ से० ॥ ज्यूं चात-  
ककुं मेह ॥ ध० ॥ ४ ॥ सेठ सुणि अचरज थयो हो ॥ से० ॥  
लीयो कुमर बुलाय; किसी भांत सोगन कीया हो,  
लालजी, स्यूं थारे मन मांय ॥ ध ॥ ५ ॥ कुमर कहै कर  
जोड़ने हो ॥ से० ॥ मैं लीयो अभिग्रह धार; आज्ञा दीजै  
मुजभणी हो ॥ से० ॥ लेस्यूं संयम भार ॥ ध० ॥ ६ ॥ तात  
कहै नंदन सुणो हो ॥ ला० ॥ कठिन मुनि आचार; कर  
अग्रे कहो किम रहे हो ॥ ला० ॥ मेरु जितरो भार ॥  
॥ ध० ॥ ७ ॥ लाख प्रकारे नही रहूं हो ॥ से० ॥ सयम  
सुख दातार; वैरागी कहो किम रहे हो कुमरजी, लीयो  
सयम भार ॥ ध० ॥ ८ ॥ विजया कुमरी पिण लीयो हो,  
मुनिवर, पाळै शुध आचार; जप तप खप क्रिया करी

हो, दोनं, पास्यां केवल सार॥ ध०॥९॥ कर्म खपाय मुक्ति  
गया हो, ॥ सु० ॥ प्रथम तीर्थकर वार; ब्रह्मचारी विरला  
इसा हो ॥ भ० ॥ सुणजो सह नरनार ॥ ॥ ध० ॥ १० ॥  
जगणीसे दशे समै हो ॥ भ०॥ नागौर शेषे काल; फागण  
शुध पूनम दिने हो ॥ भ० ॥ जुक्तसुं जोडीं ठाळ  
॥ ध० ॥ ११ ॥ स्वांमी वृद्धि चदजी प्रसादसुं हो ॥ भ० ॥  
रामचंद करी जोय; ओछो अधिको जे हुवे हो ॥ भ० ॥  
मिथ्या दुःकृत मोय ॥ ध० ॥ १२ ॥ इति ॥

### कलश ॥

शीलवंत प्रभूनी गादी, स्वमुख जिनवर भाखियो;  
शीलव्रत सम अवर जगमे, नहीं पदारथ दाखियो; चौ-  
सठ सहस वरस सुर आयु पांमे, लोक लज व्रत राखियो;  
दुर्धर व्रत जे सधर राखै, धन धन ए इस चाखियो ॥ १ ॥  
विजय सेठ सेठाणी विजया, जैसा विरला जगतमें; धन  
धन मनुष्य जनम पायो, जाय विराज्या सुगतमे; जेहत-  
णां गुण मुख गातां, जन्म सफलो होय है; गुणवतना  
गुण सुणत काने, भव भव पातक खोय है ॥ २ ॥ सुण-  
वानो गुण एही कहिये, कलक हिरदे धारिये; लीधा व्रत-  
मे कायम रहिये, नर भव अफल न हारिये; ज्ञान वृद्धना  
चरण पकडो, अगाध भवो दधि तारिये; रामचंद आनंद  
धरने, ज्ञानादिक विचारिये ॥ ३ ॥ इति विजय कुमरनो  
चौडालियो संपूर्ण ॥

### अस्वाढ भूत ॥

### दोहा ॥

साग कियो साधूतणो, पेट भरी गुण हीन ।  
भेख लजावे लोकमे; धिक् तुजने मत हीन ॥ १ ॥

महाव्रतधारी बाज है, लाजे नहीं लिगार ।

धर्म लजावा कारणे, तैं छोड्यो संसार ॥ २ ॥

## १ चौकनी देशी ॥

सुण महासती, यां लखणांसूं जैन धर्म अति लाजै,  
 गुण नहीं रती, लोकांमांहे निग्रंथणी तूं बाजे ॥ आं-  
 कडी ॥ तूं चाले छे चाळा करती सुधईर्या समति नहीं  
 धरती । लोक लाजसूं नहीं डरती, तू लावे गोचरी भर-  
 भरती ॥ सु० ॥ १ ॥ एकली तूं फिरती दीसे, दोयनूं  
 वरजी जग दीसे । शुद्ध सीख दीयां दांतज पीसे, तैं  
 नहीं छोडी तिलभर रीसे ॥ सु० ॥ २ ॥ तूं मेळे खेळे  
 देखण आवे, व्याव ओसरसूं वैरी लावे । रवि ऊगां विन  
 पांणी जावे, तूं कयूं जिन मारग लजावे ॥ सु० ॥ ३ ॥  
 थारे घेरदार पैरण साडी, रंगी चंगी छे देह थारी । तप  
 करणसूं तूं हारी, तूं तूट पडी खावण लारी ॥ सु० ॥ ४ ॥  
 तूं भीणो पट ओढण राखे, अंग अंग सारो भांखे ।  
 लोक निंदा करी इम भाखे, इण भेख लीयो छे हक-  
 नाखे ॥ सु० ॥ ५ ॥ परालब्धी बाल खिलावे छे,  
 मांहो मांहे जंग मचावे छे । गृहस्थो आय छुडावे  
 छे, जिन मारग पूरो लजावे छे ॥ सु० ॥ ६ ॥ जगमांहे  
 बाजे तूं गुरणी, विगड गई थारी करणी । लपट  
 नरना चित हरणी, तूं लाजे नहीं उदर भरणी ॥ सु०  
 ॥ ७ ॥ केई कपट करी जग डहकावे, मलिन श्याम धो-  
 वण लावे । शुद्ध दशा ते नहीं पावे, ते पिण त्रिवपुर  
 नहीं जावे ॥ सु० ॥ ८ ॥ कंचन चूडो खळके है, लिलवट  
 विंदली चिलके है । मंजनसूं देही भिलके है, बीजल ज्यू

तुज तन पल्लके है ॥ सु० ॥ ९ ॥ एक भागां सब ही  
भागे, धारी वंदना दाय नहीं लागे । हू आपाढाचार्य  
मुनि सागे, मति जभी रहे तूं मुख आगे ॥ सु० ॥ १० ॥  
रामचंद्र कह सुण लीजो, सुणने सतियां मत खीजो ।  
जो खीजो तो तप कीजो, सुध सजमनी खप कीजो  
॥ सु० ॥ ११ ॥ इति ॥

## २ चौकनी देशी ॥

सुणो मुनिवरजी, मत देखो पर दोष विचारी बोलो,  
गुणो जिनवरजी, तन उज्जल मन कपट हिया का खोलो  
॥ सु० ॥ टेक ॥ परोपदेशी घणा जगमे, पर औगण देखे  
पग पगमे । अरु आप तो झूल रह्या अध मे ॥ सु० ॥ १ ॥  
पूज पूज पग देवो छो, इण रीते विहारमे देवो छो । किम  
लबा तडाका देवो छो ॥ सु० ॥ २ ॥ मलिन धोषण  
चौड़े धर दो, निर्मल जल गुपचुप कर दो । निदा करि  
गृही कांन भर दां ॥ सु० ॥ ३ ॥ पड़िलेहण विधि नहीं  
जाणो छो, शुद्ध अद्धा न पिछाणो छो, उत्सूत्र प्ररूपी  
रूढ तांणो छो ॥ सु० ॥ ४ ॥ कपट क्रियासैं नहीं  
तरिया, बाज आचारी पेढ भरिया । इसा सांग तो  
बहु करिया ॥ सु० ॥ ५ ॥ उज्ज्वल वस्तिमे सम रैणो,  
कैणो जिण रीते वैणो । घर औगुण देख पर गुण  
लैणो ॥ सु० ॥ ६ ॥ महिमा कारण करि माया, भोळा  
नरने भरमाया । स्युं कपट धरम प्रभु फुरमाया ॥ सु० ॥ ७ ॥  
आप सासरे नहीं जावे, परने सीख सुध फुरमावे ।  
ज्यांरी प्रतीत कहो किम आवे ॥ सु० ॥ ८ ॥ हाथ यकी  
फेरे माळा, भरे पेटमे कुहाळा । ऐसे मुनिका मुख करना  
काळा ॥ सु० ॥ ९ ॥ आप पोते निग्रथ बाजो, धोये

चिणे ज्यू मत गाजो । घर जातां मनमें नही लाजो ॥  
 ॥ सु० ॥ १० ॥ मनुष्य मारनें धन लावो, अवे पेलाने  
 समजावो । भोळी पातरा दिखलावो ॥ सु० ॥ ११ ॥ वात  
 सुणी अचरज पाया, या किम जांणे म्हारी माया । राम  
 तत्क्षण दोड़ आगे आया ॥ सु० ॥ १२ ॥ इति ॥

## ३ दिवाळी ॥

१ ढाळ ॥ पर भवकी खरची ले लो ॥ ए देशी ॥

दीवालीकी उत्तम रात, मोक्ष पधारे श्रीजगनाथ, यो  
 तम केवल भयो परभात ॥ ढेर ॥ दीवालीको शीलज  
 पाळो, खरची ले लो गैरी साथ ॥ दी० ॥ रात्री भोजन  
 करिये ढाळो, ज्यू रोग रहित रहे तेरो गात ॥ दी० ॥ १ ॥  
 पडिकमणो करणो इण वासर, गुणणो करणो श्रुद्ध वि-  
 ख्यात ॥ दी० ॥ गहिणा कपड़ा चोप दिखावो, ज्यू अडा  
 उजाळो छोड मिथ्यात ॥ दी० ॥ २ ॥ च्यार जाप करतां  
 रहे आनंद, फंद टळे मिले सज्जन साथ ॥ दी० ॥ ऐसो  
 अवसर मिले न मूरख, मान लीजो थे सतगुरु वात ॥  
 दी० ॥ ३ ॥ पर निदा मत करियो भाई, वैर मिटावो  
 ढाळो घात ॥ दी० ॥ पाप ठिकांणे लक्ष्मी खरचे, जिणकी  
 कहिये लक्ष्मी खात ॥ दी० ॥ ४ ॥ लक्ष्मी लेखे जिस्की जांणो,  
 दान सुपातर करियो आत ॥ दी० ॥ मुनि रामचंद्र कहे भाव  
 दिवाळी, तारे झूठ नही तिल मात ॥ दी० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ४ डोसी ॥

### दोहा ॥

पूरव कृत फल पापना, भुगते आपो आप ।

सुकृत फल जब उदय हुए, दूर पलाये पाप ॥ १ ॥

ज्यूं ज्यूं पड़ेज आपदा, त्यूं त्यूं धर्म करंत ।  
 पूर्व पाप आपद पड़े, हम भाखे भगवंत ॥ २ ॥  
 भांग पिये लहरां दिये, पिये न आगे लैर ।  
 अधवा डोसी वारता, सुणिघे अंदर हेर ॥ ३ ॥

१ ढाळ ॥ संकर वसेरे कैलासमें ॥ ए देशी ॥

करिये धर्म शुद्ध चालसू, अदर कपट निवारजो ॥ कप-  
 तणा फळ पाडुवा, नहि तरिये संसार, धारो जनम सु-  
 र, साधु वचन तू धार, ज्ञान दृष्टि सभारजो ॥ क०  
 १ ॥ धर्मी दुःखी सुखी पापियो, सहकार सीढायजो ॥  
 धर्म फल्यो नहीं देखियो, ऐसी न लावो दिल्लमांय, धर्म  
 फल्यो नहीं जाय, बध्या करम भुगतायजो ॥ क० ॥ २ ॥  
 एक डोसी वर्ष साठनी, मारयो पाडोसी दाळजो ॥ गहि-  
 गा उतारी गाडियो, पछे गई धर्मशाल, उपवास कीयो  
 तत्काल, दया लेसू पिण पालजो ॥ क० ॥ ३ ॥ सामायिक  
 कर तिष्ठहि, लारे भईहे पुकार जो । राज सुभट फिरे  
 हेरता, जडिया डोसीना छार; कहां गई तालो मार,  
 नहीं छोडे घरबार जो ॥ क० ॥ ४ ॥ घरमें बालक पग  
 आविया, पाछा गया नहीं केम जो । आया उपाश्रय  
 पाधरा, सुभट बोले छे एम, धारे धर्मसुं प्रेम, तेरा देख्या  
 सुंस नेम जो ॥ क० ॥ ५ ॥ करै तगादो चल डोसली,  
 वीरा हू हू पोसा मांय जो । भाखा चलितथी ओळखी,  
 लाया घीसी घरमांय, धारो घरही जोवाय, म्हांने बाल  
 दिखवाय जो ॥ क० ॥ ६ ॥ मूवो बालक निकस्यो धन  
 लाधियो, देवे जराजर मार जो । अज कहे धर्म ना  
 फल्यो, लीजो चतुर विचार, कीजो सुधी निरधार,  
 डोसी लघे किम पार जो ॥ क० ॥ ७ ॥ पापना फल

## ७ सुभद्रा-गाछ ॥

१ नाड़ेके छुरियां बांध मती ॥ ए देशी ॥

जैन धर्म सबथी सिरे, तोय केती हूं, थे समजो ज्ञान  
विचार, बाईजी तोय केती हूं; जिन धर्मदी निंदा करो मती,  
हणे नहीं कोई जीवनें ॥ तो० ॥ बोले न झूठ लिगार ॥ १ ॥  
बाईजी तोय केती हूं, जिन धर्मकी निंदा करो मती, पक्ष  
दूर धरो, न्याय पक्ष करो, मुनि संगसें उतरो पार ॥ वा०  
जि० ॥ टेर ॥ तृण न लेवे विनु दीयो ॥ तो० ॥ पाछे शुद्ध  
ब्रह्मचार ॥ वा० जि० ॥ धन धूल गिण त्यागीयो ॥ तो० ॥  
ऐ तनकी न रक्खै सार ॥ वा० जि० प० न्या० मु० वा०  
जि० ॥ २ ॥ रात्रि भोजन नवि करे ॥ तो० ॥ धरे पग  
सूत्रके न्याय ॥ वा० जि० ॥ डरे सदाई पापसूं ॥ तो० ॥  
मुनि मुक्त नगर ले जाय ॥ वा० जि० प० न्या० मु० वा०  
जि० ॥ ३ ॥ परस्पर मीढो धर्मनें ॥ तो० ॥ मत पक्षक  
करिये दूर ॥ वा० जि० ॥ दुग्ध दुग्ध सब सारीखे ॥ तो० ॥  
गिणो न केसर सम धूर ॥ वा० जि० प० न्या० मु० वा०  
जि० ॥ ४ ॥ जिन मारग कोई निदसी ॥ तो० ॥ स्यो  
जिन मारग जाय ॥ वा० जि० ॥ मुनि राम कहे धन्य  
मानवी ॥ तो० ॥ जे समजे न्याय अन्याय ॥ वा० जि०  
प० न्या० मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

## गीत ॥

१ चालो चालो हो रंग रसोड़े मांय, जीमाऊं,  
तोनें सीरो ने पूड़ी ॥ ए देशी ॥

छोडो छोडो हो भोजाई, धारो धर्म, कर्म काई बांध  
रक्खा; धारे नहीं है सासूजीकी शर्म, घरमे कळो घालि

रह्या ॥ १ ॥ नहीं न्हांणे धोणेकी थारे रीत, न प्रीत शिव  
शक्तिकी; थे हुय गया शर्म जीत, न रीत थारे भक्तिकी  
॥ २ ॥ जिन धर्म छै पूरो मलीन, थे काई नही जाणता;  
थे दीसो पूरा पुन्य हीन, झूठी रूढ ताणता ॥ ३ ॥ लेस्या  
गहणा गांठा खोस, दोष नहीं मांहरो, थे निकम्मा क-  
रोगा रोस, राम म्हे भलो चावां तांहरो ॥ ४ ॥ इति ॥

## ढाळ ॥

१ वर पायो हे कैलास निवासी प्रीतसूं ॥ ए देशी ॥

धर्म पायो हे नणदल भल भावसू, छूटे न छुडायो हे  
रतन चिंतामणि सारिखो ॥ ढेर ॥ ऐ तो दया धर्म  
जग मोटो हे, म्हे तो लीयो जिसीको ओठो हे; जाणूं  
हिंसा धर्मने खोटो हे, ए वचन गिणो मत छोटो हे  
॥ ध० ॥ १ ॥ जिन धर्मसूं कारज सरसी हे, जाकी होड  
करी नही करसी हे; जिन धर्मसूं दुःख सख ढरसी हे,  
हण धर्मसूं तरया केई फेर तरसी हे ॥ ध० ॥ २ ॥ म्हे तो  
भाग्य उदय धर्म पायो हे, म्हे तो भव भव ए धर्म चायो  
हे; मोने सद्गुरु ज्ञान सुणायो हे,, राम दूजो दाय न  
आयो हे ॥ ध० ॥ ३ ॥ इति ॥

## ८ शालिभद्र ॥

१ राजन मोरा किण विध रैसूं रे ॥ ए देशी ॥

बालम मोरा आज्ञा किण परे देऊ रे, देऊंने फिर  
किम रेऊं रे; हू पिण सयम लेऊ रे ॥ वा० ॥ ढेर ॥ मोने  
बाई काई केसी रे, ए बात जुगो जुग रैसी रे; मोनें  
मोसा सारा देसी रे ॥ वा० ॥ १ ॥ म्हांने छोड मती थे



## ७ सुभद्रा-गाळ ॥

१ नाड़ेके छुरियां बांध मती ॥ ए देशी ॥

जैन धर्म सबधी सिरै, तोय केती हूं, थे समजो ज्ञान  
विचार, बाईजी तोय केती हूं; जिन धर्मदी निंदा करो मती,  
हणे नहीं कोई जीवनें ॥ तो० ॥ बोले न झूठ लिगार ॥ १ ॥  
बाईजी तोय केती हूं, जिन धर्मकी निंदा करो मती, पक्ष  
दूर धरो, न्याय पक्ष करो, मुनि संगसें उतरो पार ॥ बा०  
जि० ॥ ढेर ॥ तृण न लेवे बिनु दीयो ॥ तो० ॥ पाळे शुद्ध  
ब्रह्मचार ॥ बा० जि० ॥ धन धूल गिण त्यागीयो ॥ तो० ॥  
ऐ तनकी न रक्खै सार ॥ बा० जि० प० न्या० मु० बा०  
जि० ॥ २ ॥ रात्रि भोजन नवि करे ॥ तो० ॥ धरे पग  
सूत्रके न्याय ॥ बा० जि० ॥ डरे सदाई पापसूं ॥ तो० ॥  
मुनि मुक्त नगर ले जाय ॥ बा० जि० प० न्या० मु० बा०  
जि० ॥ ३ ॥ परस्पर मीढो धर्मनें ॥ तो० ॥ मत पक्षकूं  
करिये दूर ॥ बा० जि० ॥ दुग्ध दुग्ध सब सारीखे ॥ तो० ॥  
गिणो न केसर सम धूर ॥ बा० जि० प० न्या० मु० बा०  
जि० ॥ ४ ॥ जिन मारग कोई निदसी ॥ तो० ॥ स्यो  
जिन मारग जाय ॥ बा० जि० ॥ मुनि राम कहे धन्य  
मानवी ॥ तो० ॥ जे समजे न्याय अन्याय ॥ बा० जि०  
प० न्या० मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

## गीत ॥

१ चालो चालो हो रंग रसोड़े मांय, जीमाऊं  
तोनें सीरो ने पूड़ी ॥ ए देशी ॥

छोडो छोडो हो भोजाई थारो धर्म, कर्म कांई बांध  
रह्या; थारे नहीं है सासूजीकी शर्म, घरमें कळो घालि

वा वा, हे वारे वरसलों संयम पाळ्यो, कीयो माम  
 संथार; हे सर्वार्थसिद्धे जाय विराज्या, मुनि राम वंदे  
 वर प्यार; हे धन धन नर अवतार कीयो के वा वा  
 ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति शालिभद्रव्याख्यान संपूर्ण ॥

## ९ सत्यघोष ॥

१ दोय नारंगी दोय अनार ॥ ए देशी ॥

धरी बीजकूलोभी नटरी, लगे कलेजे दाह अपार; मोट-  
 को झूठ तजो नर नार ॥ ल० ॥ टेरे ॥ कद तेरे पूंजी धरी कुंण  
 देखी, कुंण छै तेरे साईंदार ॥ मो० ॥ १ ॥ करो पुकार चल  
 राज कचेरी, मेरी पैठ जानें दरवार ॥ मो० ॥ २ ॥ भरे शाय  
 सारे जग मोरी, तोरी कुण माने ससार ॥ मो० ॥ ३ ॥  
 जगा फिराये नेत्र गमाये, जमा पचाये नानाकार ॥ मो० ॥  
 ॥ ४ ॥ परभव विगडे स्यान ज जावे, दुःख पावे ग्राये  
 जमकी मार ॥ मो० ॥ ५ ॥ लक्ष पुज हार आतके छानिं,  
 मर कर जिण घर लीयो अवतार ॥ मो० ॥ ६ ॥ झूठी  
 साक्षी भरी धई नारी, छाती पर देवळी गही जमवार ॥  
 ॥ मो० ॥ ७ ॥ केवली भाग्वी सहको भाग्वी, ले बदलो  
 गयो सेठ कुमार ॥ मो० ॥ ८ ॥ मुनि राम कहें थापण  
 रख नटसी, ते मर कळसी बहुल संमार ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति ॥

## १० चन्दनवाला ॥

दोहा ॥

शील वरत राखणभणी, करिये मकल उपाय ।

सद्धर राखिये, देणा प्राण गमाय ॥ १ ॥

## गाळ ॥

१ बोल्यो हे बोल्यो, गाळ्यारे खातर बोल्यो

॥ ए देशी ॥

बोल्यो हे बोल्यो, ओ राजा श्रेणिक बोल्यो; स्वर्ग  
साचो हे साचो, ओ रति न दीसे काचो; अभा किण रीते  
जी घडिया, किण रीते हीरा जडिया; महक सुगंधी जी  
आवे, ओ जीव बहु सुख पावे; पावे सुख पिण चक्र  
चढि यो, अबके नहीं पिण अबके पडियो; अभो कहै छै  
साची बात, स्वर्गपुरी दीसे साक्षात; अंगण देखां कि  
देखा छात, इण घरकी तौ अद्भुत बात ॥ वो० ॥१॥इति॥

२ नाथूरांमजीवाळी जेळू सोख कीयो के वा वा

॥ ए देशी ॥

संगम मुनिजीनें दान दीयो के वा वा, हे दान दीयो  
मास खमणको, उलट शुद्ध परिणाम, हे निज खावाको  
लोभ न रक्ख्यो, कीयो छै उत्तम काम, हे दान दीयो  
नहीं जहार कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ १ ॥ खाली थाल  
अंवा देख लीयो के वा वा, हे जीम लीयो पय भोजन  
सगरो; माता निजरसूं मरियो, हे गोभट्टके घर जन्म  
लीयो छै, शालिभद्र नाम धरियो, हे नार बतीससूं  
व्याव कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ २ ॥ राजा श्रेणिक नाथ

सुण्यो के वा वा, हे आजलों नाथ सुण्यो नहीं  
कांने, पूरा पुन्य कीया नांह; हे संयम धारूं धन छिटका-  
ऊं, रहूं न घरके मांह; हे धन्नाजी पिण साथ कीयो के  
वा वा ॥ सं० ॥ ३ ॥ मास मास तप दो मुनिजी कीयो

के वा वा, हे वारे वरसलो संयम पाळ्यो, कीयो मास  
संधार; हे सर्वार्थसिद्धे जाय विराज्या, मुनि राम वंदे  
धर प्यार; हे धन धन नर अवतार कीयो के वा वा  
॥ सं० ॥ ४ ॥ इति शालिभद्रव्याख्यान संपूर्ण ॥

## ९ सत्यघोष ॥

१ दोय नासंगी दोय अनार ॥ ए देशी ॥

धरी धीजकूलोभी नटही, लगे कलेजे दाह अपार; मोट-  
का झूठ तजो नर नार ॥ ल० ॥ टेर ॥ कद तेरे पूंजी धरी कुंण  
देखी, कुंण छै तेरे साईंदार ॥ मो० ॥ १ ॥ करो पुकार चल  
राज कचेरी, मेरी पैठ जानें दरवार ॥ मो० ॥ २ ॥ भरे शाख  
सारे जग मोरी, तोरी कुंण माने ससार ॥ मो० ॥ ३ ॥  
जगा फिराये नेत्र गमाये, जमा पचाये नानाकार ॥ मो० ॥  
॥ ४ ॥ परभव विगड़े स्यान ज जावे, दुःख पावे खावे  
जमकी मार ॥ मो० ॥ ५ ॥ लक्ष पुंज हार आतके छाने,  
मर कर जिण घर लीयो अवतार ॥ मो० ॥ ६ ॥ झूठी  
साक्षी भरी थई नारी, छाती पर देवळी रही जमवार ॥  
॥ मो० ॥ ७ ॥ केवली भाखी सहूको साखी, ले बदळो  
गयो सेठ कुमार ॥ मो० ॥ ८ ॥ मुनि राम कहे थापण  
रत्न नटसी, ते मर कळसी बहुल संसार ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति ॥

## १० चन्दनवाला ॥

दोहा ॥

शील वरत राखणभणी, करिये सकल उपाय ।  
पिण व्रत सद्धर राखिये, देणा प्राण गमाय ॥ १ ॥

## गाळ ॥

१ बोल्यो हे बोल्यो, गाळ्यारे खातर बोल्यो  
॥ ए देशी ॥

बोल्यो हे बोल्यो, ओ राजा श्रेणिक बोल्यो; स्वर्ग  
साचो हे साचो, ओ रति न दीसे काचो; अभा किण रीते  
जी धडिघा, किण रीते हीरा जडिघा; महक सुगंधी जी  
आवे, ओ जीव बहु सुख पावे; पावे सुख पिण चक्र  
चढि यो, अबके नही पिण अबके पडियो; अभो कहै छै  
साची वात, स्वर्गपुरी दीसे साक्षात; अंगण देखां कि  
देखा छात, इण घरकी तौ अद्भुत वात ॥ वो० ॥१॥इति॥

२ नाथूरांमजीवाळी जेळू सोख कीयो के वा वा  
॥ ए देशी ॥

संगम मुनिजीनें दान दीयो के वा वा, हे दान दीयो  
मास खमणको, उलट शुद्ध परिणाम, हे निज खावाको  
लोभ न रक्ख्यो, कीयो छै उत्तम काम, हे दान दीयो  
नहीं जहार कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ १ ॥ खाली थाल  
अंबा देख लीयो के वा वा, हे जीम लीयो पय भोजन  
सगरो; माता निजरसूं मरियो, हे गोभइके घर जन्म  
लीयो छै, शालिभद्र नाम धरियो, हे नार घतीससूं  
व्याव कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ २ ॥ राजा श्रेणिक नाथ  
कांन सुण्यो के वा वा, हे आजलो नाथ सुण्यो नहीं  
कांने, पूरा पुन्य कीया नांह; हे संयम धारूं धन छिटका-  
ऊं, रहूं न घरके मांह; हे धन्नाजी पिण साथ कीयो के  
वा वा ॥ सं० ॥ ३ ॥ मास मास तप दो मुनिजी कीयो

के वा वा, हे बारे वरसलो संयम पाळ्यो, कीयो मास  
संधार; हे सर्वार्थसिद्धे जाय विराज्या, मुनि राम वंदे  
धर प्यार; हे धन धन नर अवतार कीयो के वा वा  
॥ सं० ॥ ४ ॥ इति शालिभद्रव्याख्यान संपूर्ण ॥

## ९ सत्यघोष ॥

१ दोय नारंगी दोय अनार ॥ ए देशी ॥

धरी धीजकुंलोभी नटही, लगे कलेजे दाह अपार; मोट-  
का झूठ तजो नर नार ॥ ल० ॥ १ ॥ कद तेरे पूंजी धरी कुंण  
देखी, कुंण छै तेरे सार्ईदार ॥ मो० ॥ १ ॥ करो पुकार चल  
राज कचेरी, मेरी पैठ जानें दरबार ॥ मो० ॥ २ ॥ भरे शाख  
सारे जग मोरी, तोरी कुण माने ससार ॥ मो० ॥ ३ ॥  
जगा फिराये नेत्र गमाये, जमा पचाये नानाकार ॥ मो० ॥  
॥ ४ ॥ परभव विगड़े स्यान ज जावे, दुःख पावे खावे  
जमकी मार ॥ मो० ॥ ५ ॥ लक्ष पुंज हार आतके छाने,  
मर कर जिण घर लीयो अवतार ॥ मो० ॥ ६ ॥ झूठी  
साक्षी भरी थई नारी, छाती पर देवळी रही जमवार ॥  
॥ मो० ॥ ७ ॥ केवली भाखी सहको साखी, ले बदळो  
गयो सेठ कुमार ॥ मो० ॥ ८ ॥ मुनि राम करे थापण  
रख नटसी, ते मर रुळसी बहुल ससार ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति ॥

## १० चन्दनवाला ॥

दोहा ॥

शील वरत राखणभणी, करिये सकल उपाय ।  
पिण व्रत सद्धर राखिये, देणा प्राण गमाय ॥ १ ॥

## गाळ ॥

१ बोल्यो हे बोल्यो, गाळ्यांरे खातर बोल्यो

॥ ए देशी ॥

बोल्यो हे बोल्यो, ओ राजा श्रेणिक बोल्यो; स्वर्ग  
साचो हे साचो, ओ रति न दीसे काचो; अभा किण रीते  
जी घडिया, किण रीते हीरा जडिया; महक सुगंधी जी  
आवे, ओ जीव बहु सुख पावे; पावे सुख पिण चक्र  
चढि यो, अबके नही पिण अबके पडियो; अभा कहै छै  
साची वात, स्वर्गपुरी दीसे साक्षात; अंगण देखां कि  
देखा छात, इण घरकी तौ अद्भुत वात ॥ बो० ॥१॥इति॥

२ नाथूरांमजीवाळी जेळू सोख कीयो के वा वा

॥ ए देशी ॥

संगम मुनिजीनें दान दीयो के वा वा, हे दान दीयो  
मास खमणको, उलट शुद्ध परिणाम, हे निज खावाको  
लोभ न रक्ख्यो, कीयो छै उत्तम काम, हे दान दीयो  
नहीं उहार कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ १ ॥ खाली थाल  
अंबा देख लीयो के वा वा, हे जीम लीयो पय भोजन  
सगरो; माता निजरसूं मरियो, हे गोभइके घर जन्म  
लीयो छै, शालिभद्र नाम धरियो, हे नार घतीससूं  
व्याव कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ २ ॥ राजा श्रेणिक नाथ  
कांन सुण्यो के वा वा, हे आजलो नाथ सुण्यो नहीं  
कांन, पूरा पुन्य कीया नांह; हे संयम धारूं धन छिटका-  
ऊं, रहूं न घरके मांह; हे धन्नाजी पिण साथ कीयो के  
वा वा ॥ सं० ॥ ३ ॥ मास मास तप दो मुनिजी कीयो

के वा वा, हे वारे वरसलो संयम पाळ्यो, कीयो मास  
 संधार; हे सर्वार्थसिद्धे जाय विराज्या, मुनि राम वंदे  
 धर प्यार; हे धन धन नर अवतार कीयो के वा वा  
 ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति शालिभद्रव्याख्यान संपूर्ण ॥

## ९ सत्यघोष ॥

१ दोय नारंगी दोय अनार ॥ ए देशी ॥

धरी वीजकूलोभी नटही, लगे कलेजे दाह अपार; मोट-  
 का झूठ तजो नर नार ॥ ल० ॥ टेरे ॥ कद तेरे पूजी धरी कुंण  
 देखी, कुंण छै तेरे साईदार ॥ मो० ॥ १ ॥ करो पुकार चल  
 राज कचेरी, मेरी पैठ जाने दरवार ॥ मो० ॥ २ ॥ भरे शाख  
 सारे जग मोरी, तोरी कुंण माने ससार ॥ मो० ॥ ३ ॥  
 जगा फिराये नेत्र गमाये, जमा पचाये नानाकार ॥ मो० ॥  
 ४ ॥ परभव विगड़े स्यान ज जावे, दुःख पावे खावे  
 जमकी मार ॥ मो० ॥ ५ ॥ लक्ष पुंज हार आतके छाने,  
 मर कर जिण घर लीयो अवतार ॥ मो० ॥ ६ ॥ झूठी  
 साक्षी भरी थई नारी, छाती पर देवळी रही जमवार ॥  
 मो० ॥ ७ ॥ केवली भाखी सहूको साखी, ले बदळो  
 गयो सेठ कुमार ॥ मो० ॥ ८ ॥ मुनि राम कहे थापण  
 रख नटसी, ते मर रुळसी बहुल ससार ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति ॥

## १० चन्दनवाला ॥

दोहा ॥

शील धरत राखणभणी, करिये सकल उपाय ।  
 पिण व्रत सद्धर राखिये, देणा प्राण गमाय ॥ १ ॥



सती शिरोमणि धारणी, वरणी कहाँलग जाय ।  
 करणी भवतरणी करी, श्रीमुख जिन गुण गाय ॥ २ ॥  
 पालक पापी ले गयो, मा वेदीनं उजार ।  
 लाज लोप लंपट मुखै, कहे हूं तुज भरतार ॥ ३ ॥

## १ देशी वीरानी ॥

वीरा, अलगो २, रहीजै मोय हो, वीरा, प्राण त्याग कर-  
 सूं अथी जी; वीरा, प्रभूजी २, सांमो जोय हो, वीरा,  
 सुपनामें बंछूं नहीं कथी जी ॥ १ ॥ वीरा, अहिमुख २,  
 देणो हात हो, वीरा, अगन भंषा करणी भली जी;  
 वीरा, करणी २, आतमघात हो, वीरा, कौन विसात  
 धारी चली जी ॥ २ ॥ वीरा, अलगो २, रहीजै  
 दूर हो, वीरा, कूर दृष्टे जो जोवसूं जी; वीरा, चढ़सी २, कोप  
 जो पूर हो, वीरा, थारा प्राण खोवसूं जी ॥ ३ ॥ वीरा,  
 सतियां २, संताणि न भूल हो, वीरा, इंद्रभणी बंछूं  
 नहीं रति जी; वीरा, रही हूं २, शील सरोवर झूल हो,  
 वीरा, नीच वचन कहिजे मतीजी ॥ ४ ॥ वीरा, जोतूं २,  
 छेड़सी मोय हो, वीरा, जीकं नहीं हूं अदघडी जी;  
 वीरा, रैसी २, पछै तूं रोय हो, वीरा, शील वरत मुज  
 जीवन जड़ी जी ॥ ५ ॥ धारणी, जीम २, खंडन करी  
 तेय हो, धारणी, तत्क्षण प्राण त्यागियाजी; मुनि  
 राम २, कहे छै एय हो, वीरा, शील पाळे सो सोभा-  
 गियाजी ॥ ६ ॥ इति ॥

## ११ सुलसा रेवती संवाद ॥

१ थारे मनाई नहीं मनूं रुणजुणियो ले ॥ ए देशी ॥

मे म्हांरी समकित आदरी, तुं समकित लै, कहू तोय मनरी बात, वारू समकित लै; हूं पिण हूंती अज्ञानमें ॥  
 ॥ तुं० ॥ अब मैं जाण्यो जगनाथ ॥ वा० ॥ १ ॥ मैं सुध आचारी ओळख्या ॥ तुं० ॥ आया छै श्रीवर्धमान ॥ वा० ॥  
 ॥ सुलसा कहे सुण वायली ॥ तुं० ॥ सुण रेवती बुधवान ॥ वा० ॥ २ ॥ क्यू उदास आज एवडी ॥ तुं० ॥ सुण सुलसा कहे वांण ॥ वा० ॥ मास पट्ट हुवा वीरने ॥ तुं० ॥  
 थंमे नहीं लोहीठांण ॥ वा० ॥ ३ ॥ मैं उपचार जाणूं भलो ॥ तुं० ॥ तुरत होय समाध ॥ वा० ॥ तो तुम जैसी वायली ॥ तुं० ॥ तुम गुण गाऊ अगाध ॥ वा० ॥ ४ ॥ मेल दीजे सुज घरभणी ॥ तुं० ॥ तुम गुरु शिष्य एक ॥ वा० ॥  
 प्रभु निमित्त ओपध कीयो ॥ तुं० ॥ रखे कोई लेवे देख ॥ वा० ॥ ५ ॥ सिहाभणी प्रभू भेजीयो ॥ तुं० ॥ सुलसा लाई बेनके पास ॥ वा० ॥ अश्व ओपधि दे आविका ॥ तुं० ॥  
 नहीं लां प्रभू निमित्त जास ॥ वा० ॥ ६ ॥ धन धन साधू ज्ञानी जी ॥ तुं० ॥ धन धन धारो जान ॥ वा० ॥ मुनि राम रुहे इण दानसू ॥ तुं० ॥ होसी सुलसा भगवान ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

## १२ जयंती ॥

१ गोरल ईसरजी कवै तो हसकर बोलणा हे ॥ ए देशी ॥

ऐ तो जवदे सुपन देखाविया जी २, बळी चौसठ इद्रही आवे, ऐ तो मेरुपर झुलवावे, जां तो रभा घुमर

लगावे, भल आया हो प्रभूजी जग तारवानें, ऐ तो शिव-  
 पुर पंथ दरसायवानें ॥ भ० ॥ ६२ ॥ कोटानकोटी सुर  
 आविया जी २, जां तो गीत इंद्राणी गावे वां तो कल-  
 सा इंद्र ढळावे, सहूको जलही आंख लगावे, जब तो  
 सहूके हाथ न आवे ॥ भल० ॥ २ ॥ पाछा माता पास  
 पोढावीया जी २, जांरी बाललीला सुखकारी, जरि  
 सूरतकी बलिहारी, जांरी मोहनी मूरति प्यारी ॥ भल०  
 ॥ ३ ॥ चार अतिशय लेई जनमीया जी २, और केवल  
 सैंध हग्यारा, उगणी सुरवर कीवि सुखकारा, तारे चौ-  
 तीस अतिशयवारा ॥ भ० ॥ ४ ॥ प्रभू आया छै नगरी  
 आपणी जी २, जांरे गौतम स्वांमी लारे, और मुनिवर  
 चौद हजारे, ऐ तो चरण कमल पग धारे ॥ भ० ॥ ५ ॥  
 जांरो नाम सुणी शिव सुख लहे जी २, जांरो एक वच-  
 न हीये धारे, जांरे फळरो अंत न पारे, जांनें पुन्यवंत  
 नयन निहारे ॥ भ० ॥ ६ ॥ आपे चालो भोजाई प्रभु चां-  
 दसां जी २, जांरा दर्शनसुं सुख पासां, आपे मनका-  
 भर्म मिटासां, आपे जन्म कृतारथ धासां ॥ भ० ॥ ७ ॥  
 ऐ तो एम सुणी आनंद लखोजी २, जारे हीये हर्ष न  
 मायो, मृगावती वांसें सीस नमायो, जांरो रोम रोम  
 हुलसायो ॥ भ० ॥ ८ ॥ बाईजी खूब वधाई दीवी आय-  
 नें जी २, आप वडो कीयो उपकार, म्हांसुं रख्यो अधिको  
 प्यार, थांसुं नहीं वडो संसार ॥ भ० ॥ ९ ॥ न्हाया नें  
 बळी कम्मा कीया जी २, ऐ तो सकल कीया सिंगार;  
 ऐ तो पैन्या नवसर हार, बोले रामचंद्र अनंगार  
 ॥ भ० ॥ १० ॥ इति ॥

## १३ भ्रम निवर्तन-लावणी ॥

१ गौरी चली सासरे फेर तो कवी आंना ॥ ए देशी ॥

गत वस्तुका सोच कबी नहीं करना; सुख दुख किस-  
के हात में कुन मरना ॥ १ ॥ एक धनवत नरका पुत्र  
बडा गुणवंता, कृतांत पकड़े आन प्रांन किय अंता; अब  
रोवे पीटे बाप अती अरडंता, रोख्या न रुके तेह मोह  
दुर्दता; माता भुरे अरे पुत्र त्रिया कह कंता, था पूरब  
भवका बैर अहो भगवंता, हम बाप रोवे विललाट अरे  
पुनवंता, दुर्लभ तुज दरसन ऐसे विलपता; तू छिनमे  
गया छिटकाय विध्वंस कर घरना ॥ ग० ॥ १ ॥ इणरीत  
धीते षट मास वास भये सूना, वस्यो हमशाने बाप रोवे  
तिहां दूना; दिवान गये समझाय एक नहीं माना, लोक  
हास्य घर हानि कहे कफखाना; घरके कहे दुख पाय करे  
जो सयाना, जिसका उत्तम उपगार जनम भर माना;  
एक चतुर विचक्षण पुरुष सुणी हम कांना, कहे एक रात्री  
बीच मिटाऊ तांना; यह उत्तम आचार दारे दुख परना  
॥ ग० ॥ २ ॥ दक्ष आयो पूनमकी रात बाबु जहां होता,  
रुदन किये इण भांत सकल सुण रोता; सुनत हीया  
फटजाय भेद नहीं पाया, कुंण रोवे तू केम बाबु धत-  
लाया; मेरे तो पुत्रका दुःख कलेजा जलता, तूं रोवे छै  
किण काज कायर हिय गलता; मैं रोज चंद्रमा काज  
साच मैं बोलू, बाबू कहे मैं तोय मूरख सग तोलूं; करे  
लोक उपहास उसीसें टरना ॥ ग० ॥ ३ ॥ आवे न चंद्र-  
मा हाथ प्राण जो खोवे, तुज सरीखा मृद होवा नहीं  
होवे; मैं प्रत्यक्ष देखू आंख इसीकू रोता, तुज दीसे न

तेरा पुत्र प्राण क्यूं खोता; चंद्र मिले नहीं मोय पुत्र किम  
तेरा, दोनूं झूठी बात ज्ञान कर हेरा; सुण बाबूकूं आया  
ज्ञान अज्ञान सब हदिया, आया अपने गेह प्रभूकूं रदि-  
या; मुनि राम कहे सत्य बात हियामें धरना ॥ ग० ॥  
॥ ४ ॥ इति ॥

२ म्हांने ब्हालो हे लागे गाधरो ॥ ए देशी ॥

हां हे ओ तो भरम मिटे दिन पाधरो, नां तो मिटे  
न लाख प्रकार, हे मन फाटो मीटे छै सैजमें, तुम देखोनी  
बुद्धि विचार, हे ओ तो भरम मिटे दिन पाधरो ॥ टेर ॥  
हां ए एक बाला यी नव यौवना, जांस्तूं, मिल्यो प्रथम  
भरतार, हे बहू रत निपुनता देखने, आ तो दीसे माठी  
नार ॥ हे ओ भ० ॥ १ ॥ हां ए आ तो शंका पति चित्त  
ऊपनी, इण भोगव्या केई भरतार, हे ओ तो सूतो पूठ  
देईनें, आ तो आई नींद अपार, हे ओ भ० ॥ २ ॥ हां ए  
चंद्रमुखि लखि वारता, एक भीत चिन्घो गजाकार, हे  
एक सन्मुख लिखी सिधनी, जिणरे गर्भ छूटो अर्ध वार  
॥ हे ओ भ० ॥ ३ ॥ हां ए जिण गज देखी जोर मारीयो,  
इम पति देख्यो बिरतंत, हे मुनि राम स्वभाव छै जा-  
तरो, इम समझ्यो जिणरो कंत ॥ हे ओ भ० ॥ ४ ॥ इति ॥

## १४ चेलणा-गाळ ॥

१ नाड़ेके छरियां बांध मती ॥ ए देशी ॥

जैन निंदा तुम काई करो, नृप कहती हूं, म करो  
कूड़ पक्षपात, राजाजी तोय केती हूं; जिन धर्मकी निंदा  
करो मती; पीत पीत सौवन नहीं ॥ तो० ॥ है अंतर  
दिवसने रात, राजाजी तोय कैती हूं, जिन धर्मकी निंदा

करो मती, न्याय पक्ष धरो, पक्षपात हरो, लरो मत पक्ष  
 लगाय ॥ रा० जि० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत मेरु सा, नृप  
 कहती हूं, पाळे शुद्ध ब्रह्मचार ॥ रा० ॥ टाळे दूषन जिन  
 वचनसूं ॥ नृ० ॥ ऐ चाले खांडा धार ॥ रा० ॥ २ ॥ जीव  
 घाती छै तोय गुरु ॥ नृ० ॥ नहीं बोले वचन विचार ॥  
 रा० ॥ अदत त्याग जिनके नहीं ॥ नृ० ॥ ते पाळे नहीं  
 ब्रह्मचार ॥ रा० ॥ ३ ॥ कळ्या परिग्रह कीचमें ॥ नृ० ॥  
 है संसारके बीच ॥ रा जोगी नहीं वै रोगी छै ॥ नृ० ॥  
 ते अंध धया दृगू भीच ॥ रा० ॥ ४ ॥ तिरे सो तारे और  
 ने ॥ नृ० ॥ नृप कीजो ज्ञान विचार ॥ रा मुनि राम कहै  
 निंदो मती ॥ नृ० ॥ छै साधू धन्य संसार ॥ रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ख्याल ॥

१ ख्याली आयो मुलतानसे ॥ ए देशी ॥

रांणी भाखे मुनिराजसे, म्हारे वाद भयो छै महारा-  
 जसें ॥ रा० ॥ अबधू मतमें छै महाराजा, मुज प्रेम लग्यो  
 जिनराजसे ॥ रा० ॥ १ ॥ जो करामात तो अबही दिखा-  
 वो, नहीतर जावो आजसे ॥ रा० ॥ २ ॥ धर्म दीपावा  
 आया अलगसे, डरां नहीं अमे राजसे ॥ रा० ॥ ३ ॥  
 धर्म दीपाजो लब्धि दिखाजो, मुज मोटी करो गिरराज-  
 सें ॥ रा० ॥ ४ ॥ चक्री सेना मुनिवर चूरे, राम श्रीसंघ  
 रक्षा काजसें ॥ रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

## १५ अरणक ॥

१ घरभी छूटे धन भी छूटे, और कहो तो सवि छूटे,  
 पिण संग न छूटे ॥ ए देशी ॥

धन भी छोड़ घर भी छोड़, प्रान कहो तो अवि

छोड़ूं, पिण धर्म न छोड़ूं; ओ हो मेरी जान, धर्म न छोड़ूं  
 ॥ देर ॥ जाभू डूबे तो जोर किसीका, मैं क्या जाभू भ-  
 णी बोड़ूं, धर्म न छोड़ूं ॥ सु० ॥ १ ॥ लाखों लोक सुभे  
 संतावे, किनसें लड़ मोबत तोड़ूं ॥ ध० सु० ॥ २ ॥ धर्म  
 हारेसें जन्म न सुधरे, हीरा पथरसें किम फोड़ूं ॥ ध०  
 सु० ॥ ३ ॥ धर्म विना तौ पशू बराबर, सूना जंगलमें  
 किम दोड़ूं ॥ ध० सु० ॥ ४ ॥ वीतरागके धर्मका सरना,  
 दूजा धर्मसें मन मोड़ूं ॥ ध० सु० ॥ ५ ॥ सुनि राम कहे  
 धन अरणक श्रावक, जिनकी महिमा किम जोड़ूं ॥ ध०  
 सु० धन० घर० प्रा० ॥ पिण धर्म न छोड़ूं, सुनो मेरी  
 जान, धर्म न छोड़ूं ॥ इति ॥

## १६ विद्या विलास ॥

सवैयो ॥

खेतीसें रेती में सीर नीर मनमान्यो होत, नीपजै धरामें  
 धन जहाँनको जिवावे है । रसाल जे जगत बीच पूंख फळी  
 कचरे, ककड़ी मतीरे मीठे दुनियां सरावे है ॥ गाय भैस  
 ऊँठ घोरे दांम विना धीना होत, चीरी कीरी लोंकी मृग  
 सारे सुख पावे है । और सब ठीकाठीक पूरो धन कछो  
 धान, खेती विना और मेरे दाय नहीं आवे है ॥ १ ॥

१ असी रुपीया लो कलदार ॥ ए देशी ॥

मोने सखि मिलियो तुज भरतार, कुशल क्षेमका कहू  
 समाचार ॥ देर ॥ तेरो सखी कंत बहू पुन्यवत, बडो  
 मतिवंत अनंत गुणधार ॥ मो० ॥ १ ॥ इण पुर ठाम ग-  
 णिका धाम, कामलता के रहे घर द्वार ॥ मो० ॥ २ ॥ जिण  
 कीयो सूडो रूपे रूडो, नहीं छै कूडो कहूं घर प्यार ॥

॥ मो० ॥ ३ ॥ थये मास वार नहीं समाचार, करी कम-  
लावती बहु हंसियार ॥ मो० ॥ ४ ॥ ते कीर उडतो चल-  
तो रे आयो, मुज मन भायो करतो उचार ॥ मो० ॥  
॥ ५ ॥ दूहा गूढा गाथा पहेली, क्या क्या सहेली कछा  
तिणवार ॥ मो० ॥ ६ ॥ मुज कर आयो मेवा खवायो,  
स्नान करायो खोल्हो पग तार ॥ मो० ॥ ७ ॥ विद्यावि-  
लास थयुं परकास, मै पूछयुं किम भयुं अवतार ॥ मो०  
॥ ८ ॥ सुदंडी लेण गयो फिर आयो, नाग लायो थयो  
विष अनपार ॥ मो० ॥ ९ ॥ बेइया डार पड़यो तिणवार,  
कन्युं उपचार थयुं उपकार ॥ मो० ॥ १० ॥ बेटी भणावो  
कला सिखावो, मत जावो विन कहे किणवार ॥ मो० ॥ ११ ॥  
पींजरे रक्खे, कोई न लक्खे, भिनख करे रात्रे भण सार ॥  
मो० ॥ १२ ॥ डोरो बंधायो वचन निभायो, गयो बेइयाके  
पाछो द्वार ॥ मो० ॥ १३ ॥ कुशल क्षेमके कहो समाचार,  
दुखणी होसी मुज घरनार ॥ मो० ॥ १४ ॥ जिणसूं  
आई कहू तुज बाई, राजा बुलाई करसी जहार ॥ मो०  
॥ १५ ॥ कहें मुनि राम हुवे सह काम, पुन्य अभिराम  
हुवे जो लार ॥ मो० ॥ १६ ॥ इति ॥

### १७चंद चरित्र ॥

१ माखजीने राखो समझाय, दासी मोरा ॥ मा० ॥

ए देशी ॥

सखी मोरा पिउजीने राखो विलमाय ॥ पि० ॥ सखी  
मोरा पिउजीने राखो भरमाय ॥ देर ॥ कांई कुमती मुज  
ऊपनी जी, कुण मुज दीवि भरमाय अयके चिउइयो  
बालहो जी, फेर मिले कव आय ॥ स० ॥ १ ॥ सासूजीने



जीवती जी, क्यूं राखी किरतार; क्यूं न गई खर सींग  
 ज्यूं जी, क्यूं न भरो इण वार ॥ स० ॥ २ ॥ मुज प्यारो  
 न्यारो कीयो जी, फिट तोनें किरतार; फिट् जीव्यो अब  
 मांहरो जी, कुंण मुज सुणे पुकार ॥ स० ॥ ३ ॥ पाछो  
 लावो वेगसूं जी, जिण विन निकसे प्राण; जग सूनो  
 सव माहरो जी, किम कर रखूं कुल काण ॥ स० ॥ ४ ॥  
 कुंण जाणो दुख माहरो जी, कुंण दुख मेटे अवार; हूं दुख-  
 णी महापापणी जी, कीधा मैं पाप अपार ॥ स० ॥ ५ ॥  
 अनिमिषे हूं जोचती जी, प्रीतमनो मुख नित्त; अब देख-  
 ण सांसो पढ़्यो जी, लाख खरचूं जो वित्त ॥ स० ॥ ६ ॥  
 क्षण क्षण पांख समारती जी, क्षण क्षण जोती मुख;  
 हूं जाणेती नर थसे जी, उलटो हुय गयो दुःख ॥ स० ॥ ७ ॥  
 मोत न आवे आपणी जी, हीयो न फादे हजंसे; मुनि  
 राम कहे जो जाणसे जी, जिणरो कंत जावे पर देश ॥  
 ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

## गाल ॥

### १ जिनवर पास पियारो ॥ ए देशी ॥

कुर्कट प्रांन पियारा, प्रांन पियारा लागै प्यारा, नहीं  
 रखूं न्यारारे ॥ कु० हां० कु० प्रा० ॥ आभावारा रे ॥ कु० हां० ॥  
 टेर ॥ तूं मुज प्रांन आंन शिर तेरी, चेरी हूं खिजमतदारा रे ॥  
 कु० ॥ १ ॥ क्यूं धरी मनसा धण त्यागनकी, क्यूं फिरो नटवी  
 लारा रे कु० ॥ २ ॥ हम निर्भागी जद तुम त्यागी, रागी किम  
 थया घांरा रे ॥ कु० ॥ ३ ॥ शिवमाला तो रूप रसाला, कर  
 लिया पित वश म्हांरा रे ॥ कु० ॥ ४ ॥ धन नटवाला वचन  
 रसाला, धन तोय राखनवारा रे ॥ कु० ॥ ५ ॥ रे छोगा-

ला, मोहनगारा, रे यौवन सिणागारा रे ॥ कु० ॥ ६ ॥  
 सासू फासू ईर्खा रक्खे, लखेन समय विचारा रे ॥ कु०  
 ॥ ७ ॥ कुंण विश्वास आस जीऊ कैसैं, देऊं रखूं किसं  
 लारा रे ॥ कु० ॥ ८ ॥ कुन भरोसे किम मुझ छोडो, कयूं  
 छोडो मो निरधारा रे ॥ कु० ॥ ९ ॥ वचन रसाला नैन  
 अनियारा, मेढो विरहनी झाला रे ॥ कु० ॥ १० ॥ ईश्वर  
 पिण मुज लारे पडियो, कीयो पंखी फेर करे न्यारा रे  
 ॥ कु० ॥ ११ ॥ किणरो दोष नहीं सही जाणूं, है सह  
 दोष करमांरा रे ॥ कु० ॥ १२ ॥ वेदरदी कछु मूल न  
 जानैं, राम जानैं जाननहारा रे ॥ कु० ॥ १३ ॥ इति ॥

## १८ पंचक सेठ ॥

### ॥ देशी गरवेकी ॥

सुपातर दांन ज रे दीजो, वर्धमान प्रणाम शुद्ध की-  
 जो; पचक सेठ ज रे सुन लीजो, हीये मांन प्रणाम त-  
 जीजो ॥ सु० ॥ १ ॥ टेर ॥ कोल्लर ग्राम ज रे कहिये,  
 पचक आवक तिहां रहिये; एक मुनि जान ज रे संयुता,  
 आया सेठ घरे गुणवता ॥ सु० ॥ २ ॥ समुल्लस सेठ ज  
 रे उदारा, प्रतिलाभे अखंडित धृतधारा; नहीं करयूं क-  
 पजी रे नाकारा, जाण्यु सेठ रे लाभ अपारा ॥ सु०  
 ॥ ३ ॥ मत ह्वो भंग प्रणाम भव तरियो, तिनसैं ना-  
 कारो नवि करियो; पिण सेठ चचल चित्त ज रे फिरियो,  
 ग्रहो मुनि लोभी पात्र ज भरियो ॥ सु० ॥ ४ ॥ एकाकी  
 मुनिवर रे दरसे, एता धृतसूं काई करसे; शनै शनै धृत  
 धारा हे नांखे, तदा ज्ञानी मुनि इम भाखे ॥ सु० ॥ ५ ॥

मारे, किम कर आज्ञा दी जावै ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ एकाएकी  
 नंदन म्हारे, तो विन किम म्हें प्रांन धरां; नारी कहै क  
 तल कर जावो, धन मायानें कांई करां ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ ऐ  
 आज्ञा नहीं देवे मुझकू, जद लोच कियो निज हाथ करी  
 वेष पैरनं मुनिवर बैठो, नैन देखने धरनि ठरी ॥ ऐ० ॥ ७ ॥  
 कहणा थी सो सबही कहिया, पिण हार खाय आज्ञा दी  
 धी; नलनि गुल्म हूं जाऊं जलदी, गुरुसेती विनती कीधी  
 ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ इमशान भूमि तुम जावो जलदी, काम पत्न्यां सैं  
 ठा रैना; सहै सैल धमका लहै जागिरि, पांव नहीं पाछा  
 देना ॥ ऐ० ॥ ९ ॥ सरीकूं वंदी जाये मसाणें, बंवलकी  
 पग सूल भगी; एक काढतां दूजी तीजी, चौथी अति वेद-  
 न जगी ॥ ऐ० ॥ १० ॥ पग भर खिस्त सके नहीं जांसैं, पादपोष  
 गमन अनशन ठावे; बहु बचांसैं आई जंबूकी, भूखी  
 अति मुनिकूं खावे ॥ ऐ० ॥ ११ ॥ घुट घुट करती पीवे  
 रुधिरकूं, ब्रट ब्रट ब्रट नाडी तूटे; चट चट चट चट चावे  
 चांबड़ी, मुनी तहां लाहो लूटै ॥ ऐ० ॥ १२ ॥ चौथे पौर  
 तो घोड़े चढ़ियां, नलनिगुल्म छिनमें लीधो; नार बती-  
 से सासू संगे, रुदन करी दुखड़ो कीधो ॥ ऐ० ॥ १३ ॥  
 रुदन सुणी नर लाखां रोवे, पछी जुगो पिण ना  
 लेवे; बंदर दोलन करते रहिया, प्रांण पड़े कायर जेवे  
 ॥ ऐ० ॥ १४ ॥ मुनि उपदेशे समता लीधी, नंदन  
 हुवो एक लार थकी; ऐवंती पार्श्वनाथको मंदिर, कर  
 जिणमे पितु शिबि रक्खी ॥ ऐ० ॥ १५ ॥ राजा विक्र-  
 मने प्रतिबोध्यो, सिद्धसेन नाम दिवाकरो; महाकालको  
 लिगही फोड़्यो, कल्याणमदिर तहां स्तव उचर्यो ॥  
 ॥ ऐ० ॥ १६ ॥ पंचम ओर एवा मुनिवर, धन्य माता उर

जेन्म लीया; मुनि राम कहे धन्य धन्य छै जेहने, जिन  
मारग उद्योत कीया ॥ ऐ० ॥ १७ ॥ संवत उगणीसे एक  
वालीसे, जो धांणे फागुण मासे; वृद्धिचंदजी गुरु प्रसादे,  
जानतणो कीयो अभ्यासे ॥ ऐ० ॥ १८ ॥ इति ॥

## २२ पार्श्वनाथ कमठ संवाद

१ चांदा थारी चांदनीसी रातरे, कोई नणदल रे  
भोजायां पाणी नीसरी ॥ ए देशी ॥

काशी देशमें नगर वणारसी सार रे, कोई राजा रे  
अश्वसेन नृप गुणभन्यो; वामा रांणी जिण घर छै  
पट नार रे, कोई कुमरज रे पार्श्व प्रभूजी अवतन्यो ॥  
॥ १ ॥ गंगा ऊपर आयो तपसी एक रे, कोई दुनियां रे  
दरसन करवा जाय छै; माजी पधारे सब दुनियांनै देख रे,  
कोई दरसन रे करवा दिलमे चाय छै ॥ २ ॥ कुमरजी लीधी  
साथे आया आप रे, कोई आप ज पधारया गंगा ऊपर;  
क्यू जाले अज्ञानी लकड़ मांहेने साप रे, कोई ऐसो रे  
तपतो ज्ञानी नवि करै ॥ ३ ॥ दिन मरे भूखां रात पड्यां  
केई खाय रे, कोई व्रत ज रे करने कंद मूल खाय छै;  
कोई रगड़े मट्टी अंदर मैल भराय रे; कोई जाले रे लकड़  
जीव जलाय छै ॥ ४ ॥ क्या तुम देखा मुज तपस्यामें  
पाप रे, कोई क्या तुम जी छेडे मुज बेफायदे; दिखा  
तौ जलता लकड़मे अवि साप रे, कोई नही तौ जी  
जाबो तुमचे कायदे ॥ ५ ॥ लकड़ फाड़ी काढ दिखाये  
नाग जी, कोई मत्र ज रे देईने सुर पद अहि दीयो;  
अयो कीसांनो छटो तपसी भाग जी, कोई तप फल रे

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध       | शुद्ध             | पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध       | शुद्ध       |
|-------|--------|--------------|-------------------|-------|--------|--------------|-------------|
| ३५    | ११     | तुमची        | तुमची             | ११२   | १८     | कथा          | कथा         |
| ३५    | १८     | तारिय        | टारिये            | ११५   | ३      | जिण रुप      | जिण रुप     |
| ४०    | ११     | अगोजी        | अगोजी             | ११७   | ३      | कमसु         | कमसु        |
| ४०    | २४     | तहीं सागो    | नहीं सागो         | १२०   | १९     | प्रतिमाक     | प्रतिमाका   |
| ४१    | २०     | एमो अरिहंताण | णमो अरिहं-<br>ताण | १३१   | १०     | भोडू         | भोडू        |
|       |        |              |                   | १३२   | २५     | लग्यो        | लग्यो       |
| ४२    | २      | नमो नुन      | नमो उव            | १४१   | १      | बूटे         | छूटे        |
| ४३    | ५      | खट मसाताई    | खट मासाताई        | १४२   | ११     | धर्म न पगारो | धर्म उपगारो |
| ४५    | ६      | सदा तुन      | सदा तुम           | १५१   | ११     | जियडा        | जोग         |
| ४७    | १७     | जोटे         | जोटे              | १५३   | २३     | लोग          | साच         |
| ६८    | ६      | घषराघा छा    | घषरावा छा         | १५८   | २३     | साद          | देय         |
| ७१    | ४      | ए केहनो      | ए केहनें          | १५८   | २४     | दये          | दश वैकालि   |
| ७४    | १      | पायो रे      | पायो रे           | १५९   | ११     | दशवै कालिक   | भायजी       |
| ७६    | १३     | तारो रे      | सुधारो रे         | १५९   | २३     | भावजी        | दश वैकालि   |
| ७८    | २७     | मुकटो        | मुकटो             | १६३   | ११     | दशवै कालिक   | पीनेका      |
| ७९    | ५      | तनु          | तड                | १६५   | ४      | पीनेकर       | घर          |
| ७९    | २५     | दसवै कालिक   | दश वैकालिक        | १६५   | २०     | धर           | सुलटा       |
| ७९    | २५     | इम धदे       | इम दे             | १७४   | २२     | मुलटा        | भई छ        |
| ८६    | ९      | गभार्वासमे   | गभार्वाससू        | १८०   | २२     | थई छ         | दूमाला      |
|       |        | ऊपनी         | नीसरी             | १८०   | २      | डुमालो       | मारो        |
| ८४    | १७     | कम्या        | कन्या             | १८७   | १३     | माणे         | रुठ         |
| ८५    | २      | हूणो को रे   | दोनू री रे        | १९२   | १३     | रुठ          | पाइजी मोर   |
| ८८    | १०     | धेठ          | धेठो              | १९३   | २२     | वाईजी कालो   | कालो        |
| ८७    | १५     | ऊत अनृत      | ऊत अनृत           |       | २३     | सजी          | सजी         |
| ९०    | ७      | गडिये        | घडिये             | २१७   | १८     | च            | धदे         |
| ९३    | १४     | आडो          | आडो               | २२१   | २५     | तीर          | लीन         |
| ९७    | १५     | पलक          | पलफा              | २२४   | १५     | उत्तम        | उत्तम       |
| ९९    | ६      | रच नहीं      | रचन नहीं          | २२९   | २      | पुत्रकोधाम   | पुत्र गुणको |
| १०२   | २      | आठ           | आठ                |       |        |              | धाम         |
|       |        |              | लाख भाई           |       |        |              | भावियो      |
|       |        |              | सोवालका           | २३३   | ११     | भात्रिया     | अवसर        |
|       |        |              | गज जिसेका         | २४१   | १०     | अवसर         | धाम,        |
| १०७   | ७      | लखभाई        | समंदरसी खाई       | २४२   | १२     | वडम          | आदर्य       |
|       |        |              | सीता हस्तास       | २४७   | १६     | आदर्य        | ना देना     |
|       |        |              | बही खोई, सु       | २४७   | २४     | नादनो        | पमिह सामा   |
|       |        |              | णजो सयभाई,        | २५२   | ८      | क सामाई      | यिक सगदे    |
|       |        |              | मडा               |       |        | पोसाभेला     |             |
| १११   | १५     | मरा          |                   |       |        |              |             |

